



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

२४-३

सं. 10] नई दिल्ली, शनिवार, मार्च 10, 1873 (फाल्गुन 19, 1894)

No. 10] NEW DELHI, SATURDAY, MARCH 10, 1973 (PHALGUNA 19, 1894)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के काम में रखा जा सके
(Separate page is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation)

नोटिस
(NOTICE)

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 15 जनवरी 1873 तक प्रकाशित किए गए हैं :—

The undermentioned Gazzettes of India Extraordinary were published up to the 15th January 1873 :—

अंक Issue No.	संख्या और तिथि No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
		—शून्य— —Nil—	

—शून्य—
—Nil—

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियाँ प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल साइम्स, दिल्ली के नाम मांग-पत्र भेजने पर भेज दी जाएगी।
मांग-पत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तिथि से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिए।

Copies of the Gazzettes Extraordinary mentioned above will be supplied on indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazzettes.
491GI/72

	विषय-सूची	पृष्ठ
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	253	
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	345	1075
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	7	69
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से सम्बन्धित अधिसूचनाएं	299	309
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रबर समितियों की रिपोर्ट	—	87
भाग II—खंड 3—उपखंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य खेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	569	525
भाग II—खंड 3—उपखंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य खेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए विधि और अधिसूचनाएं	309	43
पूरक संख्या 10— 3 मार्च, 1973 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट	10	309
10 फरवरी 1973 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म तथा बड़ी बीमारियों से दृष्टि मृत्यु सम्बन्धी आकड़े	—	319

CONTENTS

PAGE		PAGE
	PART II—SECTION 3.—Sub.Sec. (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	1075
253	PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	69
	PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India ..	309
345	PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	87
7	PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners ..	—
299	PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	525
—	PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies ..	43
—	SUPPLEMENT No. 10 Weekly Epidemiological Reports for week ending 3rd March, 1973 ..	309
569	Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week ending 10th February 1973 ..	319

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मन्त्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों तथा आवेदनों और संकलनों से सम्बन्धित अधिसूचनाएं

[Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court]

मंत्रिमण्डल सचिवालय

(कार्मिक तथा प्रशासनिक सुधार विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 10 मार्च 1973

नियम

सं० 20/1/73-अ० भा० सं० (1)—निम्नलिखित सेवाओं में रिक्तियों को भरने के लिए, 1973 में संघ लोक सेवा आयोग द्वारा ली जाने वाली प्रतियोगिता-परीक्षा के नियम, संबंधित मंत्रालयों और भारतीय लेखा-परीक्षा और लेखा सेवा के सम्बन्ध में भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की सहमति से, आम जानकारी के लिए प्रकाशित किए जा रहे हैं :—

वर्ग-I

- (1) भारतीय प्रशासन सेवा, और
- (2) भारतीय विदेश सेवा

वर्ग-II

- (1) भारतीय पुलिस सेवा तथा
- (2) दिल्ली, अंडमान तथा निकोबार, द्वीपसमूहपुलिस सेवा श्रेणी-2

वर्ग-III

(क) श्रेणी-1 की सेवाएं :—

- (1) केन्द्रीय सूचना सेवा, (ग्रेड-II) श्रेणी-1
- (2) भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा,
- (3) भारतीय सीमा शुल्क और केन्द्रीय उत्पादन शुल्क सेवा,

(4) भारतीय रक्षा लेखा सेवा,

(5) भारतीय आयकर सेवा (श्रेणी-1),

(6) भारतीय आयुष्य कारबाना सेवा, श्रेणी-1
(सहायक प्रबंधक अतकनीकी),

(7) भारतीय डाक सेवा,

(8) भारतीय रेलवे लेखा सेवा,

(9) भारतीय यातायात सेवा और

(10) संन्य भूमि तथा संन्य छावनी सेवा, श्रेणी-1

(ख) श्रेणी-2 की सेवाएं :—

(1) केन्द्रीय सचिवालय सेवा अनुभाग अधिकारी ग्रेड, श्रेणी-2,

(2) भारतीय विवेण सेवा, बांच 'छ' केन्द्रीय संवर्ग के समेकित ग्रेड II तथा III (अनुभाग अधिकारी ग्रेड),

(3) सशस्त्र सेना मुख्यालय सिविल सेवा, महायक मिलिन स्टाफ अधिकारी ग्रेड, श्रेणी-2,

(4) सीमा शुल्क मूल्य निरूपक (एप्रेजर) सेवा क्लास-2,

(5) दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप सिविल सेवा श्रेणी-2,

(6) गोआ, दमन तथा दीव सिविल सेवा, श्रेणी-2,

(7) पांडिचेरी सिविल सेवा, श्रेणी-2, तथा

(8) संन्य भूमि तथा संन्य छावनी सेवा, श्रेणी-2

उम्मीदवार उपर्युक्त सेवा संवर्ग में से किसी एक या अधिक के लिए परीक्षा में बैट्टने के लिए आवेदन कर सकता है। उसे संबंधित वर्ग/बगाँ के अन्तर्गत आने वाली उन सभी सेवाओं का, जिनके लिए वह विचार किये जाने का इच्छुक है, अपने आवेदन-पत्र में उल्लेख कर देना चाहिए।

परीक्षा के अंतिम परिणाम की घोषणा होने के 10 दिन के भीतर किसी उम्मीदवार द्वारा वर्ग/बगाँ के अन्तर्गत आने वाली सेवाओं के संबंध में, जिन के लिए वह प्रतियोगिता में भाग ले रहा है, वी गई तरजीह को बदलने के लिए उसकी याचना मंत्रिमण्डल सचिवालय (कार्मिक तथा प्रशासनिक सुधार विभाग) में प्राप्त न हो जाये तो उसकी इस प्रकार की तरजीह बदलने की याचना पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

यदि कोई उम्मीदवार परीक्षा के लिखित भाग के परिणाम-स्वरूप भारतीय प्रशासन सेवा/भारतीय पुलिस सेवा के लिए व्यक्तित्व जांच के लिए अर्हता प्राप्त कर लेता है उसे अलग से मंत्रिमण्डल सचिवालय (कार्मिक तथा प्रशासनिक सुधार विभाग) को लिखने के लिए कहा जायेगा कि वह अपनी तरजीह के ऋम में विभिन्न राज्यों में आवंटन के लिए किस राज्य के लिए विचार किया जायेगा।

2. अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवार के लिए रिक्तियों का आरक्षण भारत सरकार के द्वारा निर्धारित विधि से किया जायेगा।

अनुसूचित जातियों/आदिम जातियों से अभिप्राय निम्नांकित में उल्लिखित जातियों/आदिम जातियों में से किसी एक से है : संविधान (अनुसूचित जातियों) आदेश, 1950, संविधान (अनुसूचित जातियों) (भाग 'ग' राज्य) आदेश, 1951, संविधान (अनुसूचित आदिम जातियों) आदेश, 1950 तथा संविधान (अनुसूचित आदिम जातियों) (भाग 'ग' राज्य) आदेश, 1951, अनुसूचित जातियों/अनुसूचित आदिम जातियों की सूचियाँ (आशोधन) आदेश, 1956 द्वारा यथासंशोधित, बम्बई पुनर्गठन अधिनियम, 1960 और पंजाब पुनर्गठन, अधिनियम, 1966 के साथ पठित, संविधान (जम्मू और कश्मीर) अनुसूचित जाति आदेश, 1956 संविधान (अंडमान और निकोबार द्वीप समूह) अनुसूचित आदिम जाति आदेश, 1959, संविधान (दादर और नागर हैवेली)

अनुसूचित जाति आदेश, 1962, संविधान (दावर और नागर क्षेत्री) अनुसूचित आदिम जाति आदेश, 1962, संविधान (पाठीचेरी) अनुसूचित जाति, 1964 तथा संविधान (अनुसूचित आदिम जाति) उत्तर प्रदेश आदेश, 1967। संविधान (गोआ दमन और दीव) अनुसूचित जाति आदेश, 1968 और संविधान (गोआ, दमन और दीव) आदिम जाति आदेश, 1968 तथा संविधान (नागार्कोड) अनुसूचित आदिम जातियां आदेश, 1970।

3. संघ लोक सेवा आयोग यह परीक्षा नियमों के परिशिष्ट-2 में निर्धारित विधि से लेणा।

परीक्षा की तारीख और स्थान आमोग द्वारा निर्धारित किए जाएंगे।

4. भारतीय प्रशासन सेवा आदि में भर्ती के लिए ली जाने वाली सम्मिलित प्रतियोगिता परीक्षा को इन तीन बर्गों की सेवाओं को, यानी, (1) भारतीय प्रशासन सेवा और भारतीय विदेश सेवा। (2) भारतीय पुलिस सेवा और दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा और (3) केन्द्रीय सेवाएं, दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह सिविल सेवा, गोआ, दमन तथा दीव समूह सेवा तथा पांडेचेरी सिविल सेवा के लिए अलग अलग तीन परीक्षाएं समझा जाएगा।

5. जो उम्मीदवार किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का न हो या संघ राज्य क्षेत्र पांडीचेरी का निवासी न हो या कीन्या, उगांडा, संयुक्त गणराज्य टैंजानिया (भूतपूर्व टैंगानिका और जंजीबार) से न आया हो तो उसे ऊपर नियम 4 में उल्लिखित तीन बर्गों में से प्रत्येक की सेवाओं के लिए प्रतियोगिता परीक्षा में अधिक से अधिक तीन बार सम्मिलित होने दिया जायेगा, परन्तु यह प्रतिबन्ध 1961 की परीक्षा से लागू है।

लेकिन किसी उम्मीदवार को, निर्मुक्त आपातकालीन कमीशन प्राप्त/अल्फ़कालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों के लिए स्वीकार्य अधिकतम आयु सीमा में छूट के, देखें नियम 7 (ख) नीचे, अधीन संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा में, उम्मीदवार को एक बार संयुक्त प्रतियोगिता परीक्षा में बैठा समझा जाने पर, एक बार से अधिक प्रतियोगिता करने की अनुमति नहीं दी जायेगी, यदि वह एक अथवा अधिक श्रेणियों के लिए प्रतियोगिता करता है।

नोट-1—यदि कोई उम्मीदवार किसी एक अथवा अधिक विषयों में वस्तुतः परीक्षा देता है तो उसे सेवा की प्रत्येक श्रेणी की परीक्षा में बैठा समझा जायेगा, जिसमें आयोग द्वारा उसे प्रविष्ट किया जाता है, संयुक्त परीक्षा में एक बार बैठा समझा जाने पर इस नियम के परन्तुके अधीन परीक्षा देने की उम्मीदवार को अनुमति दी गई हो।

नोट-2—भारतीय प्रशासन सेवा आदि परीक्षा, 1974 से, इस उत्तरांश में संशोधन किया जा सकता है कि किसी उम्मीदवार को तीनों बर्गों में से प्रत्येक की सेवाओं के लिए प्रतियोगिता परीक्षा में कितनी बार बैठने दिया जाए।

6. (1) भारतीय प्रशासन सेवा और भारतीय पुलिस सेवा का उम्मीदवार भारत का नागरिक अवश्य हो।

(2) अन्य सेवा के उम्मीदवार को या तो

(क) भारत का नागरिक होना चाहिए, या

(ख) सिविल की प्रजा, या

(ग) नेपाल की प्रजा, या

(घ) भूटान की प्रजा, या

(ङ) ऐसा विभिन्नी शरणार्थी जो भारत में स्थायी रूप से रहने की इच्छा से 1 जनवरी, 1962 से पहले भारत आ गया हो, या
(च) मूल रूप से ऐसा भारतीय व्यक्ति हो, जो भारत में स्थायी रूप से रहने की इच्छा से पाकिस्तान, बर्मा, श्रीलंका (भूतपूर्व सिलोन) और पूर्वी अफ़्रीका के कीनिया, उगांडा तथा संयुक्त गणराज्य टैंजानिया (भूतपूर्व टैंगानिका और जंजीबार) देशों में आया हो।

परन्तु ऊपर की (ग), (घ) और (ङ) तथा (च) कोटियों के अन्तर्गत आने वाले उम्मीदवार के पास भारत सरकार द्वारा दिया गया पात्रता (एलिजिबिलिटी) प्रमाण पत्र होना चाहिए।

एक और शर्त यह भी है कि उपर्युक्त (ग), (घ) और (ङ) कोटियों के उम्मीदवार भारतीय विवेश सेवा में नियुक्ति के पालनहीं माने जाएंगे।

परीक्षा में उस उम्मीदवार को भी बैठने दिया जा सकता है जिसके लिए पात्रता प्रमाण पत्र आवश्यक हो और उसे सरकार द्वारा आवश्यक प्रमाण पत्र दिए जाने की जरूरत के साथ, अनन्तिम (प्रोविजनल) रूप से नियुक्त भी किया जा सकता है।

7. (क) (i) भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय विदेश सेवा और भाकी सभी सेवाओं के लिए सिवाय ऊपर के पैरा (1) में उल्लिखित भारतीय पुलिस सेवा और दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा को छोड़कर भाकी सभी सेवाओं में उम्मीदवार के लिए यह आवश्यक है कि उसकी आयु 1 अगस्त, 1973 को 21 वर्ष पूरी हो गयी हो, किन्तु 26 वर्ष की न हुई हो अर्थात् उसका जन्म 2 अगस्त, 1947 से पहले और 1 अगस्त, 1952 के बाद न हुआ हो।

(ii) भारतीय पुलिस सेवा और दिल्ली तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा के उम्मीदवार के लिए यह आवश्यक है कि उसकी आयु 1 अगस्त, 1973 को पूरे 20 साल की हो गई हो किन्तु 26 साल की न हुई हो, अर्थात् उसका जन्म 2 अगस्त, 1947 से पहले और 1 अगस्त, 1953 के बाद न हुआ हो।

(ख) 26 वर्ष की अधिकतम आयु सीमा में निम्नलिखित श्रेणियों के उत्तरांश आपातकालीन कमीशन प्राप्त/अल्फ़कालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों के मामले में, जिन्होंने सशस्त्र सेनाओं में उनके प्रवरण से पूर्व अपना अध्ययन छोड़ दिया हो और जो सशस्त्र सेनाओं से निर्मुक्त किये जाने की तारीख पर विहित शैक्षिक अहसास देखें नियम 8 नीचे, न रखते हों सशस्त्र सेनाओं में उनकी कुल कमीशन प्राप्त सेवा की सीमा तक, (जिसमें कमीशन पूर्व/कमीशन पश्चात् प्रशिक्षण में व्यतीत की गई अवधि शामिल है) आगामी पूरे वर्ष तक मान कर छूट दी जा सकेगी।

(i) 1 नवम्बर, 1962 के पश्चात् परन्तु 10 जनवरी, 1968 से पूर्व सशस्त्र सेनाओं में आपातकालीन कमीशन प्राप्त/अल्फ़ कालीन सेवा कमीशन प्राप्त

ऐसे अधिकारी या वे अधिकारी जो 10 जनवरी, 1968 से पहले किसी कमीशन पूर्व प्रशिक्षण में शामिल हुए हों, किन्तु जिन्हें इस तारीख को या इससे पहले कमीशन प्राप्त हुआ हो, और जिन्होंने उनके द्वारा कमीशन-पूर्व प्रशिक्षण में शामिल होने अथवा कमीशन प्राप्त किये जाने (जहाँ केवल कमीशन-पश्चात् प्रशिक्षण ही था) के वर्ष के परवर्ती वर्ष में आने वाली 1 अगस्त को 21 वर्ष की आयु प्राप्त न की हो बशर्ते कि प्रशिक्षण कोर्स संगत वर्ष की 31 जुलाई को अथवा उससे पूर्व आरम्भ हुआ हो।

- (ii) 1 नवम्बर, 1962 के पश्चात् तुरत्त 10 जनवरी, 1968 से पूर्व सशस्त्र सेनाओं में आपातकालीन कमीशन प्राप्त/अल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त ऐसे अधिकारी, जिन्होंने, उसके द्वारा कमीशन पूर्व प्रशिक्षण में शामिल होने अथवा कमीशन प्राप्त किए जाने के (जहाँ केवल कमीशन पश्चात् प्रशिक्षण ही था) वर्ष के परवर्ती वर्ष में आने वाली 1 अगस्त, को 20 वर्ष की आयु प्राप्त न की हो बशर्ते कि प्रशिक्षण कोर्स संगत वर्ष की 1 अगस्त अथवा उसके पश्चात् आरंभ हुआ हो।

नोट-1—इन नियमों के प्रयोजन के लिए “निर्मुक्त” से अभिप्राय
 (i) निर्मुक्त होने के अनुसूचित वर्ष के आधार पर निर्मुक्त,
 (ii) सेना सेवा के कारण अथवा उसके द्वारा अपवर्गित असमर्थता के परिणामस्वरूप अमान्मीकरण।

सशस्त्र सेनाओं से; सेवाकी अल्पावधि के दौर के पश्चात् और प्रशिक्षण के दौरान अथवा समाप्ति पर, अथवा वास्तविक सेवा में लिये जाने से पूर्व ऐसे प्रशिक्षण की अवधि समाहित करने के लिए प्रदान किये गये अल्पकालीन सेवा कमीशन के दौरान अथवा समाप्ति पर नहीं, और न ही इसमें कदाचार, कुशलता अथवा उनके स्वयं के अनुरोध पर निर्मुक्त किये गये अधिकारियों के मामले समाहित हैं।

नोट-2—“निर्मुक्त होने के अनुसूचित वर्ष” वाक्यांश से अभिप्राय (i) ‘जहाँ तक इसका संबंध आपातकालीन कमीशन प्राप्त अधिकारियों से है, वह वर्ष है जिसमें भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा अनुमोदित योजनाबद्ध कार्यक्रम के अनुसार उन्हें निर्मुक्त किया जाना है, और

- (ii) जहाँ तक इसका संबंध अल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों से है, वह वर्ष है जिसमें अल्पकालीन सेवा कमीशन प्राप्त अधिकारियों का सामान्य कार्यकाल समाप्त होना है।

नोट-3—केन्द्रीय सरकार अथवा राज्य सरकार अथवा सरकार के स्वामित्व में के औद्योगिक उपकरणों के अधीन नियोजित ऐसे इंजीनियर तथा डाक्टर, जिनसे अनिवार्य दायित्व योजना के अधीन किसी न्यूनतम विहित अवधि के लिए सशस्त्र सेनाओं में सेवा करना अपेक्षित हो और जिन्हें ऐसी सेवा की अवधि के दौरान संगत नियमों के अधीन अल्पकालीन सेवा कमीशन प्रदान किया गया हो, आयु की इस छूट के लिए पात्र नहीं होंगे।

नोट-4—अस्थायी सर्विस में लिये गये सशस्त्र सेनाओं की बालंटियर रिजर्व सेनाओं के अधिकारी आयु की इस छूट के लिये पात्र नहीं होंगे।

(ग) ऊपर निर्धारित ऊपरी आयु में और भी छूट दी जा सकती है।

- (i) यदि उम्मीदवार किसी अनुसूचित जाति या अनुसूचित आदिम जाति का हो तो अधिक से अधिक पांच वर्ष,
- (ii) यदि उम्मीदवार भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान से 1 जनवरी, 1964 को या उसके बाद लेकिन 25 मार्च, 1971 से पहले भारत में आया वास्तविक विस्थापित व्यक्ति हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,
- (iii) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो और वह 1 जनवरी, 1964 को या उस के बाद लेकिन 25 मार्च, 1971 से पहले भूतपूर्व पूर्वी पाकिस्तान से आया वास्तविक विस्थापित व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,
- (iv) यदि उम्मीदवार संघ राज्य झेल पांडिचेरी का निवासी हो तथा उसने कभी फ़ासीसी के माध्यम से शिक्षा प्राप्त की हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,
- (v) यदि उम्मीदवार अक्टूबर 1964 के भारत-श्रीलंका समझौते के अधीन 1 नवम्बर, 1964 को या उसके बाद श्रीलंका (भूतपूर्व सीलौन) से वास्तव में प्रत्यावर्तित होकर भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,
- (vi) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति का हो और साथ ही अक्टूबर 1964 से भारत-श्रीलंका (भूतपूर्व सीलौन) समझौते के अधीन, 1 नवम्बर 1964 को या उसके बाद श्रीलंका से वास्तविक रूप से प्रत्यावर्तित भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,
- (vii) यदि उम्मीदवार कीनिया, उगांडा, तथा संयुक्त गणराज्य टोंगानिया (भूतपूर्व टंगानिका तथा जंजीबार) से आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,
- (viii) यदि उम्मीदवार 1 जून, 1963 या उसके बाद, बर्मा से वास्तव में प्रत्यावर्तित होकर, भारत में आया हुआ मूल रूप से भारतीय व्यक्ति हो, तो अधिक से अधिक तीन वर्ष,
- (ix) यदि उम्मीदवार अनुसूचित जाति अथवा अनुसूचित आदिम जाति का हो और साथ ही 1 जून, 1963 को या उसके बाद, बर्मा से

प्रत्यावर्तित होकर, भारत में अया हुआ मूल रूप से भारतीय अविक्त हो, तो अधिक से अधिक आठ वर्ष,

- (x) रक्षा सेवाओं के उन कर्मचारियों के मामले में अधिकतम तीन वर्ष तक जो किसी विदेशी शान्ति देश के साथ संघर्ष में अथवा अशांतिग्रस्त क्षेत्र में फौजी कार्यवाही के दौरान विकलांग हुए तथा उसके परिणामस्वरूप निर्मुक्त हुए, तथा
- (xi) रक्षा सेवाओं के उन कर्मचारियों के मामले में अधिकतम आठ वर्ष तक जो किसी विदेशी शान्ति देश के साथ संघर्ष में अथवा अशांतिग्रस्त क्षेत्र में फौजी कार्यवाही के दौरान विकलांग हुए तथा उसके परिणामस्वरूप निर्मुक्त हुए और अनुसूचित जातियों या अनुसूचित आदिम जातियों के हैं।
- (xii) सीमा सुरक्षा दल के उन कर्मचारियों के मामले में अधिकतम तीन वर्ष तक जो सन् 1971 के भारत-पाक संघर्ष में फौजी कार्यवाही के दौरान विकलांग हुए और उसके परिणामस्वरूप निर्मुक्त हुए; तथा
- (xiii) सीमा सुरक्षा दल के उन कर्मचारियों के मामले में अधिकतम आठ वर्ष तक जो सन् 1971 के भारत-पाक संघर्ष में फौजी कार्यवाही के दौरान विकलांग हुए और उसके परिणामस्वरूप निर्मुक्त हुए और अनुसूचित जातियों या अनुसूचित आदिम जातियों के हैं;

(घ) गोआ, दमन तथा दीव के उन स्वाधीनता सेनानियों को, जो गोवा, दमन तथा दीव की सरकार के कर्मचारी नहीं थे और जिन्होंने मुक्ति संघर्ष में भाग लिया था जिसके फलस्वरूप भूतपूर्व पुर्तगाली प्रशासन के अधीन कम से कम छः मास तक जेल या हिरासत में रहे हों, परीक्षा में बैठने की अनुमति दी जाएगी, बशर्ते कि 1-1-1972 को उनकी आयु 35 वर्ष की न होई हो।

नोट:—जो उम्मीदवार उपरोक्त नियम 7 (घ) के अधीन आयु में छूट मांगेगा, उन्हें उपरोक्त नियम 7 (ख) और नियम 7 (ग) के अधीन आयु में छूट पाने का हक नहीं होगा।

उपर्युक्त परिस्थितियों को छोड़कर निर्धारित आयु सीमा में किसी भी सूरत में छूट नहीं दी जाएगी।

8. उम्मीदवार के पास परिशिष्ट 1 में उल्लिखित विद्यालयों में से किसी एक को कोई उपाधि होनी चाहिए अथवा उसके पास परिशिष्ट 1-क में उल्लिखित अर्हताओं में से कोई एक अर्हता होनी चाहिए।

नोट-1:—यदि कोई उम्मीदवार किसी ऐसी परीक्षा में बैठ चुका हो जिसे उत्तीर्ण कर लेने पर वह इस परीक्षा में बैठ सकता है, पर अभी उस परीक्षा के परिणाम की सूचना न मिली हो तो ऐसी स्थिति में वह इस परीक्षा में बैठने के लिए आवेदन कर सकता है। जो उम्मीदवार इस प्रकार की अर्हता परीक्षा (क्वालीफाइंग एक्जामिनेशन) में बैठना चाहता हो, वह भी आवेदन कर सकता है

बशर्ते कि अर्हता परीक्षा इस परीक्षा के आरम्भ होने से पहले समाप्त हो जाए। ऐसे उम्मीदवार को, यदि वह अन्य शर्तें पूरी करता हो, तो इस परीक्षा में बैठने दिया जाएगा। परन्तु परीक्षा में बैठने की ऐसी अनुमति अनंतिम मानी जाएगी और यदि वह अर्हता परीक्षा उत्तीर्ण होने का प्रमाण जल्दी से जल्दी और हर हालत में इस परीक्षा के आरम्भ होने की तारीख से अधिक से अधिक दो महीने के भीतर प्रस्तुत नहीं करता, तो यह अनुमति रद्द की जा सकती है।

नोट-2:—विशेष परिस्थितियों में, संघ लोक सेवा आयोग ऐसे किसी उम्मीदवार को भी परीक्षा में प्रवेश का पात्र मान सकता है जिसके पास उपर्युक्त अर्हताओं में से कोई न हो बशर्ते कि उस उम्मीदवार ने अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित कोई ऐसी परीक्षाएं पास की हों जिनके स्तर को देखते हुए आयोग उसको परीक्षा में प्रवेश देना उचित समझे।

नोट-3:—यदि कोई उम्मीदवार अन्यथा परीक्षा में प्रवेश का पात्र हो किन्तु उसने ऐसे विदेशी विश्वविद्यालय से उपाधि ली हो जो परिशिष्ट 1 में सम्मिलित न हो तो वह भी आयोग को आवेदन कर सकता है और आयोग, यदि उचित समझे तो, उसे परीक्षा में प्रवेश दे सकता है।

9. यदि किसी पिछली परीक्षा के परिणाम के आधार पर किसी उम्मीदवार की नियुक्ति वर्ग 1 (भारतीय प्रशासन सेवा या भारतीय विदेश सेवा) की किसी सेवा में हो जाती है तो वह इस परीक्षा में बैठने का पात्र नहीं होगा।

यदि किसी पिछली परीक्षा के परिणाम के आधार पर किसी उम्मीदवार को नियुक्ति नीचे स्तंभ (II) में उल्लिखित किसी सेवा में हो जाती है तो वह केवल उन्हीं सेवाओं के लिए इस परीक्षा में बैठने का पात्र होगा जो उक्त सेवा के सामने नीचे स्तंभ (III) में उल्लिखित है :—

ऋग सं०	जिस सेवा में नियुक्ति हुई	जिन सेवाओं के लिए परीक्षा में बैठने का पात्र है
(1)	(2)	(3)
1.	भारतीय पुलिस सेवा	(i) वर्ग 1 (भारतीय प्रशासन सेवा और भारतीय विदेश सेवा)
2.	केन्द्रीय सेवाएं, क्लास-I	(ii) वर्ग III में, केन्द्रीय सेवाएं, क्लास-I
		(i) वर्ग (भारतीय प्रशासन सेवा और भारतीय विदेश सेवा)
		(ii) वर्ग II में (भारतीय पुलिस सेवा)

(1)	(2)	(3)
3. केन्द्रीय सेवाएं क्लास-II (जिसमें संघ राज्य क्षेत्रों की सिविल तथा पुलिस सेवाएं शामिल हैं)।	(i) वर्ग I (भारतीय प्रशासन सेवा और भारतीय विदेश सेवा)। (ii) वर्ग II में भारतीय पुलिस सेवा (iii) वर्ग III में केन्द्रीय सेवाएं, क्लास-I,	
10. उम्मीदवारों को आयोग के नोटिस के परिणाम्य 1 में निर्धारित फीस अवश्य देनी होगी।		
11. जो उम्मीदवार स्थायी या अस्थायी रूप में पहले से ही सरकारी सेवा करता हो, या वर्क-चार्ज कर्मचारी हो, किन्तु अनियत न हो अथवा दिहाड़ी पर रखा हुआ न हो, उसे इस परीक्षा में बैठने से पहले अपने विभाग के अध्यक्ष की अथवा कार्यालय की अनुमति अवश्य लेनी होगी।		

12. परीक्षा में बैठने के लिए उम्मीदवार की पात्रता या अपात्रता के बारे में आयोग का निर्णय अंतिम होगा।

13. किसी उम्मीदवार को परीक्षा में तब तक नहीं बैठने दिया जाएगा, जब तक कि उसके पास आयोग का प्रवेश प्रमाण पत्र (स्टिफिकेट आफ एडमिशन) नहीं होगा।

14. यदि कोई उम्मीदवार किसी भी प्रकार से अपनी उम्मीदवारी के लिए पैरवी करते की कोई कोशिश करेगा तो उसे परीक्षा में बैठने के लिए अयोग्य घोषित कर दिया जाएगा।

15. यदि किसी उम्मीदवार को आयोग ने किसी दूसरे व्यक्ति से परीक्षा दिलाने अथवा जाली या फेर बदल किए हुए प्रमाण पत्र पेश करने अथवा गलत या झूठा तथ्य प्रस्तुत करने अथवा किसी तथ्य को छपाने या परीक्षा में सम्मिलित होने के लिए कोई अन्य अनियमित या अनुचित उपाय अपनाने, परीक्षा भवन में कोई अनुचित उपाय अपनाने, या अपनाने की चेष्ठा करने अथवा परीक्षा भवन में किसी तरह का अनुचित आचरण करने के फलस्वरूप अपराधी घोषित किया है तो उसके विरुद्ध वांडिक अभियोजन के अतिरिक्त निम्नलिखित कार्यवाही की जा सकती है :—

(क) सदा के लिए अथवा किसी विशेष अवधि के लिए परीक्षा से वार्ति किया जाना;

(i) आयोग द्वारा उम्मीदवारों के लिए आयोजित किसी परीक्षा में सम्मिलित होने अथवा किसी साक्षात्कार में उपस्थित होने से,

(ii) केन्द्रीय सरकार द्वारा सरकार के अंतर्गत नौकरियों के लिए;

(ख) यदि वह पहले से ही सरकार की सेवा में हो तो उचित नियमों के अधीन अनुशासनिक कार्यवाही की जा सकती है।

16. जो उम्मीदवार लिखित परीक्षा में उतने न्यूनतम अर्हता अंक (Qualifying Marks) प्राप्त कर लेगा जितने आयोग अपने निर्णय से निश्चित करे, तो उसे आयोग व्यक्तित्व परीक्षा (Personality Test) के इंटरव्यू के लिए बुलाएगा।

17. परीक्षा के बाद, आयोग उम्मीदवारों के द्वारा प्राप्त कुल अंकों के आधार पर योग्यता-क्रम से उनकी सूची बनाएगा और उसी क्रम से उन उम्मीदवारों में से जिसने लोगों को आयोग परीक्षा के आधार पर योग्य समझेगा, उनकी उन अनारक्षित रिक्तियों पर नियुक्ति करने के लिए सिफारिश करेगा जो इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर भरी जाएंगी।

वर्तमान के अनुसूचित जातियों/अनुसूचित आदिम जातियों के उम्मीदवार, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित आदिम जातियों के लिए आरक्षित रिक्तियों की उस संख्या तक जो सामान्य भानक के आधार पर न भरी जा सकती हो, आरक्षित कोटा की कमी को पूरा करने के लिए शिथिल किये गये भानक द्वारा, इन सेवाओं में नियुक्ति के लिए इन उम्मीदवारों की योग्यता के आधार पर आयोग द्वारा संस्तुत किये जा सकेंगे, ऐसा करते समय परीक्षा में मेरिट के क्रम से उनके स्थान का ध्यान नहीं रखा जायेगा।

18. प्रत्येक उम्मीदवार को परीक्षाकाल की सूचना किस रूप में और किस प्रकार दी जाए, इसका निर्णय आयोग स्वयं करेगा। आयोग परीक्षाकाल के बाद में किसी भी उम्मीदवार से पतांचार नहीं करेगा।

19. उम्मीदवार द्वारा अपने आवेदन पत्र के समय, विभिन्न सेवाओं के लिए दी गई तरजीह पर परीक्षाकाल के आधार पर नियुक्तियां करते समय उचित ध्यान दिया जाएगा।

लेकिन यह यह है कि यदि किसी उम्मीदवार को किसी पिछली परीक्षा के आधार पर वर्ग I (भा० प्र० से० अथवा भा० वि० से०) के अंतर्गत आने वाली किसी सेवा में नियुक्त किया गया है, इस परीक्षा के परिणाम के आधार पर किसी अन्य सेवा में उसकी नियुक्ति पर विचार नहीं किया जाएगा।

एक अन्य ग्रन्त यह है कि यदि किसी उम्मीदवार को किसी पिछली परीक्षा के परिणाम के आधार पर नीचे के कालम (II) में उल्लिखित किसी एक सेवा में नियुक्त किया गया है तो इस परीक्षा परिणाम के आधार पर उसकी नियुक्ति केवल उन्हीं सेवाओं में की जा सकेगी, जो उस सेवा के सामने कालम (III) में दी गई है :—

क्रम सं.	सेवा जिसमें नियुक्ति किया जाएगी	सेवा जिसमें नियुक्ति के लिए विचार किया जा सकेगा
----------	---------------------------------	---

(1)	(2)	(3)
1. भारतीय पुलिस सेवा	(i) वर्ग I भारतीय प्रशासन सेवा तथा भारतीय विदेश सेवा। (ii) वर्ग III में दी गई क्लास-I की केन्द्रीय सेवाएं;	
2. केन्द्रीय सेवाएं क्लास-I	(i) वर्ग I (भारतीय प्रशासन सेवा तथा भारतीय पुलिस सेवा)। (ii) वर्ग II में दी गई भारतीय पुलिस सेवा,	

1	2	3
3. केन्द्रीय सेवाएं, क्लास II (जिसमें संघ राज्य क्षेत्र की सिविल तथा पुलिस सेवाएं शामिल हैं)	(i) वर्ग I (भारतीय प्रशासन सेवा तथा भारतीय पुलिस सेवा, (ii) वर्ग II में दी गई भारतीय पुलिस सेवा, (iii) वर्ग III में दी गई क्लास- I की केन्द्रीय सेवाएं)।	
20. परीक्षा में पास हो जाने से नियुक्ति का अधिकार तब तक नहीं मिलता, जब तक कि सरकार आवश्यक जांच के बाद संतुष्ट न हो जाए, कि उम्मीदवार इसमें नियुक्ति के लिए हर प्रकार से योग्य है।		
21. उम्मीदवार को मानसिक और शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ होना चाहिए, और उसमें कोई ऐसा शारीरिक दोष नहीं होना चाहिए जिससे वह संबंधित सेवा के अधिकारी के रूप में अपने कर्तव्यों को कुशलतापूर्वक न निभा सके। यदि सरकार या सक्रम प्राधिकारी द्वारा निर्धारित डाक्टरी परीक्षा के बीच किसी उम्मीद- वार के बारे में यह जात हो कि वह इन आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता है तो उसकी नियुक्ति नहीं की जाएगी। आयोग द्वारा व्यक्तित्व परीक्षा के लिए बुलाए गए उम्मीदवार की डाक्टरी परीक्षा करवाई जा सकती है। डाक्टरी परीक्षा के लिए उम्मीदवार द्वारा चिकित्सा बोड़े को कोई फीस नहीं ही जाएगी।		
नोट:—बाद में निराश न होना पड़े इसलिए उम्मीदवारों को सलाह दी जाती है कि वे परीक्षा में प्रवेश के लिए आवेदन पत्र भेजने से पहले सिविल सर्जन के स्तर के सरकारी चिकित्सा अधिकारी से अपनी जांच करवा ले, नियुक्ति से पहले उम्मीदवारों की किस प्रकार की डाक्टरी जांच होगी और उसके लिए स्वास्थ्य का स्तर किस प्रकार का होना चाहिए, इसके बारे में इन नियमों के परिशिष्ट 4 में दिए गए हैं।		

रक्षा सेवाओं के भूतपूर्व विकलांग सैनिकों को सेवा (ओं) की आवश्यकताओं के अनुरूप डाक्टरी जांच के स्तर में छूट दी जाएगी।

22. (क) जिसने ऐसी महिला/ऐसे पुरुष से विवाह करने का करार किया हो अथवा विवाह कर लिया हो वह उक्त पद पर नियुक्ति का पाल नहीं होगा/होगी।

(ख) जिसने जीवित पत्नी/पति के होते हुए किसी अन्य व्यक्ति के साथ विवाह करने का करार किया हो अथवा विवाह कर लिया हो वह उक्त पद पर नियुक्ति का पाल नहीं होगा/होगी।

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार इस बात से संतुष्ट हो कि ऐसे विवाह उस व्यक्ति पर अथवा (जिससे विवाह किया गया हो उस पर लागू होने वाले वंयविकास कानून के अधीन अनुच्छेद है और ऐसा करने के अन्य कारण हैं तो ऐसे व्यक्ति को ऐसे कानून से छूट दे सकती है।

23. उम्मीदवारों को सूचित किया जाता है कि सेवा में भर्ती होने से पहले ही हिन्दी का कुछ ज्ञान होना उन विभागीय परीक्षाओं में उत्तीर्ण होने की दृष्टि से लाभदायक होगा जो उम्मीदवारों को सेवा में भर्ती होने के बाद देनी पड़ती है।

24. इस परीक्षा के आधार पर जिन सेवाओं में भर्ती की जानी है उसके संक्षिप्त विवरण परिशिष्ट III में दिए गए हैं।

एस० हनीबुल्साह, अवर सचिव।

परिशिष्ट I

भारत सरकार द्वारा अनुमोदित विश्वविद्यालयों की सूची

(नियम 8 के अनुसार)

भारतीय विश्वविद्यालय

कोई भी ऐसा विश्वविद्यालय जो भारत के केन्द्रीय या राज्य विद्यान मण्डल के अधिनियम से नियमित किया गया हो और अन्य शिक्षा संस्थाएं जो संसद् के अधिनियम से स्थापित की गयी हों। अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अधिनियम 1956 की धारा 3 के अन्तर्गत विश्वविद्यालय मान लिये जाने की घोषणा हो चुकी हो।

बर्मा के विश्वविद्यालय

रंगून विश्वविद्यालय।

माँडले विश्वविद्यालय।

इंगलैण्ड और बैल्टिस के विश्वविद्यालय

बर्मिंघम, प्रिस्टल, कैम्ब्रिज, डर्हम, लीड्स, लिवरपूल, लंदन, मैचेस्टर, आक्सफोर्ड, रीडिंग पाफिल्ड और बैल्टिस के विश्वविद्यालय।

स्काटलैण्ड के विश्वविद्यालय

एडरबीन, एडिनबर्ग, गलास्टो और सैट एन्ड्र्यूज विश्वविद्यालय।

आयरलैण्ड के विश्वविद्यालय

डलबिन विश्वविद्यालय (ट्रिनिटी कालेज)।

नेशनल यूनिवर्सिटी, आयरलैण्ड।

क्वीन्स यूनिवर्सिटी, बेलफास्ट।

पाकिस्तान के विश्वविद्यालय

पंजाब विश्वविद्यालय।

सिध विश्वविद्यालय।

बंगला देश के विश्वविद्यालय

झारा विश्वविद्यालय।

राजशाही विश्वविद्यालय।

नेपाल का विश्वविद्यालय

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, काठमांडू।

परिशिष्ट I—क

भारत सरकार ने निम्नसिखित योग्यताओं को उनमें से प्रत्येक के साथने लिखी डिप्रियों के समकक्ष मान्यता प्रदान की है:—
परीक्षा में प्रवेश पाने के लिए अनुमोदित योग्यताओं की सूची

(नियम 8 के अनुसार)

1. शासी, काशी विद्यापीठ, वाराणसी।

2. फांसीसी परीक्षा (Propedentique)

3. उच्च ग्राम शिक्षा की राष्ट्रीय परिषद् (नेशनल कॉंसिल और रुरल हायर एजूकेशन) से ग्राम सेवाओं में डिप्लोमा।

4. विश्वभारती विश्वविद्यालय का उच्च ग्राम सेवाओं में डिप्लोमा।

5. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (आल इंडिया कॉंसिल फार टेक्निकल एजूकेशन) से वाणिज्य में राष्ट्रीय डिप्लोमा।

6. केन्द्रीय सरकार के अधीन वरिष्ठ सेवाओं और पदों पर भर्ती के लिए सरकार से मान्यता अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् का इंजीनियरी या प्रौद्योगिकी में राष्ट्रीय डिप्लोमा।

7. श्री अरविन्द अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा केन्द्र, पांडिचेरी का “उच्च पाठ्यक्रम” यदि “पूर्व छात्र” (फुल स्टूडेन्ट) के रूप में यह पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा किया हो।

8. भारतीय खान विद्यालय, धनबाद के खनन इंजीनियरी में डिप्लोमा।

9. मानविकी और प्राकृतिक विज्ञानों के क्षेत्र में उपाधि-पद्धति ३० एस० एस० आर० में उच्च शैक्षिक स्थापना में अनुप्रमाणित उपाधि-प्रहण बिना प्रथम वैज्ञानिक शोध प्रबन्ध का पक्ष लिये हए भरन्तु राज्य की परीक्षाएं पास की हों।

10. शास्त्री (अंग्रेजी विषय के साथ) या पुराना शास्त्री या अंग्रेजी सहित अतिरिक्त विषयों में विशेष परीक्षा सहित सम्पूर्ण शास्त्री परीक्षा अर्थात् वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी की वरिष्ठ शास्त्री परीक्षा।

11. गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी, हरिद्वार की अलंकार डिग्री।

12. अमेरिकन यूनिवर्सिटी आफ बेस्ट, लेबनान द्वारा प्रदान की जाने वाली बैचलर आफ आर्ट्स (बी० ए०) तथा बैचलर आफ साईंस (बी० एस०) की डिग्रियाँ।

परिषिष्ट II

खण्ड I

सिखित परीक्षा की रूपरेखा

लिखित परीक्षा के विषय:—

(क) लिखित परीक्षा

(i) तीन अनिवार्य विषय (सभी सेवाओं के लिए) नियन्त्र, सामान्य अंग्रेजी और सामान्य ज्ञान, प्रत्येक विषय के पूर्णांक 150 होंगे। [नीचे खण्ड-II का उपखण्ड (अ) देखें]।

(ii) निम्नलिखित खण्ड-II के उपखण्ड (ब) में दिए गए ऐच्छिक विषयों में से चुने गए विषय। सेवा श्रेणी-II को छोड़ (नियम 1 और 4 देखें) शेष सभी सेवाओं के उम्मीदवार, उस उप-खण्ड के उपबन्ध के अधीन, कुल 600 अंकों तक के ऐच्छिक विषय ले सकते हैं। भारतीय पुलिस सेवा दिल्ली और हिमाचल प्रदेश पुलिस सेवा श्रेणी-II के लिए उम्मीदवार कुल 400 अंकों तक के ऐच्छिक विषय ले सकते हैं। इन प्रश्न-पत्रों का स्तर किसी भारतीय विश्वविद्यालय की आनंद डिग्री की परीक्षा के स्तर के लगभग होगा; और

(iii) निम्नलिखित खण्ड-II के उपखण्ड (स) में दिए गए अतिरिक्त विषयों में से चुने गए विषय। उस उप-खण्ड के उपबन्ध के अधीन उम्मीदवार भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय विदेश सेवा (श्रेणी-I) के लिये कुल 400 अंकों तक के अतिरिक्त विषय ले सकते हैं। इन प्रश्न-पत्रों का स्तर ऐच्छिक विषय के लिए उप-खण्ड (क-V) में विहित स्तर से ऊंचा होगा।

(ष) ऐसे उम्मीदवार जो आयोग द्वारा व्यक्तित्व परीक्षा के साक्षात्कार के लिए [इस परिषिष्ट की सूची के भाग (ग) के अनुसार बुलाए जाएंगे] उसके लिए नीचे लिखे नम्बर होंगे:—

श्रेणी-I

	पूर्णांक
भारतीय प्रशासनिक सेवा	300
भारतीय विदेश सेवा	400
श्रेणी II और	
सभी सेवाएं	200

(अ) अनिवार्य विषय

[देखिए ऊपर खण्ड (I) का उपखण्ड (क-i)]

(1) नियन्त्र	150
(2) सामान्य अंग्रेजी	150
(3) सामान्य-ज्ञान	150

टिप्पणी:—ऊपर लिखे विषयों का पाठ्य विवरण इस परिषिष्ट की अनुसूची के भाग 'क' में दिया गया है।

(ब) ऐच्छिक विषय

[देखिए ऊपर खण्ड (I) का उपखण्ड (क-ii)]

सेवा श्रेणी-II (नियम 1 और 4 देखें) के उम्मीदवार निम्नलिखित विषयों में से किन्हीं दो विषयों को और अन्य सभी सेवाओं के उम्मीदवार किन्हीं विषयों को चुन सकते हैं:—

(1) शुद्ध गणित	200
(2) अनुप्रयुक्त गणित	200
(3) सांख्यिकी	200
(4) भौतिकी	200
(5) रसायन	200
(6) वनस्पति-विज्ञान	200
(7) प्राणि विज्ञान	200
(8) भू-विज्ञान	200
(9) भूगोल	200
(10) अंग्रेजी साहित्य	200
(11) नीचे दी हुई में से एक:—	

आसामी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, भलद्वालम, मराठी, उड़िया, पंजाबी, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू

(12) निम्नलिखित में से एक:—	
अरबी, चीनी, फांसीसी, जर्मन, पाली	
फारसी, रुसी, संस्कृत	200
(13) भारतीय इतिहास	200
(14) ब्रिटिश इतिहास	200

(15)	यूरोपीय इतिहास	. . .	200	(7)	उच्च-भूगोल	. . .	200
(16)	विश्व इतिहास	. . .	200	(8)	अंग्रेजी साहित्य (1798-1935)	. . .	200
(17)	सामान्य अर्थशास्त्र	. . .	200	(9) (अ)	भारतीय इतिहास I	. . .	200
(18)	राजनीति विज्ञान	. . .	200		(अन्दरगुप्त मौर्य से हर्ष तक)		
(19)	दर्शन-शास्त्र	. . .	200		अथवा		
(20)	मनोविज्ञान	. . .	200	(ब)	भारतीय इतिहास-II		
(21)	विधि I	. . .	200		महान् मुगल सम्राट (1526-		
(22)	विधि II	. . .	200		1707) अथवा	. . .	200
(23)	विधि III	. . .	200	(स)	भारतीय इतिहास-III	. . .	200
(24)	अनुप्रयुक्त यांत्रिकी	. . .	200		(1772 से 1950 तक)		
(25)	समाज शास्त्र	. . .	200				

शर्त यह है कि विशेष विषयों पर निम्नलिखित पार्बंदियां लागू होंगी:—

- (i) किसी भी सेवा-वर्ग के लिए 1, 2 और 3 विषयों में से दो से अधिक विषय नहीं चुने जा सकते।
- (ii) भारतीय विदेश सेवा के अतिरिक्त अन्य सेवाओं के उम्मीदवार ऊपर मद 12 के अन्तर्गत दी गई भाषाओं में से एक से अधिक न चुनें। केवल भारतीय विदेश सेवा के लिए उम्मीदवारों को इन भाषाओं में से कोई दो को चुनने की अनुमति है, लेकिन किसी भी उम्मीदवार को पाली और संस्कृत दोनों चुनने की अनुमति नहीं दी जाएगी।
- (iii) किसी भी सेवा वर्ग के लिए इतिहास के विषयों 13, 14, 15 से 16 में से अधिक नहीं चुने जा सकते। लेकिन किसी भी उम्मीदवार को विश्व इतिहास और यूरोपीय इतिहास दोनों चुनने की अनुमति नहीं दी जाएगी।
- (iv) संख्या 19 और 20 में से उल्लिखित विषयों में से एक सेवा-वर्ग के लिए केवल एक ही विषय लिया जा सकता।
- (v) किसी भी सेवा-वर्ग के लिए विधि के विषयों 21, 22 और 23 में से दो से ज्यादा नहीं चुने जा सकते।
- (vi) सेवा-श्रेणी-II के लिए 24 विषय न चुना जाए।

टिप्पणी:—ऊपर लिखे विषयों का पाद्य-विवरण इस परिशिष्ट के अनुसूची के भाग 'ख' में दिया गया है।

(ग) अतिरिक्त विषय [देखिए ऊपर खण्ड-I का उपखण्ड (क-iii)]

भारतीय प्रशासनिक सेवा/भारतीय विदेश सेवा (श्रेणी-1) की प्रतियोगिता में बैठने वाले उम्मीदवार को निम्नलिखित विषयों में से कोई दो विषय भी अवश्य लेने होंगे:—

		पूर्णांक
(1) (अ)	उच्च गणित	200
	अथवा	
(ब)	उच्च अनुप्रयुक्त गणित	200
(2)	उच्च भौतिकी	200
(3)	उच्च रसायन	200
(4)	उच्च वनस्पति-विज्ञान	200
(5)	उच्च प्राणी-विज्ञान	200
(6)	उच्च भू-विज्ञान	200

(7)	उच्च-भूगोल	. . .	200
(8)	अंग्रेजी साहित्य (1798-1935)	. . .	200
(9) (अ)	भारतीय इतिहास I	. . .	200
	(अन्दरगुप्त मौर्य से हर्ष तक)		
	अथवा		
(ब)	भारतीय इतिहास-II		
	महान् मुगल सम्राट (1526-		
	1707) अथवा	. . .	200
(स)	भारतीय इतिहास-III	. . .	200
	(1772 से 1950 तक)		
(10) (अ)	उच्चतर अर्थशास्त्र	. . .	200
	अथवा		
(ब)	उच्चतर भारतीय अर्थशास्त्र	. . .	200
(11) (अ)	हाब्ज से आज तक का राजनीतिक सिद्धांत	. . .	200
	अथवा		
(ब)	राजनीतिक संगठन और लोक-प्रशासन	. . .	200
	अथवा		
(स)	अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध	. . .	200
(12) (अ)	उच्चतर तत्वमांसा जिसमें ज्ञान-मीमांसा भी शामिल है	. . .	200
	अथवा		
(ब)	उच्चतर मनोविज्ञान जिसमें प्रायोगिक मनोविज्ञान भी शामिल है	. . .	200
(13) (अ)	भारत की संविधान विधि	. . .	200
	अथवा		
(ब)	विधि-शास्त्र	. . .	200
(14) (अ)	अरबी साहित्य में प्रतिबिम्बित मध्ययुगीन सभ्यता (570-1650 ईस्वी)	. . .	200
	अथवा		
(ब)	फारसी साहित्य में प्रतिबिम्बित मध्ययुगीन सभ्यता (570-1650 ईस्वी)	. . .	200
	अथवा		
(स)	प्राचीन भारतीय सभ्यता और दर्शनशास्त्र	. . .	200
(15)	मानव-विज्ञान	. . .	200
(16)	उच्चतर समाज-विज्ञान	. . .	200

विशिष्ट अतिरिक्त विषयों के बारे में निम्नलिखित प्रतिवध लागू माने जाएंगे:—

- (1) किसी भी उम्मीदवार को भारतीय इतिहास [(9) (क)] तथा प्राचीन भारतीय सभ्यता और दर्शन [14(ग)] दोनों ही विषयों को एक साथ लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

(2) किसी भी उम्मीदवार को यूरोपीय इतिहास [9 (ङ.)] तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंध [11 (ग.)] पत्रों विषयों को एक साथ लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

टिप्पणी:—ऊपर दिए गए विषयों का पाठ्य विवरण इस परिशिष्ट की अनुसूची के भाग 'ग' में दिया गया है।

खण्ड III

सामान्य

1. (क) ऊपर के खण्ड II के उपखण्ड (क) की मदों में ऋमशः (1) और (3) के अनुसार 'निबंध' तथा 'सामान्य ज्ञान' के प्रश्न पत्रों के उत्तर अंग्रेजी अथवा संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित किसी भाषा में दिए जा सकते हैं, अर्थात् असमिया, बंगला, गुजराती, हिन्दी, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उडिया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तैलुगू तथा उर्दू। अंग्रेजी के अतिरिक्त विकल्प रूप से किसी अन्य भाषा में उत्तर देने वाले उम्मीदवारों को वही भाषा दोनों पत्रों के लिए चुननी होगी। विकल्प सम्पूर्ण पत्र के लिए लागू होगा न कि उसके किसी अंश के लिए।

(ख) ऊपर के खण्ड II के उपखण्ड (ख) की मदों (11) तथा (12) के अनुसार भाषाओं के प्रश्न पत्र को छोड़ कर अन्य सभी विषयों के प्रश्न पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में दिए जाने चाहिए। जब तक कि प्रश्न पत्र में अन्यथा विशिष्ट रूप से दूसरी भाषा में लिखना अनिवार्य न हो, उन भाषाओं के प्रश्न पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में अथवा संबंधित भाषा में दिए जा सकते हैं।

टिप्पणीI:—ऊपर दिए पैरा I (क) में अंग्रेजी के अतिरिक्त किसी भाषा में प्रश्न पत्र (ओं) के उत्तर देने के इच्छुक उम्मीदवार को आवेदन-पत्र के कालम 33 में संबंधित भाषा का नाम संबंधित प्रश्न पत्र (प्रश्न पत्रों) के सामने देना चाहिए। यदि दिए हुए कालमों में एक या दोनों प्रश्न पत्रों के संबंध में कोई अंदराज नहीं किया जाता है तो यह समझा जाएगा कि प्रश्न पत्र/प्रश्न पत्रों के उत्तर अंग्रेजी में दिए जाएंगे। एक बार दिया गया विकल्प अन्तिम समझा जाएगा, और परिवर्तन अथवा परिवर्धन के लिए कोई अनुरोध नहीं माना जाएगा।

टिप्पणीII:—ऊपर दिए पैरा 1(क) में संविधान की आठवीं अनुसूची में दी गई किसी भाषा में विकल्प रूप से प्रश्न-पत्र (प्रश्न पत्रों) के उत्तर देने वाले उम्मीदवार अपने उत्तर क्रमांक निम्नलिखित लिपि में देंगे:—

भाषा	लिपि
1. असमिया	असमिया
2. बंगला	बंगला
3. गुजराती	गुजराती
4. हिन्दी	देवनागरी
5. कन्नड़	कन्नड़
6. कश्मीरी	फारसी
7. मलयालम	मलयालम
8. मराठी	देवनागरी
9. उडिया	उडिया
10. पंजाबी	गुरुमुखी

11. संस्कृत	देवनागरी
12. सिंधी	देवनागरी अथवा अरबी
13. तमिल	तमिल
14. तैलुगू	तैलुगू
15. उर्दू	फारसी

ऊपर पैरा 1 (क) में दिए गये प्रश्न पत्र (प्रश्न पत्रों) के उत्तर देने के लिए सिंधी का विकल्प देने वाले उम्मीदवारों को आवेदन पत्र के कालम 33 में उस विशेष लिपि (देवनागरी या अरबी) का नाम लिखना चाहिए जिसमें वे उत्तर लिखेंगे।

2. उपरोक्त धारा II की उपधारा (क), (ख) और (ग) में दिये पत्रों के उत्तर के लिए 3 घंटे का समय दिया जाएगा।

3. उम्मीदवार को प्रश्न का उत्तर अपने हाथ से लिखना होगा। उन्हें किसी भी हालत में उनकी ओर से उत्तर लिखने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की सहायता लेने की अनुमति नहीं दी जाएगी।

4. आयोग अपने निर्णय से परीक्षा के किसी एक या सभी विषयों के अहंक नम्बर (क्र्यालिफाइंग भार्क्स) निर्धारित कर सकता है।

5. भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय विदेश सेवा (वर्ग I) के लिए केवल उन्हीं उम्मीदवारों के दो अतिरिक्त प्रश्न पत्रों को जांचा और अंकित किया जायगा जो लिखित परीक्षा के अन्य सभी विषयों में एक निश्चित अत्याधिकतम स्तर प्राप्त करेंगे जैसा कि आयोग द्वारा अपने निर्णय से निर्धारित किया जाएगा।

6. यदि किसी उम्मीदवार की लिखावट आसानी से पढ़ने लायक नहीं होगी तो उसे अन्यथा मिलने वाले कुल नम्बरों में से कुछ नम्बर काट लिये जायेंगे।

7. अनावश्यक ज्ञान के लिए नम्बर नहीं दिये जायेंगे।

8. परीक्षा के सभी विषयों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाएगा कि अभिव्यक्ति कम-से-कम शब्दों में कमबढ़ तथा प्रभाव पूर्ण ढंग से और ठीक-ठीक की गई है।

9. उम्मीदवारों से तोल और माप की मीट्रिक प्रणाली की जानकारी की आशा की जाती है। प्रश्नों के उत्तर में जहां कहीं ऐसा आवश्यक ही, तोल और माप की मीट्रिक प्रणाली का ही उपयोग किया जाए।

अनुसूची

भाग—क

[परिशिष्ट II की धारा II की उपधारा (क) के अनुसार]

1. **निबन्ध:**—उम्मीदवारों से अंग्रेजी में एक निबन्ध लिखने की अपेक्षा की जाएगी। चुनाव के लिए कई विषय दिए जाएंगे। उनसे आशा की जायगी कि वे निबन्ध के विषय की परिधि में ही अपने विचारों को क्रम से व्यवस्थित करें और संक्षेप में लिखें। प्रभावपूर्ण और ठीक-ठीक भावाभिव्यक्ति को प्रश्रम दिया जाएगा।

2. **सामान्य अंग्रेजी:**—प्रश्न इस प्रकार के होंगे जिनसे उम्मीदवारों के अंग्रेजी भाषा के ज्ञान तथा शब्दों के सुन्दर उपयोग की सामर्थ्य का पता चले। कुछ प्रश्न इस प्रकार के भी

रखे जाएंगे जिससे उनकी तर्कशक्ति, उनकी निहितार्थ को ग्रहण कर सकने की सामर्थ्यता महत्वपूर्ण और कम महत्व वाले कार्य में अन्तर समझ सकने की योग्यता की परीक्षा हो सके। जैसाकि आमतौर पर होता है संक्षेप सार लेखन के लिए लेखांग दिए जाएंगे। संक्षिप्त एवं प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए श्रेय दिया जाएगा।

3. सामान्य ज्ञान :—सामान्यिक घटनाओं के, और ऐसी बातें जो प्रतिदिन देखते और अनुभव करते हैं, उसके वैज्ञानिक दृष्टि से ज्ञान सहित जिसकी किसी ऐसी शिक्षित व्यक्ति से आशा की जा सकती है जिसने किसी वैज्ञानिक विषय का विशेष अध्ययन न किया हो। इस प्रश्न पत्र में भारत के इतिहास और भूगोल के ऐसे प्रश्न भी होंगे जिनका उत्तर उम्मीदवारों को विशेष अध्ययन के बिना ही आना चाहिए। इस प्रश्न पत्र में महात्मा गांधी के उपदेशों से संबंधित प्रश्न भी होंगे।

भाग—ए

[परिशिष्ट II के भाग II के उपभाग (क) के अनुसार]

1. शुद्ध गणित :—सम्मिलित विषय होंगे (1) बीजगणित, (2) अनन्त अनुक्रम और श्रेणियों, (3) त्रिकोण मिति, (4) समीकरण के सिद्धांत, (5) दो या तीन परिमापों के विश्लेषणात्मक रेखा गणित, विश्लेषण, और (7) अवकल समीकरण।

(1) **बीजगणित :**—समुच्चयों, संघ प्रतिच्छेदन, गुणों के अंतर और कोटिपूरक। बैन आरेखों। धनात्मक पूर्ण संख्याओं के गुण वास्तविक संख्या और दशमलव द्वारा उनका निरूपण। सम्मिश्र संख्या। आंरंग आरेख। कार्तीय गुण नफल, सम्बन्ध, मानचित्रण। मानचित्रण के रूप में कार्य। तुल्यता संबंध। वर्गों, वर्गों की एकक समाकारिता। उपवर्गों, प्रासामान्य उपवर्गों। लगरेज का प्रमेय। फो वेनियस प्रमेह।

रिंगों और फील्डों की परिभाषाएं और उदाहरण। शून्य और होमोरोफिज्मों के विभाजन। वेक्टर स्थानों।

सारणिकों (जोड़, घटना, गुण और मैट्रिक्स का प्रतिलोमन रेखित समघात और असमघात समीकरण। केले-हेमिल्टन प्रमेय)।

असमताएं। समान्तर और गुणन्तर माध्यों (कोची, स्वंबार्ज, होल्डर और मिनकोस्की की असमताएं);

(2) **अनन्त अनुक्रम और श्रेणियों :**—धारणा की सीमा। अनन्त श्रेणियां। अमिसारी, अपसारी और दौलनी श्रेणियां। कौची के अभिसरणों का सिद्धांत। सुलना और अनुपात के परीक्षण। गैज की जांच। निरपेक्ष अभिसरण और श्रेणियों का उपविन्यास।

(3) **त्रिकोण मिति :**—परिमेय सूची और उसके अनुप्रयोग के लिए डिमोवाइर का प्रमेय। प्रतिलोभ गृतीय और अतिपरबलियक फलन। त्रिकोणमिति श्रेणियों के प्रसार और संकलन। अनन्त गुणन-फलों के संबंध में साइन और को-साइन के लिए व्यंजक।

(4) **समीकरण के सिद्धांत :**—बहुपद समीकरणों के सामान्य गुण। समीकरणों के रूपान्तरण। धनाकृति और चतुधार्त के मूलों की प्रकृति। धनाकृति का गार्डन का हल। संकल्प के चतुधार्त को वर्ग भिन्नों में। मूलों के स्थनन और न्यूनतन का विभाजकों का ढंग।

(5) दो और तीन धातों को वैश्लेषिक रेखागणित:—सरल रेखा, रेखाओं का जोड़, वृत्त, वृत्तों की प्रणाली, वीर्ध वृत्त। पेराबोला, हाइपरबोला, दूसरी श्रेणी के समीकरण का स्तर फाम में घटाना।

मैदानों, सरल रेखाओं, गोला, कोन, शाकवश्चों और उनके स्पर्श रेखा और प्रसामान्य गुणों (वेक्टर तरीकों के प्रयोग की आज्ञा है)।

(6) **विश्लेषण :**—धारणा की सीमा। सांतत्य, व्युत्पत्ति, एक वास्तविक अंतर के कार्य का अवकलन। सांतत्य कार्यों के गुण। असांतत्य के गुण। समांतर मान प्रमेयों। अपरिमित फोर्मों का मूल्यांकन। लांगरेज और कोची के सारण फार्मों के साथ टेलर और मैक्लोरियन के प्रमेय। एक अंतर के कार्य के न्यूनतम और अधिकतम समतलवक्रों, विचित्र, बिन्दु अक्रता, वक्र अनुरेखण। आवरणों। औषिक विभेदन। एक से अधिक वास्तविक अंतर के काम का अवकलन।

समाकलन के स्तर के तरीके। सांतत्य कार्य की स्तप्त समकालन-रीमैन की परिभाषा। समाकलन गणित के मूल प्रमेय। समाकलन गणित की प्रथम समांतर मान प्रमेय। चापकलन, क्षेत्रकलन, परिक्रमण। ठोसों के आयतजा और आधारों और उनके प्रयोगों।

(7) **अवकल समीकरणों :**—साधारण अवकल समीकरण का बनना। क्रम और मात्रा। रेखागणित संबंधी डी० वाई० एफ० (एक्स०, वाई०) के लिए प्रमेय के पास जाने का प्रदर्शन। प्रथम क्रम रेखाकार और बिना रेखाकार समीकरण। विचित्र बिन्दुओं। विचित्र हलों। रेखाकार अवकल समीकरणों और उनके विशेष गुणों। रेखाकार अवकल समीकरण लगातार गुणांकों के साथ, कौची-यूलर प्रकार के समीकरणों। यथार्थ अवेकल समीकरणों और समाकलन-गुणक को प्रवेश कराने वाले समीकरणों, द्वितीय क्रम के समीकरणों। परखंत्वरों और स्वतंत्र घरों का बदलना। हल जब कि एक समाकल जात हो। प्राचलों का विचरण।

2. **अनुपयुक्त गणित:**—इसमें निम्नलिखित विषय सम्मिलित किये जायेंगे :—

- (1) वेक्टर विश्लेषण
- (2) स्थिति विज्ञान
- (3) गति विज्ञान तथा
- (4) द्रव्यस्थैतिकी।

1. **वेक्टर विश्लेषण:**—वेक्टर बीजगणित। अदिशन्चर (Scaler variable) के वेक्टर फलन का अवकलन। ग्रेडिएण कार्तीय में अपसरण तथा कर्ल बेलनाकार तथा गोलीय निर्देशांक तथा उनकी प्राङ्गतिक व्याख्याएं उच्चतर धात व्युत्पन्न वेक्टर सर्वसमिकाएं तथा वेक्टर समीकरण। गाउस तथा स्ट्रोक प्रमेय।

(2) **स्थैतिकी :**—न्यूटन की यांत्रिकी के मूल नियम। यिहीय प्रमेय। समतलीय स्थैतिकी। कण-निकाय में संतुलन। कार्य तथा स्थितिज ऊर्जा। द्रव्यमान केन्द्र तथा गुरुत्व केन्द्र। घर्षण। सामान्य कैटिनरी। कल्पित कार्य का सिद्धांत। संतुलन का स्थायित्व। तीन विमाओं में बल-संतुलन। शलाकाओं में आवर्षण तथा स्थितिज ऊर्जा आयाताकार तथा वृत्ताकार यड्स्क, गोलीय कोग, गोल। समस्थितिज पृष्ठ उनके गुण। स्थितिजों के गुण। ग्रीन का समान स्तर। लौपले तथा पोइशन के समीकरण।

(3) गति विज्ञान :—वैग बेक्टर। औपशिक वेग। त्वरण। कोनीय वेग। स्थतंत्रता की कोटि तथा प्रतिबन्ध। सरल रेखात्मक मूर्ति। सरल आवर्त मूर्ति। स्थधन में गति। प्रक्षयों। प्रतिबंधित गति। कायं तजाऊर्जा आवेगी बलों के अधीन गति। कैप्सर के नियम। केन्द्रीय बलों के अधीन कक्षाएं। परिवर्ती द्रव्यमान की गति। प्रतिरोध के अधीन गति। जड़त्व के आधारों और गुणनफलों। परिभित और आवेगी बलों के अधीन दृढ़पिण्ड की दो विषीय गतियाँ। पिण्ड लोलक।

(4) द्रवस्थनिकी :—भारी तलों की धाव की गई पद्धति के बद्दों के अधीन परलों का संतुलन। धाव का केन्द्र। ब्रॉपूछों पर प्रणोद प्लायबचन पिण्ड का संतुलन। स्थायित्व का संतुलन। गैसों की धाव तथा वायु मंडल से संबंधित समस्याएं।

3. सांख्यिकी

प्रायिकता :—प्रायिकता कि घिर सम्मत और सांख्यिकीय परिभाषाएं। उदाहरणों के साथ प्रायिकता पर सरल प्रमेय। प्रतिबंधी प्रायिकता और सांख्यिकीय स्वतंत्रता। वेयका प्रमेय। संयोगिक विचरणों—अंसंतत और संतत विचारों में प्रायिकता वित्तरणों, गणितीय प्रत्याशाएं। टेक्नोइंजेन की असमती। बहुत संख्याओं का सप्ताह नियम। केन्द्रीय सीमा प्रमेय का सरल कर्म।

II. सांख्यिकीय तरीके :—संकलन, वर्गीकरण, सारणीयन और विभिन्न प्रकार के सांख्यिकीय आंकड़ों का आरेखी निरूपण।

सांख्यिकी जा संख्या की धारण, और आवृत्ति वक्र। केन्द्रीय प्रवृत्ति और विक्षेपण के माप। आधूणों और संखयी। वक्षम्य और कुकुर्यता। आधूण—जनक फलन।

स्तर प्रायिकता बंटनों का अध्ययन—द्विपद, विष, हाइ-परज्या-मैट्रिक, प्रशामान्य, क्रण-द्विपद, आयताकार और लांग सामान्य बंटनों। विषय सोनियन वक्रों की पद्धति का सामान्य विवरण।

द्वितीय बंटन द्विचर प्रशामान्य बंटन के सामान्य गुणों साहचर्य और आसंग के माप। दो या अधिक चरों से सम्बन्धित सहसंबंध और एकधात समाश्रयण। सहसंबंध अनुपात। अंतर्वर्ग सहसंबंध कोटि सहसंबंध। अरेखीय समाश्रण। विश्लेषण।

स्वतंत्र हस्तवक्रों के तरीखों द्वारा वक्र-आंसंजन गतिमान माध्यों, वर्ग माध्यों, न्यूनतम वर्गों और आधूणों। सांबित बहुपदों और उन के प्रयोगों।

III प्रतिवर्द्धीबंटन और सांख्यिकीय अनुमान

आदृष्टक प्रतिवर्द्धी, सांख्यिक, प्रतिचमन बंटन और मानक-त्रुटि की धारणाएं।

स्वतंत्र प्रशामान्य विचरों के माध्य के प्रतिवर्द्धी बंटन का व्याप्तन्न, एक्स (X^2) टी (2T) और एफ (F) सांख्यिक, उनके गुणों और प्रयोगों। प्रतिवर्द्धी मान्यों के प्रतिवर्द्धी बंटनों का व्युत्पर्शी, प्रसरणों और सहसंबंध गुणबन्ध द्विचर प्रशामान्य जनसंख्या से। व्युत्पन्न (बड़े प्रतिवर्द्धी में) और वियरसोनियन एक्स² (X^2) के प्रयोगों

आकलन का सिद्धांत :—अच्छे आकलन की आवश्यकताएं—अनमिनता, सगति, दक्षता तथा पर्याप्तता। आकलनों के प्रसरण का केमर—राज निम्नपरिवर्द्ध। सर्वोत्तम एकधात अनमिनत आकलनों।

आकलन के तरीके—गाधूणों के तरीकों के सामान्य विवरणों, अधिकतम संभाविता का तरीका, न्यूनतम वर्गों के तरीके और अधिकतम संभावित आगणकों के बिना प्रमाण) के न्यनतम गुणों का तरीका। विश्वास्यता अंतरालों का सिद्धांत—विश्वास्यता सीमाएं अस्तमन की सरल समस्याएं।

परिकल्पनाओं की जांच का सिद्धांत :—सरल और समुक्त परिकल्पनाएं। सांख्यिकीय जांचों और संशय क्षेत्रों। दो प्रकार की त्रुटियों, सार्वकाता का स्तर और परिक्षण की अमता।

सरल परिकल्पना से एक परिमापी से संबंधित के लिए अनुकूलतम संशय-क्षेत्रों। प्रसामान्य जन संख्या से सम्बन्धित सरल परिकल्पनाओं के लिए इस प्रकार के श्रेष्ठों को रखना।

संभावित अनुपात परीक्षणों। माध्यम संबंधी परीक्षणों, प्रसरण सहसंबंध तथा एकवर और द्विचर प्रसामान्य जासंख्याओं में सहसंबंध तथा सामाश्रयण गुणों को सरल अभिमानीय परीक्षणों—चित्र, रन, माध्यम, कोटि, और भादृष्टि की करण परीक्षण।

सरल देकल्पिक (बिना ध्युत्पन्न) के विश्वद्व सरल परिकल्पनाओं का अनुक्रमिक परीक्षण।

VI प्रतिवर्द्धी तकनीकी

प्रतिवर्द्धी प्रति पूरण गणना प्रतिवर्द्धी के सिद्धांत। फेमों और प्रतिवर्द्धी एक के। प्रतिवर्द्धी और अप्रतिवर्द्धी त्रुटियाँ। कमबद्ध प्रतिचयन। बहुक्रम और बहुकला प्रतिचयन। आकलन के अनुपात और समाश्रयण तरीके। भवरत में अभी हाल ही में बड़े पैमाने पर किये गए सवधारणों के संदर्भ में प्रतिवर्द्धी सर्वेक्षणों की अभिकल्पना।

V प्रयोगों के अभिकल्प

कोलों में निरीक्षणों के लिए विचारों का रूपांतरण। प्रयोगात्मक अभिकल्पों के सिद्धांत। पूर्णतः आदर्शीकृत यादृच्छीकृत छण्ड तथा लातीनी वर्गीकार अभिकल्प। अप्राप्त भूखण्ड तकनीक 12S = 2(1) 5[¹, 3² 3³] तथा 3 अभिकल्पों के बीच भ्रम पर पुणनखण्डात्मक प्रयोग। खण्डित भूखण्ड अभिकल्प। संतुलित अपूर्ण अपूर्ण अभिकल्प तथा सरल जालक।

4. भौतिकी

पदार्थ और यांत्रिकी के सामान्यगुण—एकक तथा आयाम। परिभ्रमण गति तथा जड़ता विभ्रमिषा। स्वाक्षिण्ट तथा अभ्याकर्षण, ग्रहीय गति। ध्रव्यास्थजल तथा आयास सह-संबंध, प्रत्यास्थ आपरिवर्तक तथा उनके पारिस्पारिक संबंध। तल-आतलि, केशालत्व। असंपीड्य द्रवों का प्रवहरण। तरल तथा वांति द्रव्यों को आलगत्व।

ध्वनि—क्लोपादित आवेपन तथा प्रतिरूपन। तंरण गति। आवेपनांक परिवर्तन। दोरक तथा वायुस्तम्भ-आवेपन। वारं-वारतामापन, ध्वनि का प्रवेग तथा चुम्बकन। स्वर-ग्राम। प्रशाल-ध्वनि विज्ञान। पार स्वानिकी।

उज्मा तथा उज्मा प्रवैगिकी—वातियों का गतिवाद/क्राउन का गतिवाद। बान डेर थीलका स्थिति का समीकार। तापमान की भाष, आपेक्षिक उज्मा तथा संवाही ऊज्मा। जूल-थामसन वातियों का प्रभाव तथा तरलन। ऊज्म प्रवैगिकी के नियम। ऊज्म यंत्र। कालकाय-विकिरण।

प्रकाश—रेखिकीय काशिकी तथा साधारण काशित सहित। दूरेक्ष तथा अण्वीक्ष। चाक्षुष प्रतिविम्ब में दोष तथा उनका सुधार प्रकाश का तरंग सिद्धांत। प्रकाश। प्रवेग की माप। प्रकाश में बाधक, व्याख्या तथा अभिसंदन। साधारण मिथोषट्-मरंगावलीक्षा के तत्व। रमन प्रभाव।

विद्युत तथा चुम्बकत्व

साधारण मामलों में क्षेत्र तथा शब्दम की गणना। गौस का प्रमेय। विद्युन्मान। पदार्थ के विद्युतीय तथा चुम्बकीय गुण और उनकी माप। विद्युत प्रवाह के कारण चुम्बकीय क्षेत्र। चुम्बकमान। विद्युत के वेग तथा मात्रा की माप। शक्तमान। रोच, प्ररोचता तथा धारता; तथा उनका भावन। तामविद्युत्। आवर्ती विद्युद्वाह के तत्व। विद्युज्जितिवा तथा विद्युद्वित्। विद्युदंशन। विद्युच्चु-म्बिक तरंगे। नमोवणी कपाद दीप तथा उनके द्वारा वितन्तु तरंगों की साधारण प्रयुक्ति, पारंपर्ण आदान। दूरवीक्षण।

आधुनिक भौतिकी के तत्व—विद्युदण्, प्राणु तथा कलीवाणु के प्राथमिक तत्व। क्रिया-ऊर्जाण्-स्थरांक। परमाणु का ग्रहबृत् परमाणु सिद्धांत। भ-रशिमचां तथा उनके गुण। तेजोद्विरेता के तत्व तथा आकार एवं अवर्ण रशिमयों के गुण। परमाणुओं की व्याघ्टि। सापेक्षता, पूँज तथा ऊर्जा के विशेष सिद्धांत के तत्व। विलेष्टन तथा द्राव। ब्राह्मांड रशिमया।

5. रसायन

आकार्बंधिक रसायन—परमाणु की संरचना। रेडियोरगेनिकत्वता समस्थानिक। तत्वों का कृत्विम तत्वांतरण। नाभिकीय विखंडन। रासायनिक बंधों की प्रकृति। वायुमंडल की अक्षिय गैसें। अपेक्षाकृत अधिक सामान्य और उपयोगी तत्वों तथा उनके योगिकों का रसायन। दुर्लभ मृदा तत्व। हाइड्रोइड, आक्साइड, आकर्सी अम्ल। पर-अम्ल और पर-लवण तथा कार्बाइड। आकार्बंधिक संकर। रासायनिक विशलेषण के मूलभूत सिद्धांत।

कार्बनिक रसायन—पैट्रोनियम और पैट्रोलियम उत्पाद। ऐलिफिटिक यौगिकों के निम्नलिखित वर्गों का रसायन: संतृप्त और असंतृप्त हाइड्रोकार्बन, एल्कोहाइर, ईथर, ऐलिडहाइड, कीटोन मोनो और ड्राइ-कार्बोफसीलिक अम्ल, ईस्टर, प्रतिस्थापित कार्बो-क्सीलिक आल,। थायो, नाइट्रो और सायनों यौगिक। ऐमीग यूरिया यूरीआइड, कार्ब-धातिक यौगिक, मोनोसेकेराइड (संरचना सहित), कार्बोहाइड्रेट और प्रोटीन (सामान्य परिचय) सरल एलिकीय यौगिक। विकृति सिद्धांत।

ऐरोमेटिक—बैंजीन, नैफैयैलीन और ऐत्यासीन तथा उनके मुख्य व्युत्पन्न, कोलतार, आसवन, फिनील, एरो मेटिक, एल्कोहाइल, ऐलिडहाइड, कीटोन। एरोमेटिक अम्ल और हाइड्रोक्सी अम्ल। विविमविन्यासी बाधा। एरिल-एमीन, डाइएजो, एजो और हाइड्रोजों यौगिक। विवोन। विषय-चक्रीय यौगिक। पाइरोल, पिरिडीन, क्रिक्नोलीन, इन्डोल और नील। एजो, हाइफैनिल मेथेन और पथेलीन रंजक।

सरल आपाविक पुनर्विन्यास, सामावयता, विविम समावयक्ता और चलावयतता। बहुलकीरणह।

भौतिक रसायन—अणुगति सिद्धांत गैसों के गुणधर्म, अवस्था-समीकरण, (बान-डेर-वाल, का, डाइटेरिसाइ) क्रान्तिक अवस्था, गैसों का द्रवण। रसायनिक संघटन के सापेक्ष द्रवों के भौतिक गुणधर्म। पारंभिक किस्टलिकी।

उज्मागतिकी का पहला और दूसरा नियम और इन नियमों का सरल भौतिक तथा रासायनिक प्रक्रमों में अनुप्रयोग। रासायनिक साम्य और द्रव्य-अनुपाती क्रिया का नियम। ला-शाति लिए का नियम। प्रावस्था-नियम और उसका एक-चटक तंत्रों तथा लोह-कार्बन तंत्र में अनुप्रयोग।

अभिक्रिया की दर और कोटि। प्रथम और द्वितीय कोटि की अभिक्रियाएं। शंखला अभिक्रियाएं। प्रकाश रासायनिक अभिक्रियाएं। उत्प्रेरण। अधिशोषण।

विद्युत-अपघटनी वियोजन। आयनिक साम्य। अम्ल-शारिक साम्य और सूचक। विद्यु-अपघटनी चालकता और उसके अनुप्रयोग। इलेक्ट्रोड-विभव। सैल का विद्युत् वाहक बल। विद्युत्-वाहक बल के माप और उनके अनुप्रयोग।

6. बनस्पति विज्ञान

किटोगैम (वैक्टोरिया और वाइरस सहित) तथा फैनेरोगैम, विशेषकर भारतीय किटोगैम और फैनेरोगैम, के विभिन्न स मूहों और उपसमूहों अथवा कुलों और उपकुलों महत्वपूर्ण निरूपकों के रूप, संरचना, प्रकृति, आर्थिक महत्व, जीवनवृत्त और परस्पर संबंध।

पादम-फिजियोलोजी के मूल सिद्धांत और प्रक्रम।

भारत में मिलने वाले शस्य-पौधों के महत्वपूर्ण रोगों का सामान्य ज्ञान और उन रोगों का नियन्त्रण तथा उन्मूलन।

परिस्थिति की और पावन भूगोल, विशेषतः भारतीय बनस्पति-समूह और भारत के बनस्पतिक भेत्रों से संबंधित मूलभूत तथ्य।

विकास, कोशिका-विज्ञान और अनुबंधिकी और पादम-प्रजनन का मूल ज्ञान।

मानव कल्याण के लिए और विशेषकर खाद्याश्रों, दालों, फलों, शर्कराओं, स्टाचों, तेल-बीजों, मसालों, पेयों, तन्तुओं लकड़ियों, रबर औषधियों और संग्रह तेलों जैसे बनस्पति उत्पादों में पौधों, विशेषतः पुष्पी पौधों के आर्थिक उपयोग।

बनस्पति विज्ञान से संबंधित ज्ञान के विकास का सामान्य परिचय।

7. प्राणिविज्ञान

विशेषकर भारतीय संदर्भ आकड़ों और काँड़ों, का वर्गीकरण, जीव-परिस्थितिकी, अकारिकी, जीवन वृत्त और संबंध।

अध्यावरण, अतःकंकाल, चलन, भरण, रुधिर, परिसंचरण, इवसन, आस्मो-रैग्यलेशन, तंत्रिका-तंत्र, ग्रहियों और पुनरुत्पादन की क्रियात्मक अकारिकी (रूप, संरचना और कार्य)। क्षेत्रकी भ्रण विज्ञान के तत्व।

विकास :—प्रमाण- वाद और उनकी आधुनिक व्याख्याएं। मैलेसीय आनुवांशिकता, म्युटेशन। प्राणी-कोशिका की संरचना। कोशिका-विज्ञान और आनुवंशिकी के मूलभूत सिद्धांत। अनु-कृति और वितरण।

8. भूविज्ञान

भौतिक, भूविज्ञान और भूआहृति विज्ञान :—पृथ्वी का उद्भव संरचन, गर्भ तथा आयु। भू-अधिनाति और पहाड़। समस्थिति। महाद्वीपों और महासागरों का सद्भाव। महाद्वीपीय विस्थापन। भूकंप- विज्ञान। ज्वालामुखी-विज्ञान। पृष्ठ एजेन्सियों की भू-वैज्ञानिक क्रिया।

संरचना तथा क्षेत्र भू-विज्ञान :—आग्नेय अवसादी और कायांतरित शैली की सामान्य संरचनाएं। बलन, भ्रंश, विष्म विच्छासो, संधियों और क्षेत्रों का अध्ययन। भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण और भूमापन की विधियों की व्याख्यानिक जानकारी।

क्रिटल-विज्ञान और खनिज विज्ञान :—क्रिटल रूप और नमिति के तत्व, क्रिटल-विज्ञान के नियम, क्रिटल तंत्र और वर्ग, क्रिटल प्रकृति, यमनलन। विधि प्रक्षेप। खनिजों की भौतिक, रासायनिक और प्रकाशित गुणधर्म। अधिक महत्वपूर्ण शैल-कर तथा आर्थिक खनिजों का इनके रासायनिक और भौतिक गुण-धर्मों, क्रिटल संरचनात्मक और प्रकाशित लक्षणों, परिवर्तनों, प्राप्ति, और व्यावसायिक उपयोगों के संबंध में अध्ययन।

स्तरित शैल-विज्ञान और जीवाश्य विज्ञान :—स्तरित शैल-विज्ञान के नियम। भारतीय स्तरित शैल-विज्ञान। भूवैज्ञानिक अभिलेखों के अस्म-वैज्ञानिक और कालानुत्रम प्रविभाग। जीवाश्म-प्रकृति और परिरक्षण का ढंग; जैव विकास पर प्रभाव। अक्षरोहकी तथा पादप जीवाश्म।

आर्थिक भूविज्ञान :—अयस्क उत्पत्ति, के सिद्धान्त, वर्गीकरण, भूविज्ञान, प्राप्ति, भारत के प्रमुख धात्विक और अधात्विक खनिजों के क्षेत्र तथा स्रोत। भारत में खनिज उद्योग। भूभौतिकीय पूर्वेक्षण और अयस्क-प्रसाधन के नियम।

शैलविज्ञान :—अग्निय, आवासादी और कायांतरित शैलों का उद्भव, रक्तना, संरचना और वर्गीकरण। सामान्य भारतीय शैल प्रकारों का अध्ययन।

9. भूगोल

संसार, विशेषत : भारत का प्राकृतिक और मानव भूगोल। प्राकृतिक भूगोल के नियम, जिसमें स्थलमंडल, जलमंडल और वायु-मंडल का विस्तृत अध्ययन करना शामिल है। चक्रसंकल्पनाओं समस्थिति, पर्वत विरचन के प्रकारों, मौसम घटनाओं, महासागर-जल की बहिस्तसीय और अधस्तलीय गति, आदि के संबंध में आधुनिक विचारों का ज्ञान भी हो गया।

मानव भूगोल के नियम, जिसमें संस्कृति, प्रजापति, धर्म आदि के आधार पर जिन वितरण, वातावरण और जीवन-प्रणाली, जन-संख्या उपनति, जनसंख्या की आवाजाही का विस्तृत अध्ययन करना भी शामिल है।

उम्मीदवारों से आशा की जाती है कि उन्हें भारत के प्राकृतिक, मानव और आर्थिक भूगोल का विस्तृत ज्ञान हो।

10. अंगेजी साहित्य

उम्मीदवारों से आशा की जाएगी कि उन्हें चौसर से लेकर महारानी विक्टोरिया के शासन के अन्त तक अंग्रेजी साहित्य के इतिहास का सामान्य ज्ञान हो तथा निम्नलिखित रचनाओं की कृतियों का विशेष ज्ञान हो :

शेसपरीयर, मिल्टन, ड्राइडन, गनसन, वर्डसवर्थ, कीट्स, डिकन्स, टैनिसन, आर्नल्ड तथा हार्ड।

स्वयं पुस्तकों पढ़ने का प्रमाण अपेक्षित है।

प्रश्न पत्र इस प्रकार से बनाए जाएंगे, जिससे उम्मीदवारों की आलोचनात्मक योग्यता की जांच की जा सके।

11. असमी, बंगली, गुजराती, हिन्दी, कश्मीरी, मलयालम, मराठी, उडिया, पंजाबी, सिंधी, तमिल, तेलुगु और उर्दू :—उम्मीदवारों से यह प्रत्याशा की जाएगी कि भाषा के ज्ञान और उसके साहित्य को दर्शा सकें। जिन कृतियों से वे संबंध रखते हैं उनमें से जो सर्वोत्तम समझी जाती है उनका उन्हें प्रत्यक्ष ज्ञान होना अनिवार्य है, यद्यपि प्रश्न कम आवश्यक कृत्यों पर भी तैयार किए जा सकते हैं। उनसे यह भी प्रत्याशा की जाएगी कि ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक बौद्धिक तथा कालात्मक आंदोलनों की पृष्ठ-भूमि का ऐसा ज्ञान रखते हों तथा भाषा-विषयक विकासों का जिससे उनको साहित्य को समझने में सहायता मिलेगी। प्रश्न साहित्य इतिहास और भाषा के ऊपर तैयार किए जा सकते हैं। उम्मीदवारों को अनुवाद। व्याख्या करनी होगी तथा परिच्छेदों पर टिप्पणी के लिए कहा जा सकता है।

टिप्पणी : मद (11) के अधीन इए गए विषयों में से किसी विषय को लेने वाले उम्मीदवारों को संबंधित भाषा में कुछ अध्यवा सभी प्रश्नों के उत्तर देने अपेक्षित होंगे। इन भाषाओं के लिए प्रयोग की जाने वाली लिपियां निम्नलिखित हैं :—

भाषा	लिपि
1. असमिया	অসমিয়া
2. बंगला	বাংলা
3. गुजराती	ગુજરાતી
4. हिन्दी	दેવનાગરી
5. कन्नಡ	ಕನ್ನಡ
6. कश्मीरी	फারಸી
7. मलयालम	മലയാളം
8. मराठी	दેવનાગરી
9. उडिया	ଓଡିଆ
10. पंजाबी	ਗੁਰਮੁਖੀ
11. सिंधी	ਦੇਵਨਾਗਰੀ ਅਥਵਾ ਅਰਬੀ
12. तमिल	தமிழ்
13. तेलुगु	తెలుగు
14. उर्दू	फਾਰਸੀ

12. अरबी, चीनी, फ्रांसीसी, जर्मन, पाली, कारसी, रूसी, संस्कृत :—उम्मीदवारों को प्रमुख परिनिष्ठित साहित्यकारों का ज्ञान होना अपेक्षित है और उनमें उस भाषा में रचना करने और उससे अनुवाद करने की योग्यता होनी चाहिए।

टिप्पणी :—अरबी, फारसी और संस्कृत लेने वाले उम्मीदवारों से कुछ प्रश्नों के उत्तर, यथास्थिति, अरबी, फारसी या संस्कृत में देने की अपेक्षा की जा सकती है। संस्कृत में लिखे जाने के लिए उत्तर देवनागरी लिपि में लिखे जाने चाहिए।

13. भारतीय इतिहास

चन्द्रगुप्त मोर्य के शासनकाल से लेकर भारतीय गणतंत्र की स्थापना तक।

प्रश्न-पत्र में राजनीतिक, संविधानिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास पर भी प्रश्न होंगे।

14. विदिशा इतिहास

अष्ट्याधीन अवधि 1485 से 1945 तक होगी। प्रश्न-पत्र में राजनीतिक, संविधानिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक विकास पर भी प्रश्न होंगे।

15. यूरोप का इतिहास

अष्ट्याधीन अवधि सन् 1789 से 1945 तक होगी।

प्रश्न-पत्र में राजनीतिक, राजनीयिक आर्थिक और सांस्कृतिक विकास पर प्रश्न शामिल होंगे।

16. ब्रिटेन इतिहास: 1789 से 1945 तक

उम्मीदवारों से आशा की जाएगी कि उन्हें विश्व के राजनीतिक और आर्थिक विकास विशेषतः यूरोप, अमेरिका, सुदूरपूर्व मध्यपूर्व तथा अफ्रीकी महाद्वीप के बारे में गहन ज्ञान हो। सार्वभौमिक महस्त्र की अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं पर विशेष बल दिया जाएगा।

उम्मीदवारों से यह भी आशा की जाएगी कि उन्हें विद्या, साहित्य तथा कला के क्षेत्रों में प्रदर्शित सम्पूर्ण सम्पत्ति के योगदान में प्रतिविवित सांस्कृतिक विकास का ज्ञान हो।

17. सामाज्य अर्थशास्त्र

उम्मीदवारों से आशा की जाएगी कि उन्हें निम्नलिखित विषयों का सामाज्य ज्ञान हो:

- (क) आर्थिक विश्लेषण के सिद्धांत, तथा
- (ख) आर्थिक मन्त्रों का इतिहास।

उनमें अपने सैद्धान्तिक ज्ञान को वर्तमान भारतीय आर्थिक समस्याओं के विश्लेषण के लिए प्रयोग करने की अयोग्यता होनी चाहिए।

18. राजनीतिक विज्ञान :—उम्मीदवार से राजनीतिक सिद्धान्त और उसके इतिहास का ज्ञान अपेक्षित है। राजनीतिक सिद्धान्त का तात्पर्य केवल विधान-सिद्धांत से ही नहीं है अपितु सामान्य राज्य सिद्धान्त से भी है। संविधानिक रूपों (प्रतिनिधि सरकार, संघवाद आदि) और केन्द्रीय स्थानीय तथा लोक प्रशासन संबंधी प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं। उम्मीदवारों का वर्तमान संस्थाओं की उत्पत्ति और विकास का ज्ञान भी होना चाहिए।

19. दर्शन शास्त्र :—उम्मीदवारों से आशा की जाती है कि उन्हें निम्नलिखित के विशेष संदर्भ सहित पूर्व और पश्चिम के नीति शास्त्र के इतिहास और सिद्धान्त की जानकारी होगी। नीतिक स्तर और उसके अनप्रयोग की समस्याएं नीतिक निष्पत्ति, नित्यवाद

और स्वतंत्र इष्ठाशक्ति, नैतिक, व्यवस्था और प्रगति, व्यक्ति समाज और राज्य के बीच संबंध, अपराध और दण्ड के सिद्धान्तों तथा नीतिशास्त्र का धर्म से संबंध।

उनसे यह भी आशा की जाती है कि वे निम्नलिखित के विशेष संदर्भ सहित पश्चिमी दर्शनशास्त्र के इतिहास की जानकारी रखेंगे। दर्शनशास्त्र की प्रकृति और उसका विज्ञान तथा धर्म से संबंध, पदार्थ एवं आत्मा, स्थान एवं समय, कारणता एवं विकास तथा मूल्य एवं ईश्वर के सिद्धान्त और ईश्वर, आत्म एवं मुक्ति, एवं कारणता, विकास एवं प्रतीति के सिद्धान्तों के विशेष संदर्भ सहित भारतीय दर्शन (धर्मनिष्ठ और धर्म विरोधी प्रणालियों सहित) का इतिहास।

20. मनोविज्ञान

मनोविज्ञान :—उसका स्वभाव, क्षेत्र एवं अध्ययन की विधियाँ, मनोविज्ञान में प्रयोगीक विधियाँ।

मानवीय विकास के कारक:—आनुवंशिक की एवं परिवार।

अभिप्रेरणा भावनाएं एवं संवेग, उनका स्वभाव एवं विकास, संवेगों के सिद्धांत, चरित्र का विकास।

संश्लानात्मक प्रक्रियाएं, संवेदन, प्रत्यक्ष ज्ञान, अधिगम, स्मरण शक्ति तथा विस्मरण, और मनन।

प्रक्रा एवं योग्यताएं :—संकल्पना और माप, व्यक्तित्व-स्वभाव निर्धारक तत्व, सिद्धान्त, और मूल्यांकन।

दलगत प्रक्रियाएं एवं दलगत प्रभाव, समूहगत व्यवहार, नेतृत्व एवं मनोलब, अभिवृत्ति एवं अपकृति, सामाजिक-परिवर्तन।

अपसामान्यता की संकल्पना, मत-स्तोप और मनोविज्ञानिक विकारों के मुख्य रूपों की पहचान एवं कारण, सामाजिक विकृति विज्ञान और बाल-अपराध—कारण और उपाय चिकित्सा विधियाँ के मुख्य रूप।

21. विधि I

1. विधि शास्त्र : विधि संकल्पना: विधि के प्रकार; सकारात्मक विधि, न्याय प्रशासन। विधि के स्रोत; विधि के तल जिनमें विधिक अधिकार और कर्तव्य शामिल हैं; वायितायें स्वमित्य कब्जा विधिक व्यक्तित्व; सम्पत्ति

2. संविधान विधि : भारत की संविधान विधि जिसमें प्रशासनिक विधि शामिल है, ब्रिटिश संविधान के भूल सिद्धांत।

3. टार्ड्स विधि जिसमें टार्ड्स के लिए राज्य की वायिता शामिल है।

4. वांडिक विधि (भारतीय दण्ड संहिता)।

5. साक्ष्य विधि : सूर्सगति और प्रकल्पनायें: साक्ष्य के प्रकार मौखिक और लेख्य साक्ष्य प्रायिक और माध्यमिक साक्ष्य: प्रमाण-भार विवंधन; अदालती नोटिस।

22. विधि II

1. संविदा विधि के सामान्य सिद्धांत (भारतीय संविदा अधिनियम की धारा 1 से 75 तक)।

2. भारतीय संविदा अधिनियम के विशेष संदर्भ में क्षति पूर्ति विधि गारंटी गिरवी और एजेंसी।

3. भारतीय विधि के विशेष संदर्भ में सामान विक्री विधि, समेदारी विधि पराक्राम्य उपकरण तथा बैंकिंग (सामान्य सिद्धांत)।
4. समवाय विधि।

23. विधि III

अंतर्राष्ट्रीय विधि की कृति और स्रोत। अंतर्राष्ट्रीय विधि का इतिहास अंतर्राष्ट्रीय विधि का संप्रदाय अंतर्राष्ट्रीय विधि और देश विधि।

अंतर्राष्ट्रीय विधि में व्यक्तियों के रूप में राज्य। अंतर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व का अधिग्रहण और हानि। राज्य मान्यता। राज्य उत्तराधिकार।

राज्य के अधिकार और कर्तव्य समानता का सिद्धांत। राज्यों का क्षेत्राधिकार।

संघिया।

अंतर्राष्ट्रीय संवर्ग के एजेंट/राजनियक एजेंटों के विशेषाधिकार और उन्मुक्ति व्यक्ति और अंतर्राष्ट्रीय विधि। अन्य देशीय निवासी राष्ट्रिकता। दैशीकरण। राष्ट्रीयोनता। प्रत्यर्पण। युद्ध अपराधी।

अंतर्राष्ट्रीय विवादों को तय करने का ढंग।

युद्ध। घोषण। प्रभाव।

स्थल-जल और आयु-युद्ध के नियम।

आत्म रक्षा के लिए युद्ध: सामुहिक सुरक्षा। क्षेत्रीय समझौते। युद्ध को अवैध घोषित करना युद्धकारी दखल के नियम। युद्धकारिता और राज्य प्रतिरोध।

युद्ध के ढंग। युद्ध-कंडी। निरीक्षण और तलाशी का अधिकार।

नौजितमाल न्यायालय।

नाकाबन्दी और विनियिद्ध।

तटस्थता और तटस्थीकरण। युद्ध में तटस्थ देशों के अधिकार और कर्तव्य। अतटस्थ सेवा। संयुक्त राष्ट्र के चार्टर के अधीन तटस्थता।

संयुक्त राष्ट्र का चार्टर और राष्ट्र संघ का प्रतिज्ञापन संयुक्त राष्ट्र के प्रमुख अंग। विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठन।

उम्मीदवारों से आशा की जाती है कि वे अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय में दिए गए फैसलों सहित मामलों की जानकारी दे सकेंगे।

24. प्रयुक्त यांत्रिकी

निर्माण

छत्कंडी के सम्बन्धित में प्रयुक्त सामग्री पर विचार।

इस्पात और इमारती लकड़ी। छत्कंचियों के प्रतियल का विभिन्न पद्धतियों से निर्धारण। अचल भार और वायु दाव क्षेत्र और काईकारी प्रतिबल के घटक।

छत्कंचियों का डिजाइन : विभिन्न प्रकार के छत्कंचियों और छतादन कालरबीम और अधगोल कंचियों। स्तम्भों के डिजाइन में यूलर गोरडन रेकिन फिलर जान्सन और सरल रेखा के सूत्रों का उपयोग स्तम्भों का बहुकावकारक विभिन्न सूत्रों से प्राप्त स्तम्भों की तुलनात्मक सामार्थ्य को दर्शाने वाले

491GI/72—4

बक। कांटों के आकार का चयन। इस्पाती कार्य की परिसंज्ञा जोड़ एडब्ल्यूरिंगों का डिजाइन सिरों को जमाने के सहारे देने की पद्धतियां।

संरचनाओं के डिजाइनों में प्रतिफल के बृतों और वीर्घ-बृतों तथा अत्येक्षण प्रमेय का अनुप्रयोग।

इसे लोहे और इस्पात से स्तम्भ: इस्पाती स्तम्भों के साथ प्लेज और बेव कनेक्शन: टोपियों आधार स्तम्भों की तिथिक तान।

नींव : सुरक्षित दाव स्तम्भों की नींव। पटियां नींव, बाहुधरन नींव, शंनीरीदार नींव। कूप। स्थूण।

पुरता वीषार और मिट्टी के दाव: रेकिन सिद्धांत, वेज सिद्धांत, विकंर और ढलाई की ग्राफीय रचनाएं, संशोधनों सहित। चिनाई में विभिन्न प्रकार की पुरता वीषारों का डिजाइन।

जंची चिनाई और इस्पाती चिमनियाँ: सिद्धांत और डिजाइन।

इस्पाती और पक्के जलाशयों का डिजाइन: वायु दाव के विचार से।

ठांचेदार संरचनाओं के विकास और अतिरिक्तागी ठांचों में प्रतिबल आदि का अवधारण।

कैचियों आबद्ध धरनों और तीन पिनी परबलयिक, अर्ध-वीर्घ वृत्ताकार तथा अर्ध वृत्ताकार डाटों पर समान रूप से वितरित और अनियमित भार के बकन धूर्णन और कर्तन के प्रभाव-आरेख।

गुम्बद डिजाइन के सामान्य सिद्धांत।

निर्माण, डिजाइन के सिद्धांत, [निर्माणों पर भार का विचार इस्पात, कर्म गड्ढर आदि।

पुल

ऊपरी हांचे का डिजाइन। चरमारों और वायु दावों के कारण हुए बंकन धूर्णन का ग्राफीय और वैश्लेषिक पद्धतियों से निर्धारण। पक्के पुलों और पुलियों का डिजाइन।

प्लेज बेच गड्ढर। प्रतिबलों का विश्लेषण।

बारेन और जालदार गड्ढर।

तीन पिनी डाट दो पिनी और दूढ़ डाट।

झूला, बाहुधारन और नलिकाकार पुलों के डिजाइन पर सामान्य विचार इस्पाती डाटदार पुल।

झूलना पुल।

प्रबलित कंकीट

कर्तन, बंध और विकर्ण तनाव, इसका स्वरूप, प्रबलन का मूल्यांकन और स्थान।

सरल और दोहरी प्रबलित धरन और अनुकालंब धरन का डिजाइन।

प्रबलित कंकीट स्तम्भों और स्थुनाओं का सिद्धांत और डिजाइन।

पटियों निवों का डिजाइन।

सरल बाहुधरन और पुरतेदार धारक वीषारों का डिजाइन।

प्रबलित कंकीट कंकीटों के लिए तुल्य जड़ता-घर्षण।

प्रत्यास्थ विकास का सिद्धांत और प्रबलित कंकीट डाटों में प्रतिबलों के अन्वेषण की रूप-रैखा।

सामान्य

प्रतिबल विश्लेषण, विकृति प्रत्यास्थता सीमा और चरम सामर्थ्य का विश्लेषण। प्रत्यास्थ स्थिराकों में परस्पर संबंध। किसी संरचना अवयव में कार्यकारी प्रतिबलों के लिए लानहार्ड-बेरोध सूत्र और उसके अनुप्रस्थ काट के क्षेत्र का अवधारण। प्रतिबलों पुनरावृत्ति। अचल मारों के लिए वंकन धूर्णन और कर्तन-बल के आरेख दाँचों में प्रतिबलों का ग्राफीय अवधारण वायुदाव का प्रभाव, कांटों की पद्धति। बंकन (M/I-F/Y-E/h) के कारण धरन की अनुप्रस्थ काट में प्रतिबल, मिथित और संयुग्म प्रतिबल। मिट्टी के दाब का रैकीन सिद्धांत, नीवों को गहराई खसकों की सामर्थ्य ज्ञानीदार नीव, मिट्टी के दाब का ब्लास सिद्धांत रेबान के कारण परिवर्तन।

बलमारों के लिये वंकन धूर्णन कर्तन बल के आरेख। समान और समान रूप से बदलते हुए प्रतिबल का विश्लेषण धरनों के वंकन का प्रत्यास्थता-सिद्धांत धरनों में वंकन और कर्तन प्रतिबल, काट का मांपांक और तुल्य क्षेत्र। उत्क्रेंड भारत के कारण जोड़ में अधिकतम और न्यूनतम प्रतिबल। बांधों और चिमनियों में प्रतिबल: ब्लाक की स्थिरता, कार्य संरचनायें। वापिन खोलों में प्रतिबलों और रिवेटदार जोड़ों का डिजाइन: थाम के संबंध में आयलर का सिद्धांत, रैकिन, गार्डर और अन्य सिद्धांत के कारण परिवर्तन ऐंठन, संयुक्त ऐंठन और संकंत विक्षेप। आबद्ध धरने, अनेकालंब धरने और त्रिपूर्ण प्रमेय। डांटों का प्रत्यास्थता-सिद्धांत, पक्की डांटे।

25. समाज शास्त्र

समाज-शास्त्र का स्वरूप तथा विषय क्षेत्र और अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ उसका संबंध, समाज, उसका स्वरूप तथा गठन; व्यक्ति और समाज, सामाजिक अन्योन्यक्रिया; समूह; समूह-व्यवहार; संस्कृति; संस्कृति और व्यक्तित्व; मीड व्यवहार, नेतृत्व; समाजीकरण; सामाजिक परिवर्तन और आयोजन; नगरीकरण तथा नगरवाद; ग्रामीण समुदाय; सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत; संस्था और समितियां-परिवार और समोत्तता; सामाजिक स्तरीकरण-जाति और वर्ग; सामाजिक मान्यतायें—परंपरायें, रुद्धियों और लोकचार; सामाजिक धर्म नियंत्रण; सामाजिक विगठन; समाज और समंजन; मानवीय परिस्थित शास्त्र और जनसंख्या—जनसंख्या की वृद्धि और जनसंख्या नियंत्रण।

उम्मीदवारों से यह अपेक्षा की जायेगी कि वे तथ्यों द्वारा सिद्धांतों का निरूपण करें तथा सिद्धांतों की सहायता से समस्याओं का विश्लेषण करें। उनसे भारतीय समस्याओं का विशेष जानकारी अपेक्षित होगी।

भाग—ग

परिशिष्ट II के भाग II के उप भाग (ग) के अनुसार

1. (क) उच्चतर विशुद्ध गणित:

- (1) आधुनिक बीजगणित तथा स्थनन विज्ञान।
- (2) वास्तविक चरों के फलनों का विश्लेषण।
- (3) सम्मिश्र चरों के फलन।
- (4) ज्यामिति तथा
- (5) अवकल समीकरण।

(1) आधुनिक बीजगणित—समूहों, जयसमूहों, प्रसामान्य उपसमूहों। खंड समूहों? समरूपता तथा एक समाकारिता। एकैक समाकारिता पर प्रमेय। ऋमयय समूहों। रूपांतरण समूहों। स्वसमाकृतिकता के समूहों। आतंरिक स्वसमाकृतिकता। प्रासामान्यकर्त्ता, केन्द्र तथा दिक् परिवतक। केले और सोलों के प्रमेय। परिमितीय जनक आवेली श्रृङ्खों के लिये विशेषज्ञ प्रमेय। निश्चरों। प्रसामान्य श्रेणी, संयोजक श्रेणी, आर्डेन—होल्डर प्रमेय। रिंग पूर्णकाय डोमेन। विभाजन रिंग। क्षेत्रों। आदर्श, प्रारंभिक तथा मैक्सिमल आदर्श, आदर्श के धनराशि तथा गुणनफल। भागफल रिंग। रिंगों, के लिये ऐकैक समाकारिता प्रमेय। पणीकीय डोमेन के भागलों का क्षेत्र। योविलडी डोमेन। मुख्य आदर्श डोमेन। अद्वितीय गुणनखंडमूल्डोमेन। दिक् परिविपत रिंग के ऊपर बहुपद रिंग अद्वितीय गुणनफल डोमेन से बहुपद गाणांकों सहित। नियोगस्थिन रिंग। वैक्टर स्थानों। वैक्टर स्थान का आधार विपच। लांबिकता। आदेशगुणनफल। आर्द्धनिर्माल आधार।

क्षेत्र विस्तार। विभाजकफील्ड। पृथक् होने योग्य और प्रथक् न होने योग्य विस्तार। परिमित विस्तारों का गोलोइस का प्रमेय। करणी द्वारा समीकरणों के हल का अनुप्रयोग। परिमित क्षेत्र।

स्थान वैज्ञानिक स्थान। भानचित्रों तथा आस-पास, बंद-समच्चय, स्वांतर समुच्चय स्थान वैज्ञानिक स्थान के लिये आधार उपस्थान, पाशफल स्थान। स्थान विज्ञान तथा स्थान विज्ञानों के सामर्थ्य की परिभाषा के विभिन्न तरीके। मैट्रिक स्थान, यविलडी स्थान तथा मैट्रिक स्थानों के अन्य उदाहरण। दो स्थान वैज्ञानिक स्थानों के संयोजकों कार्तीय गुणनफल, स्थानीय संमोजन। पथ के अनुसार संयोजन। संहिता स्थान, संहित स्थानों के गुणनफल, स्थानीय संहित स्थानों। पार्थ्य-अभिगृहीत। हाजडीफ, प्रसामान्य तथा नियमित स्थान।

(2) वास्तविक चरों के फलनों का विश्लेषण:

वास्तविक संख्याओं का उकेकाइंड का प्रमेय। परिवर्ध और सीमायें। अनुक्रमों। संतत तथा एक समान संतत। अवकालनीयता अस्पष्ट फलनों। फलनों के अधिकतम और न्यूनतम। रीमन समाचे कलन। साध्यमान प्रमेयों? अनुवित पूर्णकीयों (रेखां, समतल तथा गणांक पूर्णकीयों)। रेखा समतल तथा गुणांक पूर्णकीय ग्रीन और स्टकों के प्रमेय।

एक समान अभिसारी श्रेणियों के एक समान अभिसरण की श्रेणियों और गुण। अपरिमित गुणनफलों का अभिकरण। समुच्चय के फलनों के आयोनामीलटी तथा सम्पूर्णता। फूरिये श्रेणियों तथा फूरिये प्रमेय। वायरस्ट्रास समिग्रन प्रमेय। लबंस्यु का भाप। प्रबंधित फलनों के मापीय फलन तथा लेबेस्यु पूर्णकीय।

(3) विश्वितवर के फलन—उस के समतल और रीमैन के गोला परसंमिश्र संख्याओं का निरूपण। द्विजरएकघाती रूपांतरणों विश्लेषिक फलनों। कौची का प्रमेय तथा उसका विलोभ। कौची का पूर्णांकीय सूत्र। टेलर तथा लरेंट की श्रेणियां। वियोज-वाइल का प्रमेय। विचित्रतायें। शून्यों/अवयोगों का प्रमेय तथा पूर्णकीयों के मूल्योकन के लिये इस का अनुप्रयोग। बीजगणित का मूल प्रमेय तथा बीजगणित के समीकरणों के मूल। अनुकोण

निरूपण। विश्लेषिक संगत। मिटेगलेयर का प्रमेय। वाइरे-स्टर्स का गुणनखंड का प्रमेय अधिकतम मापांक सिद्धांत। हैडामार्ड का त्रिवृतीय प्रमेय।

(4) ज्यामिति :—समतल परिच्छेदों तथा द्विघातियों की जन रेखायें द्विघाती पृष्ठ तथा इसका विश्लेषण। संतामि द्विघाती। द्विघाती की पैंसिलों का प्रारंभिक प्रमेय। सोला में वर्क/वक्रता तथा ऐठन। फरेट के सूक्त। आवरण। विकास योग्य समतल। विकास-योग्य वक्र से संगुणित, रेखजप्रश्न। पृष्ठों की वक्रता। वक्रता की रेखाएं संयुग्मी रेखायें। उपगमी रेखायें। अल्पांतरी।

(5) अवकल समीकरण

सामचरयअवध अवकल समीकरण :—पिकार्ड का अस्तित्व प्रमेय। प्रारंभिक तथा सीमांत प्रतिबंध। चरणुगांकों के साथ रेखाकार अवकल समीकरण। श्रेणियों में समाकलन बेसिल तथा लेंगेडर फलन। संपूर्ण तथा युगपत अवकल समीकरण।

आंशिक अवकल समीकरण

आंशिक अवकल समीकरणों की बनावट। आंशिक अवकल समीकरणों के पूर्णांकीय के प्रकार। प्रथम क्रम के आंशिक अवकल समीकरण चारपिट का तरीका। अचर गुणकों के साथ औपिक अवकल समीकरण। मांगो का तरीका। द्वितीय क्रम के आंशिक अवकल समीकरणों का वर्गीकरण। आप्लेस समीकरण तथा इसकी सीमांतमान समस्यायें। तरंग समीकरण तथा ऊष्माचालन के समीकरण का हल।

1. (ख) उच्चतर अनुपमुक्त गणित :—

शामिल विषय ये होंगे :—

- (1) गति विज्ञान
- (2) द्रवगति विज्ञान
- (3) प्रत्यास्थता
- (4) विद्युत तथा चुंबकत्व
- (5) आपेक्षिता का विशेष प्रमेय।

(1) गति-विज्ञान :—कण तथा ऊर्जा। भूगतिमान से संबंधित गति। फौकाल्ट का लोलक। जनक निप्रेशांक। होलोनोमिक तथा अहोलोनोमिक प्रणालियां। छोटे-दोलन। यूलर के ज्यामितीय तथा गतिक समीकरण। लुइकी गति। न्यूनतम कर्मका हैमिलटन का सिद्धांत। हैमिलटन के विहिट समीकरण तथा उनके समाकल निश्चर। संस्पर्श रूपांतरण।

(2) द्रवगति विज्ञान

सामान्य :—सांतत्य का समीकरण संवैग तथा ऊर्जा।

इनमिसिड प्रवाह प्रमेह :—द्विविभगति। प्रवाही गति। स्लोत तथा अभिगत। प्रतिबिम्ब के तरीके तथा इसके अनुप्रयोग तरल में बेलन तथा गोला की गति। भ्रमिलगति। तरंगे।

विस्कोस प्रवाह प्रमेह :—प्रतिबल तथा विकृति विश्लेषण। नेवियर-स्ट-स्टोकेल समीकरण। भ्रमिलता। अर्जा-शय। समानांतर पट्टिकाओं के बीच प्रवाह। नली में होकर प्रवाह। गोला के पार धारी प्रवाह गति। सीमांतस्तर संकल्पना-द्विविम प्रवाहों के लिए सीमांतस्तर। पट्टिका के साथ सीमांतस्तर। समर्थता हल। संवर्ग तथा ऊर्जा समाकल। करमत तथा पोहलहौसेन का तरीका।

(3) प्रत्यास्थता :—कातीर्य टेंसर। प्रतिबल तथा विकृति विश्लेषण कार्य तथा ऊर्जा। सट वेनेन्ट का सिद्धांत। दंड और पट्टिकाओं का भोड़ना। एठन।

(4) विद्युत तथा चुम्बकत्व :—स्थिर वैद्युत चालक तथा संघारित चालकों की प्रणालियों। परावैद्युत। संकल्पनाओं के तरीके तथा इनके अनुप्रयोग। जालों में विद्युत धाराओं के प्रवाह चुंबकत्व। चुंबकत्व वैद्युत। प्रेरण। प्रत्यावर्ती धारायें मेक्सवल के समीकरण दोलनी परिपथ।

(5) आपेक्षिकता का विशेष प्रमेय :—गलोलियन सिद्धांत। माइकल्सन-मोरलेय प्रयोग। आपेक्षिकता के प्रमेय के सिद्धांत। लोरेंज रूपांतरण तथा इसके परपद। मैक्सवेल के समीकरणों में लोरेंज निश्चर। निर्वात का विद्युत गार्टक। द्रव्य तथा ऊर्जा।

2. उच्च भौतिकी

द्रव्य और ध्वनि के सामान्य गुण धर्म :—विरूपणेर्य पिडों की यांत्रिकी। कुंडलिनी कमानी केशिका घटनायें। ध्वनिक मापन पराश्रव्यिकी।

ऊष्मा और ऊष्मागतिकी :—ग्राउनी गति। गैसों का अणुगति सिद्धांत। निम्न दाढ़ पर गैसों में मिलने वाली अभिगमन-घटनायें उष्मागतिक कार्य और उनके अनुप्रयोग /घनाकृतियों और गैसों की विशिष्ट ऊष्मा। निम्न तापमान लाना और उन्हें मापना। विकिरण और ऊर्जा वितरण का लैक नियम।

प्रकाश विज्ञान :—समाक्ष समिति प्रकाशित संलों का सिद्धांत प्रायोगक स्पेक्ट्रम-विज्ञान। विद्युत चुम्बकीय सिद्धांत प्रकाश प्रकीर्ण। रामन-प्रभाव। विवर्तन। ध्रुवण।

विद्युत और चुम्बकत्व :—गाउस-प्रमेय। विद्युतमापी चुम्बकीय शैथिल्य। स्थायी चुम्बकों का सिद्धांत। वैद्युत राशियों का मापन। प्रत्यावर्ती धारा सिद्धांत। साइक्लोट्रान और उच्च बोल्टता के उत्पादन की अन्य विधियाँ। वेतार तरंगों का प्रेषण और अभिग्रहण। टेलीविजन।

आधुनिकता भौतिक :—आपेक्षिकता का विशेष सिद्धांत। प्रकाश और द्रव्यों की द्वैत प्रकृति। शरोइडिजर समीकरण और साधारण मामलों में उनके हल। हाइड्रोजेन और हीलियन स्पेक्ट्रा जीमन और स्टार्क प्रभाव। पोली नियम और तत्वों का आवर्ती वर्गीकरण। एक्स किरण और एक्स-फिरण स्पेक्ट्रम-विज्ञान। काम्पटन प्रभाव। ध्रातुओं में चालन। अतिचालकता। तापायनिकी तापीय आयनन परमाणु नाभिकों के गुणधर्म। द्रव्यमान स्पेक्ट्रम-विज्ञान। मूलकण और उसके गुणधर्म। नाभिकीय अभिक्रियायें। अंतरिक्ष-फिरण। नाभिकीय विखंडन और संलयन।

3. उच्च रसायन

आकार्बनिक रसायन :—परमाणु संरचना। रेडियोएक्टिवता, प्राकृतिक एवं कृतिम। नाभिकों का विद्युण तथा संलयन। स्यास्थनिक। रेडियोएक्टिवसूचक। रेडियोएक्टिव श्रेणियां। परायुरेनियम तत्व। तत्वों और उनके मुख्य यौगिकों, विशेषतः, Be, W, TI, V, MO, HF, ZV, तथा दुर्लभ मृदा तत्वों और उनके मुख्य यौगिकों, का रसायन।

उपसहस्रयोगिता-यौगिक । अंतराभावाशी तथा अतत्व-योगमितीय यौगिक । मुक्त मूलक । विशेषण की प्रगत भौतिक-रासायनिक विधियां ।

कार्बनिक रसायनः—अनुवाद तथा हाइड्रोजनबन्ध विरचन सहित कार्बनिक रसायन के सिद्धांत । महत्वपूर्ण कार्बनिक अभिक्रियाओं की क्रियाविधि समनुरूपण सहित विच्यास-रसायन ।

विभिन्न कार्बनिक यौगिकों के वर्गों, विशेषतः निम्नलिखित वर्गों का रसायन : बहु-शक्तराइड, टर्पीन, प्राकृतिक रंजक द्रव्य एले-केलाइड, विटामिन, महत्वपूर्ण हामोन, मलेरिया रोधक, क्लोरीन कीट-नाशी, मुख्य पतिजैविक, तथा संशिलष्ट बमूलक ।

भौतिक रसायनः—अणुगतिक सिद्धांत, ऊप्पायति की विज्ञान के तीन नियम तथा भौतिक रसायनिक प्रक्रमों में उनका अनुप्रयोग आणविक संरचना से संबंधित तथा उसका स्पष्टीकरण करने वाले भौतिक-रासायनि गुणधर्म । क्वांटम-सिद्धांत तथा रसायन में इसका अनुप्रयोग ।

रासायनिक तथा प्रकाश रासायनिक अभिक्रियाओं की विक्रयाविधि तथा बलागतिकी । उत्प्रेरण । अधिलोषण । पृष्ठरसायन । कोलायड । विद्युत-रसायन ।

4. उच्च वनस्पति शास्त्र

उम्मीदवारों को भारतीय वनस्पति समूह पर विशेष ध्यान देते हुए, वर्तमान और विलुप्त दोनों प्रकार के वनस्पति -जगत् के मुख्य समूहों (अर्थात् शेवाल, कवक, त्रियोफाइटा, टेरिस्टो-फाइटा, जिन्मोस्मर्म और एजिओस्मर्म) का उच्च ज्ञान होना चाहिए ।

वर्गीकरण-वनस्पतिविज्ञानः—एजियोस्मर्मस के महत्वपूर्ण समूहों का सामान्य ज्ञान तथा उनके वर्गीकरण के सिद्धांत ।

भरीरः—पादऊपकों का उद्भव, स्वरूप और विकास और पारस्परिक तथा कार्यिकीय दृष्टि से उनका वितरण ।

पारिस्थितिकीः—भारत की वनस्पति के मुख्य प्रकार, उनका वितरण और वैनस्पतिक अध्ययन का महत्व । पादप भूगोल के सिद्धांत ।

कार्यिकीः—पादप कार्य के महत्वपूर्ण कार्यिकीय प्रक्रम का उच्च ज्ञान । इसमें पादप जीव रसाइन ज्ञान भी शामिल है । **पादप रोग विज्ञानः**—जीवाणु, कवक, विषाणु द्वारा होने वाले महत्वपूर्ण पादप रोगों तथा आर्थिकी रोगों और उनके नियन्त्रण की विधियों का उच्च ज्ञान ।

आर्थिक वनस्पति विज्ञानः—आर्थिक दृष्टि से उच्च एवं उपोष्णक क्षेत्रों के विशेष रूप से भारत के महत्वपूर्ण पौधों का अध्ययन ।

सामान्य जीव विज्ञानः—विभिन्नता, आनुवंशिकता क्रम विकास कोशिका—विज्ञान तथा आनुवंशिकी के मूल तत्वों और आधुनिक विकास एवं पादम प्रजनन के सिद्धांतों का ज्ञान ।

5. उच्च प्राणिविज्ञान

आकाडटों और कार्डटों, विशेषकर भारतीय प्राणि समूहों, का वर्गीकरण, जीवपरिस्थिति की, आकारिकी, जीवनवृत्त तथा संबंध ।

अंग-नंत्र का क्रियात्मक आकृतिविज्ञान (रूप, संरचना तथा कार्य) । कशेरूकी भूणविज्ञान की रूपरेखा ।

प्राणियों का वर्गीकरण व्यक्तिवृत्त, अनुकूली समाभिस्पता तथा विषाभिस्पता, पशु-परिस्थिति की, प्रवास तथा रंजन ।

विकासः प्रमाण, वाद और उनकी आधुनिक व्याख्याएं । अनुकूलन, अंतरिक्ष में प्राणियों का वितरण ।

कोशिका, कोशिका-विज्ञान, आनुवंशिकी, लिंग-निर्धारण तथा अंतः साध-विज्ञान के ज्ञान में नवीन प्रगतियां ।

भौतिक, रसायनिक तथा जैविक कारकों के सामिश्र के रूप में वातावरण तथा व्यक्ति, जनसंख्या और समुदाय के रूप में जीवों की आधुनिक संकल्पना ।

निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निवन्धः प्रोटोजोआ तथा रोग, कीट तथा मानव, परजीवी, विज्ञान, अलबण जल तथा समुद्री जीव विज्ञान, सरोबर-विज्ञान तथा मत्स्य-जीवविज्ञान, ज्ञान तथा सभ्यता के लिए महान जी-वैज्ञानिकों को योगदान ।

6. उच्चभूविज्ञान

सामान्य भूविज्ञानः—भूविज्ञान का इतिहास तथा विकास इसकी विभिन्न शाखाएं तथा विज्ञान की अन्य शाखाओं से इसका संबंध । पृथ्वी का उद्भव, विकास, संरचना, रचना, गर्भ तथा आयु । भूआकृति-विज्ञान, ऐडियोरूस्टिक्टवता तथा भूविज्ञान, भूकंप, विज्ञान, ज्वालामुखी-विज्ञान, भू-अभिनतियों, समास्थितियों में उसका अनुप्रयोग । महाद्वीपों तथा महासागर द्वे रैण्डियों का विकास । पृष्ठ एजेन्सियों और अन्तः भूमिका एजेन्सियों की भूवैज्ञानिक क्रिया महाद्वीपीय विस्थापन ।

संरचना तथा क्षेत्रभूविज्ञान-पट्टल गिरणः—पौध विरुपण, पर्वतों का उद्भव, स्थल-आकृति तथा बनन सम्बन्धी संरचनाएं । भारत का विवरणिक इतिहास । भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण एवं भूमापन की विधियां ।

स्तरिता-शैल-विज्ञान तथा जीवाशम विज्ञानः—स्तरित शैल-विज्ञान के नियम तथा सह सम्बन्ध । भारतीय स्तरित शैल विज्ञान का विस्तृत अध्ययन तथा विवरण स्तरित शैल विज्ञान की रूपरेखा विभिन्न कालों में पृथ्वी, समुद्र, प्राणी समूहों तथा वनस्पति समूहों का विभाजन । जैव-विकास के सिद्धांत । जीवाशम—उनका महत्व । प्रतिरूपी इन्डेक्स जीवाशम तथा सह सम्बन्ध, भारत विशेष संदर्भ में अक्षेत्रकी का विस्तृत अध्ययन । और भूवैज्ञानिक इतिहास ।

क्रिस्टल विज्ञान तथा खनिज विज्ञानः—क्रिस्टल आकारिकी क्रिस्टल-विज्ञान के नियम, क्रिस्टल तंत्र तथा वर्ग, प्रकृति यमलन क्रिस्टलों का कोपामापी तथा ऐक्स-किरण अध्ययन । परिमाण-संरचना । शैल कर तथा आर्थिक खनिजों का भारत में उनके अस्तित्व के विशेष संदर्भ में विस्तृत अध्ययन ।

शैल-विज्ञानः—आग्नेय अवसादी तथा कायन्तरित शैलों का उद्भव और विकास संरचना खनिज घटक, गठन तथा वर्गीकरण । का यांतरण सहित शैलजनन । शैलरसायन । उल्का पिण्डों का अध्ययन । मुख्य भारतीय शैल प्रकारे ।

आर्थिक भूविज्ञान—अयस्क-उत्पत्ति, आर्थिक खनिजों का विर्गीकरण तथा अयस्क-स्थान निर्धारण। भारत के विशेष संदर्भ में आर्थिक खनिज क्षेत्रों का भूविज्ञान। खनिज उद्योगों का स्थान—निर्धारण (1) गुणधर्मों का मूल्यांकन खनिज अर्थशास्त्र खनिजों का संरक्षण तथा उपयोग। राष्ट्रीय खनिज नीति स्ट्रेटेजिक खनिज भूवैज्ञानिक, भूभौतिकीय तथा भूरासायनिक पूर्वेक्षण तकनीके तथा उनके अनुप्रयोग। खनन प्रतिचयन अमस्कप्रसाधन तथा अयस्क सज्जीकरण की मुख्य विधियाँ। भूमि तथा भौम जल। सामान्य इंजीनियरी समस्याओं में भूविज्ञान का अनुप्रयोग।

7. उच्च भूगोल

पर्वतों के दो भाग होंगे :—पहले भाग के अन्तर्गत भारत के विशेष संदर्भ में भौतिक मानव तथा आर्थिक भूगोल का प्रगत अध्ययन होगा।

दूसरे भाग में निम्नलिखित विशेष विषयों का प्रगत अध्ययन शामिल होगा और उम्मीदवार से आशा की जाती है कि उसे कम-से-कम दो विषयों का ज्ञान होगा :—

भू-आकृति विज्ञान। जलवायु विज्ञान (मौसम के पूर्वानुमान तथा विश्लेषण की नई विधियों सहित)। मानचित्रकला (समकोणीय गोलीय त्रिकोण के द्वाल, थियोडोलाइट के उपयोग, तियर्क विभूष्य जाल जैसे प्रगत प्रक्षेप, आदि सहित)। ऐतिहासिक भूगोल। राजनीतिक भूगोल। भौगोलिक विचार तथा खोजों का इतिहास।

8. अंग्रेजी साहित्य

प्रश्न पत्र अंग्रेजी साहित्य (1798-1935) के अध्ययन पर आधारित होगा, जिसमें निम्नलिखित रचनाकारों का विशेषाध्ययन अपेक्षित होगा :—

वर्डस्वर्च, कोलरिज, शैली, कीट्स, लैम्ब, जैन, औरिटन, कारलाइल, रस्किन, थैकरे, राबर्ट ब्राउनिंग, जार्ज इलियट, जी० एम० होपकिन्स, शां, डब्ल्यू० बी० यीट्स, माल्सवार्डी, जे० एम० सिंज, ई० एम० फोस्टर तथा टी० एम० इलियट। स्वयं पुस्तकों पढ़ने का प्रमाण अपेक्षित होगा।

प्रश्न पत्र इस प्रकार बनाए जायेगे जिनसे इन अवधि की प्रमुख साहित्यिक धाराओं का ज्ञान ही नहीं, अपितु उनके आलोचनात्मक मूल्यांकन की जांच भी की जा सके। इसमें उस अवधि, की सामाजिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से सम्बन्धित प्रश्न भी शामिल किये जा सकते हैं।

9. (क) भारतीय इतिहास :—(चन्द्रगुप्त मौर्य से हर्ष तक)

मौर्य वंश—साम्राज्य का अभ्युदय तथा दृष्टीकरण। प्रशासन तथा अर्थव्यवस्था। साम्राज्य का पतन।

मगध का पतन

शुंग तथा कण्य वंश—चोल, चेर तथा पाण्ड्य।

पश्चिम से सम्पर्क उत्तर भारत-भारत यूनान।

दक्षिण भारत-रोमन व्यापार।

मध्य एशिया तथा भारत।

शक वंश। कुशान वंश।

शत्रुघ्नानक वंश।

एशियाई देशों से भारत का सम्पर्क—बौद्ध मत का प्रसार।

गुप्त साम्राज्य

भारतीय शास्त्रीय संस्कृति का निर्माण। भारत के और समुद्रपारीय सम्पर्क। गुप्त वंश का पतन/हृष्ण जाति।

उत्तर भारत बदली हुई अर्थ व्यवस्थाएं तथा राजनीति पर उनका प्रभाव।

वाक्टक तथा चालोक्य वंशों का अभ्युदय।

पल्लवों का अभ्युदय। हर्षवर्धन।

हर्षवर्धन

9. (छ) भारतीय इतिहास (मुगल साम्राज्य 1526-1707 राजनीति इतिहास—

भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना, इसका दृष्टीकरण तथा विस्तार। सूर राज्यान्तराव। मुगल साम्राज्य का चरमोत्कर्ष। अकबर, जहांगीर और शाहजहां। मुगलों के फारस तथा मध्य एशिया से सम्बन्ध। प्रशासनिक पद्धति का विकास। मुगल दरबार में यूरोप के लोग, प्रारम्भिक पूर्तगाली, फांसीसी तथा अंग्रेजी बस्तियाँ। पतन का प्रारम्भ। औरंगजेब, उनके युद्ध तथा नीतियाँ।

सांस्कृतिक, धार्मिक तथा सामाजिक जीवन—

सांस्कृतिक जीवन तथा कला का विकास, वास्तुकला तथा साहित्य।

धार्मिक आन्दोलन: भक्ति आन्दोलन, सूफीमत, दीने-इस्लाही। मुगल बादशाहों की धार्मिक नीति।

आर्थिक जीवन, कृषि जीवन। भूधारण पद्धतियाँ। उद्योग। वाणिज्य तथा व्यवसाय। आयात तथा निर्यात। परिवहन व्यवस्था। भारत का ऐश्वर्य।

सामाजिक जीवन: दरबारी जीवन, नागरिक जीवन, ग्रामीण जीवन। वेणभूषा। रीति-रिवाज, खाद्य तथा पेय, मनोरंजन तथा मल, रघीहार, स्त्रियों की सामाजिक स्थिति।

9. (ग) भारतीय इतिहास III '1772 से 1950'

बंगाल तथा दक्षिण भारत में ब्रिटिश सत्ता का दृष्टीकरण भारत में ब्रिटिश सत्ता का विकास। ईस्ट इण्डिया कम्पनी तथा ब्रिटिश राज्य। सिविल सर्विस, न्याय पद्धति, पुलिस तथा सेना का विकास। नई भूमिकर पद्धति तथा भूधारण पद्धति का विकास। ब्रिटिश व्यवसाय नीति। भारत में ब्रिटिश राज्य का आर्थिक प्रभाव। 1857 का विद्रोह। भारतीय राज्यों के साथ सम्बन्ध विदेश नीति, तथा ब्रिटान व अफगानिस्तान के साथ सम्बन्ध। आधुनिक उद्योग तथा संचार साधनों का विकास। आधुनिक शिक्षा का विकास, प्रेस का विकास।

भारतीय पुस्तक: जातुति—राजा राम मोहन राय, ब्रह्मसमाज और विद्यासागर, आर्य समाज, थियोसोफिस्ट, रामकृष्ण तथा विवेकानन्द, सैयद अहमद खां सामाजिक सुधार आधुनिक भारतीय साहित्य का विकास।

भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन का अभ्युदय : इण्डियन नेशनल कांग्रेस (1885 से 1905) दावाभाई नारोजी, राणाडे, गोखले उग्र राष्ट्रवाद का विकास, विभाजन विरोधी आन्दोलन, स्वेदेशी तथा बायकाट आन्दोलन, तिलक व अरबिन्द घोष, होमरूल लीग तथा लखनऊ समझौता।

संविधानिक विकास—1861 तथा 1862 के अधिनियम, मिन्टो मार्ले सुधार, मौट फोर्ड सुधार, 1935 का अधिनियम।

महात्मा गांधी का राजनीति में प्रवेश तथा स्वतन्त्रता संग्राम। सत्ता-हस्तान्तरण : क्रिप्स मिशन, कैबीनेट मिशन, स्वतन्त्रता अधिनियम तथा विभाजन। 1950 का संविधान। स्वतन्त्र भारत : विदेश नीति, तटस्थला, धर्मनिरपेक्षता की योजना।

9. (घ) ब्रिटिश संविधान का इतिहास (1601 से 1950 तक)

ताज बनाम संसदः—

जम्स तथा संसद के बीच सम्बन्ध। अधिकारयाचिका। चाल्स तथा परमाधिकार बनाम सामान्य कानून। (गृह युद्ध)

संविधान प्रवर्तक—

लॉग संसद की सरकार। लिट्स संसद। प्रोटैक्टोरेट। पुनर्स्थापन। ग्लोरियम रिवॉल्यूशन। बिल आफ एइंयस।

ताज, कार्यपालिका तथा संसद।

राजा तथा उनके मंत्री। ताज का प्रभावाधिकार। मन्त्रिमंडल तथा संसद : 1936 का राजतन्त्रीय आपातकाल।

संसद का सुधार

सुधार अधिनियम तथा हाऊस आफ कामन्स। हाऊस आफ कामन्स तथा हाऊस आफ लार्ड्स। हाऊस आफ लार्ड्स का सुधार।

कामनवैल्थ (राष्ट्रमंडल)

कामनवैल्थ का उद्गम तथा विकास। वैस्मिटर का परिवर्तन। कामनवैल्थ सहयोग का कार्यव्ययन। कामनवैल्थ में ताज की स्थिति।

9. (ङ) यूरोपीय इतिहास (1871—1945)

यूरोप का औद्योगिक विकास—राष्ट्रवाद तथा लोक तांत्रिक और समाजवादी आन्वेषण का विकास।

जर्मन साम्राज्य, “तृतीय फ्रांसीसी गणराज्य”, हैब्सवर्ग, राजवंश राजतन्त्री रूप। संधियों और मैंशियों की नीति।

पूर्व संवंधी (ईस्टर्न) प्रश्न।

साम्राज्यवाद का उत्थान तथा निकट पूर्व, मध्यपूर्व अफ्रीका और सुदूर पूर्व में यूरोप के साम्राज्यवादी हित।

प्रथम विश्वयुद्ध का उद्गम तथा परिणाम।

रूस की क्रांति तथा उसके परिणाम।

वर्साइ समझौता, राष्ट्र संघ (लीग आफ नेशंज), विश्व व्यापी निरस्त्रीकरण के प्रयत्न सुरक्षा की खोज, फासिज्म तथा नाजिज्म का उदय और उसके अंतर्राष्ट्रीय परिणाम।

द्वितीय विश्व युद्ध।

10. (क) उच्च अर्थशास्त्र

आर्थिक विश्लेषण के कृत्य।

मूल्य का सिद्धांत। खपत और मांग का सिद्धांत। उत्पादन का संगठन। एकाधिकार का सिद्धांत। एकाधिकार का नियन्त्रण।

वितरण का सिद्धांत। किराया। पूंजी का सिद्धांत। धन तथा व्याज का सिद्धांत। बचत तथा विनीयोजन। बैंकिंग तथा उधार

सम्बन्धी नियम मजदूरी तथा नियोजन सम्बन्धी सिद्धांत। सामूहिक सौदाबाजी तथा औद्योगिक शान्ति।

राष्ट्रीय आय। आर्थिक प्रगति तथा वितरणात्मक न्याय।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धांत। विदेशमुद्रा। अदायगियों का योष।

व्यापारिक चक्र तथा उनका नियन्त्रण। सरकार का आर्थिक योग। आर्थिक कल्याण। लोक (हित) के साधन मूल्यांकन तथा नियमन।

कराधान के सिद्धांत—कराधान का प्रभाव क्षेत्र, सरकारी कर और व्यय के प्रभाव, घाटे का अर्थ प्रबन्ध और मुद्रा-स्फुर्ति आर्थिक विकास आयोजन।

10. (ख) उच्च भारतीय अर्थशास्त्र

युद्धकालीन तथा योद्धोत्तर अवधि में आर्थिक विकास प्राकृतिक साधन सामाजिक संस्थाएं। कृषि उत्पादन तथा वित्त। अन्त तथा अन्य कृषि उत्पादन का मूल्य निर्धारण तथा वितरण। भूमि सुधार। किसी विकासमयी अर्थ-व्यवस्था में कुटीर तथा लघु उद्योगों का स्थान। अधुनिक संगठित उद्योग का विकास। लोक कम्पनियों का नियमन। औद्योगिक सम्बन्ध तथा श्रम (दल) की समस्याएं। समिश्रित अर्थ व्यवस्था। सार्वजनिक क्षेत्र का अधिकार, क्षेत्र तथा दक्षता। भारतीय पूंजी तथा प्रत्यय पद्धति। रिजर्व बैंक का योगदान। जन-संघर्ष, समस्याएं तथा जनसंघर्ष सम्बन्धी नीति। बेरोजगारी तथा अपूर्ण रोजगारी। भारतीय राष्ट्रीय आय का निर्धारण। विदेशी व्यापार का नियमन। अदायगियों का योष भारतीय करारोपण पद्धति। संबंधी वित्त। आर्थिक विकास के लिए योजना। क्रमबद्ध योजनाओं का आकार तथा कांचा। स्त्रोत तथा कार्यान्वयन की समस्याएं।

11. (क) हास्त से लेकर आज तक के राजनीतिक सिद्धांत

ठेका (कान्ट्रीकट) तथा प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धांत-हास्त, लोक, रूस्सो। प्रभुता के मन्त्रव्य का विकास। इतिहासकार-बीको मौन्टेस्क तथा बर्क। उपयोगितावादी। विकासवादी। आदर्शवादी कान्ट, हेगल, भीन, ब्राडले तथा बोसंक वे। रुढ़िवाद तथा उदारवाद। मार्क्सवाद तथा समाजवाद व साम्यवाद की धाराएं। बहलवाद। फासिज्म। मनोविज्ञान का प्रभावि क्षेत्र। पूर्वी देशों में बीसवीं शताब्दी की विचारधाराएं।

11. (ख) राजनीतिक तथा लोक प्रशासन

राजनीतिक संस्थाएं—आधुनिक राष्ट्रों का विकास संसदीय तथा राष्ट्रपति सहित सरकारें। एक सत्ता तथा संघीय सरकारें। विधानांग कार्यपालिका तथा न्यायपालिका। प्रतिनिधित्व के प्रचार साम्यवादी तथा एक सत्ताधारी सरकारें।

लोक प्रशासन—आधुनिक सरकार में लोक प्रशासन। नीति-निर्धारित तथा उच्चवत्तर नियन्त्रण न्यायपालिका तथा कार्यपालिका। संगठन, प्रबंध, प्रकार तथा माध्यम। नियामक आयोग तथा लोक निगम। कर्मचारी वर्ग प्रशासन-सिविल सेवा तथा इसकी समस्याएं बजट तथा वित्तीय प्रशासन। प्रशासनिक अधिकार। न्यायालयों द्वारा नियन्त्रण। लोक सेवा तथा अनता।

11. (ग) संतराष्ट्रीय उम्बन्ध

भाग 1

राष्ट्रीय शक्ति के आधार और सीमाएं।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में शक्ति सिद्धांत तथा नीतिक का स्थान।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में अन्तर्राष्ट्रीय विधि का स्थान।

विदेश नीति के निर्धारण में राष्ट्रीय हित का योग।

शक्ति संतुलन का सिद्धांत।

अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का स्वरूप और उनके कार्य।

संयुक्त राष्ट्र संघ, उद्देश्य, संरचना और कार्य प्रणाली।

भाग 2

प्रथम विश्वयुद्ध के मूल कारण तथा शांति "समझौते" का स्वरूप।

राष्ट्र संघ (लीग आफ नेशंज) तथा दोनों युद्धों के बीच के वर्षों में सामूहिक सुरक्षा प्रणाली की स्थापना के लिए किए गए प्रयत्न।

द्वितीय विश्व युद्ध के मूल कारण।

परमाणु युग तथा पंरपरागत अन्तर्राष्ट्रीय संबंध पर इसके प्रभाव।

"शीत युद्ध" तथा विश्व राजनीति पर इसके प्रभाव।

नए राष्ट्रों का अभ्युदय तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर प्रतिमान में परिवर्तन।

संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत संघ, चीन, भारत तथा निम्नलिखित में से किसी एक देश की विदेश नीति :—

ग्रेट ब्रिटेन, जापान, जर्मनी तथा फ्रांस।

12. (क) उच्च अमूर्त विषय विज्ञान (ज्ञान-मानोविज्ञान सहित) :

उम्मीदवारों से यह आशा कि जाएगी कि वे कान्ट से लेकर आजतक के प्रमुख दार्शनिकों (नामतः कान्ट, हीगल, ब्राडले, रायस, क्रोचे, मूर, यसल, जेम्स, शिल्लर, ड्यूर्ह, वगसन एसेक्साण्डर, ह्वार्टिंहैंड, विंगेनस्थार्डन, अथर हार्मडगार तथा कार्मुल।

निम्नलिखित विषयों में से किसी पर भी प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

ज्ञान के स्त्रोत, तत्व, भिन्न-भिन्न रूप। उसकी सीमाएं मापदण्ड तथा समाजविज्ञान।

सत्य मिथ्या, मूल।

वास्तविकता के सिद्धांत। वास्तविकास। जीवन और श्री अस्तित्व। एकत्रवाद, द्वैतवाद, बहुलवाद, प्रकृतिवाद, अनीश्वरवाद, ईश्वरवाद, मोक्षवाद और रहस्यवाद। हेगेलोत्तर आदर्शवाद। नवीन यथार्थतावाद। मौलिकवाद अनुभूतिवाद। उपर्योगितावाद।

उपकरणवाद। मानववाद-प्रकृतिवादी और धार्मिक।

तांकिक प्रत्यक्षवाद, अस्तित्ववाद-अनीश्वरवादी और ईश्वरवादी। आगमन की समस्याएं, प्रकृतिक नियम, सापेक्षवाद, ईश्वर और अनिश्चयवाद के सम्बन्ध में दर्शन के क्षेत्र में नवीन विचारधाराएं।

12. (ख) उच्च मनोविज्ञान प्रयोगात्मक मनोविज्ञान सहित

मनोविज्ञान की विषय-वस्तु, क्षेत्र और पद्धतियां, अन्य विज्ञानों से इसका सम्बन्ध।

आनुवंशिकता और परिवेश सम्बन्धी विवाद मानव के विकास पर इन दोनों के सापेक्षिक प्रभाव सम्बन्धी प्रयोगात्मक अध्ययन।

अभिप्रेरण एवं संवेदन की समस्याएं। कुंठा और विग्रह; विग्रहों के प्रकार। अत्मरक्षातत्त्व—अभियंजक गतिविधियों से संबंधित अध्ययन; मनोधारानुक्रिया (PGR) असत्य परिचय।

संवेदना और अनुभूति—मनोवैज्ञानिक पद्धतियां, देश-प्रत्यक्षज्ञान, प्राथमिक, संगठन के कारक; गत्यात्मक, व्यक्तित्व तथा सामाजिक कारकों का योग; अंतर्व्यक्तिक अनुभूति।

अधिगम, स्मृति, विस्मरण और चित्तन के अध्ययन की प्रायोगिक पद्धतियां—अधिगम और सिद्धांत—अर्थ का स्वभाव।

व्यक्तित्व मनोविज्ञान—निर्धारिक तत्व, गुण, किस्म, परिमाप, और सिद्धांत, व्यक्तित्व का मूल्यांकन—व्यक्तित्व के आचरण मूलक भाष-क्रम निर्धारण मान, नाम-निर्देशक तकनीकें प्रश्नावलियां तथा तालिकाएं, अभिवृत्ति-मान, प्रक्षेपीय परीक्षण।

व्यक्तिगत भेद—प्रज्ञा और अभिवृत्तियों का स्वभाव एवं भाष। परीक्षण विन्यास-इकाई विश्लेषण। परीक्षण मान और मानक-मापों की विश्वसनीयता और वैधता-कारक विश्लेषण-सिद्धांत।

मनोविज्ञान के मत और संहितियां—मनोविज्ञान के परंपरावादी मत और मुख्य समकालीन संहितियां, फायडवादी, नव-फायडवादी नव-आचरणवादी, पूर्णाकार (गेस्टाल्ट) और प्रयोग-क्षेत्रीय सिद्धांत।

13. (क) भारत की संविधान विधि

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि—भारत के संविधान का विकास जिसमें 1861 के इंडियन काउंसिल एकट से 1950 तक के भारतीय संविधान में प्रतिनिधि तथा उत्तरदायी सरकार के विकास का विशेष रूप से प्रश्न होंगे।

समान्य तत्व; कल्याणकारी राज्य का आदर्श भारतीय संविधान का प्राक्कथन तथा राज्य की नीति के मार्ग दर्शन सिद्धांत, केन्द्रवर्ती तथा संघात्मक शासन पद्धतियों की मान्यताएं, मंत्रिमंडलीय पद्धति, विधिनियम की यथावत् पद्धति, न्यायिक पुनरेक्षण, संवैधानिक प्रथाएं, भारतीय संविधान के प्रमुख तत्वों का संयुक्तगण राज्य संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा तथा आस्ट्रेलिया के संविधानों से शुलना।

अधिकारों का विभाजन, अधिकारों के पार्श्वक्य का सिद्धांत।

विधानांग—

विधायी कार्य-विधि, विधानांग को विशेषाधिकार, विधायी अधिकारों का प्रत्यायोजन।

कार्यपालिका:—अध्यक्षीय तथा संसदीय, कार्यपालिका, सेवाओं तथा लोक-सेवा आयोगों से संबंधित प्रावधान, विधि शासक का सिद्धांत,

न्यायपालिका:—प्रशासनिक एवं अर्थ-न्यायिक प्राधिकारियों का न्यायपालिका द्वारा नियंत्रण-रिट के अधिकार-क्षेत्र की व्यापित स्वतंत्र न्यायपालिका।

विधायी अधिकारों का विभाजन, द्विती पावर के विशिष्ट परिवेश में अधिकारों के विभाजन के सिद्धांत, कर समाने का अधिकार; संविधानी (संविधान-संशोधन) अधिकार; [अवशिष्ट] अधिकार, अधिकारों के विभाजन संबंधी न्यायिक सिद्धांत;

मूलभूत अधिकार—संविधान में प्रत्याभूत विभिन्न मूलभूत अधिकारों का रूप तथा उनका प्रभाव विस्तार।

नोट :—उम्मीदवारों से प्रत्याशा की जाती है कि उन्हें भारत के संविधान का पाठ्य-ज्ञान, संविधान के संशोधनों का तथा सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों का कुशल ज्ञान है।

(ख) विधिशास्त्र

विधि शास्त्र—परिभाषा तथा क्षेत्र, विधिशास्त्र के विभिन्न मतवाद। विधिनियम, विधिनियम तथा आदर्श, विधि नियमों का विकास, प्राकृतिक नियम राज्य के विधिनियम; विधिनियम की अनुलंभीनीयता का सिद्धांत; विधिनियम की समाजकतावादी सिद्धांत; विधिनियम के प्रकार; सिविल विधिनियम; दण्डविधिनियम; स्थायी तथा प्रक्रिया संबंधी विधिनियम व्यक्तिगत विधि नियम तथा सामाजिक विधिनियम, अंतर्राष्ट्रीय विधिनियम; विधिनियम तथा न्याय विधिनियम तथा समानता, विधिनियम के अनुसार, न्याय; न्याय-प्रशासन प्रभुत्त के बारे में मान्यताएं तथा सिद्धांत।

प्रथा, न्यायिक पूर्व निर्णय, विधान संहिताकरण विधि के तत्व न्यायिक मान्यताओं का विश्लेषण तथा वर्गीकरण; व्यक्तित्व; अधिकारी कर्तव्य, स्वतन्त्रता, शक्ति, उन्मुक्ति; अयोग्यता, स्तर, कञ्जा, स्वामित्व; पट्टा, न्यास, सुविधाधिकार सुरक्षा हानि, उत्तर-दायित्व, दायित्व, अधिनियम, नीयत, उद्देश्य, लापरवाही; स्वत्व, चिरभोगधिकार, उत्तराधिकार तथा वसीयतें। विधिनियम संबंधी मान्यताओं का विकास, संविदा का विकास, जिह्वा, अपराध सम्पत्ति, तथा वसीयत, न्यायिक विचारधारा में वर्तमान विचारधारा।

14. (क) अरबी साहित्य में प्रतिबिम्बित मध्ययुगीन सम्पत्ता (570 ई०—1650 ई०)

इस प्रश्न पत्र में उम्मीदवारों के भूगोल, इतिहास और सामाजिक राजनीति तथा धार्मिक क्रम-विकास और प्रगति विषयक ज्ञान की जांच की जाएगी।

(ख) फारसी साहित्य में प्रतिबिम्बित मध्ययुगीन सम्पत्ता (570 ई०—1650 ई०)

इस प्रश्न पत्र में उम्मीदवारों के भूगोल इतिहास और सामाजिक राजनीतिक और धार्मिक क्रम-विकास और प्रगति विषयक ज्ञान की जांच की जाएगी।

(ग) प्राचीन भारतीय सम्पत्ता और वर्णन शास्त्र

2000 ई० प्र०—1200 ई० तक भारतीय सम्पत्ता, दर्शन और विचारधारा का इतिहास।

टिप्पणी :—इस प्रश्नपत्र में उम्मीदवारों के भूगोल, इतिहास और सामाजिक राजनीतिक तथा धार्मिक क्रम-विकास और प्रगति विषयक ज्ञान की परीक्षा की जाएगी। ऐसे प्रश्न भी पूछे जा सकते हैं जिन में पुरातत्व सम्बन्धी खोजों की जानकारी अपेक्षित हो।

15. मानव विज्ञान

(क) **भौतिक मानव विज्ञान :**—इसकी परिभाषा और क्षेत्रभौतिक मानव विज्ञान का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध। मानवजाति का क्रम विकास, वानरगणों में मानव का स्थान—उसका पैरेन्थीक से लगाकर आस्ट्रा लाईंथीकस तक प्रीह्यमेन तथा प्रोटोलूर्मेन जातियों से सम्बन्ध—पैलैआन्ध्रामिक मानव-पिथैष्ट्रधोपेस। सिनैन्द्रोपेस तथा नीरेंडर्थल। नीन्द्रोपिक। मानव—क्रोमीगनन, ग्रिमाल्डी तथा चान्सेलेड-होमसेपिअन्स।

मानव में जातिगत अन्तर तथा जातीय वर्गीकरण-शरीर रचना सम्बन्धी, रक्त वर्गीय तथा वानुवंशिक। जातियों के निर्माण में आनुवंशिकता तथा परिवेश का प्रभाव। मानव की उत्पत्ति के सिद्धान्त—मैडेलियन नियम जैसे कि वे मानव पर लागू होते हैं।

मानव का शरीर विज्ञान :—आहार-पोषण, अन्तः प्रजनन तथा वर्ण-संकरीकरण के प्रभाव पाषाणकाल से सिंधुधारी संभ्यता तथा मध्य और दक्षिण भारत की महापाषाण संस्कृतियों तक भारत में मानव के प्रसार का इतिहास। जातीय वर्ग अंद्रौर भारत में उनका वितरण।

(ख) **सामाजिक (सांस्कृतिक) मानव विज्ञान :**—क्षेत्र तथा कार्य। समाज शास्त्र, सामाजिक मनोविज्ञान तथा पुरातत्वशास्त्र से सम्बन्ध। सांस्कृतिक, मानव-विज्ञान के विभिन्न मत—विकास-वादी, ऐतिहासिक कार्यात्मक और सांस्कृतिक। मानव समाज का गठन तथा विकास।

आर्थिक संगठन :—प्रारम्भिक शिकार तथा खाद्य संग्रह की अवस्था, पण्डपालन, कृषि, परवर्ती कृषि, संधन कृषि, औजारों का प्रयोग।

राजनीतिक संगठन :—दल, जनजातियों तथा दुहरा संगठन, जनजाति-परिषदें, मुख्यियों के कार्य।

सामाजिक संगठन :—विवाह तथा पारिवारिक रचना के प्रकार, मातृसत्ताक, पितृसत्ताक, बहुपतित्व, बर्हिजातीय विवाह तथा संग्रोवविवाह, स्थियों की स्थिति, उत्तराधिकारी तथा तलाक।

आद्य धर्म :—टोटमपाद, निषेध, गर्भधान के अधिकार, नर-हृत्या तथा नर बलि।

कला, संगीत, लोक नृत्य तथा खेलकूद। दलगत सम्बन्ध, विवाह निर्णय, न्याय तथा धण्ड-सम्बन्धी मान्यताएं।

बौद्धिक विकास का स्तर, विशेष रुचियों और योग्यताएं, आदि मानव के आचरण और प्रान्तपालों के केन्द्रीयतावाद की पष्ठभूमि में भावात्मक आधार्यकरण।

व्यक्तित्व का निर्माण तथा व्यक्तित्व और आदिम समाज में उसके योगदान का विकास।

आदिम जातियों का संस्कार तथा सम्पर्क का उन पर प्रभाव बस्तियों का उज़्झना और उसके कारण। आर्थिक तथा मनोविज्ञानिक कुण्ठन। अमरीका, अफ्रीका तथा ओशियाना में आदिम जनजातियों का ह्रास। भारतीय जनजातियों में जन संख्या का ह्रास तथा उसको रोकने के उपाय।

(ग) जातित्व के आधार पर भारतीय जनजातियों में से भूमिका एक का गहन अध्ययन

1. भारत की उत्तर-पूर्वी सीमान्त वासी आदिम जनजातियां।
2. नागा पहाड़ियों—तैवान सांग क्षेत्र की जनजातियां।
3. आसाम की स्वायत्ता प्राप्त जनजातियां—खासिया, गारो, मिकिर तथा लुशाई।
4. छोटा नागपुर तथा मध्य भारत की आष्टक जनजातियां।
5. दक्षिण भारत की, नीलगिरि पर्वत निवासी जनजातियों सहित, जनजातियां।
6. अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह की जनजातियां।

टिप्पणी—उम्मीदवारों को भाग (ग) तथा (क) अथवा (ख) में से पूछे गए प्रश्नों का उत्तर देना होगा।

16. उच्च समाजशास्त्र

समाज शास्त्रीय गवेषणा का स्वरूप, समाज शास्त्र और विज्ञान; समाज और व्यक्ति, मानवसमूह—उनकी प्रकृति, प्रकार रचना और कार्य; परिवार और समौक्ता संस्कृति और सांस्कृतिक लक्षण; संस्कृति और व्यक्तित्व; समाज में संस्कृति की भूमिका; समाजीकरण और सामाजिक विचलन; समाजव्यवस्था; सामाजिक स्तरीकरण—जाति और वर्ग; संस्थाएं और समितियां; सामाजिक प्रक्रियाएं; सामाजिक नियन्त्रण—लोकमत्, धर्म, धर्म और नीतिकता, कानून और शिक्षा; सामाजिक परिवर्तन; सामाजिक विकास; संस्कृति-करण; सामाजिक एकीकरण।

भीड़, लोकमत्, प्रचार, संपर्क और नेतृत्व।

भारतीय सामाजिक पद्धतियों की सामाजिक संकल्पनाएं; भारतीय सामाजिक चिंतन का विकास (मनु, बुद्धि और गांधी के विशेष संदर्भ सहित)।

सामाजिक सिद्धान्तों की नवीनतम प्रवृत्तियां; रचनामूलक कार्यमूलक उपागम; ऐतिहासिक उपागम; तुलनात्मक उपागम।

प्रयुक्त समाजशास्त्र—समाजशास्त्र, सामाजिक नीति और सामाजिक आयोजन; सामाजिक जर्नालिकी विकासशील समाजों में आर्थिक विकास के सामाजिक पक्ष; सामुदायिक विकास।

सामाजिक अनुसंधान का रीतिविधान, सामाजिक अनुसंधान तथा समाज कल्याण।

उम्मीदवारों से अपेक्षा की जाएगी कि वे तथ्यों द्वारा सिद्धान्तों का निरूपण करें तथा सिद्धान्तों की संस्थायता से समस्याओं का विश्लेषण करें। उनसे भारतीय समस्याओं की विशेष जानकारी अपेक्षित होगी।

खण्ड (घ)

[परिशिष्ट 2 की धारा 1 की उपधारा (ख) के अनुसार]

व्यक्तित्व परीक्षा—एक बोर्ड उम्मीदवार का इंटरव्यू लेगा। इस बोर्ड के सामने उम्मीदवार के कैरियर का वृत्त होगा। उससे सामान्य रुचि की बातों पर प्रश्न पूछे जायेंगे। यह इंटरव्यू इस उद्देश्य से होगा कि सक्षम और निष्पक्ष प्रेक्षकों का बोर्ड यह जान सके

कि जिस सेवा या सेवाओं के लिए उम्मीदवारों ने आवेदन-पत्र दिया है, उसके/उनके लिए वह व्यक्तित्व की दृष्टि से उपयुक्त है या नहीं। यह परीक्षा उम्मीदवार की मानसिक क्षमता को जांचने के अभिप्राय से की जाती है। मोटे तोर पर इस परीक्षा का प्रयोजन वास्तव में न केवल उसके बौद्धिक गुणों का अपितु उसके सामाजिक लक्षणों और सामाजिक घटनाओं में उसकी रुचि का भी मूल्यांकन करना है। इसमें उम्मीदवार की मानसिक सतर्कता, आलोचनात्मक ग्रहण-शक्ति, स्पष्ट और तर्कसंगत प्रतिपादन करने की शक्ति, सन्तुलित निर्णय की शक्ति, रुचि की विधिता और गहराई, नेतृत्व और सामाजिक संगठन की योग्यता, बौद्धिक और नैतिक ईमानदारी आदि की भी जांच की जाती है।

2. इंटरव्यू में पूरी तरह से प्रति परीक्षा (Cross Examination) की प्रणाली नहीं अपनाई जाती। उसमें स्वाभाविक वार्तालाप के माध्यम से उम्मीदवार के मानसिक गुणों का उद्घाटन करने का प्रयत्न किया जाता है, परन्तु यह वार्तालाप एक विशेष दिशा में और एक विशेष प्रयोजन से किया जाता है।

3. व्यक्तित्व परीक्षा उम्मीदवारों के विशेष या सामान्य ज्ञान की जांच करने के प्रयोजन से नहीं की जाती, क्योंकि इसकी जांच तो लिखित प्रश्न पत्रों में पहले ही हो जाती है। उम्मीदवारों से आणा की जाती है कि वे केवल अपने विद्याध्ययन के विशेष विषयों में ही समझ-सूझ के साथ रुचि न लें, परन्तु वे उन घटनाओं में भी जो उनके चारों ओर अपने राज्य या देश के भीतर और बाहर घट रही हैं, तथा आषुनिक विचारधाराओं में और उन नई खोजों में भी रुचि लें जोकि एक सुशिक्षित युवक में जिज्ञासा उत्पन्न करती है।

परिशिष्ट 3

इस परीक्षा के द्वारा जिन सेवाओं में भर्ती की जा रही है उसका संक्षिप्त व्यौरा:—

1. भारतीय प्रशासन सेवा—(क) नियुक्तियां परख पर की जाएंगी जिसकी अवधि दो वर्ष की होगी और उसे बढ़ाया भी जा सकेगा। सफल उम्मीदवार को परख की अवधि में, भारत सरकार के निर्णय के अनुसार नियित स्थान पर और नियित रीति से कार्य करना होगा और नियित परीक्षाएं पास करनी होंगी।

(ख) यदि सरकार की राय में, किसी परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्य-कुशल होने की संभावना न हो, तो सरकार उसे तत्काल सेवामुक्त कर सकती है।

(ग) परख-अवधि के समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को सेवा में स्थायी कर सकती है या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवामुक्त कर सकती है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है।

(घ) भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, से केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार के अन्तर्गत भारत में या विदेश में किसी भी स्थान पर सेवाएं ली जा सकती हैं।

(ङ) वेतनमान—

जूनियर—रु० 400-400-500-40-700-द० रो०-30-
1000 (18 वर्ष) ।

सीमियर स्केल—

(i) समय-मान रु० 900 (छठे वर्ष या पहले)-50-1000-
60-1600-50-1800 (22 वर्ष) ।

(ii) स्लेक्शन ग्रेड—1800-100-2000 ।

इनके अतिरिक्त अधिसमय-मान पद भी होते हैं जिनका वेतन रु० 2150 से रु० 3500 तक होता है और जिन पर भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति हो सकती है ।

महंगाई भत्ता समय-समय पर जारी किए गए आदेशों के अनुसार मिलेगा ।

परखाधीन अधिकारियों की सेवा जूनियर समय में प्रारम्भ होगी और उन्हें परख पर बताई गई अवधि को समय-मान में वेतन-वृद्धि छुट्टी या पेंशन के लिए गिनने की अनुमति होगी ।

(च) भविष्य निधि—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, अखिल भारतीय सेवा (भविष्यनिधि) नियमावली, 1955 से शासित होते हैं ।

(छ) छूटी—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी अखिल भारतीय सेवा (छूटी) नियमावली, 1955 से शासित होते हैं ।

(ज) डाक्टरी परिचर्या—भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारियों को अखिल भारतीय सेवा (डाक्टरी परिचर्या) नियमावली, 1964 के अन्तर्गत अनुमात्र डाक्टरी परिचर्या की सुविधाएं पाने का हक है ।

(झ) सेवा निवृत्त लाभ:—प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर नियुक्त किए गए भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी, अखिल भारतीय सेवा (मृत्यु व सेवा-निवृत्ति लाभ 71) नियमावली, 1958 द्वारा शासित होते हैं ।

2. भारतीय विवेश सेवा:—(क) नियुक्ति परख पर की जाएगी जिसकी अवधि आमतौर पर 3 वर्ष से अधिक नहीं होगी । सफल उम्मीदवारों को भारत में लगभग 21 मास तक प्रशिक्षण लेना होगा । इसके बाव उन्हें तृतीय सचिव या उप-कौसल बनाकर उन भारतीय मिशनों में भेज दिया जाएगा जिनकी भाषाएं उनके लिए अनिवार्य भाषाओं के रूप में नियत की गई हैं । प्रशिक्षण की अवधि में परखाधीन अधिकारियों को एक या अधिक विभागीय परीक्षाएं पास करनी होगी, इसके बाद ही वे सेवा में पक्के हो सकेंगे ।

(ख) सरकार के लिए सन्तोषजनक रूप से परख-अवधि के समाप्त होने और निर्धारित परीक्षाएं पास करने पर ही परखाधीन अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का किया जाएगा । परन्तु यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण सन्तोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे सेवा मुक्त कर सकती है या परख अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है या यदि उसका कोई मूल पद (सब्स्टेंटिव पोस्ट) हो तो उस पर वापस भेज सकती है ।

(ग) यदि सरकार की राय में, किसी परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण सन्तोषजनक न हो तो या उसे देखते हुए उसके विवेश सेवा के लिए उपयुक्त होने की संभावना न हो तो सरकार उसे तत्काल सेवामुक्त कर सकती है या यदि उसका कोई मूल पद हो तो उसे उस पर वापस भेज सकती है ।

(घ) वेतन-मान:—

जूनियर—रु० 400-400-500-40-700-द० रो०-30-
1000 ।

सीमियर स्केल—रु० 900-(छठे वर्ष या पहले)--50-
1000-60-1600-50-1800 ।

इनके अतिरिक्त अधिसमय-मान पद भी होते हैं जिनका वेतन रु० 1800 से रु० 3500 तक होता है और जिन पर भारतीय विवेश सेवा के अधिकारियों की पदोन्नति हो सकती है ।

(ङ) परख अवधि में परखाधीन अधिकारी को इस प्रकार वेतन मिलेगा:—

पहले वर्ष—रु० 400 प्रति मास ।

दूसरे वर्ष—रु० 400 प्रति मास ।

तीसरे वर्ष—रु० 500 प्रति मास ।

टिप्पणी 1—परखाधीन अधिकारी को परख पर बिताई गई अवधि, समय-मान, में वेतन-वृद्धि, छुट्टी या पेंशन के लिए गिनने की अनुमति होगी ।

टिप्पणी 2—परखाधीन अधिकारी की परख-अवधि में वार्षिक वेतन वृद्धि तभी मिलेगी जबकि वह निर्धारित परीक्षाएं (यदि कोई हों) पास कर लेगा और सरकार को संतोषप्रद प्रगति करके दिखाएंगा । विभागीय परीक्षाएं पास करके अग्रिम वेतन वृद्धियां भी अर्जित की जा सकती हैं ।

टिप्पणी 3—परिवीक्षाधीन के तौरपर नियुक्ति से पूर्व सावधि पद के अतिरिक्त मूल रूप से स्थायी पद पर रहने वाले सरकारी कर्मचारी का वेतन एफ० आर० 22-बी० (1) के अधीन विद्या जाएगा ।

(च) भारतीय विवेश सेवा के अधिकारी से भारत में या भारत के बाहर किसी भी स्थान पर सेवाएं की जा सकती हैं ।

(छ) विवेश में सेवा करते समय, भारतीय विवेश सेवा के अधिकारियों को उनकी हैसियत (Status) के अनुसार विवेश-भत्ते मिलेंगे जिससे कि वे नौकर-चाकरों और जीवन-निवाह के खर्च को पूरा कर सकें, और अतिथ्य (एन्टरटेनमेंट) सम्बन्धी अपनी विशेष जिम्मेदारियों को भी निभा सकें । इसके अतिरिक्त, विवेश में सेवा करते समय, भारतीय विवेश सेवा के अधिकारियों को निम्नलिखित रियायतें भी मिलेंगी:—

- (i) हैसियत के अनुसार मुफ्त सुसज्जित भवान ।
- (ii) सहायता प्राप्त डाक्टरी परिचर्या योजना (Assisted Medical Attendance Scheme) के अन्तर्गत डाक्टरी परिचर्या की सुविधाएं ।

- (iii) भारत आने के लिए वापसी हवाई यात्रा का किराया, जो अधिक से अधिक दो बार और विशेष आपाती स्थितियों, (emergencies) में ही दिया जाएगा, जैसे—भारत में स्थित किसी निकटम सम्बन्धी की मृत्यु या सखत बीमारी अथवा पुनर्जी का विवाह ।
- (iv) भारत में पढ़ने वाले 8 से 21 वर्ष तक की आयु वाले बच्चों के लिए वर्ष में एक बार वापसी हवाई यात्रा का किराया, ताकि वे लम्बी छुटियों में मातापिता से मिल सकें। परन्तु इस रियायत पर कुछ शर्तें लागू होंगी ।
- (v) 5 से 18 वर्ष तक की आयु वाले अधिक से अधिक दो बच्चों के लिए समय-समय पर सरकार द्वारा निर्धारित दरों पर, शिक्षा भत्ता ।
- (vi) विदेश में प्रशिक्षण के लिए जाते समय और सेवा में पक्का होने पर सज्जा भत्ता (Out fit Allowance) अधिकारी के सेवाकाल को विभिन्न अवस्थाओं से भी निर्धारित नियमों के अनुसार दिया जाता है। साधारण सज्जा भत्ता के अतिरिक्त, विशेष सज्जा भत्ता भी उन अधिकारियों को दिया जा सकता है जिन्हें असाधारण रूप से कठोर जलवायु वाले देशों में तैनात किया जाए ।
- (vii) विदेश में कम से कम दो वर्ष सेवा करने के बाद, अधिकारियों, उनके परिवारों और नौकरों के लिए छुट्टी पर घर जाने का किराया ।

(ज) समय-समय पर संशोधित पुनरीक्षित छुट्टी नियमावली, 1933 कुछ तरमीमों के साथ इस सेवा के सदस्यों पर लागू होंगी। विदेशों में की गई सेवा के लिए भारतीय विदेश सेवा अधिकारियों को, भारतीय विदेश सेवा (PLCA) नियमावली, 1961 के अन्तर्गत अतिरिक्त छुट्टियां मिलेंगी, जो पुनरीक्षित छुट्टी नियमावली के अन्तर्गत मिलने वाले छुट्टी के 50 प्रतिशत तक होंगी।

(झ) भविष्य निधि—भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी सामान्य भविष्यनिधि/(केन्द्रीय सरकार) नियमावली, 1960 द्वारा शासित होते हैं।

(ञ) सेवानिवृत्ति लाभ—प्रतियोगिता परीक्षा के आधार पर नियुक्त किए गए भारतीय विदेश सेवा के अधिकारी उधारीकृत (Liberalised) पेंशन नियमावली, 1950 द्वारा शासित होते हैं।

(ट) भारत में रहते समय, अधिकारियों को वे ही रियायतें मिलेंगी जो उनके समकक्ष या समान हैसियत (Status) वाले सरकारी कर्मचारियों को मिल सकती हैं।

2. भारतीय पुलिस सेवा—(क) नियुक्ति परख पर की जाएगी जिसकी अवधि दो वर्ष की होगी और उसे बढ़ाया भी जा सकेगा। सफल उम्मीदवारों को परख की अवधि में भारत सरकार के निर्णय के अनुसार निश्चित स्थान पर और निश्चित रीति से कार्य करना होगा और निश्चित परीक्षाएं पास करनी होंगी।

- (ख) जैसा कि भारतीय प्रशासनिक सेवा के खण्ड (ख)
- (ग) और (ग) में दिया गया है।

(घ) भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी से केन्द्रीय सरकार द्वारा राज्य सरकार के अन्तर्गत, भारत में या विदेश में किसी भी स्थान पर सेवाएं ली जा सकती हैं।

(ङ) बेतनमान—

जूनियर—रु 400-400-450-30-600-35-670-द० रु० 35-950 (18 वर्ष) ।

सीनियर—740 (छठे वर्ष या पहले)-40-1100-50-2-1250-50-1300 (22 वर्ष) ।

सलेक्शन प्रेड—रु० 1400 ।

पुलिस उप महा निरीक्षक—रु० 1600-100-2000 ।

पुलिस कमिशनर, कलकत्ता और बम्बई—रु० 1800-100-2000 ।

पुलिस महा निरीक्षक—रु० 2500-125/2—2750 ।

निदेशक, खुफिया ब्यूरो—रु० 3000 ।

महंगाई भत्ता समय-समय पर जारी किए गये आदेशों के अनुसार मिलेगा ।

- (च)]
- (छ)] जैसा कि भारतीय प्रशासनिक सेवा के खण्ड
- (ज)] (घ), (ज) और (झ) में दिया गया है।
- (झ)]

4. विलीनी, और अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा, श्रेणी-2

(क) नियुक्तियों दो वर्ष के लिए परिवीक्षाधीन रहेंगी, जो सधम प्राधिकारी के निर्णय के अनुसार बढ़ाई भी जा सकती हैं परख पर नियुक्त उम्मीदवार को केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण लेना होगा और विभागीय परीक्षाएं देनी होंगी।

(ख) यदि सरकार की राय में, किसी परखीधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की सम्भावना न हो, तो सरकार उसे तत्काल सेवा मुक्त कर सकती है।

(ग) जब वह घोषित कर दिया जाएगा कि अमुक अधिकारी ने संतोषजनक रूप से अपनी परख-अवधि समाप्त कर ली है तो उसे सेवा में पक्का कर दिया जाएगा। यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा-मुक्त कर सकती है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है।

(घ) दिल्ली, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा के अधिकारी को दिल्ली-प्रशासन, हिमाचल प्रदेश या अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह की सरकार के अन्तर्गत सेवा करनी होगी। उससे भारत सरकार के किसी पुलिस खुफिया विभाग में सेवा भी ली जा सकती है।

(ङ) बेतन-मान:—

प्रेड-I (सलेक्शन प्रेड) 1000 रु० स्थिर ।

प्रेड-II—समय मान—350-25-500-30-

590-द० अ०-30-800 रु० ।

किसी प्रतियोगिता परीक्षा के परिणामों के आधार पर भर्ती किये जाने वाले अधिकारियों को सेवा में नियुक्ति पर समय बेतनमान का न्यूनतम वेतन प्राप्त होगा, बारतीय विदि वह सेवा में नियुक्ति से पहले मूल रूप से सावधिक पद के अतिरिक्त स्थायी पद पर कार्य करता था, सेवा में परिवीक्षा का अवधि में उसका वेतन मूल-नियम 22-ख (1) के परन्तुके अधीन विनियमित किया जायेगा। सेवा में नियुक्त किए गए अन्य व्यक्तियों के लिए वेतन और बेतन वृद्धियों मूल नियमों के अनुसार विनियमित होंगी।

(च) सेवा के अधिकारियों को परिशोधित केन्द्रीय वेतन-मान प्राप्त करने वाले कर्मचारियों पर लागू केन्द्रीय सरकार की दरों पर महंगाई भत्ता प्राप्त करने का हक होगा।

(छ) महंगाई भत्ता और महंगाई वेतन के अतिरिक्त, इस सेवा के अधिकारियों को, प्रतिकर (नगर) भत्ता, मकान किराया भत्ता और पहाड़ी स्थानों तथा मुद्रर स्थानों में रहन-सहन के बड़े खर्चों को पूरा करने के लिए अन्य भत्ते दिये जाएं, यदि उन्हें ड्यूटी पर या प्रणिक्षण के लिए ऐसे स्थानों पर भेजा जायेगा और उन स्थानों के लिये ये भत्ते अनुमत्य होंगे।

(ज) इस सेवा के अधिकारी छिल्ली, अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा नियमावली, 1971 और इस नियमावली को लागू करने के प्रयोजन से केन्द्रीय सरकार द्वारा दो जाने वाली हिटायतें अथवा बनाये जाने वाले अन्य विनियम लागू होंगे। जो भासले विशिष्ट रूप से उक्त नियमों या विनियमों अथवा उनके अन्तर्गत दिए गए आदेशों या विशेष आदेशों के अन्तर्गत नहीं आसे, उनमें ये अधिकारी उस नियमों, विनियमों और आदेशों द्वारा शासित होंगे जो संघ के कार्यों से सम्बन्धित सेवा करने वाले तदनुरूप (Corresponding) अधिकारियों पर लागू होते हैं।

5. केन्द्रीय सूचना सेवा (ग्रेड II, श्रेणी 1)

(क) केन्द्रीय सूचना सेवा में भारत भर में सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के विभिन्न माध्यम संगठनों के पद शामिल हैं। जिनके लिए किसी समाचार पद, अथवा समाचार अभिकरण अथवा प्रचार संगठनों में कार्य के अनुभव सहित पत्रकारिता और समान कार्य के अनुभव सहित पत्रकारिता और समान व्यवसायिक अर्हताएं अपेक्षित हैं। इस सेवा का गठन 1 मार्च, 1960 से किया गया था।

(ख) इस समय इस सेवा में निम्नलिखित ग्रेड हैं:—

ग्रेड	वेतन मान
-------	----------

श्रेणी-I

प्रबरण ग्रेड . रु 2500-125/2-2750

वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड

(वरिष्ठ वेतन मान) रु 1800-100-2000

(कनिष्ठ वेतन मान) रु 1600-100-1800

कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड

(वरिष्ठ वेतन मान) रु 1300-60-1600

(कनिष्ठ वेतन मान) रु 1100-50-1400

1	2
ग्रेड 1	रु 700-40-1100-50/2- -1250
ग्रेड 2	रु 400-400-450-30- 600-35-670-द० रो०- 35-950।
श्रेणी-II (राजपत्रित)	
ग्रेड 3	रु 350-25-500-30- 590-द० रो०-30-800
श्रेणी-II (अराजपत्रित)	
ग्रेड 4	रु 270-10-290-15- 410-द० रो०-15-485।

(ग) सेवा के निम्नलिखित ग्रेडों में नीचे निर्दिष्ट की गई रिक्तियों की प्रतिशतता के अनुसार सीधी भर्ती की व्यवस्था है:—

कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड

(कनिष्ठ वेतन मान) 12-1/2 प्रतिशत

ग्रेड 1 25 प्रतिशत

ग्रेड 2 स्थायी रिक्तियों का 50 प्रतिशत।

ग्रेड 4 शत प्रतिशत

विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिशों पर प्रबरण के आधार पर ग्रेड 3 की रिक्तियाँ पदोन्नति द्वारा ग्रेड 4 के अधिकारियों में से भरी जाती हैं।

ग्रेड 2 की 50 प्रतिशत स्थायी तथा अस्थायी रिक्तियाँ, ग्रेड 1 की 75 प्रतिशत रिक्तियाँ और कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड (कनिष्ठ वेतन मान) की 87-1/2 प्रतिशत रिक्तियाँ उनसे निम्न ग्रेडों के ड्यूटी पदों पर नियुक्त अधिकारियों में से प्रबरण द्वारा भरी जाती हैं परन्तु कोई उपयुक्त अधिकारी ऐसी पदोन्नति के लिए उपलब्ध न होने की स्थिति में प्रबरण ग्रेड और वरिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड में ऐसी रिक्तियों के लिए भर्ती संघ लोक सेवा आयोग के परामर्श से की जायेंगी। कनिष्ठ प्रशासनिक ग्रेड (वरिष्ठ वेतन मान) की रिक्तियाँ उस ग्रेड के कनिष्ठ वेतनमान वाले ड्यूटी पदों पर नियुक्त अधिकारियों में से वरिष्ठता सह योग्यता के आधार पर पदोन्नति द्वारा भरी जायेंगी।

सरकार, किसी ग्रेड में उस ग्रेड की पद संख्या के 10 प्रतिशत से अनधिक पदों पर संघ लोक सेवा आयोग के परामर्श से राज्य प्रचार संगठनों के अधिकारियों की प्रतिनियुक्ति पर नियुक्ति द्वारा 5 वर्ष से अनधिक अवधि के लिए, सरकार द्वारा निर्दिष्ट किया गया हो, भर सकती है। इस प्रकार भरे गए पदों को पदोन्नति द्वारा अथवा

सीधे भर्ती द्वारा भरे जाने वाले पदों की संख्या निर्धारित करते समय व्यापार में रखा जाता है।

(ष) ग्रेड 2 में सीधे भर्ती हुए अधिकारी दो वर्ष के लिए परिवीक्षा पर रहेंगे। परिवीक्षा के दौरान उन्हें भारतीय सामूहिक संचार संस्थान, किसी समाचार पत्र में अथवा समाचार अधिकारण में और सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के विभिन्न माध्यम यूनिटों में और लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी मंसूरी में प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रशिक्षण की कुल अवधि लगभग 20 मास होगी। प्रशिक्षण की अवधि और स्वरूप में सरकार द्वारा परिवर्तन किया जा सकेगा। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी मंसूरी में ली जाने वाले पाठ्यक्रम-समाप्ति परीक्षा तथा भारतीय सामूहिक संचार संस्थान की पहली तथा दूसरी विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी जिसमें एक भाषा परीक्षा भी शामिल होगी। प्रशिक्षण की अवधि के दौरान विभागीय परीक्षा में पास न होने पर उम्मीदवार को नौकरी से अलग किया जा सकता है। अथवा उसे उस मौलिक पद पर, यदि कोई हो, जिस पर उसका धारणाधिकार हो, प्रत्यावर्तित किया जा सकता है।

(II) परिवीक्षा की अवधि समाप्त होने पर सरकार सीधे भर्ती किये गये अधिकारियों को लागू नियमों के अनुसार उनकी नियुक्तियों पर स्थायी कर सकेगी। यदि किसी परिवीक्षाधीन अधिकारी का कार्य अथवा आचरण असंतोषजनक है तो उसे नौकरी से अलग किया जा सकता है अथवा उसकी परिवीक्षा की अवधि को उतना बढ़ाया जा सकता है जितना सरकार उचित समझेगी। यदि उसका कार्य अथवा आचरण ऐसा है कि उससे यह प्रकट हो कि उसके उस सेवा के ग्रेड 2 का कुशल अधिकारी बनने की संभावना नहीं है तो उसे उसी समय नौकरी से अलग किया जा सकेगा।

(III) परिवीक्षाधीन अधिकारियों का वेतन ग्रेड 2 के समय वेतन मान के न्यूनतम से शुरू होगा। पहली विभागीय परीक्षा पास करने पर परिवीक्षाधीन अधिकारी को वेतन, केन्द्रीय सूचना सेवा के ग्रेड 2 के वेतन, मान में बढ़ाकर 450 रु० कर दिया जायेगा। दूसरी विभागीय परीक्षा पास करने पर वेतन 480 रु० की स्टेज के आगे वेतन तब तक अनुमत नहीं होगा जब तक कि उन्होंने 4 वर्ष की सेवा पूरी न करली हो, यह ऐसी अन्य शर्तों के अध्यधीन होगा जो आवश्यक प्रतीत होंगी। ऐसे मामलों में जहां कोई परिवीक्षाधीन अधिकारी लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन अकादमी, मंसूरी में “पाठ्यक्रम-समाप्ति परीक्षा” पास नहीं करता तो उसकी पहली वेतन वृद्धि उसे पाने की तारीख से एक वर्ष तक के लिए अथवा विभागीय विनियमों के अधीन उस तारीख तक, जब दूसरी वेतन वृद्धि उपर्याप्त हो, दोनों में से जो भी पूर्ववर्ती हो, स्थगित कर दी जायेगी।

(IV) ऐसे सरकारी कर्मचारी का, जो परिवीक्षाधीन अधिकारी के रूप में उसकी नियुक्ति से पूर्व मौलिक कार्यकालिक पद को छोड़कर किसी स्थायी पद पर नियुक्त हों, वेतन एफ० आर० 22-बी० (I) के उपबन्धों के अधीन विनियमित होगा।

(अ) सरकार सेवा के किसी सदस्य से निर्दिष्ट अवधि के लिए संघ राज्य क्षेत्र के प्रकार संगठन के किसी पद पर कार्य करने की अपेक्षा कर सकेगी।

(च) सरकार किसी अधिकार को सूचना तथा प्रसारण मंत्रालय के अधीन किसी संगठन क्षेत्रीय पद पर काम करने के लिए पदस्थ कर सकती है।

(छ) जहां तक छुट्टी, वेश्यन और सेवा की अन्य शर्तों का संबंध है, केन्द्रीय सूचना सेवा के अधिकारियों को श्रेणी 1 तथा श्रेणी 2 के अन्य अधिकारियों के समान माना जायेगा।

6. भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा

7. भारतीय सीमा शुल्क कर केन्द्रीय उत्पादन शुल्क सेवा

8. भारतीय रक्षा लेखा सेवा

(क) नियुक्ति परख पर की जायेगी जिसकी अवधि 2 वर्ष की होगी। परन्तु यह अवधि बढ़ाई भी जा सकती है यदि परखाधीन अधिकारी ने निर्धारित विभागीय परीक्षाएं पास करके, अपने को पक्का किये जाने (Confirmation) के योग्य सिद्ध न किया हो। यदि कोई अधिकारी तीन वर्ष की अवधि में विभागीय परीक्षाएं पास करने में लगातार असफल होता रहा तो उसकी नियुक्ति खत्म कर दी जाएगी।

(ख) यदि यथास्थिति, सरकार या नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की राय में, परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की सम्भावना न हो तो सरकार उसे तत्काल सेवामुक्त कर सकती है।

(ग) परख-अवधि के समाप्त होने पर, यथास्थिति, सरकार, या नियंत्रक और महालेखा परीक्षक अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है/सकता है या यदि यथास्थिति, सरकार या नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की राय में उसका कार्य या आचरण असंतोषजनक रहा हो तो उसे या तो सेवा से मुक्त कर सकती/सकता है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती/सकता है, परन्तु अस्थायी रूप से खाली जगहों पर की गई नियुक्तियों के संबन्ध में, पक्का करने का दावा नहीं किया जा सकेगा।

(घ) लेखा परीक्षा के लेखा सेवा में अलग किए जाने की सम्भावना को ध्यान में रखते हुए, भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा में परिवर्तन हो सकते हैं और कोई उम्मीदवार जो इस सेवा के लिये चुना जाये इस परिवर्तन से होने वाले परिणाम के आधार पर कोई दावा नहीं करेगा और उस अलग किये गये केन्द्रीय और राज्य सरकार और नियंत्रक और महालेखा परीक्षक के अन्तर्गत सांविधिक लेखा परीक्षा कार्यालय में काम करना पड़ेगा और केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों के अन्तर्गत अलग किए गए लेखा कार्यालयों के संवर्ग के अन्तिम रूप से रहना पड़ेगा।

(ङ) भारतीय रक्षा लेखा सेवा के अधिकारियों से भारत में कहीं भी सेवा ली जा सकती है और उन्हें क्षेत्र-सेवा फील्ड-सर्विस पर भारत में या भारत के बाहर भी भेजा जा सकता है।

(च) वेतन-मान—

भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा—

भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा का समय-मान—
रु० 400-400-450-30-510-द० रो०-
700-40-1100-50/2-1250।

जूनियर प्रशासनिक ग्रेड — रु० 1300-60-
1600।

महालेखापाल— रु० 1800-100-2000-125-
2250।

अपर उप नियंत्रक और महालेखा परीक्षक का ग्रेड—
रु० 2,500-125/2-2,750 रुपये।

भारतीय उप नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक—
3,000/- रुपये।

नोट 1—परखाधीन अधिकारियों की सेवा, भारतीय लेखा परीक्षा और लेखा सेवा के समय-मान में कम-से-कम वेतन से प्रारम्भ होगी और वेतन-वृद्धि के प्रयोजन से, उसकी सेवा कार्यग्रहण की तारीख से गिनी जायेगी।

नोट 2—परखाधीन अधिकारियों को 400 रु० से ऊपर का वेतन तब तक नहीं मिलेगा जब तक कि वे समय-समय पर विहित नियमों के अनुसार विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर लेंगे।

नोट 3—परखाधीन अधिकारियों की सेवा, ग्रेड II के समय-मान में कम-से-कम वेतन से प्रारम्भ होंगी। यदि कोई परखाधीन अधिकारी लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक एकावमी मसूरी की पाठ्यक्रमान्त परीक्षा पास नहीं करता तो उसकी रु० 450 तक ले जाने वाली वेतन-वृद्धि एक साल के लिए उसकी वेतन-वृद्धि की तारीख स्थगित कर दी जाएगी अथवा विभागीय नियमों के अनुसार उसकी दूसरी वेतन-वृद्धि जब पड़ने वाली हो और इन दोनों में से जो पहले पड़े तब तक वेतन-वृद्धि स्थगित रहेगी।

नोट 4—जो सरकारी कर्मचारी परिवीक्षा के आधार पर नियुक्ति से पूर्व, मौलिक आधार पर सावधिक पद के अंतिरित किसी स्थायी पद पर नियुक्त था उसका वेतन मूल नियम 22-ख (1) की व्यवस्थाओं के अधीन विनियमित होगा।

भारतीय सीमा-शुल्क और केन्द्रीय उत्पादन शुल्क सेवा

अधीक्षक, केन्द्रीय उत्पादन शुल्क रु० 400-400-450-30-
क्लास 1, सहायक क्लिक्टर, 510-द० रो०-700-
भारतीय उत्पादन शुल्क, सहायक 40-1100-50/2-
क्लिक्टर, सीमा-शुल्क। 1250।

डिप्टी क्लिक्टर, सीमा-शुल्क, डिप्टी रु० 1300-60-1600।

क्लिक्टर, केन्द्रीय उत्पादन शुल्क,

अंतिरित, क्लिक्टर अपिलेट

क्लिक्टर सीमा-शुल्क तथा उत्पादन

शुल्क।

क्लिक्टर, सीमा-शुल्क, क्लिक्टर रु० 1800-100-2000-

केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क 125-2250।

(क) नियुक्तियां 2 वर्ष के लिए परिवीक्षा के आधार मूर्ति की जाएगी, किन्तु यदि परिवीक्षाधीन अधिकारी निर्धारित विभागीय परीक्षाएं उत्तीर्ण कर के स्थायी-करण का हकदार नहीं हो जाता तो उस्त अवधि को बढ़ाया भी जा सकता है। तीन वर्ष की अवधि में विभागीय प्रतियोगिताओं को उत्तीर्ण न कर लेने पर नियुक्ति रद्द भी की जा सकती है।

(ख) यदि सरकार की राय में किसी परिवीक्षाधीन अधिकारी का कार्य अथवा आचरण संतोषजनक नहीं है अथवा उसके सक्षम अधिकारी बनने की संभावना नहीं है तो सरकार उसे तुरन्त सेवा मुक्त कर सकती है।

(ग) परिवीक्षाधीन अधिकारी का परिवीक्षाकाल पूर्ण होने पर सरकार उसकी नियुक्ति को स्थायी कर सकती है अथवा यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक नहीं रहा है तो सरकार या तो उसे सेवायुक्त कर सकती है अथवा उसके परिवीक्षाकाल में अपनी इच्छानुसार वृद्धि कर सकती है किन्तु अस्थायी रिक्तियों पर नियुक्ति किये जाने पर स्थायी-करण सम्बन्धी उसका कोई दावा नहीं स्वीकार किया जाएगा।

(घ) भारतीय सीमा-शुल्क तथा उत्पादन शुल्क सेवा, क्लास 1 के अधिकारी की भारत के किसी भी भाग में सेवा करनी होगी तथा भारत में ही 'फील्ड सर्विस' भी करनी होगी।

नोट 1—एक परिवीक्षाधीन अधिकारी को प्रारम्भ में रु० 400-400-450-30-510-द० रो०-700-40-1100-50/2-1250 के समय वेतन में न्यूनतम वेतन मिलेगा तथा वार्षिक वृद्धि के लिए अपने सेवाकाल को वह कार्यभार ग्रहण करने की तारीख से मानेगा।

नोट 2—परिवीक्षाधीन अधिकारी को समय-वेतनमान में रु० 400 से अधिक वेतन तब तक नहीं किया जायेगा जब तक कि वह समय-समय पर निर्धारित किये जाने वाले नियमों के अनुसार निर्धारित विभागीय परीक्षाएं उत्तीर्ण नहीं कर लेता/लेती।

नोट 3—जो सरकारी कर्मचारी परिवीक्षा के आधार पर भारतीय सीमा-शुल्क तथा केन्द्रीय उत्पादन कर सेवा श्रेणी 1 में नियुक्ति से पूर्व मौलिक आधार पर सावधिक पद के अंतिरित स्थायी पद पर नियुक्त था उसका वेतन मूल नियम 22-ख(1) की व्यवस्थाओं के अधीन विनियमित होगा।

नोट 4—परीक्षा की अवधि में अधिकारी को विभागीय प्रशिक्षण के लिए केन्द्रीय उत्पादन शुल्क विभाग सीमा शुल्क विभाग मादक पदार्थ (नारकोटिक्स) विभाग में तथा बुनियादी पाठ्यक्रम प्रशिक्षण (फार्म-डेशलन कोर्स ट्रेनिंग) के लिए लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन अकावमी मसूरी में नियुक्त किया जाएगा।

मसूरी में प्रशिक्षण समाप्त कर लेने पर उसे "पाठ्यक्रम संपूर्ण परीक्षा" उत्तीर्ण करनी होगी उसे विभागीय परीक्षा के खण्ड I और खण्ड II में भी सफलता प्राप्त करनी होगी। पाठ्यक्रम संपूर्ण परीक्षा और विभागीय परीक्षा के किसी एक खण्ड में उत्तीर्ण हो जाने के बाद, उसका वेतन पहली अग्रिम वेतन-वृद्धि देकर ₹ 450 कर दिया जायेगा। विभागीय परीक्षा के दोनों खण्डों में उत्तीर्ण हो जाने पर उसका वेतन दूसरी अग्रिम वेतन-वृद्धि देकर ₹ 480 कर दिया जायेगा। वेतन में ₹ 480 से अधिक वृद्धि तब तक नहीं की जाएगी जब तक कि वह अपनी सेवा के चार वर्ष पूरे नहीं कर लेता अथवा अन्य आवश्यक समझी जाने वाली शर्तों को पूरा नहीं कर लेता।

यदि कोई परिवीक्षाधीन अधिकारी "पाठ्यक्रम संपूर्ण परीक्षा" उत्तीर्ण नहीं करता तो उसके प्रथम अग्रिम वेतन वृद्धि को, जिस तारीख से वह मिली होती उसके एक वर्ष के लिए अथवा विभागीय विनियमों के अधीन दूसरी वेतन-वृद्धि अर्जित होने की तारीख तक, दोनों में से जो भी पहले हो, रोक दिया जायेगा।

नोट 5—परिवीक्षाधीन अधिकारियों को यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि उनकी नियुक्ति भारतीय सीमाशुल्क तथा केन्द्रीय उत्पादन शुल्क सेवा ब्लास I के गठन में समय-समय पर भारत सरकार द्वारा आवश्यक समझ कर किए जाने वाले प्रत्येक परिवर्तन के अधीन होगी और इस प्रकार के परिवर्तनों के फलस्वरूप उन्हें किसी प्रकार का मुआवजा नहीं दिया जाएगा।

भारतीय रक्षा लेखा सेवा

समय-मान—

₹ 400-400-450-480-510-द० रो०-700-40-1100-1100-1150-1150-1200-1250।

जूनियर प्रशासनिक ग्रेड—

₹ 1300-60-1600।

₹ 1600-100-1800 (सलैक्शन ग्रेड)

सीनियर प्रशासनिक ग्रेड—

₹ 1800-100-2000-125-2250।

रक्षा लेखा महानियंत्रक ₹ 2750 (नियत)

नोट 1—परिवीक्षाधीन अधिकारियों की सेवा, समय-मान में कम-से-कम वेतन से प्रारम्भ होगी और वेतन-वृद्धि के प्रयोजन से, उनकी कार्यग्रहण की तारीख से गिनी जायगी।

जो सरकारी कर्मचारी परिवीक्षा के आधार पर नियुक्ति से पूर्व मौलिक आधार पर सावधानिक पद के अतिरिक्त किसी स्थायी पद पर नियुक्त था

उसका वेतन मूल नियम 22-ख (1) की अपवस्थाओं के अधीन विनियमित होगी।

नोट 2—परिवीक्षाधीन अधिकारियों को 400 रु० से ऊपर का वेतन तब तक नहीं मिलेगा, जब तक कि समय-समय पर लागू होने वाले नियमों के अनुसार विभागीय परीक्षा पास नहीं कर लेंगे; इसके अलावा यदि कोई भी अधिकारी जो लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक एकादमी मसूरी की पाठ्यक्रमान्त परीक्षा नहीं पास करता उसकी पहली वेतन-वृद्धि जो उसे विभागीय परीक्षा का खण्ड I पास कर लेने पर प्राप्त होती उसकी तिथि एक वर्ष के लिए स्थिति स्थगित कर दी जाएगी अथवा खण्ड-II पास कर लेने के बाद जो उसे दूसरी वेतन-वृद्धि मिलती और इन दोनों में से जो भी अवधि पहले पढ़े तब तक स्थगित रहेगी।

9. भारतीय आयकर सेवा, श्रेणी 1

(क) नियुक्ति परिवर्तन पर की जाएगी जिसकी अवधि 2 वर्ष की होगी। परन्तु यह अवधि बढ़ाई भी जा सकती है, यदि परिवीक्षाधीन अधिकारी, निर्धारित विभागीय परीक्षाएं पास करके अपने आपको पक्का किए जाने (Confirmation) के योग्य सिद्ध न कर सके। यदि कोई अधिकारी तीन वर्ष की अवधि में विभागीय परीक्षाएं पास करने में लगातार असफल होता रहा तो उसकी नियुक्ति छह्म कर दी जायेगी।

(ख) यदि सरकार की राय में, परिवीक्षाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण असंतोषजनक हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की संभावना न हो तो सरकार उसे तत्काल सेवा मुक्त कर सकती है।

(ग) परिवर्तन-अवधि के समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है, या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण असन्तोषजनक रहा हो तो उसे या तो सेवा से मुक्त कर सकती है या उसकी परिवर्तन-अवधि को, जिसना उचित समझों, बढ़ा सकती है; परन्तु अस्थायी रूप से खाली जगहों पर की गई नियुक्तियों के सम्बन्ध में, पक्का करने का दावा नहीं किया जा सकेगा।

(घ) यदि सरकार ने सेवा में नियुक्तियां करने की अपनी शक्ति किसी अधिकारी को सौंप रखी है तो वह अधिकारी ऊपर के खण्डों में उल्लिखित सरकार की कोई भी शक्ति का प्रयोग कर सकता है।

(ङ) वेतनमान --

आयकर अधिकारी, श्रेणी-I

₹ 400-400-450-30-510-द० रो०-700-40-1100-50/2-1250।

आयकर सहायक आयुक्तः—रु० 1300—60—1600।
 आयकर के अपर आयुक्त ।
 रु० 1660—100—1800।
 आयकर आयुक्तः—रु० 1800—100—2000—125—
 2250।

परखाधीन अवधि में अधिकारी को लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक एकादमी मसूरी तथा आयकर प्रशिक्षण कालेज नागपुर में प्रशिक्षण प्राप्त करने होगा। मसूरी में प्रशिक्षण समाप्त होने पर उसे पाठ्य-क्रमान्त परीक्षा पास करनी होगी। इसके अतिरिक्त परखाधीन अवधि में विभागीय परीक्षा खण्ड I और खण्ड II भी पास करने होंगे। पाठ्य-क्रमान्त परीक्षा तथा विभागीय परीक्षा खण्ड I पास कर लेने पर वेन बड़ाकर 450 रु० कर दिया जाएगा। विभागीय परीक्षा खण्ड II पास कर लेने पर वेन बड़ा कर रु० 480 कर लिया जाएगा। रु० 480 के स्तर के ऊपर वेन तब तक नहीं दिया जाएगा। जब तक कि उस अधिकारी की सेवा 4 वर्षे पूरी नहीं चुकी हो या दूसरी ऐसी शर्तों के अधीन होगा जो आवश्यक समझा जाये।

यदि वह एकादमी की पाठ्य-क्रमान्त परीक्षा पास नहीं कर लेता तो एक वर्ष के लिए उसकी वेन वृद्धि स्थगित कर दी जायेगी अथवा उस तारीख तब जब तक कि विभागीय नियमों के अन्तर्गत उसे दूसरी वेन वृद्धि मिलने वाली हो और इन दोनों में से जो भी अवधि पहले पढ़े तब तक स्थगित रहेगी।

नोट 1—परखाधीन अधिकारी को 400 रु० से ऊपर का वेन तब तक नहीं मिलेगा जब तक वह समय-समय पर विहित नियमों के अनुसार विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर सेगा।

नोट 2—परखाधीन अधिकारियों को भली-भांति समझ लेना चाहिये कि उनकी नियुक्ति भारत सरकार द्वारा आयकर सेवा श्रेणी-I के गठन में किये जाने वाले किसी भी ऐसे परिवर्तन से प्रभावित हो सकेगी जो कि समय-समय पर उचित समझे जाने के बाद भारत सरकार द्वारा किया जायेगा और वे उस प्रकार के परिवर्तनों के फल स्वरूप प्रतिकर का दावा नहीं कर सकेंगे।

10. भारतीय आयुष कारखाना सेवा, श्रेणी I

(अतकनीकी संवर्ग)

(क) चुने गए उम्मीदवारों को सहायक प्रबन्धकों (परिवीक्षा पर) के रूप में नियुक्त किया जाएगा। परिवीक्षा की अवधि दो वर्ष की होगी। इस अवधि को आयुद्ध कारखानों के महानिदेशक की सिफारिश से सरकार द्वारा घटाया या बढ़ाया जा सकता है। सहायक प्रबन्धक (परिवीक्षा पर) सरकार द्वारा दिया जाने वाला प्रशिक्षण प्राप्त करेगा और उसे सरकार द्वारा निर्धारित विभागीय तथा भाषा परीक्षाएं उत्तीर्ण करनी होंगी। भाषा परीक्षाओं में एक परीक्षा हिन्दी की होगी।

अधिकारी की परिवीक्षा की अवधि के समाप्त होने पर सरकार उसको उसकी नियुक्ति पर स्पैशी करेगी, परन्तु यदि परिवीक्षा की अवधि में अथवा अन्त में उसका काम या आचरण, सरकार की राय में, असन्तोषजनक रहा है तो सरकार या तो उसको कार्यमुक्त कर सकती है या उसकी परिवीक्षा की अवधि उतने समय के लिए और बड़ा सकती है जितना वह उचित समझे, परन्तु शर्त यह है कि कार्यमुक्त करते के आदेश देने से पहले अधिकारी को सक्षम प्राधिकारी द्वारा उन बातों से अवगत कराया जायेगा जिनके आधारपर उसको कार्यमुक्त किया जाने वाला है और उसको उसपर लगाये गए दोषों के कारण बताने का अवसर दिया जायेगा।

(ख) भारतीय आयुद्ध कारखाने में सहायक प्रबन्धक (परिवीक्षा पर) को 400—400—450—30—600—35—670—द० रु०—35—950 रुपए के निर्धारित वेनमान में वेन मिलेगा। परिवीक्षा की अवधि के समय उनको विभाग की विभिन्न भाषाओं में और लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन एकादमी मसूरी में प्रशिक्षण के आधारभूत पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण लेना होगा। 'पाठ्यक्रम की अन्तिम परीक्षा' और विभागीय परीक्षा पास करने पर वे अग्रिम वेन वृद्धि पाने के पात्र होंगे जिससे उनका वेन बढ़ कर 450 रुपए प्रतिमाह तथा 480 रुपए प्रतिमाह हो जायगा। उनकी यह वेन-वृद्धि प्रथम व द्वितीय विभागीय परीक्षा के उस अन्तिम प्रश्न पत्र की तारीख से होगी जिसमें वे उत्तीर्ण हुए हैं। इसके बाद उनकी वेन-वृद्धि समय वेनमान में उनकी स्थिति के अनुसार तथा प्रेड में उनके स्थायी हो जाने के बाद, नियमित-रूप से होती रहेगी।

यदि सहायक प्रबन्धकों (परिवीक्षा पर) में से कोई लाल बहादुर शास्त्री प्रशासन एकादमी में "अन्तिम पाठ्यक्रम परीक्षा" उत्तीर्ण नहीं होती तो उसकी वेन-वृद्धि उस तारीख से एक वर्ष के लिए रोक दी जाएगी, जिस तारीख को उसे पहली वेन-वृद्धि प्राप्त होती अथवा विभागीय नियमों के अधीन उसे जब दूसरी वेन-वृद्धि प्राप्त होने वाली हो तब तक रक्षी रहेगी, इनमें से जो भी पहले हो।

(ग) (1) चुने गए उम्मीदवारों को आवश्यकता होने पर कम-से-कम चार वर्ष की अवधि के लिए सशस्त्र सेनाओं में कमीशन प्राप्त अधिकारियों के रूप में काम करना होगा। इस अवधि में प्रशिक्षण की अवधि भी, यदि हो तो, शामिल होगी, परन्तु शर्त यह है कि ऐसे अधिकारी के लिए (i) उसकी नियुक्ति की तारीख से 10 वर्ष के बाद कमीशन प्राप्त अधिकारी के रूप में सेवा करना आवश्यक नहीं होगा और (ii)

चालीस वर्ष की आयु हो जाने के बाद आम-तौर से कमीशन-प्राप्त अधिकारी के रूप में काम करना आवश्यक नहीं होगा।

(2) तारीख 9-3-1957 के साठ निः 30 आठ सं. 92 के अधीन प्रकाशित, रक्षा सेवा में असैनिक व्यक्ति (क्षेत्रीय सेवा दायिता) नियम, 1957 इन उम्मीदवारों पर भी लागू होंगे। उन नियमों में निर्धारित स्वास्थ्य-स्तर के अनुसार इनकी स्वास्थ्य परीक्षा की जायेगी।

(ग) स्वीकार्य वेतन की दरें निम्नलिखित हैं—

सहायक प्रबन्धक तकनीकी कनिष्ठ वेतनमान :

स्टाफ अधिकारी	रुपये 400-400-450-30-600-
	35-670-द० रो०-35-
	950।

उप-प्रबन्धक/उप-सहायक वरिष्ठ वेतनमान :—

महानिदेशक, आयुध कार-खाना	रुपये 700-40-1100-50/2-1250।
--------------------------	------------------------------

प्रबन्धक-वरिष्ठ उप-सहायक रुपये 1100-50-1400।

महानिदेशक, आयुध

कारखाना।

उप-महाप्रबन्धक/सहायक रुपये 1300-60-1600-100-

महानिदेशक, आयुध

कारखाना, श्रेणी-II

सहायक महानिदेशक, आयुध रुपये 1800-100-2000।

कारखाना, श्रेणी-I

उप-महानिदेशक आयुध रुपये 2000-125-2250।

कारखाना

भारतीय डाक सेवा

(क) चुने हुए उम्मीदवारों को इस विभाग में प्रशिक्षण लेना होगा जिसकी अवधि, आम तौर पर, दो वर्ष से अधिक नहीं होगी। इस अवधि में उन्हें निर्धारित विभागीय परीक्षा पास करनी होगी।

(ख) यदि सरकार की राय में, किसी प्रशिक्षणाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्य कुशल होने की संभावना न हो तो सरकार उसे तत्काल सेवा मुक्त कर सकती है।

(ग) परखावधि के समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है, या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा-मुक्त कर सकती है या उसकी परखावधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है, परन्तु अस्थायी रूप से खाली जगहों पर की गई नियुक्तियों के सम्बन्ध में, पक्का करने का दावा नहीं किया जा सकेगा।

(घ) यदि सरकार ने सेवा में नियुक्तियां करने की अपनी शक्ति किसी अधिकारी को सौंप रखी हो तो वह अधि-

कारी ऊपर के छण्डों में उल्लिखित सरकार की कोई भी शक्ति का प्रयोग कर सकता है।

(इ) वेतनमान :—

समय-मान रु० 400-400-450-30-510-

द० रो०-700-40-1100-50/2-1250।

(प्रशिक्षणाधीन अधिकारी इस समय-मान में वेतन लेंगे)

डाक सेवा निदेशक—रु० 1300-60-1600।

महापोस्ट मास्टर—रु० 1800-100-2000-125-2250।

सदस्य, डाक-तार-बोर्ड—रु० 2500-125/2-2750।

Senior Members, Post & Telegraphs Board, Rs. 3000

(च) भारतीय डाक सेवा श्रेणी I के परखाधीन अधिकारी—रु० 400-400-450-30-480-510-द० रो०-700-40-1100-50/2-1250 के निश्चित मान में अपना वेतन प्राप्त करेंगे। परखाधीन अवधि में उन्हें विभाग की विभिन्न शाखाओं तथा लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक एकादमी, मसूरी के आधारात्मक पाठ्यक्रम में प्रशिक्षण लेना पड़ेगा। मसूरी में प्रशिक्षण समाप्त होने पर उन्हें पाठ्यक्रम परीक्षा पास करनी होगी। विभागीय नियमों के अन्तर्गत विहित विभागीय परीक्षाएं भी उन्हें पास करनी होंगी।

पाठ्यक्रमान्त परीक्षा तथा विभागीय परीक्षा पास कर लेने पर उनके वेतन बढ़ा कर रु० 450 कर दिया जायेगा। दो वर्ष की परखाधीन अवधि समाप्त कर लेने और स्थायी किये जाने के बाद उनका वेतन 480 रु० के स्तर पर निश्चित कर दिया जायेगा। समयमान के अन्तर्गत उनकी विधि के अनुसार इसके बाद उनका वेतन निश्चित होता रहेगा। यदि कोई परखाधीन अधिकारी लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक एकादमी, मसूरी की पाठ्यक्रमान्त परीक्षा पास नहीं करता तो जिस तारीख को उसे पहली वेतन वृद्धि प्राप्त होगी उस तारीख से एक वर्ष के लिये स्थगित कर दी जायगी अथवा विभागीय नियमों के अन्तर्गत उसे जब मसूरी वेतन-वृद्धि प्राप्त होने वाली हो और इन दोनों में से जो भी अवधि पहले पड़े, तब तक स्थगित रहेगी।

जो सरकारी कर्मचारी परिवीक्षा के आधार पर नियुक्ति से पूर्व, मौलिक आधार पर सावधिक पद के अतिरिक्त किसी स्थायी पद पर नियुक्त था उसका वेतन मूल नियम 22-ख (1) की व्यवस्थाओं के अधीन विनियमित होगा।

(इ) परखाधीन अधिकारियों को यह भलीभांति समझ लेना चाहिए कि उनकी नियुक्ति भारत सरकार द्वारा भारतीय डाक सेवा श्रेणी I के गठन में किये जाने वाले

किसी भी ऐसे परिवर्तन में प्रभावित हो सकेगी जो कि समय-समय पर उचित समझे जाने के बाद, भारत सरकार द्वारा किया जाएगा, और वे इस प्रकार के परिवर्तनों के फलस्वरूप प्रतिकार का दावा नहीं कर सकेंगे।

(ज) आगे गये उम्मीदवारों को, सरकार के निदेशानुसार, संचय डाक सेवा के अन्तर्गत भारत अधिकारी विदेश में कार्य करना होगा।

12. भारतीय रेलवे लेखा सेवा

(क) नियुक्ति परख पर की जाएगी जिसकी अवधि 2 वर्ष की होगी। इस अवधि में दोनों में से किसी भी ओर से तीन महीने का नोटिस देकर सेवा समाप्त की जा सकेगी। परख-अवधि बढ़ाई जा सकेगी, यदि परखाधीन अधिकारी निर्धारित विभागीय परीक्षाएं पास करके अपने आपको पक्का करने के योग्य सिद्ध नहीं करेगा।

सरकार ऐसे परखाधीन अधिकारी की नियुक्ति खत्म कर सकती है जो अपनी नियुक्ति की तारीख से तीन वर्ष के भीतर सभी विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर लेता।

(ख) भारतीय रेलवे लेखा सेवा के परखाधीन अधिकारियों को भी रेलवे स्टाफ कालेज, बड़ीदा में प्रशिक्षण लेना होगा और कालेज प्राधिकारियों द्वारा निर्धारित परीक्षा पास करनी होगी। इस कालेज में परीक्षा देना अनिवार्य है और एक बार असफल होने पर दूसरा अवसर तभी मिल सकता है जबकि अपवादिक परिस्थितियों हों और अधिकारी, का कार्य ऐसा हो कि उसे यह छूट दी जा सकती हो। हालांकि, दो वर्ष का प्रशिक्षण संतोषजनक रूप से पूरा करने पर, उन्हें किसी कार्यकारी पद (Working Post) पर लगाया जा सकता है परन्तु उन्हें तब तक पक्का नहीं किया जाता जब तक कि वे रेलवे स्टाफ कालेज, बड़ीदा की परीक्षा और ऊंची तथा नीची विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर लेते।

(ग) परखाधीन अधिकारियों को देवनागरी लिपि में हिन्दी की अनुमोदित स्तर की एक परीक्षा पहले ही या परख-अवधि में पास कर लेनी चाहिए। यह परीक्षा या तो गृह मन्त्रालय की ओर से शिक्षा निदेशालय, दिल्ली, द्वारा संचालित 'प्रवीण' हिन्दी परीक्षा हो या केन्द्रीय सरकार द्वारा मान्यता-प्राप्त कोई समकक्ष परीक्षा हो किसी भी परखाधीन अधिकारी को तब तक पक्का नहीं किया जा सकता या उसका वेतन 450 रु. नहीं किया जा सकता जब तक कि वह यह परीक्षा पास नहीं कर लेता। ऐसा न करने पर सेवा समाप्त की जा सकती है। इसमें कोई छूट नहीं दी जा सकती।

(घ) इन नियमों के अनुसार भर्ती किए गए भारतीय रेलवे लेखा-सेवा के अधिकारी (परखाधीन) भी (क) पैशन के लाभों के पात्र होंगे, और (ख) समय-समय पर संशोधित राज्य रेलवे भविष्य निधि (अंशदान रहित)

के नियमों के अन्तर्गत इस निधि में अभिदान कर सकेंगे।

(ङ) इन नियमों के अधीन जो अधिकारी भर्ती किये जायेंगे वे समय-समय पर लागू होने वाले छुट्टियों के सुविधाजनक नियमों के अनुसार छुट्टी लेने के पात्र होंगे।

(च) यदि किसी ऐसे कारण से जो कि उसके बश के बावूर न हों, भारतीय रेलवे लेखा सेवा का कोई परखाधीन अधिकारी परख या प्रशिक्षण में ही छोड़ना चाहे तो उसे अपने प्रशिक्षण का सारा खर्च और परख-अवधि में उसे दी गई सब रकमें वापस करनी होंगी।

(छ) यदि सरकार की राय में, किसी परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की संभावना न हो, तो सरकार उसे तत्काल सेवा-मुक्त कर सकती है।

(ज) परख-अवधि के समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा-मुक्त कर सकती है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे बढ़ा सकती है, परन्तु अस्थायी रूप से खाली जगहों पर की गई नियुक्तियों के सम्बन्ध में पक्का करने का दावा नहीं किया जा सकता।

(1) वेतनमान :

(क) कनिष्ठ वेतनमान :— 400—400—450—30—600—35—
670—द० रो०—35—950 रु०
(प्राधिकृत वेतनमान)

वरिष्ठ वेतनमान :— 700 रु० (छठा वर्ष और उससे कम) —
40—1,100—50/2—1,250
(प्राधिकृत वेतनमान)।

कनिष्ठ प्रशासन ग्रेड :— 1,300—60—1,600 रु० (प्राधिकृत वेतनमान) :

इंटरमीडिएट प्रशासन ग्रेड :— 1,600—100—1,800 रु०।

वरिष्ठ प्रशासन ग्रेड :— 80 2,000—100—2,500।

(ख) यदि परखाधीन अधिकारी अपनी दो वर्ष की परख-अवधि में, निर्धारित विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर सकेगा तो रु. 400 से रु. 450 तक की उसकी वेतनवृद्धि रोक दी जाएगी और परख-अवधि बढ़ा दी जाएगी। जब वह विभागीय परीक्षाएं पास कर लेगा और उसके बाद जब पक्का कर दिया जाएगा तो अन्तिम विभागीय परीक्षा समाप्त होने की तारीख के बाद अगले दिन से उसका वेतन समय मान में उस अवस्था (Stage) पर नियत कर दिया जायेगा जो उसे अन्यथा मिला होता पर उसे वेतन का बकाया नहीं मिलेगा। ऐसे मामलों में भावी वेतन-वृद्धियों की तारीख पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

परख-अवधि में परखाधीन अधिकारी ज्योंही निर्धारित परिक्षाएं पास कर लेगा, त्योंही उसको ₹ 400-950 के जूनियर मान में ₹ 400 से ₹ 450 और ₹ 450 से 480 की अग्रिम वृद्धियां मिल सकेंगी। अग्रिम वृद्धियां मिलने के बाद, सेवा के वर्ष को व्यापार में रखते हुए, अधिकारी का वेतन, वेतनमान में उसकी सामान्य स्थिति के अनुसार विनियमित कर दिया जाएगा।

यदि कोई परखाधीन अधिकारी लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक अकादमी, मसूरी की पाठ्यक्रमांत परीक्षा पास नहीं करता तो जिस तारीख को उसे पहली वेतन-वृद्धि प्राप्त होती उस तारीख से एक वर्ष के लिये स्थगित कर दी जाएगी अथवा विभागीय नियमों के अन्तर्गत उसे जब दूसरी वेतन-वृद्धि प्राप्त होने वाली हो और इन दोनों में से जो भी अवधि पहले पड़े तब तक स्थगित रहेगी।

नोट 1—परखाधीन अधिकारियों की सेवा जूनियर मान में कम-से-कम वेतन से प्रारम्भ होगी और वेतन-वृद्धि के प्रयोजन से, वह उनको कार्य-ग्रहण की तारीख से गिनी जाएगी। परन्तु उन्हें निर्धारित विभागीय परीक्षा या परीक्षाएं पास करनी होंगी और उसके बाद ही उनका वेतन समय-मान में ₹ 400 प्रतिमास से ₹ 450 प्रतिमास किया जा सकेगा।

नोट 2—तथापि, जो सरकारी कर्मचारी परिवीक्षाधीन के रूप में नियुक्ति से पहले साधिक पद के अतिरिक्त अन्य स्थायी पद पर मूल रूप से कार्य करता था, उसका वेतन नियम 2018क (I) नियम II [मू० नि० 22-ख(1)] में दिए गए उपबन्धों के अनुसार विनियमित किया जाएगा।

13. सैनिक भूमि और छावनी सेवा (श्रेणी I और श्रेणी II)

(क) (i) नियुक्ति के लिये चुना गया उम्मीदवार परख पर रखा जाएगा जिसकी अवधि आमतौर पर 2 वर्ष से अधिक नहीं होगी। इस अवधि में सरकार द्वारा निर्धारित परीक्षण लेना होगा।

(ii) तथापि जो सरकारी कर्मचारी परिवीक्षाधीन के रूप में नियुक्ति से पहले साधिक पद के अतिरिक्त अन्य स्थायी पद पर मूल रूप से कार्य करता था उसका वेतन एक० आर० 22(ख)(i) में दिए गये उपबन्धों के अनुसार विनियमित किया जाएगा।

(ख) परख अवधि में उम्मीदवार को निर्धारित विभागीय परीक्षाएं पास करनी होगी।

(ग) (i) यदि सरकार की राय में परखाधीन अधिकारी का कार्य या आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्यकुशल होने की संभावना न हो तो सरकार उसे सेवा-मुक्त कर सकती है, परन्तु सेवामुक्ति का आदेश देने से पहले, उसे सेवा-मुक्ति के कारणों से अवगत कराया जाएगा और लिख कर “कारण बताने” का अवसर भी दिया जाएगा।

(ii) यदि परख-अवधि की समाप्ति पर, अधिकारी ने ऊपर उप-पैरा (ख) में उल्लिखित विभागीय परीक्षा पास न की हो तो सरकार अपने तिर्णय से या तो उसे सेवा-मुक्त कर सकती है या यदि मामले की परिस्थितियों को देखते हुए, उसकी परख-अवधि बढ़ानी आवश्यक हो तो वह जितना उचित समझे, परख-अवधि को एक वर्ष तक बढ़ा सकती है।

(iii) परख-अवधि के समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोष-जनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा-मुक्त कर सकती है या उसकी परख-अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है। परन्तु सेवा-मुक्ति को आदेश देने से पहले, अधिकारी को सेवा-मुक्ति के कारणों से अवगत कराया जायेगा और लिख कर “कारण बताने” का अवसर भी दिया जाएगा।

(घ) यदि ऊपर उप-पैरा (ग) के अन्तर्गत, सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की तो निर्धारित परख-अवधि के बाद की अवधि में अधिकारी की नियुक्ति मास-प्रतिमास मानी जायेगी और दोनों में से किसी भी ओर से एक कैलेंडर मास का लिखित नोटिस देकर समाप्त की जा सकेगी, रेवेन्यु अधिकारी पक्का करने का दावा नहीं कर सकेगा।

(इ) इस सेवा के सदस्य को उसकी परख-अवधि में वार्षिक वेतन-वृद्धि देय हो जाने पर भी, तब तक नहीं मिलेगी जब तक कि वह विभागीय परीक्षा पास न कर लेगा। जो वृद्धि इस प्रकार नहीं मिली होगी, वह विभागीय परीक्षा पास करने की तारीख से मिल जायेगी।

(च) यदि कोई परखाधीन अधिकारी लाल बहादुर शास्त्री प्रशासनिक अकादमी, मसूरी की पाठ्यक्रमांत परीक्षा पास नहीं करता तो जिस तारीख को उसे पहली वेतन वृद्धि प्राप्त होती उस तारीख से एक वर्ष के लिये स्थगित कर दी जाएगी अथवा विभागीय नियमों के अन्तर्गत उसे जब दूसरी वेतन वृद्धि प्राप्त होने वाली हो और इन दोनों में से जो भी अवधि पहले पड़े तब तक स्थगित रहेगी।

(छ) वेतन-मान इस प्रकार हैं :—

प्रशासनिक पद

(i) निदेशक सैनिक भूमि और छावनियां :

रु० 1800-100-2000-125-2250 ।

(ii) संयुक्त निदेशक, सैनिक भूमि और छावनियां :

रु० 1600-100-1800 ।

(iii) उपनिदेशक, सैनिक भूमि और छावनियां :

रु० 1300-60-1600 ।

(iv) सहायक निदेशक, सैनिक भूमि और छावनियां :

रु० 1100-50-1400 ।

श्रेणी I

(v) उप-सहायक निदेशक, सैनिक भूमि और छावनियां, सैनिक संपदा अधिकारी और कार्यपालक अधिकारी ।	रु० 400-400-450-30-510-द० रो०-700-40-1100-50/2-1250 ।
---	---

श्रेणी II

(vi) कार्यपालक अधिकारी	रु० 350-25-500-30-590-द० रो०-30-800-द० रो०-830-35-900 ।
------------------------	---

(vii) सहायक सैनिक सम्पदा अधि- रु 350-25-500-
कारी । 30-590-द० रो०-
30-800-द० रो०-
830-35-900 ।

(ज) (i) श्रेणी-I के अधिकारियों को, सामान्यतया उप-
सहायक निदेशक, सैनिक सम्पदा अधिकारी, और श्रेणी-I और श्रेणी
II की उन छावनियों में कार्यपालक अधिकारी के पदों पर नियुक्त
किया जायेगा जिन पर छावनी अधिनियम 1924 की धारा 13
की उपशारा—(4) के खण्ड (ङ) का उप खण्ड (i) लागू
होता है ।

(ii) श्रेणी II के कार्यपालक अधिकारियों को सामान्यतया
उन छावनियों में नियुक्त किया जायेगा जो ऊपर (i) में उल्लिखित
नहीं है ।

(झ) (i) सभी पदोन्नतियां, इस प्रयोजन के लिये सरकार
द्वारा नियुक्त की गई विभागीय पदोन्नति समिति की सिफारिशों
के अनुसार, सरकार द्वारा चुन कर (By Selection) की
जाएंगी [वरीयता (सीनियरिटी) पर तभी विचार किया जायेगा
जबकि दो या अधिक उम्मीदवारों के द्वावे गुणों की दृष्टि से बराबर
होंगे] । श्रेणी-II से श्रेणी-I में पदोन्नति होने पर, वेतन मूल
नियमावली (Fundamental Rules) के अनुसार विनियमित
किया जायेगा ।

(ii) साधारणतया, किसी भी अधिकारी को श्रेणी-I में
तब तक पदोन्नत नहीं किया जायेगा जब तक श्रेणी-II में उसकी
तीन वर्ष की सेवा पूरी न हो गई हो ।

(ञ) समय-समय पर संशोधित पुनरीक्षित छुट्टी नियमावली,
1933 लागू होगी ।

(ट) इस सेवा का कोई भी सदस्य, सरकार से पहले मंजूरी
लिये बिना, कोई भी ऐसा काम अपने जिम्मे नहीं लेगा जोकि उसके
सरकारी काम से सम्बन्धित न हो ।

(ठ) सैनिक भूमि और छावनी के अधिकारियों से भारत
में कहीं भी सेवा ली जा सकती है, और उन्हें क्षेत्र-सेवा (Field
Service) पर भी भारत के किसी भी भाग में भेजा जा सकता
है ।

14. भारतीय रेलवे यातायात सेवा

(क) नियुक्ति के लिये चुने गये उम्मीदवारों को भारतीय
रेलवे यातायात सेवा में परखाधीन अधिकारियों के रूप में नियुक्त
किया जायेगा । उनकी परख अवधि तीन वर्ष की होगी । इस अवधि
में, उन्हें पैरा (ङ) में उल्लिखित प्रशिक्षण लेना होगा और कम-
से-कम एक वर्ष तक किसी कार्यकारी पद पर काम करना होगा
यदि किसी मामले में, संतोषजनक रूप से प्रशिक्षण पूरा न करने
के कारण, प्रशिक्षण की अवधि बढ़ाई जायेगी तो उसके अनुसार
परख की कुल अवधि भी बढ़ जायेगी ।

(ख) यदि किसी ऐसे कारण से, जो कि उसके बग के बाहर
न हो, भारतीय रेलवे यातायात सेवा का परखाधीन अधिकारी,
परख या प्रशिक्षण बीच में ही छोड़ना चाहे तो उसे अपने प्रशिक्षण
का सारा खर्च और परख अवधि में उसे दी गई सब रकमें वापस
करनी होंगी ।

(ग) इस सेवा में नियुक्तियां परख पर की जायेंगी जिसकी
अवधि तीन वर्ष की होगी । इस अवधि में दोनों में से किसी भी ऑर
से तीन महीने का नोटिस देकर समाप्त की जा सकेगी ।
परखाधीन अधिकारियों को पहले दो वर्ष तक व्यावहारिक प्रशिक्षण
लेना होगा । जो अधिकारी इस प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक समाप्त
कर लेंगे और अन्यथा भी उपयुक्त समझे जायेंगे, उन्हें कार्यकारी
पद का कार्यभार सौंप दिया जायेगा, यदि उन्होंने निर्धारित विभागीय
और अन्य परीक्षाएं पास कर ली हों । ध्यान रहे कि ये परीक्षाएं
नियमित प्रथम प्रयास में ही पास कर ली जाएं, क्योंकि विशेष ('एक्सेप्शनल') परिस्थितियों को छोड़, बाकी किसी भी हालत में,
दूसरा अवसर नहीं दिया जायेगा । किसी परीक्षा में असफल होने
के परिणामस्वरूप परखाधीन अधिकारी की सेवा समाप्त की जा
सकती है और उसकी वेतन-वृद्धि तो हर हालत में रुक ही जायेगी ।
किसी कार्यकारी पद पर एक वर्ष तक कार्य करने के बाद, परखा-
धीन अधिकारियों को एक अन्तिम परीक्षा पास करनी होगी ।
यह परीक्षा व्यावहारिक और सैन्यांतिक दोनों प्रकार की होगी ।
जब परखाधीन अधिकारी सब तरह से नियुक्ति के लिए उपयुक्त
समझ लिये जायेंगे तो उन्हें पक्का कर दिया जायेगा । जिन मामलों
में किसी कारण से परख अवधि बढ़ाई गई हो, उनमें विभागीय
परीक्षा पास करने और पक्का होने पर, समय-समय पर लागू होने
वाले नियमों और आदेशों के अनुसार, पहली और बाद की
वेतन-वृद्धियां ली जा सकेंगी ।

(घ) परखाधीन अधिकारियों को, देवनागरी लिपि में अनु-
मोदित स्तर की हिन्दी की एक परीक्षा पहले ही या परख अवधि में
पास कर लेनी चाहिए । यह परीक्षा या तो गृह मन्त्रालय की ओर से
शिक्षा निदेशालय, दिल्ली द्वारा संचालित "प्रवीण" हिन्दी परीक्षा
हो या केंद्रीय सरकार द्वारा मान्यताप्राप्त कोई समकक्ष परीक्षा हो ।

किसी भी परखाधीन अधिकारी को तब तक पक्का नहीं
किया जा सकता या उसका वेतन 450 रु 0 नहीं किया जा सकता
जब तक कि वह यह परीक्षा पास नहीं कर लेता । ऐसा न करने
पर सेवा समाप्त की जा सकती है । इसमें कोई छूट नहीं दी जा
सकती ।

(ङ) इन नियमों के अनुसार भर्ती किये गये भारतीय रेलवे
यातायात सेवा के अधिकारी (परखाधीन) भी :—

(क) रेलवे पेंशन नियमों द्वारा अधिसासित होंगे;
और

(ख) समय-समय पर संशोधित, राज्य रेलवे भविष्य निधि
(अंशदानरहित) के नियमों के अन्तर्गत इस निधि
में अभिदान कर सकेंगे ।

(च) कार्यग्रहण की तारीख से ही वेतन प्रारम्भ होगा ।
वेतनवृद्धि के प्रयोजन से भी सेवा उसी तारीख से गिनी जाएगी ।

(छ) इन नियमों के अधीन जो अधिकारी भर्ती किये जायेंगे
वे समय-समय पर लागू होने वाले छुट्टियों के सुविधाजनक नियमों
के अनुसार छुट्टी लेने के पात्र होंगे ।

(ज) अधिकारियों को, आम तौर पर, उनकी सेवा की अवधि
पर उसी रेलवे में रहा जायेगा जिसमें वे सर्वप्रथम नियुक्त कर

दिये जायेंगे। और किसी अन्य रेलवे में स्थानान्तरित होने के लिये साधिकार दावा नहीं कर सकेंगे। परन्तु भारत सरकार को यह अधिकार है कि वह उन अधिकारियों को, सेवा की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, भारत में या भारत से बाहर किसी परियोजना (Project) या रेलवे में स्थानान्तरित कर सके।

(म) वेतन-मान—

जूनियर वेतनमान—₹० 400—400—450—30—600—
35—670—द० रो०—35—950 (प्राधिकृत वेतन-
मान)।

सीनियर वेतनमान—₹० 700 (छटे वर्ष या पहले)—40—
1100—50/2—1250 (प्राधिकृत वेतनमान)।

जूनियर प्रशासनिक प्रेड—₹० 1300—60—1600 (प्राधि-
कृत वेतनमान)।

माध्यमिक प्रशासनिक प्रेड—₹० 1600—100—1800—
(प्राधिकृत वेतनमान)।

सीनियर प्रशासनिक प्रेड—₹० 2,000—100—2,500
(प्राधिकृत वेतनमान)।

नोट 1—परखाधीन अधिकारियों की सेवा जूनियर मान में कम से कम वेतन से प्रारम्भ होगी और वेतन वृद्धि के प्रयोजन से, वह उनकी कार्यग्रहण की तारीख से गिनी जायेगी। परन्तु उन्हें निर्धारित विभागीय परीक्षा या परीक्षाएं पास करनी होंगी। और उसके बाद ही उनका वेतन मान ₹० 400 प्रतिमास से ₹० 450 प्रतिमास किया जा सकेगा।

यदि परखाधीन अधिकारी अपनी परख और प्रशिक्षण को अवधि के पहले दो वर्षों में, विभागीय परीक्षाएं पास नहीं कर सकेगा तो ₹० 400 से 450 तक की उसकी वेतन वृद्धि रोक दी जाएगी और परख अवधि बढ़ा दी जाएगी। जब यह विभागीय परीक्षाएं पास कर लेगा और उसके बाद जब पक्का हो जायेगा तो अंतिम विभागीय परीक्षा समाप्त होने की तारीख के बाद अगले दिन से उसका वेतन समय-मान में उस अवस्था पर नियत कर दिया जायेगा जो उसे अन्यथा मिला होता पर उसे वेतन का बकाया नहीं मिलेगा, ऐसे मामलों में, भावी वेतन वृद्धियों को तारीख पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

परख-अवधि में, परखाधीन अधिकारी ज्यों ही निर्धारित परीक्षाएं पास कर लेगा, त्यों ही उसको ₹० 400 से 950 के जूनियर वेतन मान में ₹० 400 से ₹० 450 और ₹० 450 से ₹० 480 की अग्रिम वृद्धियां मिल सकेगी। अग्रिम वृद्धियां मिलने के बाद, सेवा के वर्ष को ध्यान में रखते हुए, अधिकारियों को वेतन-मान में उसकी सामान्य स्थिति के अनुसार, विनियमित कर दिया जायेगा।

यदि कोई परखाधीन अधिकारी लालबाहूदुर शास्त्री प्रशासनिक एकादमी, मसूरी की पाठ्यक्रमांत परीक्षा पास नहीं करता तो जिस तारीख को उसे पहले वेतन वृद्धि प्राप्त होती उस तारीख से एक वर्ष के लिये स्थगित कर दी जायेगी, अथवा विभागीय नियमों के अन्तर्गत उसे जब दूसरी वेतन वृद्धि प्राप्त होने वाली हो और उन दोनों में से जो भी अवधि पहले पड़े तब तक स्थगित रहेगी :

नोट 2—तथापि, जो सरकारी कर्मचारी परिवीक्षाधीन के रूप में नियुक्ति से पहले सावधिक पद के अतिरिक्त अन्य स्थायी पद पर मूल रूप से कार्य करता था, उसका वेतन नियम 2018क(i) नि०—ii [म० नि० 22-ख(i)] में दिये गये उपबन्धों के अनुसार विनियमित किया जायेगा।

(आ) वेतन वृद्धियां केवल अनुमोदित सेवा के लिये ही और विभाग के नियमों के अनुसार ही दी जाएगी।

(ट) प्रशासनिक ग्रेडों में पदोन्नति, स्वीकृति स्थापना (establishment) में खाली जगहें होने पर ही की जायेंगी और पूर्णरूप से चुनाव (selection) के आधार पर ही की जायेंगी। एकमात्र वरीयता के आधार पर ही ऐसा पदोन्नति के लिये दावा नहीं किया जा सकता।

(ठ) भारतीय रेलवे यातायात सेवा के परखाधीन अधिकारियों के प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम ।

नोट 1—जिन उम्मीदवारों ने भारत में या और कहीं प्रशिक्षण या अनुभव पहले कभी प्राप्त कर रखा हो, उनके मामले में भारत सरकार को अपने निर्णय के अनुसार प्रशिक्षण-अवधि घटाने का अधिकार है।

नोट 2—परखाधीन अधिकारियों को भी रेलवे स्टाफ कालेज बड़ोदा में दो दौर में प्रशिक्षण लेना होगा। इस कालेज में परीक्षा देना अनिवार्य है और एक बार असफल होने पर दूसरा अवसर तभी मिल सकता है जब कि आपवादिक परिस्थितियां हों और अधिकारी का कार्य अभिलेख ऐसा हो कि उसे यह छूट दी जा सकती है। परीक्षा में असफल होने पर परखाधीन अधिकारियों की सेवा समाप्त की जा सकेगी, उनके प्रशिक्षण और परख की अवधि आवश्यकतानुसार बढ़ा दी जाएगी और उन्हें किसी भी हालत में तब तक पक्का नहीं किया जाएगा जब तक कि वे परीक्षाये पास नहीं कर लेंगे।

नोट 3—नीचे जो प्रशिक्षण का कार्यक्रम दिया गया है वह मुख्य रूप से मार्ग-दर्शन के प्रयोजन से बनाया गया है। इसमें महाप्रबंधकों द्वारा अपने निर्णय के अनुसार स्थिति-विशेष को ध्यान में रखते हुय परिवर्तन किये जा सकते हैं, परन्तु सामान्यतया प्रशिक्षण की कुल अवधि घटाई जानी चाहिये।

नोट 4—प्रशिक्षण के दौरान परिवीक्षाधीन अधिकारी को, गार्ड, यार्ड मास्टर, सहायक स्टेशन मास्टर, स्टेशन मास्टर, यार्ड फोरमैन, ट्रेन परीक्षक, सहायक लोको फोरमैन, सहायक नियंत्रक आदि की हैसियत से कार्य करना होगा जिसका विवरण नीचे दिया गया है। प्रशिक्षण की समाप्ति के बाद जब परिवीक्षाधीन अधिकारी को किसी कार्यकारी पद पर तैनात किया जाता है तो उसे अपना कार्य करने के लिये यात्रा करनी पड़ती है तथा यात्रा के दौरान रास्ते के स्टेशनों पर “पड़ाव” की कोई सुविधायें उपलब्ध नहीं होती हैं। उसे दुर्घटना स्थलों की जांच के लिये किसी भी समय जाना पड़ता है तथा नियंत्रक कार्यालयों (control offices) और स्टेशनों का निरीक्षण करना पड़ता है। इस

सब के लिये बहुत परिश्रम अपेक्षित होता है तथा रात को भी काम करना पड़ता है।

उ (i) पाठ्यक्रम की अवधि—दो वर्ष

मद	अवधि (सप्ताह)	1	2
1. लाल बहादुर शास्त्री प्रशिक्षण अकादमी, मधुरी	17		
2. बड़ौदा स्टाफ कालिज (प्रथम दौर)	12		
3. क्षेत्रीय स्कूल, गार्ड के कर्तव्य सीखने के लिये (प्रथम दौर)	4		
4. गार्ड के रूप में कार्य करते हुए	3		
5. बुकिंग/पार्सल आफिस गुड्स शेड तथा ट्रांस-शिपमेंट रोड	10		
6. यातायात लेखा तथा लेखाओं का यांत्रिक निरीक्षक	5		
7. क्षेत्रीय स्कूल में सहायक स्टेशन मास्टर के कर्तव्य सीखने के लिये (द्वितीय दौर)	4		
8. यार्ड मास्टर, सहायक स्टेशन मास्टर, स्टेशन मास्टर, यार्ड फोरमैन तथा ट्रेन परीक्षक के रूप में कार्य करते हुए	13		
9. सहायक लोको फोरमैन के रूप में कार्य करते हुए	1		
10. सहायक नियंत्रक	4		
11. उप सहायक नियंत्रक, विचुत नियंत्रक का प्रशिक्षण	6		
12. बड़ौदा स्टाफ कालिज (द्वितीय दौर)	6		
13. पूर्वी रेलवे में प्रशिक्षण			
(क) आसन सोल डिवीजन			
(i) कोल पाइलट का कार्य करते हुए 1.5 सप्ताह			
(ii) अन्दाल और आसनसोल यार्ड कम्पलेक्स का कार्य—इसमें दार्शनीरुद्धात्र सहायक काम की जैसी वार्ताएँ भी शामाल हैं।	2.5		
(ख) धमवाद डिवीजन			
(i) कोयला अवंटन की कार्यविधि—इसमें पेह और करनपुरा जैसे यार्डों तथा पेह और दुआदा वार्षारीज तक के क्षेत्रों का दौरा करना होगा।	2		
(ii) क्षेत्रीय कोयला अधीक्षक के कार्यालय का कार्य			
(ग) मुगलसराय भार्षलिंग यार्ड-साथ ही मन्दुआदीह—देहरी औन-सन तक दौरे भी करने होंगे।	1		

14. बक्षिण पूर्वी रेलवे में परिक्षण

(i) बक्षिण पूर्वी रेलवे डिवीजन—बॉडामृदा यार्ड, राऊरकेला इस्पात कारखाना—इसके साथ साथ कैपिटिव माइन्स के दौरे।	1.5
(ii) बिलासपुर डिवीजन भिलाई भार्षलिंग यार्ड, भिलाई इस्पात कारखाना—तथा चीरी-मीरी और महेंद्रगढ़ कोयला खानों के क्षेत्रों का दौरा	1.5
15. रेलवे जिसमें आवंटित किया गया—उसमें प्रशिक्षण	
(क) मुख्य कार्यालय (संचालन) 4.00	8.00
(ख) मुख्य कार्यालय (वाणिज्यक) 4.00 विभिन्न प्रकार के परिक्षण के लिये यात्रा समय तथा अतिआवश्यक युद्धी के लिये रखी गई समयावधि	2.5
कुल	104.0

सप्ताह
या 24 महीने

टिप्पणी—3 से 11 तक की मद्दें जिनका समय 1 वर्ष होगा आसनसोल डिवीजन में होगी।

(2) यदि परखाधीन अधिकारी अपने दो वर्ष के प्रशिक्षण के अन्त में परीक्षा पास कर लेगा तो उसे अगले एक वर्ष के लिये किसी कार्यकारी पद का भार परख पर सौंप दिया जाएगा; परीक्षा आवश्यकता अनुसार, पाठ्यक्रम पूरा होने पर तथा प्रशिक्षण अवधि में निश्चित समय पर ली जाएगी।

नोट—किसी परखावधि अधिकारी को, स्वतन्त्र रूप से, गार्ड, सहायक स्टेशन मास्टर, स्टेशन मास्टर, यार्ड फोरमैन, सहायक लोकोमोटिव फोरमैन या सहायक नियंत्रक का काम सौंपने से पहले यह आवश्यक है कि प्रशासन के किसी जिम्मेदार अधिकारी द्वारा उक्त प्रत्येक पद के कार्य के संबंध में उसकी परीक्षा ली जाए और योग्य घोषित किया जाए।

15. केन्द्रीय सचिवालय सेवा, अनुभाग अधिकारी, ग्रेड, श्रेणी II

(क) केन्द्रीय सचिवालय सेवा में इस समय निम्नलिखित ग्रेड हैं:—

ग्रेड	वेतनमान
सलेक्शन ग्रेड उप-सचिव या समकथ	रु 1100-50-1300 60-1600-100-1800 ।
ग्रेड—I अवर सचिव	रु 900-50-1200 ।
अनुभाग अधिकारी ग्रेड	रु 350-25-500-30-590-द० रो०-30-800-द० रो०-30-830 35-900 ।
सहायक ग्रेड	रु 210-10-270-15-300 द० रो० 15-450-द०-रो०-20-530 ।

सलैक्षण ग्रेड और ग्रेड का नियंत्रण अधिल-सचिवालय आधार भर मंत्रीमण्डल (कार्मिक तथा प्रशासनिक विभाग) करता है और अनुभाग अधिकारी/सहायक ग्रेड, मंत्रालयों द्वारा नियंत्रित किये जाते हैं।

केवल अनुभाग अधिकारी ग्रेड और सहायक ग्रेड में ही सीधी भर्ती की जाती है।

(ख) अनुभाग अधिकारी ग्रेड में सीधे भर्ती किये गये अधिकारियों को दो वर्ष तक परख पर रखा जायेगा। इस परख अवधि में उनको सरकार के द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण लेना होगा और विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी, यदि परखाधीन अधिकारी प्रशिक्षण अवधि में पर्याप्त प्रगति न दिखा सके या परीक्षाएं पास न कर सके तो उन्हें सेवा-मुक्त कर दिया जायेगा।

(ग) परख अवधि समाप्त होने पर, सरकार अधिकारी को उसकी नियुक्ति पर पक्का कर सकती है या यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा-मुक्त कर सकती है या उसकी परख अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है।

(घ) यदि सरकार ने सेवा में नियुक्ति करने की अपनी शक्ति किसी अधिकारी को सौंप रखी हो तो वह अधिकारी उपर्युक्त खण्डों में वर्णित सरकार की किसी भी शक्ति का प्रयोग कर सकता है।

(ङ) अनुभाग अधिकारियों को सामान्यतया “अनुभागों” का अध्यक्ष बनाया जायेगा और ग्रेड-I के अधिकारियों को, सामान्यतया शाखाओं का कार्यभार सौंपा जायेगा, जिनमें एक या अधिक अनुभाग होंगे।

(च) अनुभाग अधिकारी इस सम्बन्ध में समय-समय पर लागू होने वाले नियमों के अनुसार ग्रेड में पदोन्नति पा सकेंगे।

(छ) केन्द्रीय सचिवालय सेवा के ग्रेड-I के अधिकारी, केन्द्रीय सचिवालय में सलैक्षण ग्रेड की सेवा में और अन्य ऊंचे प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति पाने के पात्र होंगे।

(ज) जहां तक केन्द्रीय सचिवालय सेवा के अधिकारियों की छूटी, पेंशन और सेवा की अन्य शर्तों का सम्बन्ध है, वे अन्य श्रेणी-I और II के अधिकारियों के समान ही समझे जायेंगे।

16. भारतीय विदेश सेवा ब्रांच ‘बी०’ सामान्य संवर्ग के एकीकृत ग्रेड II तथा III (अनुभाग अधिकारी ग्रेड)।

(क) भारतीय विदेश सेवा ब्रांच ‘बी०’ (श्रेणी II) के एकीकृत ग्रेड II तथा III की अनुरक्षण रिक्तियों की 33½% रिक्तियां संघ लोक सेवा आयोग के माध्यम से भरी जाती हैं। इस ग्रेड का वेतनमान ₹ 350-25-500-30-590-द०रो०-30-830-35-900 है।

(ख) अनुभाग अधिकारी ग्रेड में सीधे भर्ती किये गये अधिकारी 2 वर्ष के लिये परिवीक्षा पर होंगे और इस अवधि के दौरान उन्हें सरकार द्वारा विहित की गई ट्रेनिंग तथा विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी। प्रशिक्षण के दौरान उन्हें पर्याप्त प्रगति न कर पाने अथवा विहित परीक्षायें पास न कर सकने पर परिवीक्षाधीन अधिकारी को सेवा से अलग कर दिया जाएगा।

(ग) परिवीक्षा की अवधि समाप्त होने पर सरकार स्थायी पद उपलब्ध होने पर अधिकारी को उसके पद पर स्थायी कर सकती है अथवा उसका कार्य अथवा आचरण, सरकार की राय में, असंतोष-प्रद होने पर या तो उसे सेवा से अलग किया जा सकता है या उसकी परिवीक्षा की अवधि को उतना और बढ़ाया जा सकता है जितना सरकार उचित समझेगी। परिवीक्षा की कुल अवधि 3 वर्ष से अधिक नहीं होगी।

(घ) इस सेवा में नियुक्ति करने की शक्तियां सरकार द्वारा किसी अधिकारी को प्रत्यायोजित किये जाने पर वह अधिकारी उपरोक्त खण्ड में विहित सरकार की किसी भी शक्ति का प्रयोग कर सकता है।

(ङ) इस सेवा में नियुक्ति किये गये अधिकारी सामान्यतः अनुभागाध्यक्ष होंगे। विदेश मंत्रालय/विदेश व्यापार मंत्रालय के मुख्यालय में नियुक्त होने पर उनका पदनाम अनुभाग अधिकारी तथा कहीं प्रशासनिक अधिकारी होगा। विदेश स्थित भारतीय मिशनों में सेवा पर होने पर उन का पदनाम रजिस्ट्रार होगा। हालांकि स्थानीय प्रयोजनों के लिये उन्हें राजनयिक हैसियत का अताशे (अटैची) कहा जा सकता है।

(च) अनुभाग अधिकारी भारतीय विदेश सेवा (बी०) के सामान्य संवर्ग के ग्रेड-I में इस सम्बन्ध में समय-समय पर लागू नियमों के अनुसार ₹ 900-50-1250 पदोन्नति के पात्र होंगे।

(छ) इसी तरह भारतीय विदेश सेवा (बी०) के सामान्य संवर्ग के ग्रेड-I के अधिकारी, इस सम्बन्ध में समय-समय पर लागू नियमों के अनुसार भारतीय विदेश सेवा (ए०) के वरिष्ठ वेतनमान में, ₹ 900 (छ: वर्ष या कम) -50-1000-60-1600-50-1800 के वेतनमान में नियुक्ति के पात्र होंगे।

(ज) भारतीय विदेश सेवा, ब्रांच (बी०) विदेश मंत्रालय तथा विदेश स्थित भारतीय मिशनों तक सीमित है और इस सेवा में नियुक्त अधिकारी विदेश व्यापार मंत्रालय के अलावा किसी अन्य मंत्रालय में सामान्यतः अन्तरित नहीं किये जाते। किन्तु उन्हें भारत में तथा बाहर कहीं भी सेवा में जाना पड़ सकता है।

(झ) विदेश में सेवा के दौरान, भारतीय विदेश सेवा (बी०) के अधिकारियों को उनके मूल वेतन के अतिरिक्त, समय-समय पर मंजूर की गई दरों पर विवेश भत्ता प्रदान किया जाता है जो सम्बन्धित देश में निवाह-खर्च पर निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त, विदेश में सेवा के दौरान भारतीय विदेश सेवा (पी०एल०सी०ए०) नियम, 1961, जिस रूप में वे भारतीय विदेश सेवा (बी०) के अधिकारियों पर लागू किये गये हैं, के अनुसार रियायते भी दी जाती हैं:—

- (i) सरकार द्वारा निर्धारित वेतनमान के अनुसार निःशुल्क सुसज्जित आवास।
- (ii) सहायता प्रदत्त चिकित्सा परिचर्या योजना के अन्तर्गत चिकित्सा परिचर्या की सुविधाएं।
- (iii) विशेष संकट काल में जैसे किसी निकटतम संबंधी की भारत में मृत्यु या गंभीर बिमारी की स्थिति में, जैसा कि सरकार द्वारा परिभाषित किया गया हो,

- अधिकारी के सेवा काल के दौरान अधिकतम दो बार विदेश में छुट्टी स्थल से भारत और वहाँ से वापिस छुट्टी स्थल तक का बापसी हवाई भाड़ा ।
- (iv) भारत में पढ़ रहे आठ और 21 वर्ष के बीच की आयु के बच्चों को छुट्टियों के दौरान आपसे माता-पिता से मिलने के लिये कतिपय शर्तों के अधीन वार्षिक बापसी हवाई भाड़ा ।
- (v) 5 और 18 वर्ष के बीच की आयु के अधिकतम वो बच्चों के लिये, सरकार द्वारा समय-समय पर विहित की गई दरों पर शिक्षा भत्ता ।
- (vi) सरकार द्वारा समय-समय पर नियत की गई दरों तथा विहित नियमों के अनुसार विदेश सेवा के संबंध में आऊट-फिट भत्ता । साधारण आऊट-फिट भत्ते के अतिरिक्त ऐसे देशों में पदस्था अधिकारियों को विशेष आऊट-फिट भत्ता भी मिलता है जहाँ की जलवायु असामान्य रूप से शीतल होती है ।
- (vii) विहित नियमों के अनुसार अधिकारियों और उनके परिवारों को होम लीब (घर जाने की छुट्टी) भाड़ा ।

(अ) इस सेवा के सदस्यों पर संशोधित छुट्टी नियम, 1933 समय-समय पर संशोधित रूप में लागू होते हैं जिनमें कुछ संशोधन किया जा सकता है । विदेश सेवा के संबंध में, पड़ोसी देशों को छोड़-कर, अधिकारी संशोधित छुट्टी नियम के अन्तर्गत मिलने वाली छुट्टी के 50% तक छुट्टी का एडीशनल क्रेडिट पाने के हकदार हैं ।

(ट) भारत में होने पर ये अधिकारी ऐसी रियायतें पाने के हकदार होंगे जो बराबर के और मिलती जुलती हैं सियत के अन्य केन्द्रीय सरकारी अधिकारियों को प्राप्त हैं ।

(ठ) भारतीय विदेश सेवा (बी०) के अधिकारी सामान्य भविष्य नियंत्रण (केन्द्रीय सेवाएं) नियम, 1960, यथा समय-समय पर संशोधित और उनके अधीन जारी किये गये आदेशों द्वारा शासित होंगे ।

(ड) इस सेवा में नियुक्त अधिकारी लिब्रेसाइज्ड पेंशन रूल्स, 1950, यथा समय-समय पर संशोधित तथा उनके अधीन जारी किये गये आदेशों द्वारा शासित होंगे ।

16. शास्त्र सेवा मुख्यालय सिविल सेवा सहायक सिविल स्टाफ अधिकारी ग्रेड श्रेणी II

(क) सशस्त्र सेवा मुख्यालय सिविल सेवा में फिलहाल निम्नलिखित पांच ग्रेड हैं:—

ग्रेड	वेतनमान
1	2

- (1) संयुक्त निदेशक (क्लास-I) रु० 1300-60-1600 ।
 (2) सीनियर सिविलियन स्टाफ आफिसर (क्लास-I) रु० 1100-50-1400 ।
 (3) सिविलियन स्टाफ आफिसर (क्लास-I) रु० 740-30-800-50-1150 ।

1	2
(4) सहायक सिविलियन स्टाफ आफिसर (क्लास-II-राज-परिवत)	रु० 350-25-500-30-590-द० रो०-30-800
(5) सहायक (क्लास-II-अराज-परिवत)	रु० 210-10-270-15-300-द० रो०-15-450-द० रो०-20-530 ।

उपरोक्त सेवा सशस्त्र सेवा मुख्यालय तथा प्रतिरक्षा मंत्रालय के अन्तर्सेवा संगठनों के लिये कर्मचारियों की आवश्यकता की पूर्ति करती है ।

सीधी भर्ती के ब्रेड सहायक सिविल स्टाफ अधिकारी ग्रेड तथा सहायक ग्रेड में ही की जाती है ।

(ख) सीधी भर्ती वाले व्यक्ति सहायक सिविल स्टाफ अधिकारी ग्रेड पर 2 वर्ष तक परिवीक्षा पर रहेंगे । इस अवधि में उन्हें सरकार द्वारा निर्धारित कोई भी प्रशिक्षण प्राप्त करना पड़ सकता है अथवा परीक्षाएं पास करनी पड़ सकती हैं । प्रशिक्षण के दौरान पर्याप्त प्रगति न होने अथवा परीक्षाओं में उत्तीर्ण न हो पाने के फलस्वरूप परिवीक्षाधीन व्यक्ति को सेवा से निकाल दिया जायेगा ।

(ग) परिवीक्षा की अवधि समाप्त होने पर सरकार चाहे तो सम्बन्धित अधिकारी को उसकी नियुक्ति में स्थायी कर दे अथवा यदि उसका कार्य, अथवा आचरण सरकार के विचार में संतोषजनक न रहा हो तो उसे सेवा से निकाल दे या परिवीक्षा की अवधि उतने काल तक के लिये बढ़ा दे जितना सरकार उचित समझे ।

(घ) यदि सेवा में नियुक्तियां करने का अधिकार सरकार द्वारा किसी अधिकारी को प्रस्तावित किया जाये तो वह अधिकारी उपयुक्त अनुच्छेदों में वर्णित सरकार की शक्तियों में से किसी का भी प्रयोग कर सकता है ।

(ङ) सहायक सिविल स्टाफ अधिकारी समय-समय पर तत्सम्बन्धी प्रचलित नियमों के अनुसार सेवा के वरिष्ठ सिविलियन स्टाफ अधिकारी ग्रेड में पदोन्नति के हकदार होंगे ।

(च) सशस्त्र सेवा मुख्यालय सिविल सेवा के सिविलियन स्टाफ अधिकारी समय-समय पर तत्सम्बन्धी प्रचलित नियमों के अनुसार सेवा के वरिष्ठ सिविलियन स्टाफ अधिकारी ग्रेड में तथा अन्य प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति के हकदार होंगे ।

(ज) जहाँ तक छुट्टी, पेंशन तथा सेवा की अन्य शर्तों का सम्बन्ध है, उनका नियंत्रण सशस्त्र सेवा मुख्यालय सिविल सेवा के अधिकारी, समय-समय पर रक्षा सेवाओं के व्यय में से वेतन पाने वाले अधिकारियों के लिए लागू विनियमों तथा आदेशों द्वारा शासित होंगे ।

18. सीमा-शुल्क मूल्यांकक सेवा-क्लास II

(क) मूल्यांकक ग्रेड में ₹ 350-25-500-30-590-द० रो०-30-800-द० रो० 830-35-900 के बेतनमान में भरती की जाती है। नियुक्तियां दो वर्ष के लिए परिवीक्षा के आधारी पर की जाती हैं तथा परिवीक्षा की अवधि सक्षम प्राधिकारी, यदि चाहे तो, बढ़ा भी सकता है। परिवीक्षा काल में उम्मीदवारों को केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क तथा सीमा-शुल्क बोर्ड द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण लेना होगा तथा विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी। उन्हें ₹ 375 के ऊपर का बेतन तब तक नहीं लेने दिया जायेगा जब तक वे निर्धारित विभागीय परीक्षा पूर्ण रूप से पास नहीं कर लेते।

(ख) यदि परिवीक्षा की मूल अथवा परिवर्द्धित अवधि की समाप्ति पर नियोक्ता प्राधिकारी यह समझता है कि चयन किया गया उम्मीदवार स्थायी नियुक्ति के योग्य नहीं है अथवा परिवीक्षा की उक्त मूल अथवा परिवर्द्धित अवधि के दौरान, प्राधिकारी इस बात से संतुष्ट हो जाता है कि उम्मीदवार परिवीक्षा की अवधि की समाप्ति पर स्थायी नियुक्ति के योग्य नहीं होगा तो वह उसे सेवा से अलग कर सकता है, अथवा जो उचित समझे, वह आदेश दे सकता है।

(ग) परिवीक्षा की अवधि को सफलतापूर्वक पूर्ण कर लेने पर तथा विभागीय परीक्षाएं पास कर लेने के बाद अधिकारियों को संबद्ध ग्रेड में स्थायी करने पर विचार किया जाएगा।

(घ) लागू नियमों के अनुसार भारतीय सीमा शुल्क और केन्द्रीय उत्पाद सेवा क्लास-I (400/1250 ₹) में सहायक कलकटर के अगले उच्च ग्रेड में पदोन्नति के लिए मूल्य निरूपक (एप्रेजर) पाल होंगे।

(ङ) अवकाश, पेंशन आदि के मामले में इन अधिकारियों पर केन्द्रीय सरकार के अन्य क्लास-II अधिकारियों पर लागू होने वाले नियम ही लागू होंगे। जहाँ सक उन की सेवा की अन्य शर्तों का प्रयत्न है, उन पर सीमा-शुल्क मूल्यांकक सेवा, क्लास की भरती नियमावली की व्यवस्थाएं लागू होंगी। इन नियमों में यह विशेष रूप से निर्विष्ट है कि इस सेवा अधिकारियों को “केन्द्रीय उत्पादन-शुल्क तथा सीमा-शुल्क बोर्ड” के अधीन किसी भी समान या उच्च पद पर भारत में कहीं भी तैनात किया जा सकता है।

19. विल्सी, और अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह सिविल सेवा, घेणी-II

(क) नियुक्ति परख पर की जायेगी, जिसकी अवधि दो वर्ष की होगी और उसे सक्षम प्राधिकारी के निर्णय के अनुसार बढ़ाया भी जा सकेगा। परख पर नियुक्ति उम्मीदवार को केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण लेना होगा और विभागीय परीक्षाएं देनी होंगी।

(ख) यदि सरकार की राय में, किसी परखादीन अधिकारी का कार्य भा आचरण संतोषजनक न हो या उसे देखते हुए उसके कार्यक्रम लेने की संभावना न हो, तो सरकार उसे तत्काल सेवा-मुक्त कर सकती है।

(ग) जब यह घोषित कर दिया जायेगा कि अमुक अधिकारी ने संतोषजनक रूप से अपनी परख अवधि समाप्त कर ली है तो उसे सेवा में पक्का कर दिया जायेगा। यदि सरकार की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक न रहा हो तो सरकार उसे या तो सेवा मुक्त कर सकती है या उसकी परख अवधि को, जितना उचित समझे, बढ़ा सकती है।

(घ) उस सेवा के अधिकारी को, दिल्ली प्रशासन, या अण्डमान निकोबार द्वीप समूह में इन क्षेत्रों में प्रशासन के अन्तर्गत सेवा करनी होगी।

(ङ) बेतनमान :—

ग्रेड-I (सिलेक्शन ग्रेड) ₹ 900-50-1250/-

ग्रेड-II समयमान ₹ 400-25-500-30-590-द० आ०-30-800-द० आ०-30-830-35-900।

किसी प्रतियोगिता परीक्षा के परिणामों के आधार पर भर्ती किए जाने वाले व्यक्ति, को सेवा में नियुक्ति पर समय बेतनमान का न्यूनतम बेतन प्राप्त होगा बास्तें कि यदि वह सेवा में नियुक्ति से पहले मूल रूप से सबधिक पद के अतिरिक्त स्थायी पद पर कार्य करता था, सेवा में परिवीक्षा की अवधि में उसका बेतन मूल नियम 22-ख (1) के परन्तुके अधीन विनियमित किया जाएगा। सेवा में नियुक्त किए गए अन्य व्यक्तियों के लिए बेतन और बेतनों-वृद्धियां मूल नियमों के अनुसार विनियमित होंगी।

(च) सेवा के अधिकारियों को परिशोधित केन्द्रीय बेतनमान प्राप्त करने वाले कर्मचारियों पर लागू केन्द्रीय सरकार की दरों पर महंगाई भत्ता प्राप्त करने का हक होगा।

(छ) महंगाई भत्ता के अतिरिक्त, इस सेवा के अधिकारियों को, प्रतिकर (नगर) भत्ता, मकान किराया भत्ता और पहाड़ी स्थानों तथा सुदूर स्थानों में रहन-सहन के बड़े हुए खर्च को पूरा करने के लिए अन्य भत्ते दिए जाएंगे, यदि उन्हें ड्यूटी पर या प्रशिक्षण के लिए ऐसे स्थानों पर भेजा जाएगा और जिन स्थानों के लिए ये भत्ते अनुमत्य होंगे।

(ज) इस सेवा के अधिकारियों पर विल्सी, और अण्डमान निकोबार द्वीप समूह सिविल सेवा नियमावली 1971 और इस नियमावली को लागू करने के प्रयोजन से केन्द्रीय सरकार द्वारा दी जाने वाली हितायतें अथवा बनाए जाने वाले अन्य विनियम लागू होंगे। जो मामले विशिष्ट रूप से उक्त नियमों या विनियमों अथवा उनके अन्तर्गत दिए गए आदेशों या विशेष आदेशों के अन्तर्गत नहीं आते, उनमें ये अधिकारी उन नियमों, विनियमों और आदेशों द्वारा मासित होंगे जो संघ के कार्यों से संबंधित सेवा करने वाले तदनुरूप (Corresponding) अधिकारियों पर लागू होते हैं।

20. गोभा, बमन तथा द्वियु सिविल सेवा क्लास 2

(क) नियुक्तियां दो वर्ष के परिवीक्षा अवधि के आधार पर की जाएंगी तथा परिवीक्षा की अवधि सक्षम प्राधिकारी आहे तो बढ़ा भी सकेगा। परिवीक्षा के आधार पर नियुक्त उम्मीदवारों को गोआ, बमन तथा द्वियु संघ राज्य के प्रशासन द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा तथा विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी।

(ख) यदि प्रशासक की राय में किसी परिवीक्षाधीन अधिकारी का काम या आचरण संतोषजनक नहीं है अथवा उससे यह प्रकट होता है कि अधिकारी सुयोग्य सिद्ध होने की सम्भावना नहीं है, तो प्रशासक उसे सेवा से तुरन्त अगल कर सकता है।

(ग) जिस अधिकारी के लिए यह घोषित हो जाएगा कि उसने परिवीक्षा की अवधि संतोषजनक ढंग से पूर्ण करली है उसे सेवा में स्थायी कर दिया जाएगा। यदि प्रशासक की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक नहीं रहा है तो वह उसे सेवा से अगल कर सकता है अथवा परिवीक्षा की अवधि, जितनी ठीक समझे, बढ़ा सकता है।

(घ) इस सेवा के अधिकारी को गोआ, दमन तथा दियु संघ राज्य क्षेत्र में किसी भी स्थान पर कार्य करना होगा।

(इ) वेतनमान:—

प्रेड I (चयन प्रेड) रु० 700-40-1100-50/2-1250/

प्रेड II रु० 350-25-500-30 590-द० रो०-30-800-
द० रो० 30-830-35-900।

किसी प्रतियोगिता परीक्षा के परिणामों के आधार पर भर्ती किए जाने वाले व्यक्ति, को सेवा में नियुक्त पर सभय वेतनमान का न्यूनतम वेतन प्राप्त होगा बश्यते यदि वह सेवा में नियुक्त से पहले मूल रूप से सावधिक पद के अतिरिक्त स्थायी पद पर कार्य करता था, सेवा में परिवीक्षा की अवधि में उसका वेतन मूल नियम 22-ख (1) के परन्तुके के अधीन विनियमित किया जाएगा। सेवा में नियुक्त किए गए अन्य व्यक्तियों के लिए वेतन और वेतन-बृद्धियां मूल नियमों के अनुसार विनियमित होंगी।

इस सेवा के अधिकारी भारतीय प्रशासन सेवा (पदोन्नति द्वारा नियुक्ति) विनियम, 1955 के अनुसार भारतीय प्रशासन सेवा के सीनियर वेतनमान के पदों पर पदोन्नति के पात्र होंगे।

(ज) इस सेवा के अधिकारियों पर गोआ, दमन तथा दियु सिविल सेवा नियमावली, 1967, तथा इन नियमों को कार्यान्वित करने के लिए बनाए गए अन्य विनियम या प्रशासक द्वारा जारी किए गए आदेश लागू होंगे।

21. पांडिचेरी सिविल सेवा, बलास 2

(क) नियुक्तियां वो वर्ष की परिवीक्षा अवधि के आधार पर की जाएगी तथा परिवीक्षा की अवधि सक्षम प्राधिकारी आहे तो बढ़ा भी सकेगा। परिवीक्षा के आधार पर नियुक्त उम्मीदवारों की पांडिचेरी संघ राज्य क्षेत्र के प्रशासक द्वारा निर्धारित प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा तथा विभागीय परीक्षाएं पास करनी होंगी।

(ख) यदि प्रशासक की राय में किसी परिवीक्षाधीन अधिकारी का काम या आचरण संतोषजनक नहीं है अथवा उससे यह प्रकट होता है कि अधिकारी के सुयोग्य सिद्ध होने की सम्भावना नहीं है, तो प्रशासक उसे सेवा से तुरन्त अगल कर सकता है।

(ग) जिस अधिकारी के लिए यह घोषित हो जाएगा कि उसने परिवीक्षा की अवधि संतोषजनक ढंग से पूर्ण कर ली है उसे सेवा में स्थायी कर दिया जाएगा। यदि प्रशासक की राय में उसका कार्य या आचरण संतोषजनक नहीं रहा है तो वह उसे सेवा से अलग कर सकता है अथवा परीक्षा की अवधि जितनी ठीक समझे आगे बढ़ा सकता है।

(घ) इस सेवा के अधिकारी को पांडिचेरी संघ राज्य क्षेत्र में किसी भी स्थान पर कार्य करना होगा।

(ङ) वेतनमान:—

प्रेड 1—रु० 375-25-800।

किसी प्रतियोगिता परीक्षा के परिणामों के आधार पर भर्ती किए जाने वाले व्यक्ति, को सेवा में न नियुक्ति पर सभय वेतनमान का न्यूनतम वेतन प्राप्त होगा बश्यते यदि वह सेवा में नियुक्ति से पहले मूल रूप से सावधिक पद के अतिरिक्त स्थायी पद पर कार्य करता था, सेवा में परिवीक्षा की अवधि में उसका वेतन मूल नियम 22-ख

(1) के परन्तुके के अधीन विनियमित किया जाएगा। सेवा में नियुक्त किए गए अन्य व्यक्तियों के लिए वेतन और वेतन-बृद्धियां मूल नियमों के अनुसार विनियमित होंगी।

इस सेवा के अधिकारी भारतीय प्रशासन सेवा (पदोन्नति द्वारा नियुक्ति) विनियम, 1955 के अनुसार भारतीय प्रशासन सेवा के सीनियर वेतनमान के पदों पर पदोन्नति के पात्र न होंगे।

(च) इस सेवा के अधिकारियों पर पांडिचेरी सिविल सेवा नियमावली, 1967, तथा इन नियमों को कार्यान्वित करने के लिए बनाए गए अन्य विनियम या प्रशासन द्वारा जारी किए गए आदेश लागू होंगे।

परिशिष्ट

उम्मीदवारों की शारीरिक परीक्षा के बारे में विविध

टिप्पणी— 1. ये विनियम उम्मीदवारों की सुविधा के लिए प्रकाशित किए जाते हैं और इस लिए प्रकाशित किए जाते हैं ताकि वे यह सुनिश्चित कर सकें कि उनका शारीरिक स्तर अपेक्षित तक का है। इन अधिनियमों का यह भी ध्येय है कि स्वास्थ्य परीक्षकों को ऐसे उम्मीदवारों को जो अधिनियमों में निर्धारित न्यूनतम आवश्यकताओं को पूर्ण न करता हो स्वास्थ्य परीक्षकों द्वारा अरोग्य घोषित न हो जाए मार्ग वर्ष सकें। तथापि, यह जानते हुए कि उम्मीदवार इन अधिनियम में दी हुई शर्तों के अनुसार अरोग्य नहीं है स्वास्थ्य बोर्ड की आज्ञा होगी कि भारत सरकार को स्पष्ट रूप से कारण सिफारिश करें जिस से वह बिना असुविधा के सेवा में भर्ती किया जा सकता है।

2. तथापि, यह भी स्पष्टतया समझ लेना चाहिए कि स्वास्थ्य बोर्ड की रिपोर्ट पर विचार करने के पश्चात् भारत सरकार को किसी भी उम्मीदवार को स्वीकार करने तथा अस्थीकार करने का पूर्ण अधिकार है।

विभिन्न सेवाओं का वर्गीकरण वो श्रेणियों “तकनीकी तथा अतकनीकी” के अधीन इस प्रकार से होगा :—

(क) तकनीकी

(1) भारतीय रेलवे यातायात सेवा,
(2) भारतीय पुलिस सेवा।

(ख) अतकनीकी

आई० ए० एस०, आई० एफ० एस०, आई० ए० और ए० एस०, भारतीय सीमा-शुल्क सेवा, भारतीय रेलवे लेखा सेवा के सभी अन्य पद भारतीय रक्षा लेखा सेवा, आयकर अधिकारी (श्रेणी-I) सेवा, भारतीय डाक सेवा, सैनिक भूमि और छावनी सेवा-II और II, के तकनीकी अधिकारी।

1. नियुक्ति के योग्य ठहराए जाने के लिए यह जरूरी है कि उम्मीदवार का मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य टीक हो और उम्मीदवार में कोई ऐसा शारीरिक बोध न हो जिससे नियुक्ति के बाद दक्षतापूर्वक काम करने में बाधा पड़ने की सम्भावना हो।

2. (क) भारतीय (एंग्लो-इंडियन समेत) जाति के उम्मीदवारों को आयु, कद और छाती के घेरे के परस्पर सम्बन्ध के बारे में मेडिकल बोर्ड के उपर ही यह बात छोड़ दी गई है कि वह उम्मीदवारों की परीक्षा में मार्ग-दर्शन के रूप में जो भी परस्पर सम्बन्ध के आंकड़े सबसे अधिक उपयुक्त समझे, व्यवहार में लाए। यदि वजन, कद और छाती के घेरे में विवरण हो तो जांच के लिए उम्मीदवार को अस्पताल में रखना चाहिए और छाती का एक्स-रे लेना चाहिए। ऐसा करने के बाद ही बोर्ड उम्मीदवार को योग्य अथवा अयोग्य करेगा।

(ख) निश्चित सेवाओं के लिए कद और छाती के घेरे का कम-से-कम मात्र नीचे दिया जाता है जिस पर पूरा न उतरने पर उम्मीदवार को मंजूर नहीं किया जा सकता।

कद	घेरे पूरा (फैलाव करें)	छाती का फैलाव	
(1)	(2)	(3)	(4)
(1) भारतीय रेलवे	152	84	5 (पुरुषों के लिए)
यातायात सेवा	150	79	5 (स्त्रियों के लिए)
(2) भारतीय पुलिस सेवा तथा दिल्ली अंडमान, निकोबार द्वीप समूह	165	84	5 (पुरुषों के लिए)
पुलिस सेवा श्रेणी-II	150	79	5 (स्त्रियों के लिए)

“योरखा, गदवाली, असमी, नागालैंड आदिम जातियों आदि से सम्बन्धित उम्मीदवारों के मामले में न्यूनतम निर्धारित कद की सम्बाइ में कृपा दी जा सकेगी जिनकी ओसत कद की सम्बाइ वूसरों से छोटी होती है।”

3. उम्मीदवार का कद निम्नलिखित विधि में नापा जाएगा :—

वह अपने जूते उतार देगा और उसे माप-दण्ड (स्टेडर्ड) से इस प्रकार सटा कर खड़ा किया जाएगा कि उसके पांव आपस में जुड़े रहें और उसका वजन, सिवाए एडियों के पांवों की उंगलियों या किसी और हिस्से पर न पड़े। वह बिना अकड़े सीधी खड़ा होगा और उसकी एडियां, पिडियां, नितम्ब और कन्धे माप-दण्ड के साथ लगे रहेंगे। उसकी ठोड़ी नीची रखी जाएगी ताकि सिर का स्तर (बटेक्स आफ दि हैड लेवल) हारिजेंटल बार (आड़ी छड़ि) के सीधे आ जाए। कद सेंटीमीटरों और आधे-सेंटीमीटरों में नापा जाएगा।

(1) उम्मीदवार की छाती नापने का तरीका इस प्रकार है :—

उसे इस भाँति सीधी खड़ा किया जाएगा कि उसके पांव जुड़े हों और उसकी भूजाएं सिर से उपर उठी हों। फीते को छाती के गिर्द इस तरह से लगाया जाएगा कि पीछे की ओर इसका ऊपरी किनारा अंसेफलक (शोल्डर ब्लैड) के निम्न कोणों (इन्कीरियर-एंगल्स) से लगा रहे और यह फीते के गिर्द ले जाने पर उसी आई समतल (हारिजेंटल प्लेन) में रहे। फिर भूजाओं को नीचे किया जाएगा और उन्हें शरीर के साथ लटका रहने दिया जाएगा किन्तु इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि कध्ये ऊपर या पीछे की ओर न किए जाएं जिससे कि फीता न छिले। अब उम्मीदवार को कई बार गहरा सांस लेने के लिए कहा जाएगा और छाती का अधिक-से-अधिक फैलाव गौर से नोट किया जाएगा और कम-से-कम आधे सेंटीमीटर से कम के भिन्न (फ्रेक्शन) को नोट नहीं करना चाहिए।

टोटः—अन्तिम निर्णय लेने से पहले उम्मीदवारों की ऊंचाई और छाती दो बार नापनी चाहिए।

5. उम्मीदवार का वजन भी लिया जाएगा और उसका वजन किलोग्रामों में रिकार्ड किया जाएगा। आधे किलोग्राम से कम के फ्रेक्शन को नोट नहीं करना चाहिए।

6. (क) उम्मीदवार की नजर की जांच निम्नलिखित नियमों के अनुसार की जाएगी। प्रत्येक जांच का परिणाम रिकार्ड किया जाएगा :—

(ख) चरमे के बिना नजर (नेकेड आई विजन) की कीर्द्धा न्यूनतम सीमा (मिनिमम लिमिट) नहीं होगी, किन्तु प्रत्येक केस में मेडिकल बोर्ड या अन्य मेडिकल प्राधिकारी वारा इसे रिकार्ड किया जाएगा क्योंकि इससे आंख की हालत के बारे में मूल सूचना (ब्रेसिक इन्फोर्मेशन) मिल जाएगी।

(ग) विभिन्न प्रकार की सेवाओं के लिए चरमे के साथ और चरमे के बिना दूर और नजदीक की नजर का मानक निम्नलिखित होगा :—

सेवा की श्रेणी	दूर की नजर	नजदीक की नजर
अच्छी खराब	अच्छी खराब	अच्छी खराब
आंख आंख	आंख आंख	आंख आंख
(ठीक की हुई दृष्टि)	(ठीक की हुई दृष्टि)	(ठीक की हुई दृष्टि)

अ० भा० से०, अ० पु० से तथा केन्द्रीय सेवाएं

वर्ग-I और II

(i) तकनीकी	6/6	6/12	जे० I	जे० II
	या		6/9	6/9
(ii) अतकनीकी	6/9	6/12	जे० I	जे० II
भारतीय आर्डिनेन्स	6/6	6/18	जे०/I	जे०/II
			अथवा	
फैक्टरी सेवा	6/9	6/9		

उपर्युक्ता तकनीकी सेवाओं और लोक सुरक्षा से सम्बन्धित कोई अन्य सेवाओं के संबंध में (सिलिंडर मिलाकर) मायोपिया कुल—4.00 ढी० ('लस) से अधिक नहीं हो। हाइपरमेट्रोपिया की कुल (सिलिंडर मिलाकर) 4.00 ढी० ('लस) से अधिक नहीं होना चाहिए।

(घ) आयोगिता के प्रत्येक मामले में, फंडस परीक्षा की जानी चाहिए और उसका परिणाम रिकार्ड किए जाने चाहिए। व्याधिकृत व्यक्ति भौजूद होने पर जो कि वह सकती है और उम्मीदवार की दक्षता पर प्रभाव डाल सकती है, उसे अयोग्य घोषित किया जाए।

(ङ) दृष्टि भेद—सभी सेवाओं के लिए सम्मुख विधि (कन्फर्टेशन मैथड) द्वारा दृष्टि भेद की जांच की जाएगी। जब ऐसी जांच का नतीजा असत्तोषजनक या संदिग्ध हो तब दृष्टि-सेवा की परिभाषा (पैरामीटर) पर निर्धारित किया जाना चाहिए।

(च) रत्तौधी (नाइट बलाइंडनेस)—साधारणतया रत्तौधी दो प्रकार की होती है, (1) विटामिन 'ए०' की कमी होने के कारण और (2) रेटीना के शारीरिक रोक के कारण रेटीनोटिस पिंग मेन्टोसा होता है। जिसका सामान्य कारण उपर बताई गई (1) की स्थिति में फंडस् में प्रसामान्य होता है, साधारणतया छोटी आयु वाले व्यक्तियों में और कम खुराक पाने वाले व्यक्तियों में दिखाई देता है और अधिक माला में विटामिन 'ए०' के खाने से टीक हो जाता है। उपर बताई गई (2) की स्थिति में फंडस् में खराबी होती है और अधिकांश मामलों में केवल फंडस् की परीक्षा से ही स्थिति का पता चल जाता है। इस श्रेणी का रोगी प्रौढ़ होता है और खुराक की कमी से पीछित नहीं होता है। सरकार में ऊंची नौकरियों के लिए प्रयत्न करने वाले व्यक्ति इस वर्ग में आते हैं।

उपर्युक्त (1) और (2) दोनों के लिए अन्धेरा अनुकूलन परीक्षा से स्थिति का पता चल जाएगा। उपर्युक्त (2) के लिए विशेषतया जब फंडस खराब न हो तो इलेक्ट्रो-रेटीनोग्राफी किए जाने की आवश्यकता होती है। इन दोनों जांचों में (अन्धेरा अनुकूलन और रेटीनोग्राफी) में समय अधिक लगता है और विशेष प्रबन्ध और सामान की आवश्यकता होती है और इसलिए साधारण चैकिस्क जांच के लिए यह समय नहीं है। तकनीकी बातों को ध्यान में रखते हुए मन्त्रालय/विभाग को चाहिए कि वे बताएं कि रत्तौधी के लिए इन जांचों का करना अनिवार्य है या नहीं। यह इस बात पर निर्भर होगा कि पद से सम्बन्ध काम की आवश्यकता क्या है और जिन व्यक्तियों को सरकारी नौकरी दी जाने वाली उनकी ड्यूटी जिस तरह की होगी।

कलर विजन—रंगों के सम्बन्ध में नजर की जांच जरूरी है।

नीचे वी गई तालिका के अनुसार रंग का प्रत्यक्ष ज्ञान उच्चतर (हायर) और निम्नतर (लोअर) ग्रेडों में होना

चाहिए जो लैटर्न के द्वारक (एपर्चर) के आकार पर निर्भर हों।

ग्रेड	रंग के प्रत्यक्ष ज्ञान का उच्चतर ग्रेड	रंग के प्रत्यक्ष ज्ञान का निम्नतर ग्रेड
1. लैम्प और उम्मीदवार के बीच की दूरी	1.6/	1.6/
2. द्वारक (एपर्चर)	1.3 मि० मीटर	1.3 मि० मीटर
3. दिखाने का समय	5 सैकंड	5 सैकंड

लाल संकेत, हरे संकेत और सफेद रंग को आसानी से और हिचकिचाहट के बिना पहचान लेना संतोषजनक कलर विजन है। इंजिहारा की प्लेटों के इस्सेमाल को जिन्हें एड्रिज ग्रीन की लैटर्न जैसी उपर्युक्त लैटर्न और अच्छे रोशनी में दिखाया जाता है, कलर विजन की जांच करने के लिए विश्वसनीय समझा जाएगा। वैसे तो दोनों में से किसी भी एक जांच की साधारणतया पर्याप्त समझा जा सकता है। लेकिन सड़क, रेल और हवाई यातायात से सम्बन्धित सेवाओं के लिए लैटर्न से जांच करना लाजमी है। शक वाले मामलों में जब उम्मीदवार को किसी एक जांच करने पर अयोग्य पाया जाए तो दोनों द्वीतीयों से जांच करनी चाहिए। तथापि कलर विजन की जांच के लिए इंजिहारा प्लेट और एड्रिज की हरी लालटेन दोनों का प्रयोग भारतीय रेल यातायात सेवा में उम्मीदवारों की नियुक्ति के लिए किया जाएगा। जहाँ तक अतकनीकी सेवाओं/पदों का सम्बन्ध है, सम्बन्धित मंत्रालय/विभाग को चिकित्सा बोर्ड को यह सूचना भेजनी होगी कि उम्मीदवार ऐसी सेवा के लिए है जिसके लिए कलर विजन की जांच आवश्यक है या नहीं।

(ज) दृष्टि की पकड़ से भेगापन की अवस्थाएं (आक्षयलर कंडीशन) :—

- (i) आंख की उस बीमारी की या बहुती हुई वर्तन दृष्टि (प्रोग्रेसिव रिफ्रेक्टेव एरर) को, जिसके परिणामस्वरूप दृष्टि की पकड़ के कम होने की संभावना हो, अयोग्यता का कारण समझना चाहिए।
- (ii) भेगापन (स्लिप्पन) —तकनीकी सेवाओं में, जहाँ द्विनेत्री (बाइनाकुलर) दृष्टि का होना अनिवार्य हो, दृष्टि की पकड़ निर्धारित स्तर की होने पर भी भेगापन को अयोग्यता का कारण समझना चाहिए। यह रेलवे सुरक्षा दल के उम्मीदवारों के लिए भी लागू होगा। दृष्टि की पकड़ निर्धारित स्तर की होने पर भेगापन को अन्य सेवाओं के लिए अयोग्यता के कारण नहीं समझना चाहिए।

किसी व्यक्ति की एक ही आंख हो अथवा यदि उसकी एक आंख की दृष्टि सामान्य हो और दूसरी आंख की मन्द दृष्टि हो अथवा उप-सामान्य दृष्टि हो, जिसका प्रायः प्रभाव यह होता है कि व्यक्ति में गहराई बोध हेतु विविभित्तिय दृष्टि का अभाव होता है। इस प्रकार की दृष्टि अनेक सिविल पदों के लिए आवश्यक नहीं है। इस प्रकार के व्यक्तियों को चिकित्सा बोर्ड योग्य के रूप में अनुशासित कर सकता है बशर्ते कि सामान्य आंख का

- (i) दूर की दृष्टि 6/6 और निकट की दृष्टि जे०-१, चम्मा लगाकर अथवा उसके बिना हो, बशर्ते कि दूर की दृष्टि के लिए किसी मेरिडियन में लुटि 4 डायोप्ट्रिज से अधिक न हो।
- (ii) दृष्टि का पूरा क्षेत्र हो,
- (iii) सामान्य वर्ण दृष्टि, जहां अपेक्षित हो।

बशर्ते कि बोर्ड का यह समाधान हो जाये कि उम्मीदवार प्रणालीय विशिष्ट कार्य से संबंधित सभी कार्यकलापों का निष्पादन कर सकता है।

दृष्टि तीक्ष्णता सम्बन्धी उपरोक्त छूट प्राप्त मानक “तकनीकी रूप में वर्गीकृत पदों/सिवाओं के लिए उम्मीदवारों पर लागू नहीं होगी। सम्बद्ध मंत्रालय विभाग को चिकित्सा बोर्ड को यह सूचित करना होगा कि उम्मीदवार “तकनीकी” पद के लिए है अथवा नहीं।

(2) कोनटैक्ट लेंस (Contact Lenses)—उम्मीदवार की स्वास्थ्य परीक्षा के समय कोनटैक्ट लेंस के प्रयोग की आज्ञा नहीं होगी: आंख की जांच करते समय यह आवश्यक है कि दूर की नजर के लिए टाइप किए हुए अक्षर 15 फुट से प्रकाशित हों।

7. ब्लड प्रैशर :—

ब्लड प्रैशर के सम्बन्ध में बोर्ड अपने नियम से काम लेगा। नारंग उच्चतम सिस्टालिक प्रैशर के आकलन की काम असाऊ विधि नीचे दी जाती है:—

- (i) 15 से 25 वर्ष के व्यक्तियों में औसत ब्लड प्रैशर लगभग 100+ आयु होता है।
- (ii) 25 वर्ष से ऊपर की आयु वाले व्यक्तियों में ब्लड प्रैशर के आकलन का सामान्य नियम यह है कि 110 में आधी आयु जोड़ दी जाए। यह तरीका विलकूल संतोषजनक दिखाई पड़ता है।

ध्यान बीजिए——सामान्य नियम के रूप में 140 से ऊपर के सिस्टालिक प्रैशर को और 90 से ऊपर के जायस्टालिक प्रैशर को संविधान लेना चाहिए, और उम्मीदवार को योग्य या अयोग्य

ठहराने के सम्बन्ध में अपनी अन्तिम राय देने से पहले बोर्ड को चाहिए कि उम्मीदवार को अस्पताल में रखें। अस्पताल में रखने की रिपोर्ट से यह पता लगना चाहिए कि घबराहट (एक्साइटमेंट) आदि के कारण ठबड़ प्रेशर थोड़े समय रहने वाला है या इसका कारण कोई कायिक (आर्गेनिक बीमारी) है (ऐसे सभी केसों में हृदय की एक्स-रे और विशुल हल्लेबी (इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफिक) परीक्षाएं और रक्त यूरिया निकास (लोथरेंस) की जांच भी नेमी रूप से की जानी चाहिए। फिर भी उम्मीदवार के योग्य होने या न होने के बारे में अन्तिम फैसला केवल मेडिकल बोर्ड ही करेगा।

ब्लड प्रैशर (रक्त वाढ) लेने का तरीका:

नियमत: पारेवाले दावमारी (मर्करी ऐलोमीटर) किसी का आला (इन्स्ट्रुमेंट) इस्तेमाल करना चाहिए। किसी किसी के व्यायाम या घबराहट के बाद पन्द्रह मिनट तक रक्त दाढ़ नहीं लेना चाहिए। रोगी बैठा या लेटा हो बशर्ते कि वह और विशेषकर उसकी भुजा लिथिल और आराम से हो। कुछ-कुछ हारिजंटल स्थिति में रोगी के पार्श्व पर भुजा को आराम से सहारा दिया जाता है। भुजा पर से कंधे पर कंधे उतार देने चाहिए। कफ में से पूरी तरह हवा निकाल कर बीच की रबड़ को भुजा के अन्दर की ओर रख कर और इसके निचले किनारे को कोहनी के मोड़ से एक या दो इंच ऊपर करके लगाना चाहिए। इसके बाद कंधे की पट्टी को फैला कर समान रूप से लपेटना चाहिए ताकि हवा भरने पर कोई हिस्सा फूल कर बाहर को न निकले।

कोहनी के मोड़ पर प्रांग धमनी (ब्रेकिअल आर्टरी) को दबा-दबा कर रुंदा जाता है और तब इसके ऊपर बीचों-बीच स्टेस्कोप को हल्के से लगाया जाता है जो कफ के साथ न लगे। कफ में लगभग 200 m.m.Hg. हवा भरी जाती है और इसके बाद इसमें से धीरे-धीरे हवा निकाली जाती है। हल्की श्रमिक ध्वनि सुनाई पड़ने पर जिस स्तर पर पारे का कालम टिका होता है वह सिस्टालिक प्रैशर दर्शाता है। जब और हवा निकाली जाएगी तो ध्वनियां तेज़ सुनाई पड़ेंगी। जिस स्तर पर ये साफ और अच्छी सुनाई पड़ने वाली ध्वनियां हल्की दबी-हूईसी लुप्त प्राय हो जाएं, वह डायस्टालिक प्रैशर है। ब्लड प्रैशर काफी थोड़ी अवधि में ही लेना चाहिए क्योंकि कपल के लम्बे समय का दबाव रोगी के लिए क्षोभकर होता है और इससे रीडिंग गलत हो जाती है। यदि बोबारा पड़ताल करनी जरूरी हो तो कफ में से पूरी हवा निकाल कर कुछ मिनट के बाद ही ऐसा किया जाए। (कभी-कभी कफ में से हवा निकालने पर एक निश्चित स्तर पर ध्वनियां सुनाई पड़ती हैं, बाब गिरने पर वे गायब हो जाती हैं और निम्न स्तर पर पुनः प्रकट हो जाती हैं। इस “साइलेन्ट गैप” से रीडिंग में गलती हो सकती है।)

8. परीक्षक की उपस्थिति में किए गए मूल की परीक्षा की जानी चाहिए और परिणाम रिकार्ड किया जाना चाहिए। जब मेडिकल बोर्ड को किसी उम्मीदवार के मूल में रासायनिक जांच द्वारा शक्ति का पता चले तो बोर्ड इसके दूसरे सभी पहलुओं की परीक्षा करेगा और मधुमेह (डायाबीटीज) के द्वातक चिह्नों

और लक्षणों को भी विशेष रूप से नोट करेगा। यदि बोर्ड उम्मीदवार को ग्लूकोज मेह (ग्लाइकोसूलिरआ) के सिवाय, अपेक्षित मेडिकल फिटनेस के स्टैण्डर्ड के अनुरूप पाए तो वह उम्मीदवार को इस गति के साथ फिट घोषित कर सकता है कि ग्लूकोज मेह अमधु-मेही (नान डायबोटिक) हो और बोर्ड केस को मेडिसिन के किसी ऐसे निर्दिष्ट विशेषज्ञ के पास भेजेगा जिसके पास अस्पताल और प्रयोगशाला की मुविधाएँ हों। मेडिकल विशेषज्ञ स्टैण्डर्ड छलड शुगर टालरेंस टेस्ट समेत जो भी विलनिकल या लेबोरेटरी परीक्षा जल्ली समझेगा करेगा और अपनी रिपोर्ट मेडिकल बोर्ड को भेज देगा जिस पर मेडिकल बोर्ड की 'फिट' या 'अनफिट' की अन्तिम राय आधारित होगी। दूसरे अवसर पर उम्मीदवार लिए बोर्ड के सामने स्वयं उपस्थित होना जल्ली नहीं होगा। औषधि के प्रभाव को समाप्त करने के लिए यह जल्ली हो सकता है कि उम्मीदवार को कई दिन तक अस्पताल में पूरी देख-रेख में रखा जाए।

9. जो स्त्री उम्मीदवार जांच के फलस्वरूप 12 सप्ताह या उससे अधिक अवधि की गर्भवती पाई जाए उसे तब तक के लिए अस्थायी रूप से अयोग्य घोषित कर दिया जाए जब तक उसकी गर्भावस्था समाप्त न हो जाए। गर्भावस्था के समाप्त होने के 6 सप्ताह बाद यदि वह पंजीकृत चिकित्सक के स्वस्थता प्रमाण पत्र प्रस्तुत कर दे तो आरोग्य प्रमाण-पत्र के लिए उस की फिर से जांच की जाए।

10. निम्नलिखित, अतिरिक्त आतों का प्रेक्षण करना आहिए :—

(क) उम्मीदवार को दोनों कानों से अच्छा सुनाई पड़ता है या नहीं और कान की बीमारी का कोई चिह्न है या नहीं ? यदि कोई कान की खराबी होती इसकी परीक्षा कान-विशेषज्ञ द्वारा की जानी जाहिये। यदि सुनने की खराबी का इलाज शल्य क्रिया (आपरेशन) या हियरिंग एड के इस्तेमाल में हो सके तो उम्मीदवार को इस आधार पर अयोग्य घोषित नहीं किया जा सकता बशर्ते कि उसके कान की बीमारी बढ़ने वाली न हो। यह उपबन्ध रेल सेवाओं के मामले में लागू नहीं होता। चिकित्सा-परीक्षा प्राथिकारी के मार्ग-दर्शन के लिए इस संबंध में निम्नलिखित मार्गदर्शक जानकारी दी जाती है :—

(1) एक कान में प्रकट अथवा यदि उच्च फीक्वेंसी में वह-पूर्ण बहरापन, दूसरा कान रापन 30 डेसीमल तक सामान्य होना।

रापन 30 डेसीमल तक हो तो गैर-तकनीकी काम के लिए योग्य।

(2) दोनों कानों में बहरेपन का प्रत्यक्ष-बोध, जिसमें श्रवण यंत्र (हियरिंग एड) द्वारा कुछ मुधार संभव हो।

यदि 1000 से 4000 तक की स्पीच फिक्वेंसी में बहरापन 30 डेसी-मल तक हो तो तकनीकी दोनों प्रकार के काम के लिए योग्य।

(3) सैन्ट्रल अथवा मार्जिनल टाइट के टिप्पेनिक मेस्ट्ररेन में छिप्र।

(i) एक कान सामान्य हो दूसरे कान में टिप्पेनिक मेस्ट्ररेन छिप्र विद्यमान हो तो अस्थायी रूप में अयोग्य।

कान की शल्य चिकित्सा की स्थिति सुधारने से दोनों कानों में मार्जिनल या अन्य छिप्र वाले उम्मीदवार को अस्थायी रूप में अयोग्य घोषित करके उस पर नीचे दिए गए नियम 4 (ii) के अधीन विचार किया जा सकता है।

(ii) दोनों कानों में मार्जिनल या एटिक छिप्र होने पर अयोग्य।

(iii) दोनों कानों में सैन्ट्रल छिप्र होने पर अस्थायी रूप में अयोग्य।

(4) एक और से/दोनों ओर से मस्टायड कोविटी सबनार्मल थ्रष्ण वाले कान।

(i) किसी एक कान से सामान्य रूप में सुनाई देता हो, दूसरे कान में मस्टायड कोविटी होने पर तकनीकी तथा गैर तकनीकी दोनों प्रकार के कामों के लिए योग्य।

(ii) दोनों ओर से मस्टायड कोविटी तकनीकी काम के लिए अयोग्य, यदि किसी भी कान की श्रवणता श्रवण-यंत्र लगाकर अथवा बिना लगाए सुधार कर 30 डेसीमल हो जाने पर गैर तकनीकी कामों के लिए योग्य।

(5) बहते रहने वाले कान आपरेशन किया गया/बिना आपरेशन वाला

तकनीकी तथा गैर-तकनीकी दोनों प्रकार के कानों के लिए अस्थायी रूप में अयोग्य।

- (6) नासा-पट की हड्डी संबंधी (i) प्रयोक्ता मामले की परिविष्ट मतलबी और अधिकारी (बोमी डिफ़ा-स्थितियों के अनुसार तिर्णय लिया जाएगा।
उसमें रहित नाक की जीर्णता (ii) यदि नवणों महिला नासा पट अपसरण विद्यमान होने पर अस्थायी रूप में अयोग्य प्रसाहक/एसजिक दशा।
- (7) टांसिल्स और/अथवा स्वरंगन (लैरिक्स) की जीर्णता (i) टांसिल्स और/अथवा स्वरंगन की जीर्णता प्रदाहक दशा—योग्य।
(ii) यदि आवाज में अस्थायी विद्यमान हो सो अस्थायी रूप में अयोग्य।
- (8) कान, नाक, गले (ई० एन० डी०) के हल्के अथवा अपने स्थान पर दुर्दम्य द्यूमर। (ii) हल्का द्यूमर—अस्थायी रूप में अयोग्य।
(iii) दुर्ध्य द्यूमर—अयोग्य।
- (9) ओटोस्कलिरोसिस श्ववण-यंत्र की सहायता से या आपरेशन के बाद श्रवणता 30 डेसीबेल के अन्दर होने पर योग्य।
- (10) कान, नाक अथवा गले के जन्मजात दोष। (i) यदि कामकाज में बाधक न हो तो योग्य।
(ii) भारी मात्रा में हक्कलाहट हो सो अयोग्य।
- (11) नेजल पोली अस्थायी रूप में अयोग्य।

- (ख) उम्मीदवार बोलने में हक्कलाता है या नहीं।
(ग) उसके दांत अच्छी हालत में हैं या नहीं, और अच्छी तरह चबाने के लिए जल्ली होने पर नकली दांत लगे हैं या नहीं। (अच्छी तरह भरे हुए दांतों को ठीक समझा जाएगा)।
(घ) उसकी छाती की बनावट अच्छी है या नहीं और छाती काफी फैलती है या नहीं तथा उसका दिल और फेफड़े ठीक हैं या नहीं।
(इ) उसे पेट की कोई बीमारी है या नहीं।
(ज) उसे रेप्टर (हानिया या फटन) है या नहीं।
(झ) उसे हाइड्रीसील, बढ़ी हुई बेरिकोसील बेरिकोज शिरा (बेन) या बबासीर है या नहीं।

(ज) उसकी आवाजों, हाथों और पैरों की बनावट और विकास अच्छी है या नहीं और उसकी संधिया भली भाँति स्वतंत्र रूप से हिलती है या नहीं।

(झ) उसे कोई चिरस्थायी त्वचा की बीमारी है या नहीं।

(ञ) कोई मजात कुरचना या रोष है या नहीं।

(ट) उसमें किसी उग्र या जीर्ण बीमारी के निशान हैं या नहीं। जिन से कमजोर गठन का पता लगे।

(ठ) कारगर टीके के निशान हैं या नहीं।

(ঠ) उसे कोई संचारी (कम्बूनिकेबल) रोग है या नहीं।

11. दिल और फेफड़ों की किसी ऐसी विलक्षणता का पता लगाने के लिए साधारण शारीरिक परीक्षा से शात न हो, सभी केसों में नेभी रूप से छाती की एक्स-रे परीक्षा की जानी चाहिए।

जब कोई रोष मिले तो उसे प्रमाण पत्र में अवस्था ही नोट किया जाय। मेडिकल परीक्षक को अपनी राय लिख देनी चाहिए कि उम्मीदवार से अपेक्षित इक्षतापूर्ण ड्यूटी में इससे शाधा पड़ने की संभावना है या नहीं।

12. जहां तक मिली जुली प्रतियोगिता परीक्षा के उम्मीदवार का सम्बन्ध है, इसके लिए ऊपर पैरा 11 के नीचे की टिप्पणी में बताई गई अपील करने की कार्यविधि लागू नहीं होती। इस परीक्षा के उम्मीदवारों की अपील की शुल्क 50 रु० भारत सरकार के इस सम्बन्ध में निर्धारित ढंग से जमा करना होता है। यह फीस केवल उन उम्मीदवारों को बापस मिलायी जो अपीलीय स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा आयोग घोषित किए जाएंगे। शेष दूसरों के भागलों में यह जब्त कर ली जाएगी। यदि उम्मीदवार चाहे तो अपने आरोग्य आरोग्य होने के दावे के समर्थन में स्वस्थता प्रमाण पत्र संलग्न कर सकते हैं। उम्मीदवारों को प्रथम स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा भेजे गए निर्णय के 21 दिन के अन्दर अपीलें पेश करनी चाहिए अन्यथा दूसरी स्वास्थ्य परीक्षा के लिए अपीलीय स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा दूसरी स्वास्थ्य परीक्षा केवल नई दिल्ली में ही होगी और इसका खर्च उम्मीदवारों को हो देना पड़ेगा। दूसरी स्वास्थ्य परीक्षा के सम्बन्ध में की जाने वाली यात्राओं के लिए कोई यात्रा-भत्ता या दैतिक-भत्ता नहीं दिया जाएगा। अपीलों के निर्धारित शुल्क के साथ प्राप्त होने पर अपीलीय स्वास्थ्य परीक्षा बोर्ड द्वारा की जाने वाली स्वास्थ्य परीक्षा के प्रबन्ध के लिए मंत्री मंडल (कार्मिक तथा प्रशासनिक सूधार विभाग) द्वारा आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

मेडीकल बोर्ड की रिपोर्ट

मेडिकल परीक्षक के मार्गदर्शन के लिए निम्नलिखित सूचना दी जाती है:—

1. शारीरिक योग्यता (फिटनेस) के लिए अपनाए जाने वाले स्टैण्डर्ड में संबंधित उम्मीदवार की आयु और सेवा-काल (यदि हो) के लिए उचित गुंजादग रखनी चाहिए।

किसी ऐसे व्यक्ति को परिक्ल मरिस में भर्ती के लिए योग्य नहीं समझा जाएगा जिसके बारे में यथास्थिति भरकार या नियुक्ति प्राधिकारी (जपाईटिंग अधारिटी) को यह तमली नहीं होगी कि उसे ऐसी कोई बीमारी या शारीरिक दुर्बलता (बाहिली इन-फर्मटी) नहीं है जिससे वह उस सेवा के लिए अयोग्य हो या उसके अयोग्य होने की संभावना हो।

यह बात समझ लेनी चाहिए कि योग्यता का प्रण भविष्य से भी उतना ही सम्बन्ध है जितना वर्तमान से है और मेडिकल परीक्षा का एक मुख्य उद्देश्य निरन्तर कारगर सेवा प्राप्त करना और स्थायी नियुक्ति के उम्मीदवार के मामले में अकाल मृत्यु होने पर समय-पूर्व वेशन या अदायगियों को रोकना है। साथ ही यह भी नोट किया जाए कि जहा प्रण केवल निरन्तर कारगर सेवा की संभावना का है और उम्मीदवार को अस्वीकृत करने की सलाह उस हालत में नहीं दी जानी चाहिए जबकि उसमें कोई ऐसा दोष हो जो केवल बहुत कम स्थितियों में निरन्तर कारगर सेवा में बाधक पाया गया हो।

महिला उम्मीदवार को परीक्षा के लिए किसी लेडी डाक्टर को मेडिकल बोर्ड के सदस्य के रूप में सहयोगित किया जाएगा।

भारतीय रक्षा लेखा सेवा (इंडियन हिफेंस अकाउंट्स सर्विस) के उम्मीदवारों को भारत में और भारत से बाहर क्षेत्र सेवा (फील्ड सर्विस) करनी होगी। ऐसे उम्मीदवार के मामले में मेडिकल बोर्ड को इस बारे में अपनी राय विशेष रूप से रिकार्ड करनी चाहिए कि उम्मीदवार क्षेत्र सेवा (फील्ड सर्विस) के योग्य है या नहीं।

डाक्टरी बोर्ड की रिपोर्ट को गोपनीय रखना चाहिए।

ऐसे मामलों में जब कि कोई उम्मीदवार सरकारी सेवा में नियुक्ति के लिए अयोग्य करार दिया जाता है तो मोटे तीर पर उसके अधीकार किए जाने के आधार उम्मीदवार को बताएं जा सकते हैं किन्तु डाक्टरी बोर्ड ने जो खराबी बताई हो उनका विस्तृत व्यौरा नहीं दिया जा सकता।

ऐसे मामलों में जहां डाक्टरी बोर्ड का यह विचार हो कि सरकारी सेवा के लिए उम्मीदवार को अयोग्य बनाने वाली छोटी-मोटी खराबी चिकित्सा (औषध या शल्य) द्वारा दूर हो सकती है वहां डाक्टरी बोर्ड द्वारा इस आशय का कथन रिकार्ड किया जाना चाहिए। नियुक्त प्राधिकारी द्वारा इस बारे में उम्मीदवार को बोर्ड की राय सूचित किए जाने में कोई आपत्ति नहीं है और जब वह

यदि पिता जीवित हो तो उसकी

आयु और स्वास्थ्य की
अवस्था

यदि पिता की मृत्यु हो
चुकी हो तो मृत्यु के समय
पिता की आयु और मृत्यु
का कारण

द्वारा दूर हो जाए तो दूसरे डाक्टरी बोर्ड के सामने उस व्यक्ति को उपस्थित होने के लिए कहने में अवधित प्राधिकारी स्वरूप हैं।

यदि कोई उम्मीदवार स्थायी तीर से अयोग्य करार दिया जाए तो दुबारा परीक्षा की अवधि साधारणतया कम-से-कम ४ महीने से कम नहीं होनी चाहिए। भिन्नत अवधि के बाद जब दुबारा परीक्षा हो तो ऐसे उम्मीदवार को और आगे की अवधि के लिए अस्थायी तीर पर अयोग्य घोषित न कर नियुक्ति के लिए, उनकी योग्यता के सम्बन्ध में अधिकारी द्वारा इस नियुक्ति के लिए अयोग्य हैं ऐसा निर्णय अन्तिम रूप से दिया जाना चाहिए।

(क) उम्मीदवार का कथन और घोषणा

अपनी मेडिकल परीक्षा से पूर्व उम्मीदवार को निम्नलिखित अपेक्षित स्टेटमेंट देना चाहिए और उसके साथ लगी हुई घोषणा (डिलेरेशन) पर हस्ताक्षर करने चाहिए। नीचे दिए गए नोट में उल्लिखित चेतावनी की ओर उम्मीदवार को विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।

1. अपना पूरा नाम लिखें
(साफ अक्षरों में)

2. अपनी आयु और जन्म स्थान बताएं

“2(क) क्या आप गोरखा, गढ़वाली, असमी, नागर्लैंड आदिम जातियों आविं से सम्बन्धित हैं जिनका औसत कद दूसरों से छोटा होता है। ‘हाँ’ या ‘नहीं’ में उत्तर दीजिए और यदि उसर ‘हाँ’ में है तो उस जाति का नाम बताइए।”

3. (क) क्या आपको कभी चेचक, रक-रक कर होने वाला या कोई दूसरा बुखार, ग्रंथियों (ग्लैड्स) का बढ़ना या धनयों पीप पड़ना, थूक में खून आना, दमा, दिल की बीमारी, फेकड़े की बीमारी, मूर्दा के दोरे, स्मैटिजम, एंड्रिसमाइटिस हुआ है।

अथवा

(ख) दूसरी कोई भी बीमारी या दुर्घटना, के जिस कारण प्रथम पर लेटे रहना पड़ा हो और जिसका मेडिकल या सर्जिकल इलाज किया गया हो, हुई है?

4. आपको चेचक आदि का अन्तिम टीका कब लगा था?

5. क्या आपको अधिक काम या किसी दूसरे कारण से किसी किसी भी अधीरता (मर्वेसेम) हुई है?

6. आपने परिवार के सम्बन्ध में निम्नलिखित व्यौरा दें।

आपके किसने भाई जीवित हैं,	आपके कितने भाइयों की
उनकी आयु और स्वास्थ्य की	मृत्यु हो चुकी है, मृत्यु
अवस्था	के समय उनकी आयु और
	मृत्यु का कारण

यदि माता जीवित हो तो
उसकी आयु और स्वास्थ्य
की अवस्था

यदि माता की मृत्यु हो
चुकी हो तो मृत्यु के समय
उसकी आयु और मृत्यु
का कारण

आपकी किसनी बहिनें जीवित हैं आपकी किसनी बहिनों की
उनकी आयु और स्वास्थ्य की मृत्यु हो चुकी है मृत्यु
अवस्था के समय उनकी आयु और
मृत्यु का कारण

7. क्या इससे पहले किसी मेडिकल बोर्ड ने आपकी परीक्षा
की है?

8. यदि ऊपर के प्रश्न का उत्तर 'हाँ' हो तो
बताइए किस सेवा/सेवाओं के लिए आपकी परीक्षा
की गई थी?

9. परीक्षा लेने वाला प्राधिकारी कौन था?

10. कब और कहाँ मेडिकल का परिणाम

11. मेडिकल बोर्ड की परीक्षा का परिणाम
यदि आपको बताया गया हो अथवा आपको मालूम
हो।

मैं घोषित करता हूँ कि जहाँ तक मेरा विश्वास है, ऊपर दिए
गए सभी जवाब सही और ठीक हैं।

उम्मीदवार के हस्ताक्षर

मेरे सामने हस्ताक्षर किए।

बोर्ड के चेयरमैन के हस्ताक्षर

मोट—उपर्युक्त कथन की यथार्थता के लिए उम्मीदवार
जिम्मेदार होगा। जानबूझकर किसी सूचना को छुपाने से वह
नियुक्ति खो बैठने की जोखिम लेगा और यदि वह नियुक्त हो भी
जाये तो वार्धक्य निवृत्ति भत्ता (सुपरएन्युएशन अलाउंस) या
उपदान (थ्रेचूटी) के सभी दावों से हाथ धो बैठेगा।

(ख) की शारी-
रिक परीक्षा की।

मेडिकल बोर्ड की रिपोर्ट

1. सामान्य विकास : अच्छा बीम का कम
- पोषण : पतला औसत मोटा
- कष (जूते उतार कर) वजन

अस्थुत्तम वजन कब था?
वजन में कोई हाल ही में त्रुआ परिवर्तन
तापमान
छाती का घेर
(1) पूरा सांस खीचने पर
....(2) पूर्य सांस निकालने पर
2. त्वचा—कोई आहिरी बीमारी
3. नेत्र
(1) कोई बीमारी
(2) रत्नोद्धी
(3) कलर विजन का दोष
(4) दृष्टि भेत्र (फील्ड आफ विजन)
(5) दृष्टि की पकड़ (विजुअल एक्विटी)
(6) फंडूस परीक्षा
दृष्टि की पकड़ चश्मे के बिना चश्मे से चश्मे की पावर

गोल सिलि० अक्ष

बूर की नजर	दा० ने०
	वा० ने०
पास की नजर	दा० ने०
	वा० ने०
हाइपरमेट्रोपिया	दा० ने०
(च्यक्त)	वा० ने०

4. कान : निरीक्षण सुनना
दायां कान बायां कान
5. ग्रंथियों थाइराइड
6. दांतों की हालत

7. एवसन तंत्र (ऐस्ट्रोटरि सिस्टम) क्या ज्ञारीएक परीका करने पर सांस के अंगों में किसी विलक्षणता का पता लगा है? यदि पता लगा है तो विलक्षणता का पूरा व्यौता है?

8. परिचरण तंत्र (सर्कूलेनर्टी सिस्टम)

(क) हृदय : कोई आगिक क्षति (आगनिक लीजन) ?

.....

गति (रेट) .

खड़े होने पर :

25 बार खुदाए जाने के बाद.....

खुदाए जाने के 2 मिनट बाद

(ख) ब्लड प्रेशर सिस्टालिक
डायस्टालिक

.....

9. उदर (पेट) : घेर दाढ़ बेदना (टैंडरनेस)

हार्मिन्या

(क) वावा कर मालूम पड़ना, जिगर तिल्ली
गुड़ दूधमर

(ख) बवासीर के मस्ते फिल्सुला

10. तांकिक तंत्र (नर्वस सिस्टम) तांकिक या मानसिक अशक्तता का संकेत

11. चाल तंत्र (लोकोमोटर सिस्टम)

कोई विलक्षणता

12. अनन-मूत्र तंत्र (जेनिटो यूरिनरी सिस्टम)/हाइ-ब्रोसील बेरिकोसील आदि का कोई संकेत।

मूत्र परीका :

(क) कैसा विद्याई पड़ता है?

(ख) स्पेसिफिक ग्रेविटी (अपेक्षित गुरुत्व)

(ग) एल्वमेन

(घ) शक्कर

(ङ) कास्ट

(च) केशिकाएं (सेल्स)

13. छाती की एक्स-रे परीका की रिपोर्ट

14. क्या उम्मीदवार के स्वास्थ्य में कोई बात है जिससे वह उस सेवा को वक्तापूर्वक निभाने के लिए अद्योग्य हो सकता है जिसके लिए वह उम्मीदवार है?

नोट :—महिला उम्मीदवार के मामले में, यदि यह पाया जाता है कि वह 12 सप्ताह की अवस्थिति अथवा उससे अधिक से गमिणी है तो उसे अस्थायी रूप से अद्योग्य घोषित किया जाना चाहिए, देखें विनियम 9।

15. (i) उन सेवाओं का उल्लेख करें जिनके लिए उम्मीदवार की परीका की गई :—

(क) भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय विदेश सेवा।

(ख) भारतीय पुलिस सेवा और विल्सी और अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा।

(ग) केन्द्रीय सेवाएं श्रेणी I से II

(ii) क्या वह निम्नलिखित सेवाओं में वक्तापूर्वक और निरन्तर काम करने के लिए सब तरह से योग्य पाया गया है :—

(क) भारतीय प्रशासनिक सेवा और भारतीय विदेश सेवा।

(ख) भारतीय पुलिस सेवा और विल्सी और अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह पुलिस सेवा, (कद, छाती का घेर, नजर, रंग विद्याई न देना और चाल, खास तौर से देंगे)।

(ग) भारतीय रेलवे यातायात सेवा (कद, छाती, नजर, रंग विद्याई न देना, खास तौर से देंगे)।

(घ) दूसरी केन्द्रीय सेवाएं श्रेणी I/II

(iii) क्या उम्मीदवार क्लॅव सेवा (फील्ड सर्विस) के लिए योग्य है?

नोट :—शोर्ड को अपना जांच परिणाम निम्नलिखित तीन वर्गों में से किसी एक वर्ग में रिकार्ड करना चाहिए।

(i) योग्य (फिट)

(ii) अयोग्य (अनफिट) जिसका कारण

(iii) अस्थायी रूप से अयोग्य, जिसका कारण

स्थान अध्यक्ष (प्रेसिडेंट)

तारीख सदस्य

सदस्य

गुरु यज्ञालय

नई दिल्ली, दिनांक 17 फरवरी 1973

सं० 9/76/72-जी० पी०—इस मंत्रालय की दिनांक 13
मई 1970 की अधिसूचना सं० 25/119/67-झ० एच० (एस०)
का अधिकरण करते हुए, राष्ट्रपति, अंडीश़ राष्ट्र-सापेत बोर्ड से
संबद्ध गृह मंत्री की सलाहकार समिति के लिए वर्ष 1972-73
और 1973-74 के लिए निम्नलिखित चार गैर-सरकारी सदस्यों
को भनोनीत करते हैं :—

- (1) श्री शाम लाल गुप्ता,
अध्यक्ष, खेड़ीय कांग्रेस कमेटी (सत्ताघारी),
चंडीगढ़ ।
 - (2) श्री ललूरन सिंह ।
 - (3) श्री श्रीचन्द्र गोयस,
भूतपूर्व संसद अध्यक्ष ।
 - (4) श्री पी० एस० वर्मा,
सेवा-निवृत्त मुख्य अभियंता,
चंडीगढ़ ।

जी० के० भनोत, संयक्त सचिव

प्रिय दंतार्थी

(अयं विष्णुः)

नई दिल्ली, दिनांक 13 फरवरी 1973

३४८

सं० फा० 16 (1)-ई० V (बी०)/72-खण्ड II—संयुक्त रामायादाता सम्बंधीय परिषद की समिति की सिफारिशों के अनुसरण में निर्णय किया गया है कि इस सम्बालय के दिनांक 25 मई, 1972 के संकल्प सं० 16(1)-ई० (बी०)/72 ता आंशिक आशोधन करते हुए, केन्द्रीय सरकार की भविष्य निधियों में जमा रकमों पर व्याज की दर पिछली सारीख, पहली अप्रैल 1972 से बढ़ा दी जाए। सामान्य भविष्य निधि तथा अन्य उसी प्रकार निधियों के अधिदाताओं की जमा रकमों में से 10,000 रु० तक की जमा पर (जिसमें वर्ष 1972-73 में जमा तथा नामे आसी गयी रकमें शामिल हैं) व्याज की दर 6 प्रतिशत तक वर्ष होगी तथा 10,000 रुपए से ऊपर की रकम पर व्याज ती दर 5.30 प्रतिशत प्रतिवर्ष होगी। ये दरें 1 अप्रैल से आरम्भ होने वाले विस्तीर्ण वर्ष में सारू रहेंगी। सम्बन्धित निधियाँ नेमानासार हैं:—

- सामान्य भविष्य निष्ठि (केन्द्रीय सेवाएं) ।
 - सामान्य भविष्य निष्ठि (रक्षा सेवाएं) ।

3. भारत सर्विक सेवाएं (सामान्य भविष्य निधि)।
 4. अंशवादी भविष्य निधि (भारत)।
 5. भारतीय सिविल सेवा भविष्य निधि।
 6. अखिल भारतीय सेवा भविष्य निधि।
 7. भारतीय आयुष्म निर्माणी विभाग भविष्य निधि।
 8. भारतीय सिविल सेवा (गैर-पूरोपीय सदस्य) भविष्य निधि।
 9. अन्य विविध भविष्य निधि (रक्त)।
 10. रक्त सेवा अधिकारी भविष्य निधि।
 11. सशस्त्र सेना कर्मचारी भविष्य निधि।
 12. सैनिक इंजीनियरी सेवा भविष्य निधि।
 13. भारतीय आयुष्म निर्माण कारखानों के श्रमिकों की भविष्य निधि।
 14. अंशवादी भविष्य निधि (रक्त)।
 15. भारतीय नौ सेना गोद्वी कामगारों की भविष्य निधि।

2. रेस (रेस बोर्ड) मन्त्रालय के नियमण में स्थित विभिन्न भविष्य निधियों में जमा रकमों पर, सम्बन्धित वर्ष के दौरान लागू व्याज की दरों के बारे में आदेश उक्त मन्त्रालय द्वारा जारी किए जायेंगे।

3. आदेश दिया जाता है कि संकल्प को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

श्याम सम्मद लाल मलहोला, अवर सचिव

पाण्डित रमेश सर्वानन्द

नई दिल्ली, दिनांक 15 फरवरी 1973

सं० 4 (1)/73-ई० पी० जे०ह०—भारत सरकार के विवेश व्यापार मन्त्रालय के संकल्प सं० 21 (15)/72-टी० ए० इ० पी०, दिनांक 23 दिसम्बर, 1972 के अनुसरण में केन्द्रीय सरकार एवं द्वारा 'सान्ता कूज एसपोर्ट प्रोसेसिंग जॉन अथारिटी' गठित करती है, जो मिमोक्ष प्रकार होगी : --

- | | |
|--|---------|
| 1. धो धी० धी० लाल,
सचिव, वाणिज्य मन्त्रालय | अध्यक्ष |
| 2. श्री एम० धी० के० मेनन,
अध्यक्ष, इलेक्ट्रोनिक्स कमीशन तथा
इलेक्ट्रोनिक्स विभाग के सचिव | सदस्य |
| 3. धी आर० धी० रमन।
सचिव, औद्योगिक विकास मन्त्रालय | सदस्य |

4. श्री एम० आर० यार्दी,	सचिव, वित्त मन्त्रालय	सदस्य
5. श्री एम० जी० कोले,	सचिव, आर्थिक कार्य विभाग	सदस्य
6. श्री जसजीत सिंह,	अध्यक्ष, उत्पाद शुल्क तथा	
सीमा शुल्क केन्द्रीय बोर्ड		
7. श्री एस० एस० शिराळकर,	डिप्टी गवर्नर,	
भारतीय रिजर्व बैंक		
8. श्री वार्ड० टी० शाह,	अतिरिक्त सचिव,	
वाणिज्य मन्त्रालय		
9. श्री के० एस० नारंग,	आयात तथा नियर्ति के मुद्य नियंत्रक	सदस्य
10. डा० एम० एन० देसाई,		
सचिव, उद्योग तथा श्रम विभाग,	सदस्य	
महाराष्ट्र सरकार।		
11. श्री ए० सी० बनर्जी,	कार्यकारी निदेशक,	
व्यापार विकास प्राधिकरण		
12. विकासायुक्त,	साम्ता कूज एक्सपोर्ट प्रोसेसिंग,	सदस्य
जोन (नियुक्त किए जाने हैं)		
एन० एस० वेद्यनाथन, उप-सचिव		

ओद्धोगिक विकास मन्त्रालय
नई दिल्ली, दिनांक 22 जनवरी 1973

आदेश

सं० 1-5/72-एच० एम० 2—इस मन्त्रालय के संकल्प सं० 1-5/72-एच० एम० 2, दिनांक 22 सितम्बर, 1972 द्वारा गठित की गई स्थायी समिति के बेयरमैन का नाम “श्री के० बी० राव” के स्थान पर “डा० ए० सीतारमेया” पढ़ा जाये।

एस० कम्बन, अवर सचिव

कम्पनी कार्य विभाग
(कम्पनी विधि बोर्ड)
न५ दिल्ली-1, दिनांक 18 फरवरी 1973

आदेश

सं० 53/2/73-सी० एल०-2—कम्पनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 209 की उप-धारा (4) के खण्ड (ख) के उप-खण्ड (II) के अनुसरण में कम्पनी विधि बोर्ड एवं द्वारा भारत सरकार, कम्पनी कार्य विभाग के एक अधिकारी श्री के० एस० रामकृष्णन सहायक लागत लेखाधिकारी, नई दिल्ली को कथित धारा 209 के उद्देश्यों के लिए प्राधिकृत करता है।

टी० एस० श्रीनिवासन,
निरीक्षण के संयुक्त निदेशक,
पदेन उप-सचिव,
कम्पनी विधि बोर्ड

स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मन्त्रालय
(परिवार नियोजन विभाग)
नई दिल्ली, दिनांक 3 फरवरी 1973
संकल्प

सं० 262/72-नीति—स्वास्थ्य और परिवार नियोजन मन्त्रालय (परिवार नियोजन विभाग) के दिनांक 6 दिसम्बर, 1972 के संकल्प सं० 2-6/2/72 नीति द्वारा गठित की गई परिवार नियोजन संबंधी सामाजिक-आर्थिक अध्ययन समिति की रचना में निम्नलिखित संशोधन करते का निर्णय किया गया है—

1. श्री बी० के० रामभद्रन, उप महापंजीकार, जोकि प्रतिनियुक्त पर विदेश चले गए हैं, के स्थान पर महापंजीकार समिति के एक सदस्य होंगे।
2. श्री चंचल सरकार समिति के एक सदस्य होंगे।

करतार सिंह, अवर सचिव

हृषि मन्त्रालय
(सहकारिता विभाग)
नई दिल्ली, दिनांक 13 फरवरी 1973
संकल्प

सं० आर०-15013/2/70-यां० तथा सम० (.)—इस विभाग के 2 सितम्बर, 1972 के संकल्प संख्या आर०-15013/2/70 यो० तथा सम०, जिसमें सहकारिता सलाहकार परिषद् पुनर्गठित की गई है, के सिलसिले में संकल्प के पैरा ग्राफ 1 में निम्नलिखित जोड़ा जाता है—

23. डा० बी० एस० मिन्हास,
सदस्य, योजना व्यापार

आदेश

आदेश है कि इस संकल्प की प्रतिलिपि सभी सम्बन्धितों को भजी जाए। यह भी आदेश है कि इस संकल्प को जनसाधारण की सुचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए।

के० एस० बाबा, संयुक्त सचिव

शिक्षा और समाज कल्याण मन्त्रालय
(तंस्कृति विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 21 फरवरी 1973

शुद्धि-पत्र

संकल्प सं० एफ० 15-25/72-एल-1, दिनांक 5 मई, 1972 को निम्नलिखित रूप से संशोधित किया जाता है—

- | | |
|----------------------------|------------------------------|
| पैरा-4(1) | कम संख्या 3 |
| निम्नलिखित के स्थान पर | निम्नलिखित पढ़ा जाए |
| शिक्षा राज्य मंत्री | श्रम राज्यमंत्री |
| (2) कम संख्या-7 | |
| निम्नलिखित के स्थान पर | निम्नलिखित पढ़ा जाए |
| प्रो० एस० इन्द्रेशम हुसेन, | प्रो० सालिक अहमद निजमी, |
| उर्दू के विभागाध्यक्ष, | इतिहास के विभागाध्यक्ष, |
| इलाहाबाद विश्वविद्यालय, | अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय; |
| इलाहाबाद। | अलीगढ़। |

(3) क्रम सं० 2 के बाद निम्नलिखित जोड़ें:—

2(क) श्री दिनेश कुमार सिंह,
शिक्षा राज्य मन्त्री,
बिहार सरकार,
पटना ।

पैरा-7—पहले वाली सामग्री के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाए
समिति को अपनी रिपोर्ट उसकी स्थापना की तारीख से
एक वर्ष की अवधि के अन्दर सरकार को प्रस्तुत करनी
चाहिए ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि संकल्प के शुद्धि पत्र की प्रतियां
समिति के सभी सदस्यों, अध्यक्ष, विषयविद्यालय अनुदान आयोग,
सभी कुलपतियों, निदेशक, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, प्रधान मंत्री
सचिवालय, संसदीय कार्य विभाग, लोक सभा सचिवालय, राज्य-
सभा सचिवालय, योजना आयोग, राष्ट्रपति सचिवालय और
सभी राज्य सरकारों/मन्त्रालयों तथा भारत सरकार के विभागों को
प्रेषित की जाएं ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि संकल्प के शुद्धि पत्र को सामान्य
सूचना के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

कान्ति चौधुरी, संयुक्त सचिव

नीतिहन और परिवहन मंत्रालय

(अन्तर्देशीय जल परिवहन निवेशालय)

नई दिल्ली, दिनांक 7 फरवरी 1973

संकल्प

सं० 8-आई० डब्लू० डी० (18)/70 पी० एण्ड डब्लू०—
इस मन्त्रालय के संकल्प सं० 8-आई० डब्लू० टी० (18)/70
(18) पी० एण्ड डब्लू० दिनांक 11 अक्टूबर, 1971 के
आंशिक संशोधन में भारत सरकार ने निश्चय किया है कि मध्य
प्रदेश राज्य में अन्तर्देशीय जल परिवहन के प्रभारी मन्त्री को भी
केन्द्रीय अन्तर्देशीय जल परिवहन बोर्ड का सदस्य नियुक्त किया
जाए । यह भी निश्चय किया गया है कि निम्नलिखित व्यक्ति उक्त
बोर्ड के तीन गैर सरकारी सदस्य होंगे :—

1. श्री बी० भगवती,
संसद सदस्य, राज्य सभा ।
2. श्री चन्द्रका प्रसाद,
संसद सदस्य, लोक सभा ।
3. अध्यक्ष, केन्द्रीय अन्तर्देशीय जल परिवहन निगम लिमिटेड,
कलकत्ता ।
2. भारत सरकार ने यह भी निश्चय किया है कि मध्य प्रदेश
सरकार द्वारा नामित होने वाला एक अधिकारी अन्तर्देशीय जल
परिवहन कार्यान्वयन और समन्वय समिति का सदस्य होगा ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति राष्ट्रपति
के मिशी और सैनिक सचिव, प्रधान मन्त्री सचिवालय, मन्त्रिमंडल
सचिवालय, योजना आयोग और भारत सरकार के सभी मन्त्रालयों
और सभी राज्य सरकारों को भेजी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प आम जानकारी
के लिए भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाये ।

पी० एच० निवेदी, निदेशक (परियोजना)

निर्णय और आवास मंत्रालय

नई दिल्ली, दिनांक 23 फरवरी 1973

संकल्प

सं०जी०-25017/1/72-एल० II—यतः भूमि तथा विकास
कार्यालय की कार्य पद्धति की विस्तारपूर्वक जांच के लिए इस
मन्त्रालय के दिनांक 20 जनवरी 1971 के संकल्प सं० जी०-
25017/1/70-एल० II द्वारा एक समिति का गठन किया गया
था ।

और यतः इसका कार्यकाल दिनांक 12 सितम्बर, 1972 के
संकल्प संख्या जी०-25017/1/72-एल० II के द्वारा 28 फरवरी
1973 तक बढ़ा दिया गया था ।

तथा चूंकि समिति के अध्ययनाधीन समस्या जटिल प्रकृति
की है, अतः समिति को अपनी सिफारिशों को अन्तिम रूप देने
में और अधिक समय लगेगा, इस कारण से इस समिति के कार्य-
काल को 1 मार्च, 1973 से 6 मास की और अधिक अवधि के
लिए बढ़ाने का निर्णय किया गया है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की एक प्रति सभी
सम्बन्धित लोगों को भेजी जाए ।

यह भी आदेश दिया जाता है कि आम जानकारी के लिए
यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया जाए ।

एस० चौधरी, संयुक्त सचिव

भ्रम और पुष्पवस्ति मंत्रालय

(भ्रम और रोजगार विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक फरवरी 1973

संकल्प

सं० डी० जी० ई० टी०-200 (11)/72-ई० 1—भारत के
राजपत्र असाधारण भाग-I, खंड-1, दिनांक 19 दिसम्बर, 1970
में प्रकाशित भारत सरकार के संकल्प संख्या एम० पी०-10
(110)/69, दिनांक 19 दिसम्बर, 1970 द्वारा स्थापित समिति
की अवधि, जो संकल्प संख्या डी० जी० ई०टी०-200(11)/
72-ई० 1(1), दिनांक 23 नवम्बर, 1972 द्वारा 28 फरवरी,
1973 तक बढ़ा दी गई थी, एतद्वारा और आगे 15 अप्रैल,
1973 तक बढ़ाई जाती है ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र के
भाग-I, खण्ड-1 में प्रकाशित किया जाए ।

आदेश दिया जाता है कि संकल्प की एक-एक प्रति भारत
सरकार के सभी मन्त्रालयों/विभागों, राज्य सरकारों/संघीय क्षेत्रों
तथा अन्य सभी संबंधित पक्षों को भेजी जाए ।

ईश्वर चन्द्र, संयुक्त सचिव

CABINET SECRETARIAT
(Department of Personnel and Administrative Reforms)

RULES

New Delhi, the 10th March 1972

No. 20/1/73-AIS(I).—The rules for a combined competitive examination to be held by the Union Public Service Commission in 1973, for the purpose of filling vacancies in the following services are with the concurrence of the Ministries concerned and the Comptroller and Auditor General of India in respect of the Indian Audit and Accounts Service published for general information :—

Category I

- (i) The Indian Administrative Service, and
- (ii) The Indian Foreign Service.

Category II

- (i) The Indian Police Service, and
- (ii) The Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Police Service Class II.

Category III

(a) *Class I Services*:

- (i) The Central Information Service, (Grade II), Class I.
- (ii) The Indian Audit & Accounts Service.
- (iii) The Indian Customs and Central Excise Service.
- (iv) The Indian Defence Accounts Service.
- (v) The Indian Income-tax Service (Class I).
- (vi) The Indian Ordnance Factories Service, Class I (Assistant Managers—Non-Technical).
- (vii) The Indian Postal Service.
- (viii) The Indian Railway Accounts Service.
- (ix) The Indian Railway Traffic Service.
- (x) The Military Lands and Cantonments Service, Class I.

(b) *Class II Services*:

- (i) The Central Secretariat Service, Section Officers Grade, Class II,
- (ii) The Indian Foreign Service, Branch 'B', Integrated Grades II and III of the General Cadre, (Section Officers' Grade),
- (iii) The Armed Forces Headquarters Civil Service, Assistant Civilian Staff Officers' Grade, Class II,
- (iv) The Customs Appraisers' Service, Class II,
- (v) The Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Civil Service, Class II,
- (vi) The Goa, Daman and Diu Civil Service, Class II,
- (vii) The Pondicherry Civil Service, Class II, and
- (viii) The Military Lands and Cantonments Service, Class II.

A candidate may compete in respect of any one or more of the categories of Services mentioned above, (Please see Rule 4). He should clearly indicate in his application the Services covered by the category/categories concerned, for which he wishes to be considered in the order of preference.

No request for alteration in the preferences indicated by a candidate in respect of Services covered by the category/categories for which he is competing would be considered unless the request for such alteration is received in the Cabinet Secretariat (Department of Personnel and Administrative Reforms) within 10 days of the date of announcement of final result of the examination.

A candidate who, on the results of the written part of the examination, qualifies for the personality test for the Indian Administrative Service/Indian Police Service will be separately asked to communicate to the Cabinet Secretariat (Department of Personnel and Administrative Reforms) the order of preferences in which he would like to be considered for allotment to various States.

2. Reservations will be made for candidates belonging to the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes in respect of vacancies as may be fixed by the Government.

Scheduled Castes/Tribes mean any of the Castes/Tribes mentioned in the Constitution (Scheduled Castes) Order, 1950, the Constitution (Scheduled Castes) (Part C States) Order, 1951, the Constitution (Scheduled Tribes) Order 1950, and the Constitution (Scheduled Tribes) (Part C States) Order 1951 as amended by the Scheduled Castes and Scheduled Tribes Lists (Modification) Order 1956 read with the Bombay Reorganisation Act, 1960 and the Punjab Reorganisation Act, 1966; the Constitution (Jammu and Kashmir) Scheduled Castes Order, 1956, the Constitution (Andaman and Nicobar Islands) Scheduled Tribes Order, 1959, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Castes Order, 1962, the Constitution (Dadra and Nagar Haveli) Scheduled Tribes Order, 1962, the Constitution (Pondicherry) Scheduled Castes Order, 1964, the Constitution (Scheduled Tribes) (Uttar Pradesh) Order 1967, the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Castes Order, 1968, the Constitution (Goa, Daman and Diu) Scheduled Tribes Order, 1968, and the Constitution (Nagaland), Scheduled Tribes Order, 1970.

3. The examination will be conducted by the Union Public Service Commission in the manner prescribed in Appendix II to these Rules.

The dates on which and the places at which the examination will be held shall be fixed by the Commission.

4. The combined competitive examination for recruitment to I.A.S. etc. is to be treated as comprising three separate and distinct examination for three categories of Services, viz., (i) I.A.S. and I.F.S., (ii) I.P.S. and Delhi and Andaman & Nicobar Islands Police Service and (iii) Central Services, Delhi and Andaman & Nicobar Islands Civil Service, Goa, Daman and Diu Civil Service and Pondicherry Civil Service.

5. No candidate who does not belong to a Scheduled Castes or a Scheduled Tribe or is not a resident of the Union Territory of Pondicherry or is not a migrant from Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar) shall be permitted to compete more than three times at the examination for each of the three categories of Services mentioned in Rule 4 above, but this restriction is effective from the examination held in 1961.

Provided that no candidate shall be permitted under the relaxation of the upper age limit admissible to released Emergency Commissioned/Short Service Commissioned Officers, vide Rule 7(b) below, to compete more than once at the combined competitive examination, a candidate being deemed to have competed at the combined examination once, if he competes for one or more categories.

NOTE 1 : If a candidate actually appears in any one or more subjects he shall be deemed to have competed at the examination for each of the categories of Services to which he is admitted by the Commission, a candidate permitted to appear under the proviso to this rule being deemed to have competed at the combined examination once.

NOTE 2 : The provision regarding the number of times for which a candidate can compete at the examination for each of the three categories of Services is liable to be revised with effect from the IAS etc. Examination 1974".

6. (1) For the Indian Administrative Service and the Indian Police Service, a candidate must be a citizen of India.

(2) For other Services, a candidate must be either—

- (a) a citizen of India, or
- (b) a subject of Sikkim, or
- (c) a subject of Nepal, or
- (d) a subject of Bhutan, or
- (e) a Tibetan refugee who came over to India, before the 1st January, 1962 with the intention of permanently settling in India, or
- (f) a person of Indian origin who has migrated from Pakistan, Burma, Sri Lanka (formerly known as Ceylon) and the East African Countries of Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar) with the intention of permanently settling in India.

Provided that a candidate belonging to categories (c), (d), (e) and (f) above shall be a person in whose favour a certificate of eligibility has been issued by the Government of India.

Provided further that candidates belonging to categories (c), (d) and (e) above will not be eligible for appointment to the Indian Foreign Service.

A candidate in whose case a certificate of eligibility is necessary may be admitted to the examination and he may also provisionally be appointed subject to the necessary certificate being given to him by the Government.

7. (a) (i) A candidate for the Indian Administrative Service, the Indian Foreign Service and for all the remaining Services, excepting the Indian Police Service and Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Police Service, mentioned in paragraph 1 above must have attained the age of 21 years and must not have attained the age of 26 years on the 1st August, 1973, i.e., he must have been born not earlier than 2nd August, 1947 and not later than 1st August, 1952.

(ii) A candidate for the Indian Police Service and Delhi and Andaman & Nicobar Islands Police Service, must have attained the age of 20 years, and must not have attained the age of 26 years on the 1st August, 1973 i.e., he must have been born not earlier than 2nd August, 1947 and not later than 1st August 1953.

(b) The upper age limit of 26 years will be relaxable in the case of those released Emergency Commissioned/Short Service Commissioned Officers of the following categories who had discontinued their studies before their selection for the Armed Forces and who did not possess the prescribed educational qualification, vide Rule 8 below, on the date of release from the Armed Forces, to the extent of their total Commissioned service in the Armed Forces (including the period spent at pre-Commissioned/post-Commission training) rounded off to the next complete year:—

(i) Emergency Commissioned/Short Service Commissioned Officers commissioned in the Armed Forces after 1st November, 1962 but before 10th January, 1968 or who had joined any pre-commission training before the latter date, but who were commissioned on or after that date and who had not attained the age of 21 years on 1st August of the year preceding the year in which they joined the pre-Commission training or got the Commission (where there was only post-Commission training) provided that the course of training commenced on or before 31st July, of the relevant year.

(ii) Emergency Commissioned/Short Service Commissioned officers commissioned in the Armed Forces after 1st November, 1962 but before 10th January, 1968 or who had joined any pre-commission training before the latter date, but who were commissioned on or after that date and who had not attained the age of 20 years on 1st August of the year preceding the year in which they joined the pre-Commission training or get the Commission (where there was only post-Commission training) provided that the course of training commenced on or after 1st August of the relevant year.

NOTE 1.—For the purpose of these Rules, "release" means

- (i) release as per the scheduled year of release;
- (ii) invalidment owing to a disability attributable to or aggravated by military service.

from the Armed Forces after a spell of service and not during or at the end of training, or during or at the end of Short Service Commission granted to cover the period of such training prior to being taken in actual service, nor does it cover cases of officers released on account of misconduct, or inefficiency or at their own request.

NOTE 2.—The expression "scheduled year of release" means

- (i) in so far as it relates to the Emergency Commissioned Officers, the year in which they are due for release in accordance with the phased programme approved by the Government of India in the Ministry of Defence;
- (ii) in so far as it relates to the Short Service Commissioned Officers, the year in which their normal tenure as Short Service Commissioned Officers is to expire.

NOTE 3.—Engineers and Doctors employed under the Central Government or State Governments or Government owned Industrial undertakings who are required to serve in the Armed Forces for a minimum prescribed period under

the Compulsory Liability Scheme and who are granted Short Service Commission under the relevant rules during the period of such service will not be eligible for this age relaxation.

NOTE 4.—Officers belonging to the Volunteer Reserve Forces of the Armed Forces and called upon for temporary service will not be eligible for this age relaxation.

(c) The upper age limit prescribed above will be further relaxable :—

- (i) up to a maximum of five years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe;
- (ii) up to maximum of three years if a candidate is a bona fide displaced person from erstwhile East Pakistan and had migrated to India on or after 1st January 1964 but before 25th March, 1971;
- (iii) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a bona fide displaced person from erstwhile East Pakistan and had migrated to India on or after 1st January, 1964 but before 25th March, 1971;
- (iv) up to a maximum of three years if a candidate is a resident of the Union Territory of Pondicherry and has received education through the medium of French at some stage;
- (v) up to a maximum of three years if a candidate is a bona fide repatriate of Indian origin from Sri Lanka (formerly known as Ceylon) and has migrated to India on or after 1st November 1964, under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;
- (vi) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a bona fide, repatriate of Indian origin Sri Lanka (formerly known as Ceylon) and has migrated to India on or after 1st November, 1964 under the Indo-Ceylon Agreement of October, 1964;
- (vii) up to a maximum of three years if a candidate is of Indian origin and has migrated from Kenya, Uganda and the United Republic of Tanzania (formerly Tanganyika and Zanzibar);
- (viii) up to a maximum of three years if a candidate is a bona fide repatriate of Indian origin from Burma has migrated to India on or after 1st June, 1963;
- (ix) up to a maximum of eight years if a candidate belongs to a Scheduled Caste or a Scheduled Tribe and is also a bona fide repatriate of Indian origin from Burma and has migrated to India on or after 1st June, 1963;
- (x) up to a maximum of three years in the case of Defence Services personnel, disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area and released as a consequence thereof;
- (xi) up to a maximum of eight years in the case of Defence Services personnel, disabled in operations during hostilities with any foreign country or in a disturbed area, and released as a consequence thereof who belong to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes;
- (xii) up to a maximum of three years in the case of Border Security Force personnel disabled in operations during Indo-Pak hostilities of 1971, and released as a consequence thereof; and
- (xiii) up to a maximum of eight years in the case of Border Security Force personnel, disabled in operations during Indo-Pak hostilities of 1971, and released as a consequence thereof who belong to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes.

(d) The Freedom Fighters of Goa, Daman and Diu who were not employees of the Portuguese Government of Goa, Daman and Diu and participated in the liberation struggle and suffered as a consequence thereof imprisonment or detention for not less than six months under former Portuguese Administration, will be permitted to appear at the examination provided they had not attained the age of 35 years on 1st January, 1972.

N.B.:—Candidates claiming age concession under rule 7(d) above will not be entitled to the age concessions allowed under rules 7(b) and 7(c) above.

SAVE AS PROVIDED ABOVE THE AGE LIMITS PRESCRIBED CAN IN NO CASE BE RELAXED.

8. A candidate must hold a degree of any of the Universities enumerated in Appendix I or must possess any of the qualifications mentioned in Appendix I-A.

NOTE I.—A candidate who has appeared at an examination the passing of which would render him eligible to appear at this examination but has not been informed of the result may apply for admission to the examination. A candidate who intends to appear at such a qualifying examination may also apply, provided the qualifying examination is completed before the commencement of this examination. Such candidates will be admitted to the examination, if otherwise eligible but the admission would be deemed to be provisional and subject to cancellation if they do not produce proof of having passed the examination, as soon as possible, and in any case not later than two months after the commencement of this examination.

NOTE II.—In exceptional cases the Union Public Service Commission may treat a candidate who has not any of the foregoing qualifications, as a qualified candidate provided that he has passed examinations conducted by other institutions, the standard of which in the opinion of the Commission, justifies his admission to the examination.

NOTE III.—A candidate who is otherwise qualified but who has taken a degree from a foreign university which is not included in Appendix I, may also apply to the Commission and may be admitted to the examination at the discretion of the Commission.

9. A candidate who is appointed to a Service in Category I (I.A.S. or I.F.S.) on the results of an earlier examination will not be eligible to compete at this examination.

A candidate who is appointed to a Service mentioned in col. (ii) below on the results of an earlier examination will be eligible to compete at this examination only for Services mentioned against that Service in col. (iii) below:

Sl. No.	Service to which appointed	Services for which eligible to compete
1.	Indian Police Service . . .	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.). (ii) Central Services Class I, in Category III.
2.	Central Service Class I . . .	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.) (ii) I.P.S. in Category II.
3.	Central Services Class II (including Civil and Police Services in Union Territories). . .	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.) (ii) I.P.S. in Category II. (iii) Central Services, Class I in Category III.

10. Candidates must pay the fee prescribed in Annexure I to the Commission's Notice.

11. A candidate already in Government Service whether in a permanent or a temporary capacity or as a work-charged employee other than a casual or daily-rated employee must obtain prior permission of the Head of the Department or office concerned to appear for the Examination.

12. The decision of the Commission as to the eligibility or otherwise of a candidate for admission to the examination shall be final.

13. No candidate will be admitted to the examination unless he holds a certificate of admission from the Commission.

14. Any attempt on the part of a candidate to obtain support for his candidature by any means may disqualify him for admission.

15. A candidate who is or has been declared by the Commission guilty of impersonation or of submitting fabricated documents or documents which have been tampered with or of making statements which are incorrect or false or of suppressing material information or otherwise resorting to any other irregular or improper means for obtaining admission to the examination, or of using or attempting to use unfair means in the examination hall or of misbehaviour in the examination hall, may in addition to rendering himself liable to criminal prosecution.—

(a) be debarred permanently or for a specified period :—

- (i) by the Commission, from admission to any examination or appearance at any interview held by the Commission for selection of candidates; and
- (ii) by the Central Government from employment under them;

(b) be liable to disciplinary action under the appropriate rules, if he is already in service under Government.

16. Candidates who obtain such minimum qualifying marks in the written examination as may be fixed by the Commission in their discretion shall be summoned by them for an interview for a personality test.

17. After the examination, the candidates will be arranged by the Commission in the order of merit as disclosed by the aggregate marks finally awarded to each candidate and in that order so many candidates as are found by the Commission to be qualified by the examination shall be recommended for appointment up to the number of unreserved vacancies decided to be filled on the results of the examination.

Provided that candidates belonging to the Scheduled Castes or the Scheduled Tribes may, to the extent the number of vacancies reserved for the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes cannot be filled on the basis of the general standard, be recommended by the Commission by a relaxed standard to make up the deficiency in the reserved quota, subject to the fitness of these candidates for appointment to the services irrespective of their ranks in the order of merit at the examination.

18. The form and manner of communication of the result of the examination to individual candidates shall be decided by the Commission in their discretion and the Commission will not enter into correspondence with them regarding the result.

19. Due consideration will be given at the time of making appointments on the results of the examination, to the preferences expressed by a candidate for various Services at the time of his application.

Provided that a candidate who is appointed to a Service in Category I (I.A.S. or I.F.S.), on the results of an earlier examination, will not be considered for appointment to any other Service on the results of this examination.

Provided further that a candidate who is appointed to a Service mentioned in col. (ii) below on the results of an earlier examination will be considered only for appointment to Services mentioned against that Service in col. (iii) below, on the results of this examination :

Sl. No.	Service to which appointed	Service to which appointment will be considered
1.	Indian Police Service . . .	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.). (ii) Central Services, Class I in Category III.
2.	Central Services, Class I . . .	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.) (ii) I.P.S. in Category II.
3.	Central Services Class II (including Civil and Police Services in Union Territories) . .	(i) Category I (I.A.S. and I.F.S.) (ii) I.P.S. in Category II. (iii) Central Services, Class I, in Category III.

20. Success in the examination confers no right to appointment unless Government are satisfied after such enquiry as may be considered necessary, that the candidate is suitable in all respects for appointment to the Service.

21. A candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the discharge of his duties as an officer of the Service. A candidate who after such medical examination as Government or the

appointing authority, as the case may be, may prescribe is found not to satisfy these requirements, will not be appointed. Any candidate called for the Personality Test by the Commission may be required to undergo medical examination. No fee shall be payable to the Medical Board by the candidate for medical examination.

NOTE.—In order to prevent disappointment candidates are advised to have themselves examined by a Government Medical Officer of the standing of a Civil Surgeon, before applying for admission to the examination. Particulars of the nature of the medical test to which candidates will be subjected before appointment and of the standard required are given in Appendix IV to these Rules. For the disabled ex-Defence Services personnel the standards will be relaxed consistent with the requirements of the Service(s).

22. No person

- (a) who has entered into or contracted a marriage with a person having a spouse living, or
 - (b) who, having a spouse living, has entered into or contracted a marriage with any person,
- shall be eligible for appointment to service.

Provided that the Central Government may, if satisfied that such marriage is permissible under the personal law applicable to such person and the other party to the marriage and there are other grounds for so doing, exempt any person from the operation of this rule.

23. Candidates are informed that some knowledge of Hindi prior to entry into service would be of advantage in passing departmental examinations which candidates have to take after entry into service.

24. Brief particulars relating to the Services to which recruitment is being made through this examination are given in Appendix III.

S. HABEEBULLAH, Under Secy.

APPENDIX I

List of Universities approved by the Government of India (vide Rule 8)

INDIAN UNIVERSITIES

Any University incorporated by an Act of the Central or State Legislature in India and other educational institutions established by an Act of Parliament, or declared to be deemed as Universities under Section 3 of the University Grants Commission Act, 1956.

UNIVERSITIES IN BURMA

The University of Rangoon.

The University of Mandalay.

ENGLISH AND WELSH UNIVERSITIES

The Universities of Birmingham, Bristol, Cambridge, Durham, Leeds, Liverpool, London, Manchester, Oxford, Reading, Sheffield and Wales.

SCOTTISH UNIVERSITIES

The Universities of Aberdeen, Edinburgh, Glasgow and St. Andrews.

IRISH UNIVERSITIES

The University of Dublin (Trinity College).

The National University of Ireland.

The Queen's University, Belfast.

UNIVERSITIES IN PAKISTAN

The University of Punjab.

The University of Sind.

491 GI/72--8

UNIVERSITIES IN BANGLA DESH

The Rajshahi University.

The Dacca University.

UNIVERSITY IN NEPAL

The Tribhuvan University, Kathmandu.

APPENDIX I-A

List of qualifications recognised for admission to the examination (*vide Rule 8*).

1. Shastri of Kashi Vidyapith, Varanasi.
2. French Examination "Propedeutique".
3. Diploma in Rural Services of the National Council of Rural Higher Education.
4. Diploma in Rural Services of the Visva Bharati University.
5. National Diploma in Commerce of All India Council for Technical Education.
6. National Diploma in Engineering or Technology of the All India Council for Technical Education recognised by the Government for recruitment to superior Services and posts under the Central Government.
7. 'Higher Course' of Sri Aurobindo International Centre of Education, Pondicherry, provided that the Course has been successfully completed as a "full student".
8. Diploma in Mining Engineering of the Indian School of Mines, Dhanbad.
9. Diploma in the field of Humanities and Natural Sciences attesting graduation from a Higher Educational Establishment in the U.S.S.R. without defending first scientific thesis but having passed the State Examinations.
10. Shastri (with English) or Old Shastri or Sampurna Shastri examination with special examination in additional subjects with English as one of the subjects *i.e.*, Varishta Shastri of Varanasoya Sanskrit Vishwa Vidyalaya, Varanasi.
11. Alankar degree of Gurukul Vishwa Vidyalaya, Kangri, Hardwar.
12. Bachelor of Arts (B.A.) and the Bachelor of Science (B.Sc.) degrees awarded by the American University of Beirut, Beirut, Lebanon.

APPENDIX II

SECTION I

Plan of the Examination

The competitive examination comprises :—

(A) Written examination in—

- (i) three compulsory subjects (for all Services). Essay, General English, and General Knowledge, each with a maximum of 150 marks [see Sub-Section (a) of Section II below];
- (ii) a selection from the optional subjects set out in Sub-Section (b) of Section II below. Subject to the provisions of that Sub-section, candidates may take optional subjects up to a total of 600 marks for all Services except the Services under Category II (cf. Rule 1 and 4) for which optional subjects up to a total of 400 marks only may be taken. The standard of these papers will be approximately that of an Honours Degree Examination of an Indian University; and
- (iii) a selection from the additional subjects set out in Sub-Section (c) of Section II below. Subject to the provision of that Sub-Section, candidates may take additional subjects up to a total of 400 marks for the Indian Administrative Service and Indian Foreign Service (Category I). The standard of these papers will be higher than that prescribed for the optional subjects under Sub-Section (A)(ii) above.

(B) Interview for Personality Test (*vide* Part D of the Schedule to this Appendix) of such candidates as may be called by the Commission, carrying maximum marks as follows :

Category I:

Indian Foreign Service	400
Indian Administrative Service	300

Category II & III:

All Services	200
--------------------	-----

SECTION II

Examination Subjects

(a) *Compulsory Subjects* [*vide Sub-Section A(i) of Section I above*]—

	Maximum Marks
(1) Essay	150
(2) General English	150
(3) General Knowledge	150

NOTE.—The syllabi of the Subjects mentioned above are given in part A of the schedule to this Appendix.

(b) *Optional Subjects* [*vide Sub-Section A(ii) of Section I above*].

Candidates for Services under Category II (cf. Rules 1 and 4) may offer any two, and for all other Services any three of the following subjects :—

	Maximum Marks
(1) Pure Mathematics	200
(2) Applied Mathematics	200
(3) Statistics	200
(4) Physics	200
(5) Chemistry	200
(6) Botany	200
(7) Zoology	200
(8) Geology	200
(9) Geography	200
(10) English Literature	200
(11) one of the following— Assamese, Bengali, Gujarati, Hindi, Kannada, Kashmiri, Malayalam, Marathi, Oriya, Punjabi, Sindhi, Tamil, Telugu and Urdu	200
(12) One of the following— Arabic, Chinese, French, German, Pali Persian, Russian and Sanskrit	200
(13) Indian History	200
(14) British History	200
(15) European History	200
(16) World History	200
(17) General Economics	200
(18) Political Science	200
(19) Philosophy	200
(20) Psychology	200
(21) Law-I	200
(22) Law-II	200
(23) Law-III	200
(24) Applied Mechanics	200
(25) Sociology	200

Provided that the following restrictions shall apply to particular optional subjects :

- (i) Of the subjects 1, 2 and 3, not more than two can be offered for any category of Services.
- (ii) Candidates for Services other than the Indian Foreign Service may not offer more than one of the languages mentioned under item 12 above. For the Indian Foreign Service only, candidates are allowed to offer any two of these languages; but no candidate shall be allowed to offer both Pali and Sanskrit.
- (iii) Of the History subjects 13, 14, 15 and 16 not more than two can be offered for any category of Services but no candidate shall be allowed to offer both World History and European History.

- (iv) Of the subjects 19 and 20, not more than one can be offered for any category of Services.
- (v) Of the Law subjects 21, 22 and 23, not more than two can be offered for any category of Services.
- (vi) Subject 24 must not be offered for the Services under Category II.

NOTE.—The syllabi of the subjects mentioned above are given in Part B of the Schedule to this Appendix.

(c) *Additional subjects* [*vide Sub-Section A (iii) of Section I above*].

Candidates competing for the Indian Administrative Service/ Indian Foreign Service (Category I), must also select any two of the following subjects :—

	Maximum Marks
(1) (a) Higher Pure Mathematics	200
OR	
(b) Higher Applied Mathematics	200
(2) Higher Physics	200
(3) Higher Chemistry	200
(4) Higher Botany	200
(5) Higher Zoology	200
(6) Higher Geology	200
(7) Higher Geography	200
(8) English Literature (1798-1935)	200
(9) (a) Indian History I (From Chandragupta Maurya to Harsha)	200
OR	
(b) Indian History II (The Great Mughals (1526-1707))	200
OR	
(c) Indian History III (From 1772 to 1950)	200
OR	
(d) British Constitutional History (From 1603 to 1950)	200
OR	
(e) European History (From 1871 to 1945)	200
(10) (a) Advanced Economics	200
OR	
(b) Advanced Indian Economics	200
(11) (a) Political Theory from Hobbes to the present day	200
OR	
(b) Political Organisation and Public Administration	200
OR	
(c) International Relations	200
(12) (a) Advanced Metaphysics including Epistemology	200
OR	
(b) Advanced Psychology including Experimental Psychology	200
(13) (a) Constitutional Law of India	200
OR	
(b) Jurisprudence	200
(14) (a) Medieval Civilisation as reflected in Arabic Literature (570 A.D.—1650 A.D.)	200
OR	
(b) Medieval Civilisation as reflected in Persian Literature (570 A.D.—1650 A.D.)	200
OR	
(c) Ancient Indian Civilisation and Philosophy	200
(15) Anthropology	200
(16) Advanced Sociology	200

Provided that the following restrictions shall apply to particular additional subjects.

- (1) No candidate shall be allowed to offer both Indian History 1(9a) and Ancient Indian Civilisation and Philosophy [14(c)].
- (2) No candidate shall be allowed to offer both European History [9(c)] and International Relations [11(c)].

NOTE.—The Syllabi of the subjects mentioned above are given in Part C of the Schedule to this Appendix.

SECTION III

General

1. (a) The question papers in 'Essay' and 'General Knowledge', *vide* items (1) and (3) respectively of Sub-section (a) of Section II above, may be answered in English, or in any one of the languages mentioned in the Eighth Schedule to the Constitution, viz., Assamese, Bengali, Gujarati, Hindi, Kannada, Kashmiri, Malayalam, Marathi, Oriya, Punjabi, Sanskrit, Sindhi, Tamil, Telugu and Urdu. Candidates exercising the option to answer both the papers in a language other than English must choose the same language for both the papers. The option will apply to a complete paper and not to a part thereof.

(b) Question papers in all other subjects must be answered in English, except question papers in languages, *vide* items (11) and (12) of sub-section (b) of Section II above, which, unless specifically required otherwise, may be answered in English or in the language concerned.

NOTE I.—A candidate desirous of answering the question paper(s) mentioned in para 1(a) above in a language other than English must clearly indicate, in column 33 of the Application Form, the name of that language against the paper(s) concerned. If no entry is made in the said column in respect of either or both of the papers, it will be assumed that the paper/papers will be answered in English. *The option once exercised shall be treated as final; and no request for alteration or addition in the said column shall be entertained.*

NOTE II.—Candidates exercising the option to answer the paper(s) in para 1(a) above in any of the languages mentioned in the Eighth Schedule to the Constitution will be required to write their answers in the respective script indicated below :

Language Script

- 1. Assamese—Assamese.
- 2. Bengali—Bengali
- 3. Gujarati—Gujarati.
- 4. Hindi—Devanagari.
- 5. Kannada—Kannada.
- 6. Kashmiri—Persian.
- 7. Malayalam—Malayalam.
- 8. Marathi—Devanagari.
- 9. Oriya—Oriya.
- 10. Punjabi—Gurmukhi.
- 11. Sanskrit—Devanagari.
- *12. Sindhi—Devanagari or Arabic.
- 13. Tamil—Tamil.
- 14. Telugu—Telugu.
- 15. Urdu—Persian.

*Candidates exercising the option to answer the paper(s) referred to in para 1(a) above in Sindi must also indicate in column 33 of the application form the name of the particular script (Devanagari or Arabic) which they will adopt.

2. The duration of each of the papers referred to in Sub-Sections (a), (b) and (c) of Section II above will be 3 hours.

3. Candidates must write the papers in their own hand. In no circumstances, will they be allowed the help of a scribe to write the answers for them.

4. The Commission have discretion to fix qualifying marks in any or all the subjects of the examination.

5. For the Indian Administrative Service and the Indian Foreign Service (Category I), the two additional papers of only such candidates will be examined and marked as attain such minimum standard as may be fixed by the Commission in their discretion at the written examination in all the other subjects.

6. If a candidate's handwriting is not easily legible, a deduction will be made on this account from the total marks otherwise accruing to him.

7. Marks will not be allotted for mere superficial knowledge.

8. Credit will be given for orderly, effective and exact expression combined with the economy of words in all subjects of the examination.

9. Candidates are expected to be familiar with the metric system of weights and measures. In the question papers, wherever necessary, questions involving the use of metric system of weights and measures may be set.

SCHEDULE

PART A

[*Vide Sub-Section (a) of Section II of Appendix II*]

1. *Essay*.—Candidates will be required to write an essay. A choice of subjects will be given. They will be expected to keep closely to the subject of the essay to arrange their ideas in orderly fashion, and to write concisely. Credit will be given for effective and exact expression.

2. *General English*.—Candidates will be required to answer questions designed to test their understanding of English and workmanlike use of words. Some of the questions will be devised to test also their reasoning power, their capacity to perceive implications and their ability to distinguish between the important and the less important. Passages will usually be set for summary or precis. Credit will be given for concise and effective expression.

3. *General Knowledge*.—Including knowledge of current events and of such matters of everyday observation and experience in their scientific aspects as may be expected of an educated person who has not made a special study of any scientific subject. The paper will also include questions on History of India and Geography of a nature which candidates should be able to answer without special study, and questions on the teachings of Mahatma Gandhi.

PART B

[*Vide Sub-Section (b) of Section II of Appendix II*]

1. Pure Mathematics

The subjects included will be (1) Algebra, (2) Infinite Sequences and Series, (3) Trigonometry, (4) Theory of equations, (5) Analytic Geometry of two and three dimensions, (6) Analysis and (7) Differential Equations.

(1) *Algebra*: Sets, Union, Intersection difference and complementation properties. Venn Diagram. Properties of natural numbers. Real numbers and their representation by decimals. Complex numbers. Argand Diagram, Cartesian Products. Relation, Mapping, Function as a mapping. Equivalence relation. Groups, Isomorphism of groups. Subgroups, Normal subgroups. Lagranges Theorem. Frobenius theorem.

The definitions and illustrations of Rings and Fields. Divisions of Zero and Homomorphisms. Vector spaces.

Determinants, Addition, subtraction, multiplication and inversion of matrix. Linear homogeneous and non-homogeneous equations. Cayley-Hamilton theorem.

Elementary number theory. Fundamental theorem of arithmetic. Congruences. Theorems of Fermat and Wilson.

Inequalities. Arithmetical and Geometrical means. Inequalities of Cauchy, Schwaiz, Holder and Minkowsky.

(2) *Infinite Sequences and Series*: Concept of limit. Infinite series, Convergent, divergent and Oscillatory series. Cauchy's general principle of convergence. Comparison and ratio tests. Gauss' test. Absolute convergence and derangement of series.

(3) *Trigonometry*: De Moivre's theorem for rational index and its applications. Inverse Circular and hyperbolic functions. Expansions and summation of trigonometrical series. Expressions for sine and cosine in terms of infinite products.

(4) *Theory of Equations*: General properties of polynomial equations. Transformation of equations. Nature of the roots of cubic and biquadratic. Cardan's solution of the cubic. Resolution of biquadratic into quadratic factors. Location of roots and Newton's method of divisors.

(5) *Analytic Geometry of two and three dimensions*:—Straight line, Pair of straight lines, circle, system of circles, Ellipse, Parabola, Hyperbola. Reduction of a second degree equation to a standard form.

Planes, straight lines, sphere, cone, coincides and their tangent and normal properties (Vector methods will be permissible.)

(6) *Analysis*: Concepts of Limit, Continuity, Derivation differentiability of a function of one real variable. Properties of continuous functions. Characterisation of discontinuities. Mean value theorems. Evaluation of indeterminate forms. Taylor's and Maclaurin's theorems with Lagrange's and Cauchy's forms of remainders. Maxima and minima of function of one variable. Plane curves, singular points, curvature, curve tracing. Envelopes. Partial Differentiation. Differentiability of a function of more than one real variable.

Standard methods of integration. Riemann's definition of definite integral of continuous functions. Fundamental theorem of integral calculus. First mean value theorem of integral calculus. Rectification, quadrature, volumes and surfaces of solids of revolution and their applications.

(7) *Differential Equations*: Formation of ordinary differential equation. Order and degree. Geometrical demonstration of the existence theorem for

$$\frac{dy}{dx} = F(y, x)$$

First order linear and nonlinear equations. Singular points. Singular solutions. Linear differential equations and their important properties. Linear Differential Equations with constant co-efficients. Cauchy-Euler type of equations. Exact differential equations and equations admitting integrating factor. Second order equations. Changing of dependent and independent variables. Solution when one integral is known. Variation of parameters.

2. Applied Mathematics

The subjects included will be (1) Vector Analysis (2) Statics (3) Dynamics and (4) Hydrostatics.

(1) *Vector Analysis*: Vector Algebra, Differentiation of vector function of scalar variable. Gradient, divergence and curl in cartesian, cylindrical and spherical coordinates and their physical interpretation. Higher order derivatives. Vector identities and Vector equations. Gauss and Stokes theorems.

(2) *Statics*: Fundamental laws of Newtonian Mechanics. Theory of Dimension. Plane statics. Equilibrium of system of particles. Work and Potential Energy. Centre of mass and centre of gravity. Friction. Common Catenary. Principle of Virtual work. Stability of equilibrium. Equilibrium of forces in three dimensions.

Attraction and Potential of rods, rectangular and circular discs spherical shells, sphere. Equipotential surfaces and their properties, properties of potentials. Green's equivalent stratum. Laplace's and Poisson's equations.

(3) *Dynamics*: Velocity vector. Relative velocity. Acceleration. Angular velocity. Degrees of freedom and constraints. Rectilinear motion. Simple harmonic motion. Motion in a plane. Projectiles. Constrained motion. Work and energy. Motion under impulsive forces. Kepler's laws. Orbits under central forces. Motion of varying mass. Motion under resistance. Moments and products of inertia. Two dimensional motion of a rigid body under finite and impulsive forces. Compound pendulum.

(4) *Hydrostatics*: Pressure of heavy fluids. Equilibrium of fluids under given system of forces. Centre of pressure. Rest on curved surfaces. Equilibrium of floating bodies. Stability of equilibrium. Pressure of gases and problems relating to atmosphere.

3. Statistics :

I. Probability

Classical and Statistical definitions of probability. Simple theorems on probability with examples. Conditional probability and statistical independence. Bayes' theorem. Random variables—Discrete and Continuous. Probability functions and probability density functions. Probability distributions in one or more variates. Mathematical expectations. Chebycheff's inequality. Weak law of large numbers. Simple form of Central Limit theorem.

II. Statistical Methods

Compilation, classification, tabulation and diagrammatic representation of various types of statistical data.

Concepts of statistical population, and frequency curve. Measures of Central tendency and dispersion. Moments and cumulants. Measures of skewness and Kurtosis. Moment-generating functions.

Study of standard probability distributions—Binomial, Poisson, Hypergeometric. Normal, Negative-Binomial, Rectangular and log normal distributions. General description of the Pearsonian system of curves.

General properties of a bivariate distribution, bivariate normal distribution. Measures of association and contingency. Correlation and Linear regression involving two or more variables. Correlation ratio. Intraclass correlation. Rank correlation. Non-linear regression analysis.

Curvefitting by methods of free-hand curves, moving averages, group averages, least squares and moments, orthogonal Polynomials and their uses.

III. Sampling distribution and statistical inference.

Random sample, statistics, concepts of sampling distribution and standard error.

Derivation of sampling distribution of mean of independent normal varieties, χ^2 , T and F Statistics; their properties and uses. Derivation of sampling distributions of sample means, variances and correlation coefficient from a bivariate normal population. Derivation (in large samples) and uses of Pearsonian x^2 .

Theory of Estimation: Requirements of a good estimate—unbiasedness, consistency, efficiency and sufficiency. Cramer-Rao lower bound to variance of estimates. Best linear unbiased estimates.

Methods of estimation—general descriptions of the methods of moments of maximum likelihood method of least squares and method of minimum x^2 . Properties of maximum likelihood estimators (without proof). Theory of confidence intervals—simple problems of setting confidence limits.

Theory of Testing of Hypotheses: Simple and composite hypotheses. Statistical tests and critical regions. Two kinds of error, level of significance and power of a test.

Optimum critical regions for simple hypotheses concerning one parameter. Construction of such regions for simple hypotheses relating to a normal Population.

Likelihood ratio tests. Tests involving, variance correlation and regression coefficients in univariate and bivariate normal populations. Simple non-parametric tests—sign, run, median, rank and randomisation tests.

Sequential test of a simple hypotheses against a simple alternative (without derivation).

IV. Simple techniques

Sampling versus complete enumeration. Principles of sampling. Frames and sampling units. Sampling and non-sampling errors. Simple random sampling. Stratified sampling. Cluster sampling. Systematic sampling. Description of multi-stage and multiphase sampling. Ratio and regression methods of estimation. Designing of sample surveys with reference to recent large-scale surveys in India.

V. Design of Experiments

Analysis of variance and covariance with equal number of observations in the cells.

Transformation of variates to stabilise variance.

Principles of experimental designs. Completely randomised randomised block and latin square designs. Missing plot techniques. Factorial experiments with confounding in $2^{[s=2(1)5]}, 3^2$ and 3^3 designs. Splitplot design. Balanced incomplete designs and simple lattice.

4. Physics

General Properties of matter and Mechanics.—Units and dimensions. Rotational motion and moments of inertia. Gravity. Gravitation, planetary motion. Stress and Strain relationship, elastic moduli and their inter-relationships. Surface tension, capillarity. Flow of incompressible fluids. Viscosity of liquids and gases.

Sound.—Forced vibrations and resonance. Wave motion. Doppler effect. Vibration of strings and air columns. Measurement of frequency, velocity and intensity of sound. Musical scales. Acoustics of halls, Ultrasonics.

Heat and Thermodynamics.—Elements of the kinetic theory of gases. Brownian motion. Van der Waals equation of state. Measurement of temperature, specific heat and thermal conductivity. Joule-Thomson effect and liquefaction of gases.

Laws of thermodynamics. Heat engine. Black body radiation.

Light.—Geometrical optics, and simple optical systems. Telescope and microscope. Defects in optical images and their corrections. Wave theory of light. Measurement of velocity of light. Interference diffraction and polarization of light. Simple interferometers. Elements of spectroscopy. Raman effect.

Electricity and Magnetism.—Calculation of field and potential in simple cases. Gauss's theorem. Electrometers. Electrical and magnetic properties of matters and their measurements. Magnetic field due to electric current Galvanometers. Measurement of current and quantity of electricity. Potentiometer. Resistance, Inductance and capacitance; and their requirements. Thermoelectricity. Elements of alternating currents. Dynamos and motors. Electrolysis. Electromagnetic waves. Radio valves and their simple applications, transmission and reception of wireless waves. Television.

Elements of Modern Physics.—Elementary properties of electron, proton and neutron. Planck's constant and its measurement. Bohr's theory of the atom. X-rays and their properties. Elements of radio-activity and properties of alpha, beta and gamma rays. Nuclei of atoms. Elements of the special theory of relativity, mass and energy. Fission and fusion, cosmic rays.

5. Chemistry :

Inorganic Chemistry.—Structure of the atom. The Periodic Law. Radioactivity. Isotopes. Artificial transmutations of elements. Nuclear fission. Nature of chemical bonds. The inert gases of the atmosphere. Chemistry of the more common and useful elements and their compounds. Rare earth elements. Hydrides, oxides, oxyacids, peracids and peroxides, and carbides. Inorganic complexes. Basic principles of chemical analysis.

Organic Chemistry.—Petroleum and petroleum products. Chemistry of the following classes of aliphatic compounds: Saturated and unsaturated hydrocarbons, alcohols, ethers, aldehydes, Ketones, mono and di-carboxylic acids, esters, substituted carboxylic acids; thio, nitro and cyano compounds; amines urea and ureides, organometallic compounds, monosaccharides (including structures) carbohydrates and proteins (general ideas). Simple acyclic compounds. Strain theory.

Aromatic.—Benzene, naphthalene and anthracene and their principle derivatives; coal-tar distillation, phenols aromatic alcohols, aldehydes, ketones. Aromatic acids and hydroxy-acids. Steric hindrance. Arylamines. Diazo, azo and hydrazone compounds. Quinones. Heterocyclic compounds. Pyrrole, pyridine, quinoline, indole and indigo. Azo, triphenylmethane and phthalein dye.

Simple molecular rearrangements. Isomerism, stereoisomerism and tautomerism polymerisation.

Physical Chemistry.—The kinetic theory. Properties of gases. Equations of state (Van der Waals Dieterici). The critical state. Liquefaction of gases. Physical properties of liquids in relation to their chemical constitution. Elementary Crystallography.

The first and second laws of thermodynamics and their application to simple physical and chemical processes. Chemical equilibrium and Law of Mass Action Le Chatelier's Principle. The Phase Rule and its application to one-component system and to the iron-carbon system.

Rate and order of a reaction. First and second order reactions. Chain reactions. Photochemical reactions. Catalysis. Adsorption.

Electrolytic dissociation. Ionic equilibria. Acid-base equilibria and indicators. Study of electrolytic conductance and its applications. Electrode potentials. E.M.F. of cells. Measurements of E.M.F. and their applications.

6. Botany :

Form, structure, habit, economic importance life histories and inter-relationships of the important representatives of the various groups and sub-groups or families and sub-families of cryptogams, (including bacteria with viruses) and phanerogams, with special reference to Indian plants.

The fundamental principles and processes of plant physiology.

A general knowledge of important diseases of crop plants in India and methods of their control and eradication.

The basic facts relating to ecology and plant geography, with special reference to Indian flora and the botanical region of India.

Basic knowledge about evolution, cytology, genetics and plant breeding.

Economic uses of plants specially flowering plants in relation to human welfare, particularly with reference to such vegetable products as food-grains pulses, fruits, sugars and starches, oil-seeds, species, beverages, fibres, woods, rubber, drugs and essential oils.

A general familiarity with the development of knowledge relating to the botanical science.

7. Zoology :

The classification, bionomics, morphology, life-history, and relationship of non-chordates and chordate, with special reference to Indian forms.

Functional morphology (form, structure and function) of the invertebrate exoskeleton, locomotion, feeding, blood-circulation, respiration, osmoregulation, nervous system, receptors and reproduction. Elements of vertebrate embryology.

Evolution : evidences, theories and their modern interpretations, Mendelian inheritance; mutation. Structure of animal cell; basic principles of cytology & genetics. Adaptation and distribution.

8. Geology :

Physical Geology and Geomorphology.—Origin, structure, interior and age of the Earth. Geosynclines and mountains. Isostasy. Origin of continents and oceans. Continental drift. Seismology, Volcanology. Geological action of surface agencies.

Structural and Field Geology.—Common structures of igneous, sedimentary and metamorphic rocks. Study of folds, faults, unconformities, joints and thrusts. Elementary ideas of methods of geological Surveying and Mapping.

Crystallography and Mineralogy.—Elements of crystal forms and symmetry. Laws of Crystallography; Crystal systems and classes; Crystal habits; twinning. Stereographic projections. Physical chemical and optical properties of minerals. Study of more important rock-forming and economic minerals regarding their chemical and physical properties, crystallographic and optical characters, alterations, occurrences and commercial uses.

Stratigraphy and Palaeontology.—Principles of Stratigraphy Indian Stratigraphy. Lithological and Chronological subdivisions of Geological record. Fossils—nature and mode of preservation; bearing on Organic evolution. Invertebrate and plant fossils.

Economic Geology.—Theories of Ore genesis; Classification, geology, occurrence, localities and resources of chief metallic and non-metallic minerals of India. Mineral industries in India. Principles of Geophysical prospecting and ore dressing.

Petrology.—Origin, constitution, structure and classification of igneous, sedimentary and metamorphic rocks. Study of common Indian Rock types.

9. Geography :

Physical and Human Geography of the world with special reference to India. Principles of Physical Geography comprising a detailed study of the lithosphere; hydrosphere and atmosphere leading up to the modern views regarding cycle concepts, isostasy, processes of mountain formation, weather phenomena, surface and subsurface movement of ocean waters, etc.

Principles of Human Geography comprising a detailed study of the distribution of man on the basis of culture, race, religion, etc. environment and mode of life, population trends, population movements.

Candidates are expected to have a detailed knowledge of physical, human and economic geography of India.

10. English Literature.—Candidates will be expected to show a general knowledge of the history of English Literature from the time of Chaucer to the end of the reign of Queen

Victoria, with special reference to the works of the following authors :—

Shakespeare, Milton, Dryden, Johnson, Wordsworth, Keats, Dickens, Tennyson, Arnold and Hardy.

Evidence of first-hand reading will be required. The paper will be designed also to test the candidates' critical ability.

11. Assamese, Bengali, Gujarati, Hindi, Kannada, Kashmiri, Malayalam, Marathi, Oriya, Punjabi, Sindhi, Tamil, Telugu and Urdu.—Candidates will be expected to show a knowledge of the language and its literature. They must have first hand knowledge of the best known works with which they deal though questions on works of lesser importance may also be set. They will also be expected to possess such knowledge of the historical and cultural background, of intellectual and artistic movements, and of linguistic developments as will enable them to understand the literature. Questions may be set on literary history and on language. Candidates will be required to translate/explain and may be asked to comment on passages.

NOTE.—A candidate offering any of the subjects mentioned under item (11) may be required to answer some or all the questions in the language concerned. The scripts required to be used for these languages are indicated below :

Language Script

1. Assamese—Assamese.
2. Bengali—Bengali.
3. Gujarati—Gujarati.
4. Hindi—Devanagari.
5. Kannada—Kannada.
6. Kashmiri—Persian.
7. Malayalam—Malayalam.
8. Marathi—Devanagari.
9. Oriya—Oriya.
10. Punjabi—Gurmukhi.
11. Sindhi—Devanagari or Arabic.
12. Tamil—Tamil.
13. Telugu—Telugu.
14. Urdu—Persian.

12. Arabic, Chinese, French, German, Pali, Persian, Russian and Sanskrit.—Candidates will be expected to show a knowledge of the principal classical authors and to be able to translate from and compose in the language.

NOTE.—Candidates for Arabic, Persian and Sanskrit may be asked to answer some questions in Arabic, Persian or Sanskrit as the case may be. Answers required to be written in Sanskrit must be written in the Devanagari script.

13. Indian History.—From the beginning of the reign of Chandragupta Maurya to the establishment of Indian Republic. The paper will include questions on political, constitutional, economic and cultural developments.

14. British History.—The period of study will be from 1485 to 1945. The paper will include questions on political, constitutional, economic and cultural developments.

15. European History.—The period of study will be from 1789 to 1945. The paper will include questions on political, diplomatic, economic and cultural developments.

16. World History.—(From 1789 to 1945) Candidates will be expected to possess sound knowledge of the major political and economic developments in world, with special reference to Europe, the U.S.A., the Far East, the Middle East and the African Continent. There will be special emphasis on international events of world importance.

Candidates will also be expected to be familiar with cultural developments as reflected in contributions to civilization as a whole, in the fields of science, literature and art.

17. General Economics.—Candidates will be expected to have a general knowledge of (a) the principles of economic analysis; and (b) the history of economic doctrines.

They should be able to apply their knowledge of theory to an analysis of the current economic problems of India.

18. Political Science.—Candidates will be expected to show a knowledge of political theory and its history political theory being understood to mean not only the theory of legislation but also the general theory of the State. Questions may also be set on constitutional forms. (Representative Government,

Federalism, etc.) and Public Administration Central and Local. Candidates will be expected to have knowledge of the origin and development of existing institutions.

19. Philosophy.—The candidates will be expected to be familiar with History and Theory of Ethics, Eastern and Western, with special reference to the problems of Moral Standards and their application. Moral judgement, Determinism and Free Will, Moral Order and Progress, relation between Individual, Society and the State, theories of Crime and Punishment, and relation of Ethics to Religion.

They will also be expected to be familiar with History of Western Philosophy, with special reference to nature of philosophy and its relation to Science and Religion, theories of Matter and Spirit, Space and Time, Causation and Evolution, and Value and God, and with History of Indian Philosophy (including orthodox and heterodox systems), with special reference to theories of God, Self and Liberation, and causation, Evolution and Appearance.

20. Psychology.

Psychology : its nature, scope and methods, experimental method in psychology.

Factors in human development heredity and environment.

Motivation, feelings and emotions; their nature and development; theories of emotions; development of character.

The cognitive processes, sensation, perception, learning, memory and forgetting, and thinking.

Intelligence and abilities—Concepts and measurement, Personality-nature, determinants, theories and assessment.

Group processes and group effect; crowd behaviour; leadership and morale; attitudes and prejudice; social change.

Concept of abnormality symptoms and etiology of the main forms of psychoneurotic and psychotic disorders, social pathology and juvenile delinquency—causes and prevention; Main forms of therapeutic techniques.

21. Law I.

1. Jurisprudence; Concept of Law; Kinds of law; Positive law; Administration of justice; Sources of law; Elements of law including legal rights, and duties; Liability, Ownership, possession; Legal personality; Property.

2. Constitutional Law; Constitutional Law of India including Administrative Law; basic principles of the English Constitution.

3. Law of Torts including State liability for Torts.

4. Law of Crimes (Indian Penal Code).

5. Law of evidence; Relevancy and presumptions; Kinds of Evidence—oral and documentary evidence, primary and secondary evidence; Burden of proof; Estoppel; judicial notice.

22. Law II.

1. General Principles of the Law of Contract (Sec. 1 to 75 of the Indian Contract Act).

2. Law of Indemnity, Guarantee, Bailment, Pledge and Agency, with special reference to the Indian Contract Act.

3. Law of Sale of Goods, Law of Partnership and Negotiable Instruments and Banking (General Principles), with special reference to the Indian Law.

4. Company Law.

23. Law III.

Nature and Sources of International Law. History of International Law. The School of International Law. International Law and Municipal Law.

States as persons of International Law. Acquisition and loss of international personality. State recognition. State succession.

Rights and duties of States. Principle of equality. Jurisdiction of States.

Treaties:

Agents of International intercourse. Privileges and immunities of diplomatic agents. The individual and International Law. Aliens. Nationality. Naturalisation. Statelessness. Extradition, War Criminals.

Modes of settlement of International disputes.

War : Declaration : effects.

Laws of land, sea and aerial warfare.

War in self-defence. Collective security. Regional pacts. Outlawry of war. Laws of belligerent occupation. Belligerency and insurgency.

Methods of warfare. Prisoners of war. Right of visit and search. Prize courts.

Blockade and contraband.

Neutrality and neutralisation. Rights and duties of neutral states in war. Unneutral service. Neutrality under the Charter of the U.N.

The Charter of the U.N. and covenant of the League of Nations. Principal organs of the United Nations. Specialised International Organisations.

Candidates will be expected to show familiarity with cases including the pronouncements of the International Court of Justice.

24. Applied Mechanics.—

BUILDINGS

Considerations of materials used in the construction of roof-trusses. Steel and Timber. Determination of stresses in trusses by various methods. Dead-loads and wind pressure. Factors of safety and working stresses.

Designs of roof-trusses. Various types of roof-trusses and roof-coverings; collar beam and hammer beam trusses.

Use of Euler's, Gorden's, Rankine's Fidler's Johnson's and straight line formulae in the design of struts. Buckling factor of struts; curves showing comparative strength of struts obtained by various formulae. Choice of size of Sections. Finish of Steel work. Joints, Designs of endbearings; methods of fixing and supporting ends.

Application of circles and ellipse of stress and Clayepron's theorem to design of structures.

Cast Iron and Steel Columns.—Flange and web connections to steel Columns, caps, bases; transverse bracing of columns.

Foundations.—Safe pressures: foundations for columns. Slab foundations, cantilever foundations; grillage foundations. Wells. Piles.

Retaining Walls and Earth Pressures.—Rankine's theory, Wedge theory. Winkler's and Blight's graphical constructions, with corrections. Design of various types of retaining walls in masonry.

Tall Masonry and Steel Chimneys.—Theory and design.

Design of Steel and Masonry Reservoirs; with considerations of wind-pressure.

Deflection of framed structures and determination of stresses etc., in redundant frames.

Influence diagrams for bending moment and shear for uniformly distributed and irregular loads on trusses, built in beams, and three pinned parabolic; semi-elliptic and semi-circular arches.

General principles of dome design.

Principles of Building Design; consideration of loads on buildings; Steel-work, girders, etc., for buildings.

BRIDGES

Design of superstructure. Determination by graphical and analytical methods of bending moment due to moving loads, wind pressures.

Design of masonry bridges and culverts.

Plate-web girders. Analysis of stresses.

Warren and lattice girders.

Three pinned arches; doubly pinned and rigid arches.

General considerations on the design of suspension cantilevers and tubular bridges.

Steel arched bridges.

Swing bridges.

REINFORCED CONCRETE

Shear, bond and diagonal tension, its nature evaluation and location of reinforcement.

Design of simple and doubly reinforced beams and continuous beams.

Theory and design of reinforced concrete columns and piles.

Design of slab foundations.

Design of simple cantilever and counterfort retaining walls.

Equivalent moments of inertia for reinforced concrete sections.

Theory of elastic deflection and outline of investigation of stresses in reinforced concrete arches.

GENERAL

Analysis of stress, analysis of strain, elastic limit and ultimate strength. Relation between the elastic constants. Launhardt-Weyrauch formula for working stresses in a structural member and determination of its cross sectional area. Repetition of stresses. Bending moment and shearing force diagrams for dead loads. Graphical determination of stresses in frames; effect of wind pressure; method of sections. Stress in the cross-section of a beam due to bending ($M/I_F/Y-E/R$); compound and conjugated stresses. Rankine's theory of earth-pressure; depth of foundations strength of footings. Grillage foundations: Coulomb's theory of earth-pressure modification due to Rebahn.

Bending moment and shearing force diagrams for live loads. Analysis of uniform and uniformly varying stress. Elastic theory of bending of beams, bending and shear stresses in beams. Modulus of section and equivalent areas. Maximum and minimum stresses in a joint due to eccentric loading. Stresses in dams and chimneys. Stability of block work structures. Design of reverted joints and stresses in boiler shells. Euler's theory concerning struts, modifications due to Rankine, Gordon and others. Torsion. Combined torsion and bending deflections. Encastre beams. Continuous beams and theorem of three moments. Elastic theory of arches. Masonry arches.

25. Sociology :

Nature and Scope of Sociology and its relation to other social sciences: Society, its nature and structure: Individual and Society; Social inter-action; Groups; Group behaviour; Culture; Culture and Personality; Crowd Behaviour; Leadership; Socialisation. Social Change and Planning; Urbanisation and Urbanism; Village Community; Theories of Social Change; Institutions and Associations—Family and Kinship, Social Stratification—Caste and Class; Social Values—Traditions. Customs and Mores; Religion; Social Control. Social Disorganisation; Society and Adjustments. Human Ecology and Population—Growth of Population and Population Control.

The candidates will be expected to illustrate theory by facts, and to analyse problems with the help of theory. They will be expected to be particularly conversant with Indian problems.

PART C

[Vide Sub-Section (c) of Section II of Appendix II]

1. (a) Higher Pure Mathematics :

The subjects included will be (1) Modern Algebra and Topology. (2) Analysis of functions of real variables. (3) Functions of a complex variable. (4) Geometry and (5) Differential Equations.

(1) *Modern Algebra*: Groups, Sub-groups. Normal Sub-groups. Factor groups. Homomorphism and isomorphism. Theorems on isomorphism. Permutation groups. Groups of transformation. Groups of automorphism. Inner automorphism. Normaliser, Centre and Commutator. Theorems of Cayley and Sylow. Decomposition theorem for finitely generated abelian groups. Invariants. Normal series. Composition series. Jordan Holder theorem. Rings, Integral domains. Division ring. Fields. Ideals. Prime, primary and maximal ideals, sums and products of ideals. Quotient ring. Isomorphism theorems for rings. The field of quotients of an integral domain. Euclidean domains. Principal ideal domains. Unique factorisation domains. Ring of polynomials over a commutative ring. Polynomials with co-efficients from a unique factorisation domain. Neotherian rings.

Vector spaces. Basis of a vector space. Dimension. Orthogonality. Scalar product. Orthonormal basis.

Field extension. Splitting fields. Separable and inseparable extension. Galois theory of finite extensions. Application to solution of equations by radicals. Finite fields.

Topological space, maps and neighbourhoods, closed sets, open sets base for a topological space, subspaces, quotient spaces. Different ways of defining a topology and strength of topologies. Metrics spaces. Euclidean spaces, and other examples of metric spaces. Connectivity. Cartesian product of two topological spaces local connectivity. Pathwise connectivity. Compact spaces. Product of compact spaces, locally compact spaces. Separation axioms, Hausdorff, normal and regular spaces.

(2) *Analysis of functions of real variables*: Dedekind's theory of real numbers. Bounds and limits. Sequences. Continuity and uniform continuity. Differentiability. Implicit functions. Maxima and minima of functions. Riemann integration. Mean value theorems. Improper integrals. Line, surface and multiple integrals. Green and Stokes theorems.

Uniform convergence of series and properties of uniformly convergent series. Convergence of infinite products. Orthonormality and completeness of sets of functions. Fourier series and Fourier theorem. Weierstrass approximation theorem. Lebesgue measure. Measurable functions and Lebesgue integral of bounded functions.

(3) *Functions of a complex variable*: Representation of complex numbers on Gauss' plane and on Riemann's sphere. Bilinear transformations. Analytic functions. Cauchy's theorem and its converse. Cauchy's integral formula. Taylor's and Laurent's series. Liouville's theorem. Singularities. Zeros. Theory of Residues and its application to evaluation of integrals. Fundamental theorem of algebra and roots of algebraic equations. Conformal representation. Analytic continuation. Mittag-Leffler's theorem. Weierstrass' factorisation Theorem. The maximum modulus principle. Hadamard's three-circle theorem.

(4) *Geometry*: Plane sections and generating lines of quadrics. The quadric surface and its analysis. Confocal quadrics. Elementary theory of pencils of quadrics. Curves in space. Curvature and torsion. Frenet's formulae. Envelopes. Developable surfaces. Developable associated with a curve. Ruled surfaces. Curvature of surfaces. Lines of curvature. Conjugate lines. Asymptotic lines. Geodesics.

(5) *Differential Equations*:

Ordinary differential Equations: Picard's existence theorem. Initial and Boundary conditions. Linear differential equations with variable coefficients. Integration in series. Bessel and Legendre functions. Total and simultaneous differential equations.

Partial Differential Equations: Formation of partial differential equations. Types of integrals of partial differential equations. Partial differential equations of first order. Charpit's method. Partial differential equations with constant coefficients. Monge's methods. Classification of partial differential equations of second order. Laplace Equation and its boundary value problems. Solution of wave equation and equation of heat conduction.

1. (b) *Higher Applied Mathematics*:

The subjects included will be (1) Dynamics, (2) Hydrodynamics, (3) Electricity, (4) Electricity and Magnetism, (5) Special theory of Relativity.

(1) *Dynamics*: Particle Dynamics. Motion in three dimensions. Rigid Dynamics: Motion in two dimensions. Momentum and Energy. Motion relative to the moving earth. Foucault's pendulum. Generalized coordinates. Holonomic and non-holonomic systems. Lagrange's equations of motion for holonomic systems. Small oscillations. Euler's geometrical and dynamical equations. Motion of a top. Hamilton's principle of least action. Hamilton's canonical equations and their integral invariants. Contact transformations.

(2) *Hydrodynamics*:

General: Equation of continuity, momentum and energy.

Inviscid Flow Theory: Two-dimensional motion. Streaming motion. Sources and sinks. Method of images and its application. Motion of cylinder and sphere in a fluid. Vortex motion. Waves.

Viscous Flow Theory: Stress and Strain analysis. Navier-Stokes Equations. Vorticity Dissipation of energy. Flow between parallel plates. Flow through pipe. Slow streaming motion past a sphere. Boundary layer concept. Boundary layer equations for two dimensional flows. Boundary layer along a plate. Similarity solutions. Momentum and energy integrals. Method of Karman and Pohlhausen.

(3) *Elasticity*: Cartesian Tensors. Stress and strain analysis. Work and energy. Saint Venant's principle. Bending of beams and plates. Torsion.

(4) *Electricity and Magnetism*: Electrostatics. Conductors and condensers. Systems of conductors. Dielectrics. Method of images and its application. Flow of electric currents in networks. Magnetism. Electromagnetism Induction. Alternating currents. Maxwell's equations. Oscillatory circuits.

(5) *Special Theory of Relativity*: Galilean principle. Michelson-Morley experiment. The principles of theory of relativity. Lorentz transformation and its consequences. Lorentz invariance of Maxwell's equations. Electrodynamics of a Vacuum. Matter and energy.

2. Higher Physics :

General Properties of Matter and Sound: Mechanics of deformable bodies. Helical springs. Capillary phenomena. Viscosity. Acoustical measurements. Ultrasonics.

Heat and Thermodynamics: Brownian motion. Kinetic theory of gases. Transport phenomena in gases at low pressures. Thermodynamic functions and their applications. Specific heat of solids and gases. Production and measurement of low temperatures. Radiation of Planck's law of energy distribution.

Optics: Theory of co-axial symmetrical optical systems. Experimental spectroscopy. Electro-magnetic theory. Scattering of light. Raman effect. Diffraction. Polarisation.

Electricity and Magnetism: Gauss's theorem. Electrometers. Magnetic hysteresis. Theory of permanent magnets. Measurement of electrical quantities. Alternating current theory. Cyclotron and other methods for production of high voltages. Transmission and reception of wireless waves. Television.

Modern Physics: Special theory of relativity. Dual nature of light and matter. Schroedinger's equation and its solution in simple cases. Hydrogen and helium spectra. Zeeman & Stark effects. Pauli's principle and periodic classification of elements. X-rays and X-ray spectroscopy. Compton effect. Conduction in metals. Supraconductivity. Thermionics. Thermal ionization. Properties of atomic nuclei. Mass spectroscopy. Elementary particles and their properties. Nuclear reactions. Cosmic rays. Nuclear fission and fusion.

3. Higher Chemistry :

Inorganic Chemistry.—The structure of the atom. Radioactivity, natural and artificial. Fission and fusion of nuclei. Isotones. Radioactive indicators. Radioactive series. Transuranic elements.

Chemistry of the elements and their principal compounds, with special reference to Be, W, Ti, V, Mo, Hf, Zr and rare earth elements.

Co-ordination compounds. Interstitial and non-stoichiometric compounds. Free radicals. Advanced Physicochemical methods of analysis.

Organic Chemistry.—Theories of organic chemistry, including resonance and hydrogen bond formation. Mechanism of important organic reactions. Stereochemistry, including conformation.

Chemistry of different classes of organic compounds with special reference to the following: Polysaccharides, terpenes, natural colouring matters, alkaloids, vitamins, important hormones, antimalarials, chlorine insecticides, principal antibiotics, and synthetic polymers.

Physical Chemistry.—The kinetic molecular theory. The three laws of thermodynamics and their application to physical chemical processes. Physico-chemical properties in relation to and elucidating molecular structure. Quantum theory and its application to chemistry.

The mechanism and kinetics of chemical and photochemical reactions. Catalysis. Adsorption. Surface chemistry. Colloids. Electrochemistry.

4. Higher Botany :

Plant kingdom.—Advanced knowledge of the main groups of the vegetable kingdom both living and extinct (*viz.* Algae, Fungi, Bryophyta, Pteridophyta, Gymnosperms and Angiosperms) with special reference to the Indian flora.

Systematic botany.—Principles of classification and a general knowledge of the more important families of angiosperms.

Anatomy.—Origin, nature and development of plant tissues and their distribution from the ecological and physiological points of view.

Plant pathology.—An advanced knowledge of the important diseases of plants caused by bacteria, fungi, viruses and physiological diseases. Methods of control.

Physiology.—An advanced knowledge of the important physiological processes in plants, including plant biochemistry.

Ecology.—Principal types of vegetation of India, their distribution and the importance of eco-physiological studies, Principles of plant geography.

Economic botany.—A study of the important economic plants of tropical and sub-tropical areas, with special reference to India.

General Biology.—Knowledge of the fundamentals of and recent developments in variation, heredity, evolution, cytology genetics and principles of plant breeding.

Higher Zoology :

The classification, bionomics, morphology, life-history and relationship of non-chordates and chordates, with special reference to Indian fauna.

Functional morphology (form, structure and function) of the organ systems. Outlines of vertebrate embryology.

The Classification, ontogeny, phylogeny adaptive divergence and convergence of animals, animal ecology, migration and colouration.

Evolution: evidences, theories, and their modern interpretations. Adaptation; distribution of animals in space.

Recent advances in the knowledge of the cell, cytology, genetics, sex determination and endocrinology.

Modern concept of the environment as a complex of physical, chemical and biological factors, and of the organisms as individuals, population and communities.

An essay relating to any of the following topics : Protozoa and disease; Insect and man; Parasitology Fresh-water and marine biology; Limnology and fishery biology; Contribution of great biologists to knowledge and civilization.

Higher Geology :

General Geology.—History and development of the Science of Geology, its different branches and contacts with other sciences. Origin, evolution, structure, constitution, interior and age of the Earth. Geomorphology; Radioactivity and its applications to Geology; Siesmology; Volcanology; Geosynclines; Isostasy. Evolution of continents and ocean basins. Geological action of surface and subterranean agencies. Continental drift.

Structural and Field Geology.—Diastrophism; Rock deformation; Origin of mountains; Structures in relation to topography and mining. Tectonic history of India. Methods of Geological Surveying and Mapping.

Stratigraphy and Palaeontology.—Principles of Stratigraphy and correlation. Detailed study of Indian Stratigraphy and outline of World Stratigraphy. Distribution of land, sea, faunas and floras in different periods. Theories of organic evolution. Fossils—their importance, Index fossils and correlation. Detailed study and geological history of the invertebrate fossils and the principal groups of vertebrate and plant fossils with special reference to India.

Crystallography and Mineralogy.—Crystal morphology; Laws of crystallography; crystal systems and classes; habits, twinning. Goniometric and X-ray study of crystals. Atomic structure. Detailed study of rock-forming minerals and of economic minerals with special reference to their occurrence in India.

Petrology.—Origin and evolution, structure, mineral constituents, texture and classification of igneous, sedimentary and

metamorphic rocks. Petrogenesis including metamorphism Petrochemistry. Study of meteorites. Important Indian rock-types.

Economic Geology.—Ore-genesis; classification of economic minerals and controls of ore localization. Geology of economic mineral deposits with particular reference to India. Location of mineral industries. Evaluation of properties; Mineral economics; conservation and utilisation of minerals. National mineral policy. Strategic minerals. Geological, geophysical and geochemical prospecting techniques and their applications. Principal methods of mining, sampling, ore dressing and ore beneficition. Soils and ground water. Application of Geology to common engineering problems.

7. Higher Geography.—The paper will consist of two parts :—

The first part will comprise an advanced study of Physical Human and Economic Geography, with special reference to India.

The second part will comprise advanced study of the following special subjects and a candidate will be expected to have knowledge of at least two of these subjects :

Geomorphology. Climatology (including modern methods of weather forecasting and analysis). Cartography (including solution of right-angled spherical triangles, use of Theodolite advance projections like the oblique zenithal nets, etc.) Historical geography. Political geography. History of geographical thought and discoveries.

8. English Literature (1798—1935)—The paper will cover the study of English Literature from 1798 to 1935, with special reference to the works of Wordsworth; Coleridge, Shelley, Keats, Lamb, Jane Austen, Carlyle, Ruskin, Thackeray, Robert Browning, George Eliot, G. M. Hopkins, Shaw, W. B. Yeats, Galsworthy, J. M. Synge, E. M. Forster and T. S. Eliot.

Evidence of first hand reading will be required. The paper will be designed to test not only the knowledge but also critical evaluation of the main literary trends during the period. Questions having a bearing on the social and cultural background of the period may be included.

9. (a) Indian History I (From Chandra Gupta Maurya to Harsha)—

The Mauryas. The rise and consolidation of the empire. Administration and economy. Decline of the empire.

The eclipse of Magadha. The Shungas and the Kanvas.

The Cholas, Cheras and Pandyas.

Contacts with the West, North India—the Indo-Greeks, South India—Roman trade.

Central Asia and India. The Shakas. The Kushanas. The Satavahans.

Indian contacts with Asian countries—The spread of Buddhism.

The Imperial Guptas—The Creation of Classical Indian Culture. Further Indian contacts overseas. The decline of the Guptas. The Hunas.

Changing economic patterns in north India and their impact on politics.

The rise of the Vakatakas and the Chalukyas.

The emergence of the Pallavas.

Harshvardhana.

9(b). Indian History II [The Great Mughals (1526—1702)].—

Political History

Establishment of the Mughal Empire in India; its consolidation and expansion. The Sur interregnum Mughal Empire at its zenith. Akbar, Jahangir and Shahjehan. Mughal relations with Persia and Central Asia. The development of administrative system. Europeans at the Mughal Court; early Portuguese, French and English settlements. The beginning of the decline Aurangzeb, his wars and policies.

Cultural, Religious, Economic and Social Life.

Cultural life, and promotion of art, architecture and literature.

Religious movements: Bhakti Movement, Sufism, Din-i-Ilahi, Religious policy of the Mughal Emperors.

Economic life: Agrarian life, Systems of land tenure, Industry, Trade and Commerce, Exports, imports, Means of transport, Wealth of India.

Social life: Court life; Urban life; Rural life, Dress, manners, customs, food and drink; amusements, recreations and festivals, Position of women.

9(c) Indian History III (From 1772 to 1950)—

Consolidation of British power in Bengal and South India, Expansion of British power in India, The East India Company and the British state, Evolution of the Civil Service, Judicial system, the police, and the army, Development of new land revenue system and agrarian relations, British Commercial policy, Economic impact of British rule in India, The revolt of 1857, Relations with Indian States, Foreign policy, and relations with Burma and Afghanistan, Development of modern industry, and means of communication, Development of modern education, Growth of the Press.

Indian Re-awakening: Raja Rammohan Roy, Brahmo Samaj and Vidyasagar, the Arya Samaj, the Theosophists; Ramakrishna and Vivekananda, Syed Ahmed Khan, Social Reform, Development of modern Indian literature, The rise of Indian National Movement: The Indian National Congress (1885-1905), Dadabhai Naoroji, Ranade, and Gokhale, Growth of militant nationalism, anti-partition agitation, Swadeshi and Boycott, Tilak and Aurobindo Ghosh, the Home Rule League and the Lucknow Pact.

Constitutional Development: Acts of 1861 & 1892; Minto-Morley Reforms; the Montford Reforms, the 1935 Act.

Emergence of Mahatma Gandhi and the struggle for freedom, Transfer of Power, The Crimp Mission, the Cabinet Mission, Independence Act and Partition, The Constitution of 1950, Independent India, Foreign Policy, Non-alignment, Secularism, and Planning.

9(d). British Constitutional History (From 1603 to 1950).—

Crown versus Parliament

Relations between James I and Parliament, Petition of Rights, Charles I and the issue of prerogative *versus* common Law, Civil war.

The Constitution makers.—

Government by Long Parliament, The Little Parliament, The Protectorate, The Restoration, The Glorious Revolution, The Bill of Rights.

The Crown, the Executive and Parliament.—

The King and his Ministers, Influence of the Crown, The Cabinet and Parliament, The Monarchical Crisis of 1936.

The Reform of Parliament.—

Reforms Acts and the House of Commons, The House of Commons and the House of Lords, The Reforms of the House of Lords.

The Commonwealth.—

Origin and growth of the Commonwealth, The Statute of Westminster, The Machinery of Commonwealth Co-operation, The position of the Crown in the Commonwealth.

9(e). European History (1871—1945).

The Industrial Development of Europe—Growth of nationalism, and democratic and socialist movement.

The German Empire; the Third French Republic; the Habsburg Monarchy, Imperial Russia.

The policy of alignment and ententes.

The Eastern Question.

The rise of imperialism, and European imperial interest in the Near East, the Middle East, Africa and the Far East.

The origin and consequence of the First World War.

The Russian Revolution and its consequence.

The Versailles settlement; the League of Nations; efforts at World Disarmament; the search for security; rise of Fascism and Nazism and their international implications.

The Second World War.

10(a). Advanced Economics.—

Functions of economic analysis.

The theory of price, The theory of consumption and demand, Organization of production, Theory of the firm and industry, Imperfect competition, Theory of monopoly, Control of monopoly.

The theory of distribution, Rent, The theory of capital, The theory of money and interest, Savings and investments, Banking and credit regulation, The theory of wages and employment, Collective bargaining and industrial peace.

National income, Economic progress and distributive justice.

The theory of international trade, Foreign exchanges, Balance of payments.

Business cycles and their control, Economic role of Government, Economic welfare, Public utilities, pricing and regulation.

Theory of taxation, Incidence of taxation, Effects of Government taxation and expenditure, Deficit financing and inflation.

Planning for economic development.

10(b). Advanced Indian Economics.—

Economic developments during the War and Post-War period, Natural resources, Social institutions, Agricultural Productions and finance, Pricing and distribution of foodgrains and other agricultural products, Land reform, Place of cottage and small scale industries in developing economy, Growth of modern organized industry, Regulation of public companies, Industrial relations and problems of labour, Mixed economy, Scope and efficiency of the public sector, Indian monetary and credit system, Role of the Reserve Bank, Population problems and population policy, Unemployment and under-employment, Computation of Indian national income, Regulation of foreign trade, Balance of payments, Indian taxation system, Federal finance, Planning for economic development, Size and structure of successive plans, Problems of resources and of implementation.

11(a). Political Theory from Hobbes to the present day.—

Theories of Contract and Natural Rights—Hobbes, Locke and Rousseau, Development of the Idea of Sovereignty, The Historians—Vico, Montesquieu and Burke, The Utilitarians, The Evolutionists, The Idealists—Kant, Hegel, Green, Bradley and Rosanquet, Conservatism and Liberalism, Marxism and Schools of Socialism and Communism, Pluralism, Fascism, The Impact of Psychology, Trends in twentieth century thought in the East.

11(b). Political Organisation and Public Administration.—

Political Institutions, The rise of Modern National States, Parliamentary and Presidential forms of Government, Unitary and Federal Governments, The Legislature, The Executive and the Judiciary, Methods of Representation, The Communistic and Totalitarian forms of Government.

Public Administration, Public Administration in the Modern State, The formulation of policy and higher control—the Legislature and the Executive, Organisation, Management, Methods and Tools, Regulatory Commissions and Public Corporations, Personnel Administration—The Civil Service and its Problems, The Budget and Financial Administration, Administrative Powers, Control by the Courts, The Public Service and the Public.

11(c). International Relations.—

Part I

Foundations and limitations of national power.

The place of power, ideology and ethics in International Relations.

The role of International Law in International Relations.

The role of national interest in the formulation of foreign policy.

The theory of Balance of Power.

The nature and functions of International Organisation.

The United Nations : purposes, structure and functioning.
Part II

The origins of the First World War and the nature of the peace Settlement.

The League of Nations and the efforts for the establishment of a collective security system in the inter-war years.

The origin of the Second World War.

The Nuclear age and its impact on traditional international Relations.

The Cold War and its effect on World Politics.

The Birth of New Nations and the changes in the pattern of International Relations.

The Foreign Policies of the United States, the U.S.S.R., China, India and one of the following :

Great Britain, Japan, Germany and France.

12(a). Advanced Metaphysics Including Epistemology.—

Candidates will be expected to be familiar with the views of prominent philosophers from Kant to the present day e.g. Kant, Hegel, Bradley, Royce, Croce, Moore, Russel, James, Schiller, Dewey, Bergson, Alexander Whitehead, Wittgenstein, Ayer, Heidegger and Marcel.

Questions may be set on any of the following topics.

The sources, materials, varieties, limits criteria and sociology of knowledge.

Truth, falsehood, error.

Theories of reality. Reality, subsistence and existence. Monism, dualism and pluralism. Naturalism, agnosticism, theism, absolutism and mysticism. Post-Hegelian idealism. New realism. Radical empiricism. Pragmatism.

Instrumentalism. Humanism—naturalistic and religious.

Logical positivism. Existentialism—atheistic and theistic. Recent trends of the philosophy of science in regard to the problems of induction, laws of nature, relativity, indeterminacy and God.

12(b). Advanced Psychology including Experimental Psychology.—

Subject-matter scope and methods of psychology; its relation with other sciences.

Heredity and environment controversy—Experimental studies on the relative influence of the two on human development.

Problems of motivation, and emotion. Frustration and conflict; types of conflict; defence mechanisms—Studies in expressive movements; P.G.R., lie detection.

Sensation and Perception—Psychophysical methods; space perceptions, factors of perceptual organization; role of dynamic personality and social factors inter-personal perception. Experimental methods in the study of learning, memory, forgetting and thinking—Theories of learning and forgetting; theories of sign-process—nature of meaning.

Psychology of personality—determinants, traits, types, dimensions, and theories; assessment of personality—behavioural measures of personality—rating scales, nominating techniques, questionnaires and inventories, attitude scales, projective tests.

Individual differences : nature and measurement of intelligence and aptitudes. Test construction—Item analysis. Test scales and norms—Reliability and validity of measures—Factor analysis—Theories.

Schools and systems of psychology—Traditional Schools and the main contemporary systems of psychology; Freudians, neo-Freudians, neo-Behaviourists, Gestalt and field theories.

13(a). Constitutional Law of India.—

Historical Background : The growth of the Indian Constitution with special reference to the development of representative and responsible Government from the Indian Councils Act of 1861 down to the Indian Constitution of 1950.

General Features : Welfare State Ideal : Preamble to the Indian Constitution and Directive Principles of State Policy :

Concepts of Unitary and Federal Government, Cabinet System. Due Process of Law, Judicial Review, Constitutional Conventions; Comparison of the Salient Features of the Indian Constitution with those of the U.K. and the U.S.A., Canada and Australia.

Division of Powers : Theory of separation of powers.

The Legislature—Legislative procedure; Privileges of Legislature; Delegation of legislative power.

The Executive.—Presidential and Parliamentary Executives; Provisions relating to Services and Public Service Commissions; The doctrine of Rule of Law.

The Judiciary.—Judicial control of administrative and quasi-Judiciary authorities; Scope of Civil Jurisdiction; Independence of the Judiciary.

Distribution of Legislative Powers : Principles of distribution of powers with special reference to Treaty Power; Commerce Power, Taxing Power, Constituent (Constitution-Amending) Power and Residual Power, Judicial doctrines relating to distribution of powers.

Fundamental Rights : Nature and scope of the various fundamental rights guaranteed under the Constitution.

NOTE.—Candidates will be expected to be conversant with the text of the Indian Constitution amendments thereto, and leading decisions of the Supreme Court.

13(b). Jurisprudence.—

Jurisprudence : Definition and scope; various Schools of Jurisprudence; Concepts and doctrine regarding Sovereignty.

Law : Law and Morals; Evolution of Law, Law of Nature, Law of State; Imperative theory of Law; Pure theory of Law, Sociological theory of Law; Kinds of Law; Civil Law; Criminal Law; Substantive Law and Adjective Law; Private Law and Public Law, International Law; Law and Justice; Law and Equity; Justice according to Law; Administration of Justice.

Sources of Law : Customs, Judicial Precedent, Legislation; Codification.

Elements of Law : Analysis and classification of juristic-concepts : Personality; Right, Duty, Liberty, Power, Immunity, Disability, Status, Possession, Ownership; Lease, Trust, Easement, Security; Wrong Liability, Obligation; Act, Intention, Motive, Negligence; Rule; Prescription; Inheritance and Wills.

Evolution of Legal Concepts; Evolution of Contract, Tort, Crime, Property, and Wills. Current trends in Juristic thought.

14(a). Medieval Civilisation as Reflected in Arabic Literature (570 A.D.—1650 A.D.).—

The paper will test the candidate's knowledge of geography, history and social, political and religious evolution and developments.

14(b). Medieval Civilisation as Reflected in Persian Literature (570 A.D.—1650 A.D.).—

The paper will test the candidate's knowledge of geography, history and social, political and religious evolution and developments.

14(c). Ancient Indian Civilization and Philosophy.—

The history of the Civilisation. Philosophy and Thought of India from 2000 B.C. to 1200 A.D.

NOTE.—The paper will test the knowledge of geography, history and social, political and religious evolution and developments. Questions may be set which require an acquaintance with archeological discoveries.

15. Anthropology :

(A) Physical Anthropology.—Definition and scope. The relation of Physical Anthropology to other sciences. The evolution of Man, his exact place among the Primitive Group—his relationship to Prehuman and Protohuman forms from Parapithecus to Australopithecus. Early types of Man—Palaeanthropic man—Pithecanthropus, Synanthropus and Neanderthal. Neanthropic man—Cro Magnon, Grimaldi and Chancelade—Homo Sapiens.

Racial differentiation of Man and bases of racial classification—Morphological, serological and genetic, Role of heredity and environment in the formation of Races. Principles of human genetics—Mendelian laws as applicable to Man.

Human Biology—The effects of nutrition, inbreeding and hybridisation.

History of distribution of Man in India from the lithic ages to the Indus Valley civilization and Megalithic cultures of Central and Southern India. Racial types and their distribution in India.

(B) **Social (Cultural) Anthropology**.—Scope and functions. Relation with Sociology, Social Psychology and Archaeology. Different schools of Cultural Anthropology—Evolutionary Historical, Functional and Kultua Kreis. The structure and development of Human Society.

Economic Organisation—Early stage of hunting and food gathering, domestication of animals, agriculture shifting cultivation, terracing intensive cultivation, implements used.

Political Organization—Clan, tribe, and dual organization, tribal council, function of headman or chief.

Social Organization—Marriage and kinship forms, matriarchy, patriarchy, polygyny, Polyandry, exogamy and endogamy. Position of women, inheritance and divorce.

Primitive religion—Totemism, Taboo, magical and fertility rites, head hunting and human sacrifice.

Art, Music, Folk dance and sports.

Group relationship, adjudication of disputes, concept of Justice and punishment.

Intelligence level, special aptitudes and abilities, emotional needs underlying primitive behaviour and ethnocentrism.

Structure of personality and development of personality and its role in primitive society.

Acculturation and the effects of contact on primitive tribes, Depopulation and its causes, Economic and psychological frustration. Decline of primitive tribes in America, Africa and Oceania. Depopulation among Indian tribals and remedial measures.

(C) **Intensive study of any one of the ethnic divisions of tribal India :**

1. The tribes of the N.E.F.A. or North Eastern Frontiers of India.
2. The tribes of the Naga Hills—Tewansang Area.
3. The autonomous tribes of Assam—the Khasis, the Garos, Mikirs and the Lushai.
4. The Australoid tribes of Chotanagpur and Central India.
5. The tribes of Southern India including the tribes of the Nilgiri Hills.
6. The tribes of the Andaman and Nicobar Islands.

Note.—Candidates will be required to answer question on (C) and (A) or (B).

16. Advanced Sociology :

Nature of Sociological Inquiry: Sociology and Science; Society and Individual; Human Groups—their nature, types, formation and functions; Family and Kinship; Culture and Culture Traits; Culture and Personality; Role of Culture in Society; Socialisation and Social Deviation; Social Order, Social Stratification—caste and class; Institutions and Associations; Social Processes; Social Control—Public opinion, religion and morality, law and education; Social Change; Social Evolution; Sanskritisation; Social Integration.

Crowd, Public Opinion, Propaganda, Communication and Leadership.

Sociological Concepts of Indian Social System; Development of Indian Social Thought with special reference to Manu, Buddha and Gandhi.

Recent Trends in Sociological Theory; Structural—Functional Approach; Historical Approach; Comparative Approach.

Applied Sociology—Sociology, Social Policy and Social Planning; Social Demography; Social aspects of economic development in developing societies; Community Development.

Methodology of Social Research; Social Research and Social Welfare.

The candidates will be expected to illustrate theory by facts, and to analyse problems with the help of theory. They will be expected to be particularly conversant with Indian problems.

PART D

[Vide Sub-Section (B) of Section I of Appendix II]

Personality test.—The candidate will be interviewed by a Board who will have before them a record of his career. He will be asked questions on matters of general interest. The object of the interview is to assess the personal suitability of the candidate for the Service or Services for which he has applied by a Board of competent and unbiased observers. The test is intended to judge the mental calibre of a candidate. In broad terms, this is really an assessment of not only his intellectual qualities but also social traits and his interest in current affairs. Some of the qualities to be judged are mental alertness, critical powers of assimilation, clear and logical exposition, balance of judgement, variety and depth of interest, ability for social cohesion and leadership, intellectual and moral integrity.

2. The technique of the interview is not that of a strict cross examination but of a natural, though directed and purposive conversation which is intended to reveal the mental qualities of the candidate.

3. The personality test is not intended to be a test either of the specialised or general knowledge of the candidates which have been already tested through his written papers. Candidates are expected to have taken an intelligent interest not only in their special subject of academic study but also in the events which are happening around them both within and without their own state or country, as well as in modern currents of thought, and in new discoveries which should rouse the curiosity of well educated youth.

APPENDIX III

Brief particulars relating to the Services to which recruitment is being made through this Examination.

1. **Indian Administrative Service.**—(a) Appointments will be made on probation for a period of two years which may be extended. Successful candidates will be required to undergo probation at such place and in such manner and pass such examinations during the period of probation as the Government of India may determine.

(b) If, in the opinion of Government, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or show that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(c) On the conclusion of his period of probation Government may confirm the officer in the Service or if his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory, Government may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit.

(d) An officer belonging to the Indian Administrative Service will be liable to serve anywhere in India or abroad either under the Central Government or under a State Government.

(e) Scales of pay :—

Junior Scale—Rs. 400—400—500—40—700—EB—30—1000 (18 years).

Senior Scale :—

(i) Time Scale—Rs. 900 (6th year or under)—50—1,000—60—1,600—50—1,800 (22 years).

(ii) Selection Grade—Rs. 1800—100—2,000.

In addition there are super-time scale posts carrying pay between Rs. 2,150 and Rs. 3,500 to which Indian Administrative Service Officers are eligible for promotion.

Dearness allowance will be admissible in accordance with the orders issued from time to time.

A probationer will start on the junior time scale and be permitted to count the period spent on probation towards leave, pension or increment in the time scale.

(f) **Provident Fund.**—Officers of the Indian Administrative Services are governed by the All India Services (Provident Fund) Rules, 1955.

(g) *Leave.*—Officers of the Indian Administrative Service are governed by the All India Services (Leave) Rules, 1955.

(h) *Medical Attendance.*—Officers of the Indian Administrative Service are entitled to medical attendance benefits admissible under the All India Services Medical Attendance Rules, 1954.

(i) *Retirement Benefit.*—Officers of the Indian Administrative Service appointed on the basis of Competitive examination are governed by the All India Services (Death-cum-Retirement Benefits) Rules, 1958.

2. *Indian Foreign Service.*—(a) Appointment will be made on probation for a period which will not ordinarily exceed 3 years. Successful candidates will be required to pursue a course of training in India for approximately twenty-one months. Thereafter they may be posted as Third Secretaries or Vice-Consuls in Indian Missions whose languages are allotted to them as compulsory languages. During their period of training the probationers will be required to pass one or more departmental examination before they become eligible for confirmation in Service.

(b) On the conclusion of his period of probation to the satisfaction of Government and on his passing the prescribed examinations, the Probationer is confirmed in his appointment. If, however, his work or conduct has in the opinion of the Government, been unsatisfactory, Government may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such period as they may think fit or may revert him to his substantive post, if any.

(c) If, in the opinion of Government, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is not likely to prove suitable for the Foreign Service, Government may either discharge him forthwith or may revert him to his substantive post, if any.

(d) *Scales of pay:*

Junior Scale.—Rs. 400—400—500—40—700—EB—30—1,000.

Senior Scale.—Rs. 900 (6th year or under)—50—1,000—60—1,600—50—1,800.

In addition there are super-time scale posts carrying pay between Rs. 1,800 and Rs. 3,500 to which I.F.S. Officers are eligible for promotion.

(e) A probationer will receive the following pay during probation:—

First Year—Rs. 400 per mensem.

Second Year—Rs. 400 per mensem.

Third Year—Rs. 500 per mensem.

NOTE 1.—A probationer will be permitted to count the periods spent on probation towards leave, pension or increment in the time-scale.

NOTE 2.—Annual increments during probation will be contingent on the probationer passing the prescribed test, if any, and showing progress to the satisfaction of Government. Increments can also be earned in advance by passing the departmental examinations.

NOTE 3.—The pay of a Government servant who held a permanent post other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as a probationer will be regulated subject to the provision of F.R. 22-B(1).

(f) An officer belonging to the Indian Foreign Service will be liable to serve anywhere inside or outside India.

(g) During Service abroad I.F.S. officers are granted foreign allowances according to their status to compensate them for the increased cost of living and of servants and also to meet their special responsibilities in regard to entertainment. In addition, the following concessions are also admissible to I.F.S. officer during service abroad:—

(i) Free furnished accommodation according to status.

(ii) Medical attendance facilities under the Assisted Medical Attendance Scheme.

(iii) Return air passage to India up to a maximum of two, for special emergencies such as the death or serious illness of an immediate relation in India or marriage of daughter.

(iv) Annual return air passage for children between the ages of 8 and 21 studying in India to visit the parents during the long vacations, subject to certain conditions.

(v) An allowance for the education of children up to maximum of two children between ages of 5 and 18 at rates prescribed by Government from time to time.

(vi) Outfit allowance at the time of departure for training abroad and on confirmation in the service. Outfit allowance is also granted at various stages of an officer's career in accordance with the prescribed rules. Special outfit allowance is admissible in addition to the ordinary outfit allowance to officers posted in countries where abnormally hard climatic conditions exist.

(vii) Home leave passages for officers, their families and servants after a minimum of 2 years service abroad.

(h) The Revised Leave Rules, 1933, as amended from time to time will apply to Members of the Service subject to certain modifications. For Service abroad I.F.S. Officers are entitled under the I.F.S. (PLCA) Rules, 1961; to an additional credit of leave to the extent of 50 per cent of leave admissible under the Revised Leave Rules.

(i) *Provident Fund.*—Officers of the Indian Foreign Service are governed by the General Provident Fund (Central Services) Rules, 1960.

(j) *Retirement Benefits.*—Officers of the Indian Foreign Service appointed on the basis of competitive examination are governed by the Liberalised Pension Rules, 1950.

(k) While in India officers are entitled to such concession as are admissible to other Government servants of equal and similar status.

3. *Indian Police Service.*—(a) Appointment will be made on probation for a period of two years which may be extended. Successful candidates will be required to undergo probation at such place and in such manner and pass such examinations during the period of probation as Government may determine.

(b) & (c) As in clauses (b) and (c) for the Indian Administrative Services.

(d) An officer belonging to the Indian Police Service will be liable to serve anywhere in India or abroad either under the Central Government or under a State Government.

(e) *Scales of pay:*

Junior Scale :—Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950. (18 years).

Senior Scale : Rs. 740 (6th year or under)—40—1100—50/2—1,250—50—1,300. (22 years).

Selection Grade. Rs. 1,400.

Deputy Inspector General of Police.—Rs. 1,600—100—2,000.

Commissioners of Police, Calcutta and Bombay.—Rs. 1,800—100—2,000.

Inspector General of Police.—Rs. 2,500—125/2—2,750.

Director, Intelligence Bureau.—Rs. 3,000.

Dearness allowance will be admissible in accordance with the orders issued from time to time.

(f)

(g)

(h)

(i)

As in clauses (f), (g), (h) and (i) for the Indian Administrative Service.

4. *Delhi and Andaman & Nicobar Island Police Service Class II.*—(a) Appointments will be made on probation for a period of two years which may be extended at the discretion of the competent authority. Candidates appointed on probation will be required to undergo such training and pass such departmental tests as the Central Government may prescribe.

(b) If in the opinion of Government the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(c) The officer who has been declared to have satisfactorily completed his period of probation may be confirmed in the service. If his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory, Government may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit.

(d) An officer belonging to the Service will be required to serve in Delhi or Andaman and Nicobar Islands under the Administration of any of these territories. He may also be required to serve in any police-intelligence organisation of the Government of India.

(e) Scales of pay :—

Grade I (Selection Grade)—Rs. 1,000 (fixed).

Grade II—Time Scale—Rs. 350—25—500—30—590—EB—30—800.

A person recruited on the results of competitive examination shall, on appointment to the Service, draw pay at the minimum of the time-scale, provided that if he held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment to the Service, his pay during the period of his probation in the Service shall be regulated under the proviso of Fundamental Rule 22B(I). The pay and increments in the case of other persons appointed to the Service shall be regulated in accordance with the Fundamental Rules.

(f) Officers of the Service are entitled to get dearness allowance at the Central Government rates applicable to employees drawing pay in revised Central scales of pay.

(g) In addition to dearness allowance officers of the Service are entitled to draw compensatory (city) allowance, house rent allowance and allowances to compensate for higher cost of living in hill stations, expensiveness incidental in remote localities etc. if they are posted at places, either for training or on duty, where such allowances are admissible.

(h) Officers of the Service are governed by the Delhi and Andaman & Nicobar Islands Police Service Rules, 1971, and such other regulations as may be made or instructions issued by the Central Government for the purpose of giving effect to those Rules. In regard to matters not specifically covered by the aforesaid Rules or by regulations or orders issued thereunder or by special orders, they are governed by the rules, regulations and orders applicable to corresponding officers serving in connection with the affairs of the Union.

5. *Central Information Service, (Grade II and Class I).*—(a) The Central Information Service consists of posts all over India, in various media organisations of the Ministry of Information and Broadcasting, requiring journalistic and similar professional qualifications. The service was constituted with effect from 1st March, 1960.

(b) The Service has at present the following grades :—

Grade	Scale of pay
Class I	
Selection Grade	Rs. 2,500—125/2—2,750
Senior Administrative Grade	
(Senior Scale)	Rs. 1,800—100—2,000
(Junior Scale)	Rs. 1,600—100—1,800.
Junior Administrative Grade	
(Senior Scale)	Rs. 1,300—60—1,600.
(Junior Scale)	Rs. 1,100—50—1,400.
Grade I	Rs. 700—40—1,100—50/2 —1,250.
Grade II	Rs. 400—400—450—30—600 —35—670—E. B.—35— —950.
Class II (Gazetted)	
Grade III	Rs. 350—25—500—30—590 —EB—30—800.
II (Non-Gazetted)	
Grade IV	Rs. 270—10—290—15— 410—EB—15—485.

(c) Direct recruitment is provided to the percentage of vacancies, as specified below, in the following grades of the services :—

Junior Administrative Grade (Junior Scale)	12½%
Grade I	25%
Grade II	50% of permanent vacancies
Grade IV	100%

Vacancies in Grade III are filled by promotion, on selection basis, on the recommendations of a Departmental Promotion Committee from amongst Grade IV officers.

50% permanent and all temporary vacancies in Grade II, 75% vacancies in Grade I and 87½% vacancies in the Junior Administrative Grade (Junior Scale) are filled by promotion by selection from amongst officers holding duty posts in the next lower grades.

Vacancies in the Selection Grade, Senior Administrative Grade (Senior Scale), and Senior Administrative Grade (Junior Scale), and Junior Administrative Grade (Senior Scale) are filled by selection from amongst officers holding duty posts in the respective next lower grade, in case no suitable officer is available for such promotion, recruitment to such vacancies in the Selection Grade and Senior Administrative Grade is to be made in consultation with the Union Public Service Commission. Vacancies in the Junior Administrative Grade (Senior Scale), are filled by promotion on the basis of seniority-cum-fitness from amongst officers holding duty posts in the Junior Scale of that Grade.

The Government can fill, in consultation with the Union Public Service Commission, in any grade a number of posts not exceeding 10% of the strength of that grade, by the appointment of officers of State Publicity Organisation on deputation, for such period not exceeding five years, as the Government may specify. The posts so filled are taken into account in determining the number of posts to be filled by promotion or by direct recruitment.

(d) (i) Direct recruits to Grade II will be on probation for two years. During probation they will be given training in the Indian Institute of Mass Communication, on a newspaper or news agency, in different media units of the Ministry of Information and Broadcasting and at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie. The total period of training will be about 20 months. The period and nature of training will be liable to alteration by Government. During the training, they will have to pass the 'end-of-the-course-test' at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie and first and second departmental tests at the Indian Institute of Mass Communication, which will include a language test. Failure to pass the departmental test during the training period involves liability to discharge from service or reversion to substantive post, if any, on which the candidate may hold lien.

(ii) On the conclusion of period of probation Government may confirm the direct recruits in their appointments in accordance with the rules in force. If the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory, he may be discharged from service or his period of probation extended for such period as the Government may deem fit. If his work or conduct is such to show that he is unlikely to become an efficient, Grade II officer of the Service, he may be discharged forthwith.

(iii) Probationers shall start on the minimum of the time scale of Grade II. On passing the first departmental test, the pay of probationers will be raised to Rs. 450/- in the scale of pay of Grade II of the Central Information Service. On passing the second departmental test the pay will be fixed at the stage of Rs. 480/-. The pay beyond the stage of Rs. 480/- will not be allowed unless they have completed 4 years of service, subject to other conditions as may be found necessary. In case any of the Probationers does not pass the 'end-of-the-course-test' at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by one year from the date on which he would have drawn it or up to the date on which under the departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

(iv) The pay of a Government servant who held a permanent post other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as probationer, will, however, be regulated subject to the provisions of F.R. 22-B(I).

(e) Government may require any member of the Service to hold for a specified period a post in the publicity organisation of a Union Territory.

(f) Government may post an officer to hold a field post in any organisation under the Ministry of Information and Broadcasting.

(g) As regards leave, pension and other conditions of service, officers of the Central Information Service will be treated like other Class I and Class II officers.

NOTE.—It should be clearly understood by probationers that their appointment would be subject to any change in the constitution of the Central Information Service which the Government of India may think proper to make from time to time and that they would have no claim for compensation in consequence of any such changes.

6. Indian Audit and Accounts Service.

7. Indian Customs and Central Excise Service.

8. Indian Defence Accounts Service.

(a) Appointments will be made on probation for a period of 2 years, provided that this period may be extended if the officer on probation has not qualified for confirmation by passing the prescribed departmental examinations. Repeated failure to pass the departmental examinations within a period of three years will involve loss of appointment.

(b) If, in the opinion of Government or the Comptroller and Auditor General, as the case, may be, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory, or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(c) On the conclusion of his period of probation Government or the Comptroller and Auditor General as the case may be, may confirm the officer in his appointment or if his work or conduct has, in the opinion of Government or the Comptroller and Auditor General, as the case may be, been unsatisfactory, Government may either discharge him from the service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit, provided that in respect of appointments to temporary vacancies there will be no claim to confirmation.

(d) In view of the possibility of the separation of Audit from Accounts and other reforms the constitution of the Indian Audit and Accounts Service is liable to undergo changes and any candidate selected for that Service will have no claim for compensation in consequence of any such changes and will be liable to serve either in the separated Accounts Offices under the Central or State Government or in the Statutory Audit Offices under the Comptroller and Auditor General and to be absorbed finally if the exigencies of service require it in the cadre on which posts in the separated Accounts Offices under the Central or State Government may be borne.

(e) The Indian Defence Accounts Service carries with it a definite liability for service in any part of India as well as for field Service in or out of India.

(f) Scales of Pay :—

Indian Audit and Accounts Service

Time Scale of I.A. & A.S. Rs. 400—400—450—30—510—EB—700—40—1,100—50/2—1,250.

Junior Administrative Grade.—Rs. 1,300—60—1,600.

Accountants General.—Rs. 1,800—100—2,000—125—2,250.

Additional Deputy Comptroller & Auditor General's Grade.—Rs. 2,500—125/2—2,750.

Deputy Comptroller & Auditor General of India—Rs. 3,000/-.

NOTE 1.—Probationary Officers will start on the minimum of the time scale of I.A. & A.S. and will count their service for increments from the date of joining.

NOTE 2.—The Officers on probation will not be allowed the pay above the stage of Rs. 400 unless they pass the departmental examination in accordance with the rules which will be prescribed from time to time.

NOTE 3.—In the case of probationers who do not pass the end-of-the-Course-Test at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie, the first increment raising their

pay to Rs. 450 shall be postponed by one year from the date on which they would have drawn it or upto the date on which, under the Departmental regulations, the second increment accrues to them, whichever is earlier. The failed candidates will not be required to take the test again.

NOTE 4.—The pay of a Government servant who held a permanent post, other than a tenure post, in a substantive capacity prior to his appointment as probationer will however, be regulated subject to the provisions of F.R.-22(B)(1).

Indian Customs and Central Excise Service :

Time Scale :—

Superintendent of Central Excise,	Rs. 400—500—450—
Class I.	30—510—EB—700—
Assistant Collector of Central Excise	40—1,100—50/2—1,250.
Assistant Collector of Customs	
Deputy Collector of Customs	
Deputy Collector of Central Excise.	Rs. 1,300—60—1,600.
Additional Collector	
Appellate Collector	
of Customs and Central Excise	
Collector of Customs	Rs. 1,800—100—2,00—
Collector of Central Excise	—125—2,250.

(a) Appointments will be made on probation for a period of 2 years, provided that this period may be extended if the officer on probation has not qualified for confirmation by passing the prescribed departmental examinations. Repeated failures to pass the departmental examinations within a period of two years will involve loss of appointment.

(b) If, in the opinion of the Government, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory, or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(c) On the conclusion of his/her period of probation, Government may confirm the officer in his/her appointment or if his/her work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory, Government may either discharge him/her from the service or may extend his/her period of probation for such further period as Government may think fit, provided that in respect of appointments to temporary vacancies there will be no claim to confirmation.

(d) The Indian Customs and Central Excise Service, Class I carries with it a definite liability for service in any part of India.

NOTE 1.—A probationary officer will start on the minimum of the time scale of pay of Rs. 400—400—450—30—510—EB—700—40—1,100—50/2—1,250, and will count his/her service for increments from the date of joining.

NOTE 2.—An Officer on probation will not be allowed pay in the time scale above the stage of Rs. 400/- unless he/she passes the prescribed departmental examinations in accordance with the rules which will be prescribed from time to time.

NOTE 3.—The pay of a Government servant who held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as a probationer in the Indian Customs and Central Excise Service, class I will be regulated subject to the provisions of F.R. 22-B(1).

NOTE 4.—During the period of probation, an officer will be posted to Central Excise Department/Customs Department/Narcotics Department for departmental training and to Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie for a Foundational course training. At the end of the training at Mussoorie he/she will have to pass the 'end-of-the-course' test. He/she will have to pass part I and part II of the Departmental Examination. On passing the 'end-of-the-course' test and one of the parts of the Departmental Examination, he/she will be granted a first advance increment raising his/her pay to Rs. 450. On passing both the parts of the Departmental Examination he/she will be granted the second advance increment raising his/her pay to Rs. 480/-. His/her pay beyond the stage of Rs. 480/- will not be allowed unless he/she has completed 4 years of service, subject to such other conditions as may be found necessary.

In case, a probationer does not pass the 'end-of-the-course' test at the Academy, his/her first advance increment will be postponed by one year from the date on which he/she

would have drawn it or upto the date on which under the departmental regulations, the second advance increment accrues, whichever is earlier.

NOTE 5.—It should be clearly understood by the probationers that their appointment would be subject to any change in the constitution of the Indian Customs and Central Excise Service, Class I which the Government of India may think proper to make from time to time and that they would have no claim for compensation in consequences of any such change.

Indian Defence Accounts Service :

Time Scale :—

Rs. 400—400—450—480—510—EB—700—40—1,100—1,100—1,150—1,150—1,200—1,200—1,250.

Junior Administrative Grade.

Rs. 1,300—60—1,600.

Rs. 1,600—100—1,800 (Selection Grade).

Senior Administrative Grade.

Rs. 1,800—100—2,000—125—2,250.

Controller General of Defence Accounts—Rs. 2,750 (fixed).

NOTE 1.—Probationary officers will start on the minimum of the time scale and will count their service for increments from the date of joining. The pay of a Government servant who held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as a probationer will, however, be regulated subject to the provisions of F.R. 22-B(1).

NOTE 2.—The Officers on probation will not be allowed the pay above the stage of Rs. 400 unless they pass the departmental examination in accordance with the rules in force from time to time; provided further that in the case of an officer who does not pass the 'end-of-the-course' test at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie, his first increment shall be postponed by one year from the date on which he would have drawn it on passing Part I of the Departmental Examination or up to the date on which the second increment accrues to him on passing Part II of the aforesaid examination, whichever is earlier.

9. Indian Income-tax Service, Class I.—(a) Appointments will be made on probation for a period of 2 years provided that this period may be extended if the officer on probation has not qualified for confirmation by passing the prescribed departmental examinations. Repeated failures to pass the departmental examinations within a period of 3 years will involve loss of appointment.

(b) If, in the opinion of Government, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become an efficient Income-tax Officer, the Government may discharge him forthwith.

(c) On the conclusion of his period of probation, Government may confirm the officer in his appointment or if his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory Government may either discharge him from the service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit, provided that in respect of appointment to temporary vacancies there will be no claim to confirmation.

(d) If the power to make appointments in the service is delegated by Government to any officer, that officer may exercise any of the powers of Government described in the above clauses.

(e) Scales of Pay :—

Income-tax Officer, Class I—

Rs. 400—400—450—30—510—EB—700—40—1,100—50/2—1,250.

Assistant Commissioner of Income-tax.—

Rs. 1,300—60—1,600.

Additional Commissioner of Income-tax.—

Rs. 1,600—100—1,800.

Commissioners of Income-tax.—

Rs. 1,800—100—2,000—125—2,250.

(f) During the period of probation, an officer will undergo training at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie and the Indian Revenue Service (Direct Taxes) Staff College, Nagpur. At the end of training at Mussoorie,

he/she will have to pass the 'end-of-the-course' test. In addition, I and II departmental examinations will also have to be passed during the period of probation. On passing the 'end-of-the-course' test and the I Departmental Examination, his/her pay will be raised to Rs. 450. On passing the 2nd departmental examination, the pay will be raised to Rs. 480. The pay beyond the stage of Rs. 480 will not be allowed unless he/she is confirmed and has completed 4 years of service subject to such other conditions as may be found necessary.

In case he/she does not pass the end of the course test at the Academy, the first increment will be postponed by one year from the date on which he/she would have drawn it or up to the date on which under the departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

NOTE 1.—The officer on probation will not be allowed the pay above the stage of Rs. 400 unless he passes the departmental examinations in accordance with the rules which will be prescribed from time to time.

NOTE 2.—It should be clearly understood by probationers that their appointment would be subject to any change in the constitution of the Income-tax Service, Class I, which the Government of India may think proper to make from time to time and that they would have no claim for compensation in consequences of any such changes.

10. Indian Ordnance Factories Service, Class I (Non-Technical Cadre).—(a) Selected candidates will be appointed as Assistant Managers (on Probation). The period of probation will be two years which may be reduced or extended by the Government on the recommendation of the Director General, Ordnance Factories. An Assistant Manager (on probation) will undergo such training as shall be provided by Government and may be required to pass such departmental and language tests as Government may prescribe. The language tests will include a test in Hindi.

On the conclusion of his period of probation, Government will confirm the officer in his appointment. If, however, during or at the end of the period of probation his work or conduct has, in the opinion of Government, been unsatisfactory Government may either discharge him or extend his period of probation for such period as Government may think fit, provided that before orders of discharge are passed, the officer shall be apprised by competent authority of the grounds on which it is proposed to discharge him and be given an opportunity to show cause against it.

(b) The Assistant Managers (on probation) in the Indian Ordnance Factories Service would draw pay in the prescribed scale of pay of Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950. During the period of probation, they will be required to undergo training in the various branches of the Department and in the Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie, in a foundational course of training. On passing the 'end-of-the-course-test' and the Departmental Examination they will be entitled to grant of advance increment raising their pay to Rs. 450/- per month and Rs. 480/- per month from the date following the date on which the last paper of the 1st and 2nd Departmental examination, in which they pass, is held. Grant of further increment will be regulated according to their position in the time scale and after they have been confirmed in the grade.

In case any of the Assistant Managers (on probation) does not pass the 'end-of-the-course-test' at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by one year from the date on which he would have drawn it or up to the date on which under the Departmental regulation, the second increment accrues, whichever is earlier.

(c) (i) Selected candidates shall, if so required, be liable to serve as Commissioned Officers in the Armed Forces for a period of not less than four years including the period spent on training, if any; provided that such person (i) shall not be required to serve as aforesaid after the expiry of ten years from the date of appointment and (ii) shall not ordinarily be required to serve as aforesaid after attaining the age of forty years.

(ii) The candidates shall also be subject to Civilians in Defence Services (Field Service Liability) Rules 1957, published under S.R.O. No. 92, dated 9th March, 1957. They will be medically examined in accordance with the medical standards laid down therein.

(d) The following are the rates of pay admissible:	
Assistant Manager	Junior Scale: Rs. 400—400—450—30
Technical Staff Officer	—600—35—670—EB—35—950.
Deputy Manager/Deputy Assistant Director General, Ordnance Factories	Senior Scale Rs. 700—40—1,100—50/2—1,250.
Manager/Senior Deputy Assistant Director General, Ordnance Factories	Rs. 1,100—50—1,400.
Deputy General Manager/Assistant Director General, Ordnance Factories, Grade II.	Rs. 1,300—60—1,600—100—1,800.
Assistant Director General, Ordnance Factories, Grade I.	Rs. 1,800—100—2,000.
Deputy Director General, Ordnance Factories	Rs. 2,000—125—2,250.

11. *Indian Postal Service*.—(a) Selected candidates will be under training in this department for a period which will not ordinarily exceed two years. During this period they will be required to pass the prescribed departmental test.

(b) If in the opinion of Government, the work or conduct of an officer under training is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(c) On the conclusion of his period of training Government may confirm the officer in his appointment or, if his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory Government may either discharge him from the service or may extend his period of training for such further period as Government may think fit, provided that in respect of appointment to temporary vacancies there will be no claim to confirmation.

(d) If the power to make appointments in the Service is delegated by Government to any officer, that officer may exercise any of the powers of Government described in the above clauses.

(e) Scales of Pay :

Time Scale :— Rs. 400—400—450—30—510—EB—700—40—1,100—50/2—1,250 (Officers under training will draw pay in this time scale).

Directors of Postal Services : Rs. 1,300—60—1,600.

Postmaster-General : Rs. 1,800—100—2,000—125—2,250.

Members, Posts and Telegraphs Board : Rs. 2,500—125/2—2,750.

Senior Member, Posts and Telegraphs Board : Rs. 3,000.

(f) The probationers in the Indian Postal Service, would draw pay in the prescribed pay scale of Rs. 400—400—450—30—480—510—EB—700—40—1,100—50/2—1,250. During the period of probation, they will be required to undergo training in the various branches of the Department and in Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie, in a foundational course of training. At the end of training at Mussoorie, they will have to pass the 'end-of-the-course-test'. They will also have to pass the Departmental examination as prescribed under the Departmental Rules. On passing the 'end-of-the-course-test' and the Departmental examination, their pay will be raised to Rs. 450. On confirmation, if they are confirmed on completion of the probationary period of two years, their pay will be fixed at the stage of Rs. 480. Further regulation of their pay will, however, be determined by their position in the time scale.

In case, any of the probationers does not pass the 'end-of-the-course-test' at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by one year from the date on which he would have drawn it or upto the date on which under the Departmental regulations, the second increment accrues whichever is earlier.

Provided that the pay of a Government servant who held a permanent post other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as probationer will be regulated subject to the provisions of F.R. 22-B(1).

(g) It should be clearly understood by the officers on probation that their appointment would be subject to any change in the constitution of the Indian Postal Service, which Government of India may think proper to make from time to time and that they would have no claim for compensation in consequence of any such changes.

(h) Selected candidates will be liable to serve in the Army Postal Service in India or abroad as required by Government.

12. *Indian Railway Accounts Service*.—(a) Appointments will be made on probation for a period of 2 years during which the service will be liable to termination on three months' notice on either side. The period of probation may be extended if the officer on probation has not qualified for confirmation by passing the prescribed departmental examinations.

Government may terminate the appointment of a Probationary Officer who fails to pass all the Departmental Examinations within three years of the date of appointment.

(b) Probationers of the Indian Railway Accounts Service will also be required to undergo training in two phases at the Railway Staff College, Baroda, and to pass the tests prescribed by the College authorities. The tests in the College are compulsory and a second chance, in the event of failure will not be given except in exceptional circumstances and provided the record of the officer is such that such relaxation may be made. They may, however, be put on to a working post on satisfactory completion of two years' training but they may not be confirmed till they have passed the tests at the Railway Staff College, Baroda, and passed the higher and lower departmental examinations.

(c) Probationers should have already passed or should pass during the period of probation an examination in Hindi in the Devanagari script of an approved standard. This Examination may be the 'Praveen' Hindi Examination conducted by the Directorate of Education, Delhi, on behalf of the Ministry of Home Affairs or one of the equivalent Examinations recognized by the Central Government.

No probationary officer can be confirmed or his pay in the time scale raised to Rs. 450 p.m. unless he fulfills this requirement; and failure to do so will involve liability to termination of service. No exemption can be granted.

(d) Officers (including probationers) of the Indian Railway Accounts Service recruited under these rules—

(a) will be governed by the Railway Pension Rules; and

(b) shall subscribe to the State Railway Provident Fund (non-contributory) under the rules of that Fund;

as amended from time to time.

(e) Officers recruited under these rules shall be eligible for leave in accordance with the liberalised leave rules as in force from time to time.

(f) If for any reason not beyond his control, a probationer in the Indian Railway Accounts Service wishes to withdraw from training or probation, he will be liable to refund the whole cost of his training and any other moneys paid to him during the period of his probation.

(g) If, in the opinion of Government, the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory, or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him forthwith.

(h) On the conclusion of his period of probation, Government may confirm the officer in his appointment or if his work or conduct has, in the opinion of Government, been unsatisfactory, Government may either discharge him from the service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit.

(i) Scales of pay :

(a) Junior Scale :—Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950. (Authorised Scale).

Senior Scale :—Rs. 700 (6th year and under)—40—1,100—50/2—1,250. (Authorised Scale).

Junior Administrative Grade :—Rs. 1,300—60—1,600. (Authorised Scale).

Intermediate Administrative Grade :—Rs. 1,600—100—1,800.

Senior Administrative Grade :—Rs. 2,000—100—2,500.

(b) Increment from Rs. 400 to Rs. 450 will be stopped if they fail to pass the prescribed Departmental Examination within the two years' probationary period. The probationary period will be extended and on their passing the prescribed Departmental tests and being subsequently confirmed, their pay will, from the date following that on which the last departmental examination ends, be fixed at the stage in the time scale which they would have otherwise attained but no arrears of pay would be allowed to them. In such cases the date of future increments will not be affected.

Advance increments from Rs. 400 to Rs. 450 and from Rs. 450 to Rs. 480 in the Junior Scale of Rs. 400—950 may, however, be granted during the period of probation as soon as the probationary officer passes the prescribed examinations. After the grant of advance increments, the pay of the officer will be regulated according to his normal position in the pay scale with reference to the year of service.

In case, any of the probationers does not pass the 'end-of-the-course-test' at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by one year from the date on which he would have drawn it or up to the date on which under the departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

NOTE 1.—Probationary officers will start on the minimum of the Junior Scale and will count their service for increments from the date of joining. They will, however, be required to pass any departmental examination or examinations that may be prescribed before their pay can be raised from Rs. 400 p.m. to Rs. 450 p.m. in the time scale.

NOTE 2.—The pay of a Government servant who held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as probationer, will however, be regulated subject to the provisions of Rule 2018A-(I) R.P. [F.R. 22-B(1)].

13. Military Lands and Cantonments Service, (Class I and Class II).

(a) (i) A candidate selected for appointment shall be required to be on probation for a period which shall not ordinarily exceed 2 years. During this period he shall be required to undergo such course of training as may be prescribed by Government.

(ii) The pay of a Government servant who held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as probationer will however, be regulated subject to the provisions of F.R. 22-B(1).

(b) During the period of probation a candidate will be required to pass the prescribed departmental examination.

(c) (i) If in the opinion of Government, the work or conduct of an Officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, Government may discharge him after apprising him of the grounds on which it is proposed to do so, and after giving him an opportunity to show cause in writing before such order is passed.

(ii) If at the conclusion of the period of probation an Officer has not passed the Departmental Examination mentioned in sub-para (b) above Government may, in its discretion, either discharge him from service, or if the circumstances of the case so warrant, extend the period of probation for such period not exceeding one year as Government may consider fit.

(iii) On the conclusion of the period of probation Government may confirm an officer in his appointment, or if his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory. Government may either discharge him after apprising him of the grounds out of which it is proposed to do so and after giving him an opportunity to show cause in writing before such order is passed or extend the period of probation for such further period as Government may consider fit.

(d) If no action is taken by Government under Sub-para (c) above, the period after the prescribed period of probation shall be treated as an engagement from month to month, terminable on either side on the expiration of one calendar month's notice in writing, provided that the Officer shall have no claim to confirmation.

(e) No annual increment which may become due will be admissible to a member of the Service during his probation unless he has passed the departmental examination. An increment which was not thus drawn will be allowed from the date of passing of the departmental examination.

(f) In case, any of the Probationers does not pass the 'end-of-the-course-test' at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by one year from the date on which he would have drawn it or upto the date on which under the departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

(g) The scales of pay are as under.—

Administrative Posts

(i) Director, Military Lands and Cantonments	Rs. 1,800—100—2,000—125 —2,250.
(ii) Joint Director, Military Lands and Cantonments	Rs. 1,600—100—1,800.
(iii) Deputy Director, Military Lands and Cantonments	Rs. 1,300—60—1,600.
(iv) Assistant Director, Military Lands and Cantonments.	Rs. 1,100—50—1,400.

Class I

(v) Deputy Assistant Directors, Military Lands and Cantonments, Military Estates Officer and Executive Officers	Rs. 400—400—450— 30—510—EB—700—40— 1,100—50/2—1,250.
---	--

Class II

(vi) Executive Officers	Rs. 350—25—500—30—590— —EB—30—800—EB—830— —35—900.
-----------------------------------	--

(vii) Assistant Military Estates Officers	Rs. 350—25—500—30— 590—EB—30—800—EB— 830—35—900.
---	--

(h) (i) Class I Officers will normally be appointed as Deputy Assistant Directors, Military Estates Officers, and as Executive Officer to Class I Cantonments and Class II Cantonments to which sub-clause (i) of clause (e) of sub-section (4) of Section 13 of the Cantonments Act, 1924 is applicable.

(ii) Class II Executive Officers will normally be appointed to Cantonments other than those mentioned in (i) above.

(i) (i) All promotions will be made by selection (seniority being considered only when the claims of two or more candidates are equal on merits) by Government on the recommendations of a Departmental Promotion Committee appointed in this behalf by the Government. On promotion from Class II to Class I, pay will be regulated under the Fundamental Rules.

(ii) No officer will normally be promoted to Class I unless he has completed three years of service in Class II.

(j) The Revised Leave Rules, 1933, as amended from time to time will apply.

(k) No member of the Service shall undertake any work not connected with his official duties without the previous sanction of Government.

(l) The Military Lands & Cantonments Service carries with it a definite liability for service in any part of India as well as for Field Service in India.

14. Indian Railway Traffic Service.

- (a) Candidates selected for appointment will be appointed as probationary officers in the Indian Railway Traffic Service for a period of three years during which they will undergo the training as indicated in para. (m) and put in a minimum period of one year's probation in a working post. If the period of training has to be extended in any case due to the training having not been completed satisfactorily, the total period of probation will be correspondingly extended.
- (b) If for any reasons not beyond his control a probationer in the Indian Railway Traffic Service wishes to withdraw from training or probation, he will be liable to refund the whole cost of his training and any other moneys paid to him during the period of his probation.
- (c) Appointments to the service will be on a probation for a period of three years during which the service of the officers will be liable to termination by three months notice on either side. Probationary Officers will be required to undergo practical training for the first two years. Those who complete his training successfully and are otherwise considered suitable will be placed in charge of a working post, provided they have passed the prescribed departmental and other examinations. It must be noted that these examinations should, as a rule, be passed at the first chance and that save under exceptional circumstances a second chance will not be allowed. Failure to pass any of the examinations may result in the termination of service and will, in any case, involve stoppage of increment.
- At the end of one year in a working post the Probationary Officers will be required to pass final examination, both practical and theoretical, and will as a rule, be confirmed if they are considered fit for appointment in all respects. In cases where the probationary period is extended for any reason, the drawal of the first and subsequent increments on their passing the departmental examinations, and on being confirmed, will be subject to the rules and orders in force from time to time.
- (d) Probationers should have already passed or should pass during the period of probation an examination in Hindi in the Devanagari script of an approved standard. This examination may be the 'Praveen' Hindi Examination conducted by the Directorate of Education, Delhi, on behalf of the Ministry of Home Affairs or one of the equivalent examinations recognised by the Central Government.
- No probationary Officer can be confirmed or his pay in the time scale raised to Rs. 450 p.m. unless he fulfills the requirements; and failure to do so will involve liability to termination of service. No exemption can be granted.
- (e) Officers (including probationers) of the Indian Railway Traffic Service recruited under these rules:—
 (a) will be governed by the Railway Pension Rules; and
 (b) shall subscribe to the State Railway Provident Fund (non-contributory) under the rules of that Fund;
 as amended from time to time.
- (f) Pay will commence from the date of joining service. Service for increments will also count from that date.
- (g) Officers recruited under these rules shall be eligible for leave in accordance with the liberalised leave rules as in force from time to time.
- (h) Officers will ordinarily be employed throughout their service on the railway to which they may be posted on first appointment and will have no claim as a matter of right to transfer to some other Railway. But the Government of India reserve the right to transfer such officers in the exigencies of service to any other railway or project in or out of India.

(i) Scales of pay :—

Junior Scale : Rs. 400—400—450—30—600—35—670—EB—35—950. (Authorised Scale).

Senior Scale : Rs. 700—(6th year and under)—40—1,100—50/2—1,250. (Authorised Scale).

Junior Administrative Grade : Rs. 1,300—60—1,600. (Authorised Scale).

Intermediate Administrative Grade : Rs. 1,600—100—1,800. (Authorised Scale).

Senior Administrative Grade : Rs. 2,000—100—2,500. (Authorised Scale).

NOTE 1.—Probationary officers will start on the minimum of the Junior Scale and will count their service for increments from the date of joining. They will, however, be required to pass any departmental examination or examinations that may be prescribed before their pay can be raised from Rs. 400 p.m. to Rs. 450 p.m. in the time scale.

Increment from Rs 400 to Rs. 450 will be stopped if they fail to pass the Departmental Examination within the first two years of the training and probationary period. The probationary period will be extended and on their passing the prescribed Departmental tests and being subsequently confirmed, their pay will from the date following that on which the last departmental examination ends be fixed at the stage in the time scale which they would have otherwise attained but no arrears of pay would be allowed to them. In such cases the date of future increments will not be affected.

Advance increments from Rs. 400 to Rs. 450 and from Rs. 450 to Rs. 480 in the Junior Scale of Rs. 400—950 may however, be granted during the period of probation as soon as the probationary officer passes the prescribed examinations. After the grant of advanced increments the pay of the officer will be regulated according to his normal position in the pay scale, with reference to the year of service.

In case any of the probationers does not pass the 'end-of-the-course-test' at Lal Bahadur Shastri Academy of Administration, Mussoorie, his first increment will be postponed by year from the date on which he would have drawn it or up to the date on which under the departmental regulations, the second increment accrues, whichever is earlier.

NOTE 2.—The pay of a Government Servant who held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment as probationer, will, however, be regulated subject to the provisions of Rule 2018A(1)-R.II.(F.R.22-B(1)).

(j) The increments will be given for approved service only and in accordance with rules of the Department.

(k) Promotions to the administrative grades are dependent on the occurrence of vacancies in the sanctioned establishment and are made wholly by selection; mere seniority does not confer any claim for such promotion.

(l) Courses of training for probationers in the Indian Railway Traffic Service.

NOTE 1.—The Government of India reserve the right to reduce at their discretion, the period of training in the case of candidates who have had previous training or experience either in India or elsewhere.

NOTE 2.—Probationers will also have to undergo training at the Railway Staff College, Baroda, in two phases. The test in the Staff College is compulsory and a second chance in the event of failure will not be given except in exceptional circumstances and provided the record of the Officer is such that such a relaxation may be made. Failure to pass the test may involve the termination of service and in any case the officers will not be confirmed till they pass the tests, their period of training and/or probation being extended as necessary.

NOTE 3.—The programme of training given below has been drawn up chiefly for the purpose of guidance; it may be varied at the discretion of General Managers to suit particular cases provided that the total aggregate period of training is not ordinarily curtailed.

NOTE 4.—During the period of training the probationer has to work as a Guard, Yard Master, Assistant Station Master, Station Master, Yard Foreman, Train Examiner, Assistant Loco Foreman, Assistant Controller etc, as detailed below. After completion of training when the probationer is posted against a working post, his duties involve travelling with no facilities for camping at way-side stations. He has to visit sites of accidents at odd hours and inspect Control offices and stations. The work is arduous and will involve night duties.

(m) (1) Length of course—Two years.

S. No.	Item	Period (Weeks)
1	2	3
1.	Lal Bahadur Shastri Academy of Administration Mussorie	17
2.	Railway Staff College, Baroda (First Phase)	12
3.	Area School to learn Guard's duties (Phase I)	4
4.	Working as Guard	3
5.	Booking/Parcel office, Goods shed and Transhipment shed	10
6.	Traffic Accounts and Travelling Inspector of Accounts	5
7.	Area School to learn duties of Assistant Station Master (Phase II)	4
8.	Working as Yard Master, Assistant Station Master, Station Master, Yard Foreman and Train Examiner	13
9.	Working as Assistant Loco Foreman	1
10.	Assistant Controller	4
11.	Deputy Chief Controller, Power Controller	6
12.	Railway Staff College, Baroda, Phase-II	6
13.	<i>Training on the Eastern Railway</i>	
	(a) <i>Asansol Division</i> .	
	(i) Coal Pilot Working 1.5 weeks	
	(ii) Working of Andal & Asansol Yards Complex including Durgapur Steel Plant	
	(b) <i>Dhanbad Division</i>	
	(i) Coal allotment procedure including field trip to yards, such as PEH and Karanpura including washeries such as PEH & Dugda	
	(ii) Working of coal Area Supdt's organisation	
	(c) Mughalsarai Marshalling Yard including visits to Manduadih—Dehri-on-sone	
14.	<i>Training on South Eastern Railway</i>	
	(i) Chakradharpur Division Bondamunda Yard, Rourkela Steel Plant, including visit to Captive Mines	
	(ii) <i>Bilaspur Division</i>	
	Bhilai Marshalling Yard, Bhilai Steel Plant and visit to chirimiri and Manendragarh colliery areas	
15.	<i>Training in allotted Railways</i>	
	(a) Headquarters office (Optg.) 4.00	8.00
	(b) Headquarters office (Commercial) 4.00 period set apart for journey time for taking up various items of training and inseparable leave	2.5
	Total	104 weeks or 24 months

(2) Provided he passes the examination at the end of his two years' training, a probationer will be given charge of a working post on probation for a further year.

(3) Examination will be held as may be required at the close of courses as well as at intervals during the period of training.

NOTE.—Before a probationer is put to work independently as a Guard, Assistant Station Master, Station Master, Yard Foreman, Assistant Locomotive Foreman or Assistant Controller, he must be examined by a responsible officer of the administration in the respective duties for each of these posts and declared qualified.

15. *The Central Secretariat Service, Section Officers' Grade, Class II*—

(a) The Central Secretariat Service has, at present, the following grades:—

Grade	Scale of Pay
Selection Grade—Deputy	Rs. 1,100—50—1,300—60—
Secretary of equivalent	1,600—100—1,800
Grade I Under Secretary	Rs. 900—50—1,250
Section Officer's Grade	Rs. 350—25—500—30—590— EB —30—800—EB —30— —830 —35 —900.
Assistant's Grade	Rs. 210—10—270—15— 300—EB—15—450—EB— 20—530.

Selection Grade and Grade I are controlled by the Cabinet Secretariat (Department of Personnel and Administrative Reforms on an all-Secretariat basis). Section Officers/Assistants' Grades, however, are controlled by the Ministries.

Direct recruitment is made to the Section Officers' Grade and to the Assistants' Grade only.

(b) Direct recruits to the Section Officers' Grade will be on probation for 2 years during which they will undergo such training and pass such departmental tests as may be prescribed by Government. Failure to show sufficient progress in the course of training or to pass the tests will result in the discharge of the probationers from service.

(c) On the conclusion of his period of probation Government may confirm the officer in his appointment or if his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory, Government may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as Government may think fit.

(d) If the power to make appointments in the Service is delegated by Government to any officer, that officer may exercise any of the powers of Government described in the above clauses.

(e) Section Officers will normally be heads of 'Sections' while officers of Grade I will normally be incharge of Branches consisting of one or more sections.

(f) Section Officers will be eligible for promotion to Grade I in accordance with the rules in force from time to time in this behalf.

(g) Officers of Grade I of the Central Secretariat Service will be eligible for appointment to the Selection Grade of the Service and to other higher administrative posts in the Central Secretariat.

(h) As regards leave, pension and other conditions of Service Officers of the Central Secretariat Service will be treated similarly to other Class I and Class II officers.

16. *The Indian Foreign Service, Branch 'B' Integrated Grades II and III of the General cadre (Section Officers' Grade)—*

(a) 33-1/3% of the maintenance vacancies in the Integrated Grade II & III of the Indian Foreign Service, Branch 'B' (Class II) are filled by direct recruitment through the U.P.S.C. The scale of pay attached to this grade is Rs. 350—25—500—30—590—EB —30—800—EB —30—830—35—900.

(b) Direct recruits to the Section Officers' Grade will be on probation for two years during which period they will be required to undergo such training and pass such departmental tests as may be prescribed by Government. Failure to show sufficient progress in the course of training or to pass the prescribed tests may result in the discharge of probationers from service.

(c) On the conclusion of the period of probation, Government may confirm an officer in his appointment subject to availability of permanent posts or if his work and conduct have, in the opinion of Government, been unsatisfactory, may either discharge him from the service, or may extend the period of his probation for such further period as Government may deem fit. The total period of probation will not exceed 3 years.

(d) If the power to make appointments in the service is delegated by Government to any officer, that officer may exercise any of the powers of Government prescribed in the above clause.

(e) Officers appointed to this service will normally be Heads of Sections. While employed at the Headquarters of the Ministry of External Affairs/Ministry of Foreign Trade they will be designated as Section Officers and sometimes Administrative Officers. While serving in Indian Missions abroad, their designation will be Registrars, although for local purposes they may be called Attachés with diplomatic status.

(f) Section Officers will be eligible for promotion to Grade I of the General Cadre of the IFS (B) in the scale of Rs. 900-50-1,250, in accordance with the rules in force from time to time in this behalf.

(g) Officers of the Grade I of the General Cadre of the IFS (B) will in turn be eligible for appointment to posts in the senior scale of IFS (A) in the scale of pay of Rs. 900 (6 years or under)-50-1000-60-1600-50-1800, in accordance with the rules in force from time to time in this behalf.

(h) The Indian Foreign Service, Branch (B) is confined to the Ministry of External Affairs and Indian Missions abroad and the officers appointed to this service are not normally liable to transfer to other Ministries except the Ministry of Foreign Trade. They are however, liable to serve anywhere inside or outside India.

(i) During service abroad, IFS (B) officers are granted foreign allowance in addition to their basic pay at rates which may be sanctioned from time to time, depending upon the cost of living etc. of the countries concerned. In addition, the following concessions are also admissible during service abroad, in accordance with the IFS (PLCA) Rules, 1961, as made applicable to IFS (B) Officers:—

- (i) Free furnished accommodation according to the scale prescribed by the Government.
- (ii) Medical Attendance Facilities under the Assisted Medical Attendance Scheme.
- (iii) Return air passages to India and back to the place of duty abroad up to a maximum of two throughout an officer's service for special emergencies such as the death or serious illness of an immediate relation in India as may be defined by the Government.
- (iv) Annual return air passage for children between the ages of 8 and 21 studying in India to visit their parents during vacation subject to certain conditions.
- (v) An allowance for the education of children up to a maximum of two children between the ages of 5 and 18 at rates prescribed by Government from time to time.
- (vi) Outfit allowance in connection with service abroad, in accordance with the prescribed rules and at rates fixed by Government from time to time. In addition to ordinary outfit allowance, special outfit allowance is admissible to officers posted in countries, where abnormally cold climatic conditions exist.
- (vii) Home leave passage for officers and their families in accordance with the prescribed rules.

(j) The Revised Leave Rules, 1933, as amended from time to time, will apply to members of the service, subject to certain modifications. For Service abroad, except in some neighbouring countries, officers are entitled to an additional credit of leave to the extent of 50 per cent of leave admissible under the Revised Leave Rules.

(k) While in India, officers are entitled to such concessions as are admissible to other Central Government servants of equal and similar status.

(l) Officers of the IFS (B) are governed by the General Provident Fund (Central Services) Rules, 1960 as amended from time to time and by orders issued thereunder.

(m) officers appointed to this service are governed by the Liberalised Pension Rules, 1950, as amended from time to time and by orders issued thereunder.

17. *The Armed Forces Headquarters Civil Service, Assistant Civilian Staff Officers Grade Class II.*—(a) Armed Forces Headquarters Civil Service, has at present five grades as follows:—

Grade	Scale of Pay
(1) Joint Director (Class I)	Rs. 1,300-60-1600.
(2) Senior Civilian Staff Officer (Class I)	Rs. 1,100-50-1,400.
(3) Civilian Staff Officer (Class I)	Rs. 740-30-800-50-1,150.
(4) Assistant Civilian Staff Officer (Class II—Gazetted)	Rs. 350-25-500-30-590-EB-30-800.
(5) Assistant (Class II—non-Gazetted)	Rs. 210-10-270-15-300-EB-15-450-EB-20-530.

The above Service caters for the Armed Forces Headquarters and Inter-Services Organisations of the Ministry of Defence.

Direct recruitment is made to the Assistant Civilian Staff Officers' Grade and to the Assistants Grade only.

(b) Direct recruits to the Assistant Civilian staff officers Grade will be on probation for 2 years during which they will undergo such training and pass such departmental tests as may be prescribed by Government. Failure to show sufficient progress in the course of training or to pass the tests will result in the discharge or the probationers from service.

(c) On the conclusion of his period of probation, Government may confirm the officer in his appointment, or if his work or conduct has in the opinion of Government, been unsatisfactory, Government may either discharge him from the service or may extend his period of probation for such further periods as Government may think fit.

(d) If the power to make appointments in the Service is delegated by Government to any officer, that officer may exercise any of the powers of Government described in the above clauses.

(e) In the Armed Forces Headquarters and Inter-Service Organisations of the Ministry of Defence, Assistant Civilian staff officers will normally be heads of Sections while Civilian Staff Officers will normally be incharge of one or more Sections.

(f) Assistant Civilian Staff Officers will be eligible for promotion to the Grade of Civilian Staff Officer in accordance with the rules in force from time to time in this behalf.

(g) Civilian Staff Officers of the Armed Forces Headquarters Civil Service will be eligible for appointment to the Grade of Senior Civilian Staff Officer of the Service and to other administrative posts in accordance with the rules in force from time to time in this behalf.

(h) As regards leave, pension and other conditions of service, officers of the Armed Force Headquarters Civil Service will be governed by the rules, regulation and orders in force from time to time, in respect of civilians paid from the Defence Services Estimates.

18. *Customs Appraisers' Service, Class II—*

(a) Recruitment is made in the grade of Appraiser in the scale of Rs. 350-25-500-30-590-EB-30-800-EB-35-900. Appointments are made on probation for a period of two years which may be extended at the discretion of the competent authority. During the period of probation, the candidates will be required to undergo such training and pass such departmental tests as the Central Board of Excise and Customs may prescribe. They will not be allowed to draw pay above the stage of Rs. 375 unless they pass the prescribed departmental Examination in full.

(b) If on the expiration of the period of probation or any extension thereof the appointing authority is of the opinion that the selected candidate is not fit for permanent employment or if at any time during such period of probation or extension thereof he is satisfied that the candidate will not be

fit for permanent appointment on the expiration of such period of probation he may discharge him from the service or pass such orders as he thinks fit.

(c) On the successful completion of the period of probation and after passing of the departmental examination the officers will be considered for confirmation in the grade.

(d) Appraisers will be eligible for promotion to the next higher grade of Assistant Collector in the Indian Customs and Central Excise Service Class I (Rs. 400-1250) in accordance with the rules inforce.

(e) Regarding leave and pension the officers will be treated like other Class II officers in Central Government department. As regards other terms and conditions of their service they will be governed by the provisions in the Recruitment Rules for the Custom Appraisers' Service, Class II. These rules particularly provide that the members of the Service will be liable to posting in any equivalent or higher posts under the Central Board of Excise and Customs anywhere in India.

19. Delhi and Andaman & Nicobar Islands Civil Service Class II—

(a) Appointments will be made on probation for a period of two years which may be extended at the discretion of the competent authority. Candidates appointed on probation will be required to undergo such training and pass such departmental tests as the Central Government may prescribe.

(b) If in the opinion of the Government the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient Government may discharge him forthwith.

(c) The officer who has been declared to have satisfactorily completed his period of probation may be confirmed in the Service. If his work or conduct has in the opinion of Government been unsatisfactory, Government may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as the Government may think fit.

(d) An officer belonging to the Service will be required to serve in Delhi or Andaman and Nicobar Islands under the Administration/Government of any of these territories.

(e) Scales of pay.

Grade I (Selection Grade) Rs. 900-50-1250.

Grade II—Time Scale—Rs. 400—25—500—30—590—EB—30—800—30—800—EB—830—35—900.

A person recruited on the results of competitive examination shall, on appointment to the Service, draw pay at the minimum of the time-scale, provided that if he held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment to the Service, his pay during the period of his probation in the Service shall be regulated under the provisions of Fundamental Rule 22-B(1). The pay and increments in the case of other persons appointed to the Service shall be regulated in accordance with the Fundamental Rules.

(f) Officers of the Service are entitled to get dearness allowance at the Central Government rates applicable to employees drawing pay in revised Central scales of pay.

(g) In addition to dearness allowance officers of the Service are entitled to draw compensatory (city) allowance, house rent allowance and allowances to compensate for higher cost of living in hill stations, expensiveness incidental in remote localities etc. if they are posted at places either for training or on duty where such allowances are admissible.

(h) Officers of the Service are governed by the Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Civil Service Rules, 1971 and such other regulations as may be made or instructions issued by the Central Government for the purpose of giving effect to those Rules. In regard to matters not specifically covered by the aforesaid Rules or by regulations or orders issued thereunder or by special orders they are governed by the rules, regulations and orders applicable to corresponding officers serving in connection with the affairs of the Union.

20. Goa, Daman and Diu Civil Service, Class II—

(a) Appointments will be made on probation for a period of two years which may be extended at the discretion of the competent authority. Candidates appointed on probation will

be required to undergo such training and pass such departmental tests as the administrator of the Union territory of Goa, Daman and Diu may prescribe.

(b) If in the opinion of the administrator the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, the administrator may discharge him forthwith.

(c) The officer who has been declared to have satisfactorily completed his period of probation may be confirmed in the Service. If his work or conduct has in the opinion of the administrator been unsatisfactory he may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as the administrator may think fit.

(d) An officer belonging to the Service will be required to serve at any place in the Union territory of Goa, Daman and Diu.

(e) Scales of pay—

Grade I (Selection Grade)—Rs. 700—40—1,100—50/2—
—1,250.

Grade II—Rs. 350—25—500—30—590—EB—30—800—
EB—30—830—35—900.

A person recruited on the results of competitive examination shall, on appointment to the Service, draw pay at the minimum of the time-scale :

Provided that if he held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment to the Service, his pay during the period of his probation in the Service shall be regulated under the provisions of sub-rule (1) of rule 22-B of the Fundamental Rules. The pay and increments in the case of other persons appointed to the Service shall be regulated in accordance with the Fundamental Rules.

Officers of the Service will be eligible for promotion to posts in the senior scale of the Indian Administrative Service in accordance with the Indian Administrative Service (Appointment by Promotion) Regulations, 1955.

(f) Officers of the Service are governed by Pondicherry Civil Service Rules, 1967 and such other regulations may be made or instruction issued by the administrator for the purpose of giving effect to those rules.

21. Pondicherry Civil Service, Class II—

(a) Appointments will be made on probation for a period of two years which may be extended at the discretion of the competent authority. Candidates appointed on probation will be required to undergo such training and pass such departmental tests as the administrator of the Union territory of Pondicherry may prescribe.

(b) If in the opinion of administrator the work or conduct of an officer on probation is unsatisfactory or shows that he is unlikely to become efficient, the administrator may discharge him forthwith.

(c) The officer who has been declared to have satisfactorily completed his period of probation may be confirmed in the Service. If his work or conduct has in the opinion of the administrator been unsatisfactory, he may either discharge him from the Service or may extend his period of probation for such further period as administrator may think fit.

(d) An officer belonging to the Service will be required to serve at any place in the Union Territory of Pondicherry.

(e) Scales of pay—Rs. 375—25—800.

A person recruited on the results of competitive examination shall, on appointment to the Service, draw pay at the minimum of the time-scale:

Provided that if he held a permanent post, other than a tenure post in a substantive capacity prior to his appointment to the Service his pay during the period of his probation in service shall be regulated under the provisions of sub-rule (1) of rule 22-B of the Fundamental Rules. The pay and increments in the case of other persons appointed to the Service shall be regulated in accordance with the Fundamental Rules.

Officers of the Service will be eligible for promotion to posts in the senior scale of the Indian Administrative Service in accordance with the Indian Administrative Service (Appointment by Promotion) Regulations, 1955.

(f) Officer of the Service are governed by Pondicherry Civil Service Rules, 1967 and such other regulations as may be made or instruction issued by the administration for the purpose of giving effect to those rules.

APPENDIX IV

REGULATIONS RELATING TO THE PHYSICAL EXAMINATION OF CANDIDATES

[These regulations are published for the convenience of candidates and in order to enable them to ascertain the probability of their coming up to the required physical standard. The regulations are also intended to provide guide lines to the medical examiners and a candidate who does not satisfy the minimum requirements prescribed in the regulations, cannot be declared fit by the medical examiners. However, while holding that a candidate is not fit according to the norms laid down in these regulations it would be permissible for a Medical Board to recommend to the Government of India for reasons specifically recorded in writing that he may be admitted to service without disadvantage to Government.

2. It should, however, be clearly understood that the Government of India, reserve to themselves absolute discretion to reject or accept any candidate after considering the report of the Medical Board.

The classification of various Services under the two categories, namely "Technical" and "Non-technical" will be as under :—

A. TECHNICAL

- (1) Indian Railway Traffic Service.
- (2) Indian Police Service and other Central Police Services, Class II.

B. NON-TECHNICAL

I.A.S., I.F.S., I.A & A.S., Indian Customs Service, Indian Railways Accounts Service, Indian Defence Accounts Service, Income Tax Officers (Class I), Indian Postal Service, Military Lands and Cantonments Service Class I and II, and other Central Civil Services Class I & II.

1. To be passed as fit for appointment a candidate must be in good mental and bodily health and free from any physical defect likely to interfere with the efficient performance of the duties of his appointment.

2. (a) In the matter of the correlation of age, height and chest girth of candidates of Indian (including Anglo-Indian) race it is left to the Medical Board to use whatever correlation figures are considered most suitable as a guide in the examination of the candidates. If there be any disproportion with regard to height, weight and chest girth, the candidate should be hospitalised for investigation and X-ray of the chest taken before the candidate is declared fit or not fit by the Board.

(b) However, for certain services the minimum standard for height and chest girth without which candidates cannot be accepted, are as follows :—

	Height	Chest girth fully expanded	Expansion
Indian Railway Traffic Service	152 cm 150 cm	84 cm 79 cm	5 cm (for men) 5 cm (for women)
(2) Indian Police Service, and Delhi, and Andaman & Nicobar Islands Police Service Class II.	165 cm 150 cm	84 cm 79 cm	5 cm (for men) 5 cm (for women)

The minimum height prescribed is relaxable in case of candidates belonging to races such as Gorkhas, Garwalis, Assamese, Nagaland Tribals etc., whose average height is distinctly lower.

3. The candidate's height will be measured as follows :—

He will remove his shoes and be placed against the standard with his feet together and the weight thrown on the heels and not on the toes or other sides of the feet. He will stand erect without rigidity and with the heels calves, buttocks and shoulders touching the standard; the chin will be depressed to bring the

vertex of the head level under the horizontal bar and the height will be recorded in centimetres and parts of a centimetre to halves.

4. The candidate's chest will be measured as follows :—

He will be made to stand erect with his feet together, and to raise his arms over his head. The tape will be so adjusted round the chest that its upper edge touches the inferior angles of the shoulder blades behind and lies in the same horizontal plane when the tape is taken round the chest. The arms will then be lowered to hang loosely by the side, and care will be taken that the shoulders are not thrown upwards or backwards so as to displace the tape. The candidate will then be directed to take a deep inspiration several times and the maximum expansion of the chest will be carefully noted and the minimum and maximum will then be recorded in centimetres, 84—89, 86—93.5 etc. In recording the measurements fractions of less than half a centimetre should not be noted.

N.B.—The height and chest of the candidates should be measured twice before coming to a final decision.

5. The candidate will also be weighed and his weight recorded in kilograms; fractions of half a kilogram should not be noted.

6. (a) The candidate's eye-sight will be tested in accordance with the following rules. The result of each test will be recorded.

(b) There shall be no limit for minimum naked eye vision but the naked eye vision of the candidates shall, however, be recorded by the Medical Board or other medical authority in every case, as it will furnish the basic information in regard to the condition of the eye.

(c) The following standards are prescribed for distant and near vision with or without glasses for different types of Services.

Class of Service	Distant vision		Near vision	
	Better Eye	Worse eye (Corrected vision)	Better eye	Worse eye (Corrected vision)
I.A.S., I.P.S. and Central Services				
Class I & II				
(i) Technical	6/6 or 6/9	6/12 6/9	J.I.	J.II
(ii) Non-Technical	6/9	6/12	J/I	J/II
(iii) I.O.F.S.	6/6 or 6/9	6/18 6/9	J/I	J/II

(d) (i) In respect of the Technical Services mentioned above and any other Services concerned with the safety of public, the total amount of Myopia (including the cylinder) shall not exceed—4.00 D. Total amount of Hypermetropia (including the cylinder) shall not exceed +4.00 D.

(ii) In every case of myopia fundus examination should be carried out and the results recorded. In the event of pathological condition being present which is likely to be progressive and affect the efficiency of the candidate, he/she should be declared unfit.

(e) *Field of Vision* : The field of vision shall be tested in respect of all services by the confrontation method. When such test gives unsatisfactory or doubtful results, the field of vision should be determined on the perimeter.

(f) *Night Blindness* : Broadly there are two types of night blindness: (1) as a result of vit. A deficiency and (2) as a result of Organic disease of Retina—a common cause being Retinitis pigmentosa. In (1) the fundus is normal, generally seen in younger age group and ill nourished persons and improves by large doses of Vit. A. In (2) the fundus is often involved and mere fundus examination will reveal the condition in majority of cases. The patient in this category is an adult and may not suffer from malnutrition. Persons seeking employment for higher posts in the Government will fall in this category. For both (1)

and (2), dark adaptation test will reveal the condition. For (2) specially when fundus is not involved electro-Retinography is required to be done. Both these tests (dark adaptation and retinography) are time-consuming and require specialized set up, and equipment; and thus are not possible as a routine test in a medical check up. Because of these technical considerations, it is for the Ministry/Department to indicate if these tests for night blindness are required to be done. This will depend upon the job requirement and nature of duties to be performed by the prospective Government employees.

(g) *Colour Vision*: The testing of colour vision shall be essential in respect of the Technical Services mentioned above. As regards the non-Technical Services/posts, the Ministry/Department concerned will have to inform the Medical Board that the candidate is for a service requiring colour vision examination or not.

Colour perception should be graded into a higher and lower grade depending upon the size of aperture in the lantern as described in the table below :

Grade	Higher Grade of Colour preception	Lower Grade of Colour Perception
1. Distance between the lamp and candidate	16'	16'
2. Size of aperture	1.3 m.m.	1.3 m.m.
3. Time of exposure	5 seconds	5 seconds

For the Indian Railway Traffic Service and for other Services concerned with the safety of the public, higher grade of colour vision is essential but for others lower grade of colour vision should be considered sufficient.

Satisfactory colour vision constitutes recognition with ease and without hesitation of signal red, signal green and white colours. The use of Ishihara's plates, shown in good light and a suitable lantern like Edridge Green's shall be considered quite dependable for testing colour vision. While either of the two tests may ordinarily be considered sufficient in respect of the Services concerned with road, rail and air traffic, it is essential to carry out the lantern test. In doubtful cases where a candidate fails to qualify when tested by only one of the two tests, both the tests should be employed. However, both the Ishihara's plates and Edridge Green's lantern shall be used for testing colour vision of candidates for appointment to the Indian Railway Traffic Service.

(h) *Ocular conditions other than visual acuity*:

(i) Any organic disease or a progressive refractive error, which is likely to result in lowering the visual acuity, should be considered a disqualification.

(ii) *Squint*: For technical services where the presence of binocular vision is essential, squint, even if the visual acuity in each eye is of the prescribed standard should be considered a disqualification. For other services the presence of squint should not be considered as a disqualification if the visual acuity is of the prescribed standard.

(iii) If a person has one eye or if he has one eye which has normal vision and the other eye is amblyopic or has subnormal vision, the usual effect is that the person lacks stereoscopic vision for perception of depth. Such vision is not necessary for many civil posts. The medical board may recommend as fit, such persons provided the normal eye has

(i) 6/6 distant vision and J 1 near vision with or without glasses, provided the error in any meridian is not more than 4 dioptres for distant vision.

(ii) has full field of vision.

(iii) normal colour vision wherever required.

Provided the board is satisfied that the candidate can perform all the function for the particular job in question

The above relaxed standards of visual acuity will NOT apply to candidates for posts/services classified as 'TECHNICAL'. The Ministry/Department concerned will have to inform the medical board that the candidate is for a 'TECHNICAL' post or not.

(iv) *Contact Lenses*: During the medical examination of a candidate, the use of contact lenses is not to be allowed. It is necessary that when conducting eye test the illumination of the type letters for distant vision should have an illumination of 15 foot-candles.

7. *Blood Pressure*

The Board will use its discretion regarding Blood Pressure. A rough method of calculating normal maximum systolic pressure is as follows :—

- (i) With young subjects 15—25 years of age the average is about 100 plus the age.
- (ii) With subjects over 25 years of age the general rule of 110 plus half the age seems quite satisfactory.

N.B.—As a general rule any systolic pressure over 140 mm. and diastolic over 90 mm. should be regarded as suspicious and the candidate should be hospitalised by the Board before giving their final opinion regarding the candidate's fitness of otherwise. The hospitalization report should indicate whether the rise in blood pressure is of a transient nature due to excitement etc., or whether it is due to any organic disease. In all such cases X-ray and electrocardiographic examinations of heart and blood urea clearance test should also be done as a routine. The final decision as to the fitness or otherwise of a candidate will, however, rest with the medical board only.

Method of taking Blood Pressure

The mercury manometer type of instrument should be used as a rule. The measurement should not be taken within fifteen minutes of any exercise or excitement. Provided the patient, and particularly his arm is relaxed, he may be either lying or sitting. The arm is supported comfortably at the patient's side in a more or less horizontal position. The arm should be freed from the clothes to the shoulder. The cuff completely deflated should be applied with the middle of the rubber over the inner side of the arm, and its lower edge an inch or two above the band of the elbow. The following turns of cloth bandage should spread evenly over the bag to avoid bulging during inflation.

The brachial artery is located by palpitation at the bend of the elbow and the stethoscope is then applied lightly and centrally over it below, but not in contact with the cuff. The cuff is inflated to about 200 mm. Hg. and then slowly deflated. The level at which the column stands when soft successive sounds are heard represents the Systolic Pressure. When more air is allowed to escape the sounds will be heard to increase in intensity. The level at which the well-heard clear sounds change to soft muffled fading sounds represents the diastolic pressure. The measurements should be taken in a fairly brief period of time as prolonged pressure of the cuff is irritating to the patient and will vitiate the readings. Rechecking, if necessary, should be done only a few minutes after complete deflation of the cuff. Sometimes, as the cuff is deflated sounds are heard at a certain level, they may disappear as pressure falls and reappear at a still lower level. This 'Silent Gap' may cause error in reading.

8. The urine (passed in the presence of the examiner) should be examined and the results recorded. When a Medical Board finds sugar present in a candidate's urine by the usual chemical tests in the Board will proceed with the examination with all its other aspects and will also specially note any signs of symptoms suggestive of diabetes. If except for the glycosuria the Board finds the candidate conforms to the standard of medical fitness required they may pass the candidate "fit subject to the glycosuria being non-diabetic" and the Board will refer the case to a specified specialist in Medicine who has hospital and laboratory facilities at his disposal. The Medical Specialist will carry out whatever examinations, clinical and laboratory, he considers necessary including a standard blood sugar tolerance test, and will submit his opinion to the Medical Board, upon which the Medical Board will base its final opinion 'fit' or 'unfit'. The candidate will not be required to appear in person before the Board on the second occasion. To exclude the effects of medication it may be necessary to retain a candidate for several days in hospital under strict supervision.

9. A woman candidate who as a result of tests is found to be pregnant of 12 weeks standing or over, should be declared temporarily unfit until the confinement is over.

She should be re-examined for fitness certificate six weeks after the date of confinement, subject to the production of a medical certificate of fitness from a registered medical practitioner.

10. The following additional points should be observed :—

(a) that the candidate's hearing in each ear is good and that there is no sign of disease of the ear. In case it is defective the candidate should be got examined by the ear specialist : provided that if the defect in hearing is remediable by operation or by use of a hearing aid, a candidate cannot be declared unfit on that account provided he/she has no progressive disease in the ear. This provision is not applicable in the case of Railway Services. The following are the guidelines for the medical examining authority in this regard :—

1. Marked or total deafness in one ear, other ear being normal. Fit for non-technical jobs if the deafness is upto 30 decibel in higher frequency.

2. Perceptive deafness in both ears in which some improvement is possible by a hearing aid. Fit in respect of both technical and non-technical jobs if the deafness is upto 30 Decibel in speech frequencies of 1000 to 4000.

3. Perforation of tympanic membrane of Central or marginal type. (i) One ear normal other ear perforation of tympanic membrane present—Temporarily unfit.

Under improved conditions of Ea Surgery a candidate with marginal or other perforation in both ears should be given a chance by declaring him temporarily unfit and then he may be considered under 4(ii) below.

(ii) Marginal or attic perforation in both ears—Unfit.

(iii) Central perforation both ears Temporarily unfit.

(i) Either ear normal hearing other ear Mastoid cavity—Fit for both technical and non-technical jobs.

(ii) Mastoid cavity of both sides. Unfit for technical job. Fit for non-technical jobs if hearing improves to 30 Decibels in either ear with or without hearing aid.

5. Persistently discharging ear-operated/unoperated. Temporarily Unfit for both technical and non-technical jobs.

6. Chronic inflammatory/allergic conditions of nose with or without bony deformities of nasal septum. (i) A decision will be taken as per circumstances of individual cases.

(ii) If deviated nasal Septum is present with symptoms—Temporarily unfit.

7. Chronic inflammatory conditions of tonsils and/or Larynx. (i) Chronic inflammatory conditions of tonsils and/or Larynx—Fit.

(ii) Hoarseness of voice of severe degree if present then—Temporarily unfit.

8. Benign or locally malignant tumours of the E.N.T. (i) Benign tumours—Temporarily unfit.

(ii) Malignant Tumours—Unfit.

9. Otosclerosis. If the hearing is within 30 Decibels after operation or with the help of hearing aid—Fit.

10. Congenital defects of ear, nose or throat; (i) if not interfering with functions—Fit.

(ii) Stuttering of severe degree—Unfit.

11. Nasal Poly. Temporarily Unfit.

(b) that his speech is without impediment;

(c) that his teeth are in good order and that he is provided with dentures where necessary for effective mastication (well filled teeth will be considered as sound);

(d) that the chest is well formed and his chest expansion sufficient; and that his heart and lungs are sound;

(e) that there is no evidence of any abdominal disease;

(f) that he is not ruptured;

(g) that he does not suffer from hydrocele, a severe degree of varicocele, varicose veins or piles;

(h) that his limbs, hands and feet are well formed and developed and that there is free and perfect motion of all his joints;

(i) that he does not suffer from any invertebrate skin disease;

(j) that there is no congenital malformation or defect;

(k) that he does not bear traces of acute or chronic disease pointing to an impaired constitution;

(l) that he bears marks of efficient vaccination; and

(m) that he is free from communicable disease.

11. Radiographic examination of the chest should be done as a routine in all cases for detecting any abnormality of the heart and lungs, which may not be apparent by ordinary physical examination.

When any defect is found it must be noted in the certificate and the medical examiner should state his opinion whether or not it is likely to interfere with the efficient performance of the duties which will be required of the candidate.

12. The candidate filing an appeal against the decision of the Medical Board have to deposit an appeal fee of Rs. 50.00 in such manner as may be prescribed by the Government of India in this behalf. This fee would be refunded if the candidate is declared fit by the Appellate Medical Board. The candidates may, if they like enclose medical certificate in support of their claim of being fit. Appeals should be submitted within 21 days of the date of the communication in which the decision of the Medical Board is communicated to the candidates; otherwise, requests for second medical examination by an Appellate Medical Board, will not be entertained. The medical examination by the Appellate Medical Boards would be arranged at New Delhi only and no travelling allowance or daily allowance will be admissible for the journeys performed in connection with the medical examination. Necessary action to arrange medical examination by Appellate Medical Boards would be taken by the Cabinet Secretariat (Department of Personnel and Administration Reforms) on receipt of appeals accompanied by the prescribed fee.

MEDICAL BOARD'S REPORT

The following intimation is made for the guidance of the Medical Examiner :—

1. The standard of physical fitness to be adopted should make due allowance for the age and length of service, if any of the candidate concerned.

No person will be deemed qualified for admission to the Public Service who shall not satisfy Government, or the appointing authority as the case may be, that he has no disease constitutional affection, or bodily infirmity, unfitting him or likely to unfit him for that service.

It should be understood that the question of fitness involves the future as well as the present and that one of the main objects of medical examination is to secure continuous effective service, and in the case of candidates for permanent appointment to prevent early pension or payments in case of premature death. It is at the same time to be noted that the question is one of the likelihood continuous effective service, and that rejection of a candidate need not be advised on account of the presence of a defect which in only a small proportion of cases is found to interfere with continuous effective service.

A lady doctor will be co-opted as a member of the Medical Board whenever a woman candidate is to be examined.

Candidates appointed to the Indian Defence Accounts Service are liable for field service in or out of India. In the case of such a candidate, the Medical Board should specially record their opinion as to his fitness or otherwise of field service.

The report of the Medical Board should be treated as confidential.

In case where a candidate is declared unfit for appointment in the Government Service the grounds for rejection may be communicated to the candidate in broad terms without giving minute details regarding the defects pointed out by Medical Board.

In cases where a Medical Board considers that a minor disability disqualifying a candidate for Government service can be cured by treatment medical or surgical) a statement to that effect should be recorded by the Medical Board. There is no objection to a candidate being informed of the Board's opinion to this effect by the appointing authority and when a cure has been effected it will be open to the authority concerned to ask for another Medical Board.

In the case of candidates who are to be declared "Temporarily Unfit" the period specified for re-examination should not ordinarily exceed six months at the maximum. On re-examination after the specified period these candidates should not be declared temporarily unfit for a further period but a final decision in regard to their fitness for appointment or otherwise should be given.

(a) Candidate's statement and declaration

The candidate must make the statement required below prior to his Medical Examination and must sign the Declaration appended thereto. His attention is specially directed to the warning contained in the Note below :—

1. State your name in full (in block letters)
2. State your age and birth place.....
2. (a) Do you belong to races such as Gorkhas, Garvalis, Assamese Nagaland Tribals etc. whose average height is distinctly lower? Answer "Yes" or "No" and if the answer is "Yes" state the name of the race.
3. (a) Have you ever had small-pox intermittent or any other fever enlargement or suppuration of glands, spitting of blood, asthma, heart disease, lung disease, fainting attacks, rheumatism, appendicitis?

(b) any other disease or accident requiring confinement to bed and medical or surgical treatment?

4. When were you last vaccinated.....

5. Have you suffered from any form of nervousness due to over work or any other causes?

6. Furnish the following particulars concerning your family

Father's age if living and state of health	Father's age at death and cause of death	No. of brothers living, their ages and state of health	No. of brothers dead, their ages at, and cause of death
--	--	--	---

Mother's age, if living and state of health	Mother's age at death and cause of death	No. of sisters living, their ages and state of health	No. of sisters dead, their ages at and cause of death
---	--	---	---

7. Have you been examined by a medical Board before ?

8. If answer to the above is yes, please state what Service/ Services you were examined for ?

9. Who was the examining authority ?

10. When and where was the Medical Board held ?

11. Result of the Medical Board's examination. If communicated to you or if known ?

I declare all the above answers to be, to the best of my belief true and correct,

Candidate's Signature

Signed in my presence.

Signature of the Chairman of the Board

Note:—The candidate will be held responsible for the accuracy of the above statement. By wilfully suppressing any information he will incur the risk of losing the appointment and, if appointed, of forfeiting all claim to Superannuation Allowance or Gratuity.

(b) Report of the Medical Board on (name of candidate) Physical examination.

1. General development :	Good
Fair	Poor
Average	Nutrition : Thin
Obese	Height (without shoes)
When ?	Weight
Temperature	Best Weight
Girth of chest :	Any recent change in weight.....

(1) (After full inspiration)

(2) (After full expiration)

2. Skin : any obvious disease

3. Eyes :
 (1) Any disease
 (2) Night blindness
 (3) Defect in colour vision
 (4) Field of vision
 (5) Visual acuity
 (6) Fundus Examination

Acuity of vision	Naked eye	With glasses	Strength of glass		
			Sph.	Cyl.	Axis
Distant Vision	R.E.				
	L.E.				
Near Vision	R.E.				
	L.E.				
Hypermetropia (Manifest)	R.E.				
	L.E.				

4. Ears : Inspection Hearing, Right Ear
 Left Ear
 5. Glands Thyroid
 6. Condition of teeth
 7. Respiratory System : Does physical examination reveal anything abnormal in the respiratory organs. if yes, explain fully —
 8. Circulatory System :
 (a) Heart : Any organic lesions ?
 Rate Standing
 After hopping 25 times
 Two minutes after hopping
 (b) Blood Pressure : Systolic Diastolic
 9. Abdomen : Girth Tenderness
 Hernia
 (a) Palpable : Liver Spleen
 Kidneys Tumours
 (b) Haemorrhoids Fistula
 10. Nervous System : Indications of nervous or mental disabilities
 11. Loco-Motor System : Any abnormality
 12. Genito Urinary System : Any evidence of Hydrocele, Varicocele, etc.
 Urine Analysis
 (a) Physical appearance
 (b) Sp. Gr.
 (c) Albumen
 (d) Sugar
 (e) Castes
 (f) Cells
 13. Report of X-Ray Examination of Chest.
 14. Is there anything in the health of the candidate likely to render him unfit for the efficient discharge of his duties in the service for which he is a candidate ?

NOTE :—In the case of a female candidate, if it is found that she is pregnant of 12 weeks standing or over, she should be declared temporarily unfit, *vide* Regulation 9.

15. (i) State the Service for which the candidate has been examined :
 (a) I.A.S. & I.F.S.
 (b) I.P.S. and Delhi, & Andaman & Nicobar Islands Police Service,
 (c) Central Services, Class I & II.

- (i) has he been found qualified in all respects for the efficient and continuous discharge of his duties in :
 (a) I.A.S. & I.F.S.
 (b) I.P.S. and Delhi and Andaman & Nicobar Islands Police Service
 (see especially height, chest girth, eye sight, colour blindness and locomotive system).
 (c) Indian Railway Traffic Service (see especially height, chest, eye sight, colour blindness).
 (d) Other Central Services Class I/II

(iii) Is the candidate fit for FIELD SERVICE

NOTE.—The Board should record their findings under one of the following three categories :—

- (i) Fit.
 (ii) Unfit on account of
 (iii) Temporarily unfit on account of

Place.....

Date.....

Chairman
 Member
 Member

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi-110001, the 17th February 1973

No. 9/76/72-GP.—In supersession of this Ministry's notification No. 25/119/67-DH(S), dated the 13th May, 1970, the President is pleased to nominate the following four non-official members to the Home Minister's Advisory Committee for the Union territory of Chandigarh for the years 1972-73 and 1973-74 :—

- (1) Shri Sham Lal Gupta,
 President, Territorial Congress Committee (R),
 Chandigarh.
 (2) Shri Lachhman Singh.
 (3) Shri Shri Chand Goyal, Ex-M.P.
 (4) Shri P. L. Varma,
 retired Chief Engineer, Chandigarh.

G. K. BHANOT, Jt. Secy.

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Expenditure)

New Delhi, the 13th February 1973

RESOLUTION

No. F. 16(1)E.V.(B)/72-Vol.II.—In partial modification of this Ministry's Resolution No. 16(1)-E.V.(B)/72 dated the 25th May, 1972, it has been decided in pursuance of the recommendations made by the Committee of the National Council of the J.C.M. to increase the rate of interest on the balances in respect of Central Government Provident Funds retrospectively from 1-4-1972. The accumulations at the credit of the subscribers to the General Provident Fund and other similar Funds upto Rs. 10,000/- (inclusive of deposits and withdrawals during the year 1972-73) will carry interest at the rate of 6.00% per annum and the interest rate of 5.30% per annum will apply to sums in excess of Rs. 10,000/-. These rates will be in force during the financial year beginning on the 1-4-1972. The funds concerned are :—

1. The General Provident Fund (Central Services)
2. The General Provident Fund (Defence Services)
3. The Secretary of State's Services (General Provident Fund)

4. The Contributory Provident Fund (India)
5. The Indian Civil Services Provident Fund
6. The All India Services Provident Fund
7. The Indian Ordnance Department Provident Fund
8. The Indian Civil Services (N.E.M.) Provident Fund
9. Other Miscellaneous Provident Fund (Defence)
10. The Defence Service Officers' Provident Fund
11. The Armed Forces Personnel Provident Fund
12. The Military Engineering Services Provident Fund
13. The Indian Ordnance Factories Workmen's Provident Fund
14. The Contributory Provident Fund (Defence)
15. The Indian Naval Dockyard Workmen's Provident Fund

2. Necessary instructions will be issued separately by the Ministry of Railways (Railway Board) concerning the rates of interest applicable during the year, in question, to the balances in the various Provident Funds under the control of that Ministry.

3. ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India.

S. S. L. MALHOTRA, Under Secy.

MINISTRY OF COMMERCE

New Delhi, the 15th February 1973

No. 4(1)/73-EPZ.—In pursuance of the Government of India, Ministry of Foreign Trade Resolution No. 21(15)/72-TAEP, dated 23rd December, 1972, the Central Government hereby constitutes the 'Santa Cruz Export Processing Zone Authority' to be as under :—

Chairman

(i) Shri B. B. Lal,
Secretary,
Ministry of Commerce.

Members

(ii) Shri M. G. K. Menon,
Chairman,
Electronics Commission and Secretary
Department of Electronics.

(iii) Shri R. V. Raman,
Secretary,
Ministry of Industrial Development.

(iv) Shri M. R. Yardi,
Secretary,
Ministry of Finance.

(v) Shri M. G. Kaul,
Secretary,
Department of Economic Affairs.

(vi) Shri Jasjit Singh,
Chairman,
Central Board of Excise and Customs.

(vii) Shri S. S. Shiralkar,
Deputy Governor,
Reserve Bank of India.

(viii) Shri Y. T. Shah,
Additional Secretary,
Ministry of Commerce.

(ix) Shri K. S. Narang.
Chief Controller of Imports and Exports.

(x) Dr. M. N. Desai,
Secretary,
Industries and Labour Deptt.,
Government of Maharashtra.

(xi) Shri A. C. Banerjee,
Executive Director,
Trade Development Authority.

Member-Secretary

(xii) Development Commissioner,
Santa Cruz Export Processing Zone.
(To be appointed)

N. S. VAIDYANATHAN, Dy. Secy.

MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT

New Delhi, the 22nd January 1973

ORDER

No. 1-5/72-H.M.II.—The name of the Chairman of the Standing Committee constituted *vide* this Ministry's Resolution No. 1-5/72-H.M. II dated the 22nd September, 1972 may be read as 'Dr. A. Seetharamiah' instead of 'Shri K. B. Rao'.

S. KANNAN, Under Secy.

DEPARTMENT OF COMPANY AFFAIRS

(Company Law Board)

New Delhi-1, the 19th February 1973

ORDER

No. 53/2/73-CL.II.—In pursuance of sub-clause (ii) of clause (b) sub-section (4) of Section 209 of the Companies Act, 1956 (1 of 1956) the Company Law Board hereby authorises Shri K. S. Ramakrishnan, Assistant Cost Accounts Officer, New Delhi an Officer of the Government of India, Department of Company Affairs for the purposes of the said Section 209.

T. S. SRINIVASAN, Jt. Dir. of Inspection
and Ex-Officio Dy. Secy.
to the Company Law Board

MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING

(Department of Family Planning)

New Delhi, the 3rd February 1973

RESOLUTION

No. 2-62/72-PLY.—It has been decided to make the following modifications in the composition of the Committee on Socio-Economic Studies on Family Planning as constituted in the Ministry of Health & Family Planning (Department of Family Planning) Resolution No. 2-62/72-PLY, dated the 6th December, 1972 :—

1. The Registrar General shall be a member of the Committee *vice* Shri V. K. Ramabhadran, Deputy Registrar General proceeded on deputation abroad.
2. Shri Chanchal Sarkar shall be a member of the Committee.

KARTAR SINGH, Addl. Secy.

MINISTRY OF AGRICULTURE

Department of Corporation

New Delhi, the 13th February 1973

RESOLUTION

No. R-15013/2/70-P&C.—In continuation of this Department Resolution No. R-15013/2/70-P&C dated the 2nd September 1972, reconstituting the Consultative Council on Co-operation, the following addition is made in paragraph 1 of the Resolution :—

23. Dr. B. S. Minhas, Member, Planning Commission.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

K. S. BAWA, Jt. Secy.

MINISTRY OF EDUCATION & SOCIAL WELFARE

(Department of Culture)

New Delhi, the 21st February 1973

CORRIGENDUM

No. F. 15-25/72-L.1.—The Resolution No. F. 15-25/72-L. 1 dated 5th May 1972 is amended as under :—

Para 4 (i) Serial No. 3

For Minister of State for Education,
Read Minister of State for Labour.

(ii) Serial No. 7

For Prof. S. Ehtesham Hussain, Head of Urdu Department, Allahabad University, Allahabad.

Read Prof. Khalil Ahmed Nizami, Head of Department of History, Aligarh Muslim University, Aligarh.

(iii) Add the following after Serial No. 2

2A Shri Dinesh Kumar Singh,
Minister of State for Education,
Government of Bihar,
Patna.

Para 7

May be substituted by the following :—

The Committee should submit its report to Government within a period of one year from the date it is set up.

ORDER

ORDERED that copies of the Corrigendum to the Resolution be communicated to all members of the Committee, Chairman, University Grants Commission, all Vice-Chancellors, Director, Central Hindi Directorate, Prime Minister's Secretariat, Department of Parliamentary Affairs, Lok Sabha Secretariat, Rajya Sabha Secretariat, Planning Commission, President's Secretariat, and all State Governments, Ministries and Departments of the Government of India.

ORDERED also that the Corrigendum to the Resolution be published in the Gazette of India for general information

KANTI CHAUDHURI, Jt. Secy.

MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT

Inland Water Transport Directorate

New Delhi, the 7th February 1973

RESOLUTION

No. 8-IWT(18)/70-P&W.—In partial modification of this Ministry's Resolution No. 8-IWT(18)/70-P&W dated the 11th October, 1971, the Government of India have decided to appoint Minister-in-charge of Inland Water Transport in the State of Madhya Pradesh also as a member of the Central Inland Water Transport Board. It has also been decided that the following will be three non-official members of the said Board :

1. Shri B. Bhagavati,
Member, Rajya Sabha.
 2. Shri Chandrika Prasad,
Member, Lok Sabha.
 3. Chairman, Central Inland Water
Transport Corporation Ltd.,
Calcutta.
2. The Government of India have further decided that an official to be nominated by the Government of Madhya Pradesh will serve as a member of the Inland Water Transport Implementing and Coordinating Committee.

ORDER

ORDERED that a copy of this Resolution be communicated to the Private and Military Secretaries to the President, the Prime Minister's Secretariat, the Cabinet Secretariat, the Planning Commission and the Ministries of the Government of India as well as the State Governments.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

P. H. TRIVEDI, Director

MINISTRY OF WORKS AND HOUSING

New Delhi, the 23rd February 1973

RESOLUTION

No. G.25017/1/72-LII.—WHEREAS in this Ministry's Resolution No. G.25017/1/70-LII, dated the 20th January, 1971, a Committee was constituted to investigate comprehensively the working of the Land and Development Office,

AND WHEREAS its life was extended upto the 28th February, 1973, *vide* this Ministry's Resolution No. G-25017/1/72-LII dated the 12th September, 1972.

AND WHEREAS due to the intricate nature of the problems being studied by the Committee, the Committee would need more time to finalise its recommendations, it has been decided to extend the life of the Committee for a further period of 6 (six) months with effect from the 1st March, 1973.

ORDER

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

S. CHAUDHURI, Jt. Secy.

MINISTRY OF LABOUR AND REHABILITATION

(Department of Labour and Employment)

New Delhi, Pin 110001, the 24th February 1973

RESOLUTION

No. DGET-200(11)/72-EEI.—The term of the Committee set up by the Government of India Resolution No. MP-10(110)/69, dated the 19th December, 1970, published in the Gazette of India Extraordinary Part-I, Section-I, dated the 19th December, 1970, and extended upto the 28th February, 1973 *vide* Resolution No. DGET-200(11)/72-EEI(i) dated the 23rd November, 1972 is hereby further extended upto the 15th April 1973.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India, Part-I, Section-1.

ORDERED that a copy of the Resolution be communicated to all Ministries/Departments of the Government of India, State Governments/Union Territories and all others concerned.

ISHWAR CHANDRA, Jt. Secy.

